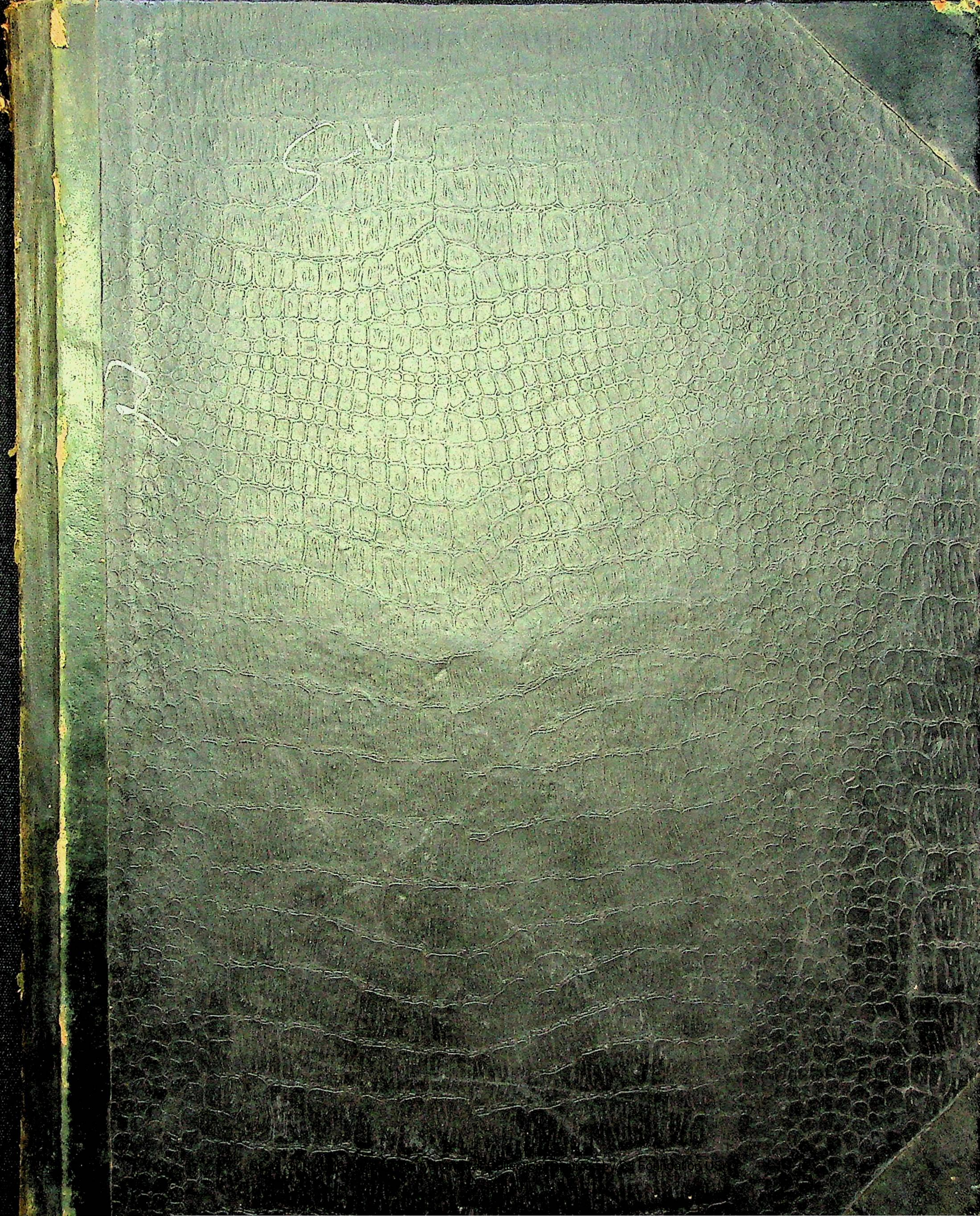


112401



शहीद भगतसिंह



- शोषण से मुक्ति के लिए पाखंड का विरोध आवश्यक
- हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा
- अध्यापक आन्दोलन : किसान-मजदूर सरकार के बिना पूंजीवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता
- शराबी भारत : देशी षड्यन्त्र की कहानी
- जन-क्रांति, जनता द्वारा, जनता के लिए
- आवश्यकता, उबलते रक्त की
- भारत-जर्मन षड्यन्त्र का अन्यतम बौद्धिक नेता यतीन्द्रनाथ मुकर्जी

जमागौर समाजवाद

पाक्षिक



सर्वधर्म

वर्ष ५ अंक ६
२७ मार्च १९७३

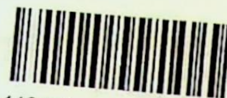
सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : डॉ० महेन्द्र मधुप

वार्षिक १० रु०
एक प्रति ५० पैसे



अध्यापक का राग — बंसी का फाग

अध्यापक का राग, बंसी का फाग



डॉ० कृष्णदत्त

दूसरा महायुद्ध मित्र राष्ट्रों और धुरी राष्ट्रों के मध्य चल रहा था। यद्यपि जर्मन तानाशाह हिटलर के साहस और पराक्रम के कारण उन्हें पर्याप्त सफलताएं मिलीं, किन्तु कई इतिहासकारों का मत है कि जर्मनी की अधिकांश विजय का श्रेय उस देश के प्रचार मन्त्री गोबेल्स को है। गोबेल्स ने कभी हाथ में हथियार लेकर सेना की अगवानी नहीं की, बल्कि इनका कार्य केवल आकाशवाणी के प्रसारण द्वारा झूठा-भ्रामक प्रचार करना था। ये बिल्कुल निराधार, बिना सिर पैर की झूठ गढा करते थे। झूठ-मूठ में ही कह देते थे कि हमारी फौजों ने अमुक नगर को चारों ओर से घेर लिया है। दुश्मन की सेनाओं ने हथियार डाल कर आत्म समर्पण कर दिया है। इस प्रकार के झूठे प्रसारण से, सेना और जनता का मनोबल गिरने मात्र से कई विजय बिना रक्तपात किये उन्हें मिल जाती थी।

भारत पर पाकिस्तान ने सन् ६५ में आक्रमण किया। अयूब साहब सेनापति थे, किन्तु गद्दी पर बैठने पर ये लड़ना भूल गए। उन्हें गोबेल्स का बड़बड़ाना याद रह गया। उन्होंने घोषणा की कि हमारी फौजों ने भारत की फौजों को पीछे धकेल दिया है। अब हमारे बहादुर नौजवानों ने दिल्ली की तरफ कूच कर दिया है। ये दिल्ली के चांदनी चौक में घण्टे वाले की देशी घी की मिठाई खायेंगे, किन्तु अगले दिन ही पता चला कि पाकिस्तानी फौजों ने इच्छोगिल का मोर्चा खाली कर दिया और भारतीय फौजी टुकड़ियां स्यालकोट पहुंच गईं। इसी तरह सन् ७१ में फिर पाक से न रहा गया। भुट्टो महाराज भी तो अयूब साहेब के हम प्याला दोस्त रह चुके थे। उन्हें अब गोबेल्स और अयूब से भारी घोषणा करने में बाजी लेनी थी। ये रेडियो प्रसारण में कहते हैं कि हम एक हजार वर्ष तक लड़ेंगे, मानो इन्होंने रावण की भांति स्वर्ग और नरक दोनों को, अपने लिये रिजर्व करा लिया हो।

हम ये सोचा करते थे कि झूठ के छूत का रोग पाक के शासकों में पेशेवर होकर रह गया है। हमारे यहां तो पुरवा हवाएं चलती हैं तो यह रोग हमारे यहां आने का सवाल ही नहीं, किन्तु इसकी खुजली हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० बंसीलाल की जीभ पर चलती देखी। बड़ा आश्चर्य हुआ यह कैसे? यदि पच्छवा चलती है तब भी रास्ते में तो ज्ञानी जेलसिंह पड़ते थे। बन्सी भैया का नम्बर कैसे पड़ा? अब तो इनकी कतरनी तेज हो गई। लम्बी घोषणा करने लगे। कभी-कभी ज्यादा जोश में आते तो अपने तीसमारखांपने की दुहाई अलापने लगते। हमारी हैरानी बढ़ने लगी। हमने इनकी घोषणाओं पर ही पी-एच.डी. की उपाधि लेने की ठान ली। ये कहते थे पानी की कमी न रहने दूंगा। हमने सोचा आकाश में छेद करेगा या अर्जुन की तरह तीर चलाकर जमीन का पेट फोड़ेगा। देखा तो कुछ दिन में सारे हरयाणा को ही पानी में बैठा दिया और वो भी सूखे कालर में। अगली बात कही कि सभी गांव में बिजली भेजूंगा। देखा तो एकदम सारे प्रांत पर बिजली पड़ गई। हमने अंदाजा लगाया कि ये रेडियो झूठिस्तान है! अब इससे खबरें सुनिये। इन साहब का अयूब से कैसे रिश्ता जुड़ा। अयूब साहब रोहतक जिले के कलानौर के रांहगड़ मुसलमान हैं। ४७ में ये यहां से भाग खड़े हुए। भाग कर लुहारु के नवाब के पास ठहरे। उस समय बंसीलाल के अब्बाजान लुहारु नवाब के गुप्तचर विभाग में काम करते थे। सभी क्रांतिकारी देशभक्तों की डायरी ला कर देते थे। बंसी ने उनके साथ 'एक निवाला हम प्याला' की प्रीत बढ़ाई होगी। ये कीटाणु उस समय से रिजर्व होंगे? कहते हैं पागल कुत्ते का काटा बारह साल में उभरता है किन्तु इन्सान के रूप में हैवान का चौबीस साल में आकर उभरा! इनको नशा चढ गया। अब शिकार कौन बनेगा, इसकी चिन्ता थी। भिवानी से बाहर निकले ही थे कि इनको 'अकल चर भट्टू' कह कर उल्टे कान एंठने वाले स्कूली टीचर मिल गए। कहा—कहां जाते हो, लो तुम से मैं न पढ़ाया जा सका, बड़ा पिट्टू लादा था अब तुम्हारा मुर्गा बनाऊंगा। जे. बी. टीचर भौचक्का रह गया। 'अरे हमारी बिल्ली हमी ही से म्याऊं,' तो अब मैं किस को खाऊं, कहो मैं अब किधर को जाऊं। कहा जाओ सीधे बीस मील। बेचारा शिष्य दक्षिणा दे कर भागा। आगे बी. टी. जी मिल गए। ए.बी.सी. पढ़ाते थे। मुझे टेन्स तक नहीं आते थे। ग्राउन्ड के बहुत चक्कर काटते थे। अब बताओ महाराज आ गया मेरा राज, हो गई मुझ को खाज।

(शेषांश आवरण पृष्ठ ३ पर)

सम्पादकीय

शोषण से मुक्ति के लिये पाखंड का विरोध आवश्यक

हरयाणा के चालीस हजार शिक्षक सरकारी शोषण के विरुद्ध, संघर्ष के बलिदान-पथ पर हैं। उन्होंने छोटे-छोटे झगड़ों व पारम्परिक पाखंड के विरुद्ध बगावत कर दी है। सत्य की रक्षा की इस क्रांति-यात्रा में, हरयाणा का शिक्षक अपने को अकेला अनुभव नहीं करता। क्योंकि सत्य का प्रत्येक अन्वेषक उसके साथ है। हरयाणा की धरती को असत्य और पाखंड से नफरत है। अतः उसका बच्चा-बच्चा अध्यापकों के साथ मर मिटने को तैयार है। जो व्यक्ति इस हड़ताल में सम्मिलित नहीं हैं, वे तीन प्रकार के हैं—प्रथम, छोटे-छोटे स्वार्थों में लिप्त दिग्भ्रमित लोग; द्वितीय, सरकार द्वारा भौतिक साधनों द्वारा खरीदे गये बिचोलिये तथा तृतीय, झूठ, शोषण और पाखंड को सफेद वस्त्रों में ढके सरकारी एजेन्टों के निर्माता पूंजीपति नेता, सामाजिक नेता तथा धार्मिक नेता। प्रथम प्रकार के व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें सत्य मार्ग दिखाने पर हमारे साथ आ जायेंगे। द्वितीय प्रकार के व्यक्तियों पर जब काम निकलने पर, सरकार की तीखी मार पड़ेगी, तो वे सरकार से धीरे-धीरे कटने लगेंगे। सबसे खतरनाक तीसरे प्रकार के व्यक्ति हैं। ये तथाकथित राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक नेता हैं। इनके छद्म को समझ कर, हमें परिवर्तन को शहरों के राजपथ के स्थान पर, ग्राम-पथ से लाना होगा।

यहीं वैचारिक संघर्ष की बात आती है। आधुनिकता के नाम पर हम विदेशी वादों से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि अपनी मिट्टी की संस्कृति, मान्यताओं और दर्द से सामंजस्य नहीं कर पाते। अगर आधुनिकता के नाम पर कही जाने वाली बातें हमारे ग्रंथों में कही गयी हों या भारतीय चिन्तकों ने कही हों, तो हमें उन्हें उद्धृत करते हुए शर्म का अनुभव होता है।

स्वामी दयानन्द सामाजिक-क्रांति के योद्धा थे। विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविन्द आदि भारतीय चिन्तकों ने भारतीय संस्कृति, अर्थ व्यवस्था और राजनैतिक मूल्यों का गहन विश्लेषण किया था। भारतीय ग्रन्थों गीता, महाभारत और रामायण ने सारे विश्व को प्रभावित किया, किन्तु भारत का कोई भी तथाकथित प्रगतिशील चिन्तक इनके साहित्य को पढ़ना या उसका उल्लेख करना 'सामन्तवादी मनोवृत्ति' मानता है।

मार्क्स, एंगल्स आदि महामानव थे, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जमीन की गंध को भूल कर हम एक वाद या व्यक्ति के अंध मूर्ति पूजक बन जायें। जिन्होंने जीवन भर कर्म के स्थान पर बनी हुई पाखंड की मूर्ति को तोड़ने की भूमिका निभाई, उनकी मूर्ति बनाकर पूजा करना, उनके सिद्धांतों की हत्या करना है। एक चिन्तक को महान् बता कर, दूसरे को उसके जूते की धूल बताना, स्वाध्याय की कमी और 'तंग नजर' का द्योतक है। विश्व के किसी भी चिन्तक ने दूसरे चिंतक को कभी छोटा नहीं माना। स्वयं महर्षि दयानंद ने विश्व के सभी चिंतकों को सम्मान की दृष्टि से देखा। उनका मात्र यह कहना था कि सत्य के ग्रहण करने में और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

अतः शोषण के विरुद्ध क्रांति तब तक अधूरी रहेगी, जब तक हम स्वाध्याय की कमी को, दूसरों को गालियां देने का छद्म रच कर छिपाते रहेंगे। सत्य की खोज को, विश्व में हो रही घटनाओं से काट कर, इसलिये नहीं देखेंगे कि वे गलत है वरन् इस लिए देखेंगे कि हमें उनकी कोई जानकारी नहीं है। साथ ही कथित चिंतक भारतीय साहित्य और विचार धाराओं का अध्ययन-विश्लेषण नहीं करेंगे, तब तक परिवर्तन का कोई भी कार्यक्रम इस जमीन पर सही नहीं उतरेगा।

—महेन्द्र मधुप

सामयिकी

हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा

O सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

शाम के छः बजे थे। पार्लियामेंट स्ट्रीट की कचहरी के आंगन में हरयाणा के सैंकड़ों शिक्षक खुले में बैठे थे। तीन तरफ बरामदों में पुलिस थी और चौथी तरफ उन्हें जेलों में ले जाने के लिए चमचमाती तीन-चार प्राइवेट बसें खड़ी थीं। अधिकतर लोगों की सूरत ग्रामीण किसानों जैसी थी। थोड़ी देर पहले ये पटेल चौक में गिरफ्तार किये गये थे। उन्हें प्रदर्शन वर्जित क्षेत्र के भीतर प्रदर्शन करने, दफा १४४ तोड़ने पर गिरफ्तार किया गया था। उस शाम गिरफ्तार किये गये लोगों की संख्या पुलिस के अनुसार ४६१ थी और गिरफ्तार शिक्षकों के अनुसार ५०४। किसी शिक्षक से हमारी बात करने की इच्छा जान पुलिस ने खुद उनके नेता को बुला दिया। एक लंबी मज़बूत काठी। बिना हजामत का बुझा बुझा सा चेहरा, गुस्से, थकान और उदासी में दबा हुआ। जैसे राख में चिनगारी। नाम जगन्नाथ शास्त्री। जींद के राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल में संस्कृत के प्राध्यापक।

'गिरफ्तार शिक्षकों में किन-किन जगहों के लोग हैं?

'सभी जगहों के—रोहतक, सोनीपत, हिसार, गुड़गांवां, करनाल, जींद, महेन्द्रगढ़, अम्बाला, खाली जींद के ७७ शिक्षक हैं।"

'दिल्ली आप लोग क्यों आये ? अपनी मांगों के लिए क्या वहीं लड़ाई नहीं लड़ सकते थे ?'

"वहाँ औरंगजेबी शासन है। दिसंबर से हम अपनी मांगों के लिए लड़ रहे हैं पर कोई सुनवायी नहीं। जुल्म बढ़ते ही जा रहे हैं। दिल्ली दो वजहों से आये थे एक तो अपनी फरियाद इंदिरा जी और दीक्षित जी को सुनाने, पर दोनों ने इंकार कर दिया। दूसरे अपनी जान बचाने। वहां बंसीलाल की पुलिस बहुत तंग कर रही है। हमारे घर की औरतों, बच्चों, भाई-बहनों तक को नहीं बख्शती। मेरा भाई पकड़ लिया। बहुत से शिक्षक डर कर भाग कर आ गये हैं। पैदल चल-चल कर आये हैं।"

"दिल्ली में आने वाले शिक्षकों की संख्या?"

"१५ हजार।"

"आप लोग रह कहां रहे हैं?"

"ज्यादातर लोग रामलीला मैदान में खुले में पड़े हैं। इसी (कंधे पर पड़ा कंबल दिखाते हुए) के सहारे रात काट देते हैं।"

गुजरात के सूखे में हजारों की तादाद में बेचारे पड़े मवेशी हमने देखे थे, खुले आसमान के नीचे। यहां न्याय के सूखे में घरबार छोड़ कर भटकते शिक्षक दिखाई देते हैं। जिस शाम बातचीत हुई थी उस शाम रात में बारिश आयी थी, सर्दी बढ़ गयी थी। पर क्या किसी ने सोचा ये शिक्षक कहां होंगे? अन्याय की मार से घबरा कर शरणार्थी की तरह वे राजधानी आ गये। बिना किसी सामान के कंबल झोला लटकाये, इस विश्वास से कि लोकतंत्र में उनकी तकलीफ सुनने वाला कोई है, पर उन्होंने देख लिया कोई नहीं है।

'अब क्या करोगे?'

'अब हरयाणा का नाश हो जायेगा, बच्चा-बच्चा...' वह एकदम उत्तेजित हो उठे। साथियों ने रोका।

'आपकी उम्र क्या है?'

'पैंतालीस साल।'

'परिवार?'

'परिवार में नौ सदस्य हैं। मैं अकेला कमाने वाला हूं। ३७५ रु० वेतन मिलता है। ६० रु० कट जाते हैं प्राविडेंट फंड में शिमला चले जाते हैं। इतने में गुजारा हो सकता है? लेकिन औरंगजेब को हमारी मांगें गलत लगती हैं। वह जान से मारने की धमकी देते हैं। नौकरी खत्म करने, स्कूल बंद करने की धमकी देते हैं। हमारे शांतिपूर्ण आंदोलन की भी कोई सुनवायी नहीं। हम आंध्र की तरह तोड़फोड़ तो नहीं कर रहे?'

इस का क्या जवाब हो सकता है। जब हर समस्या किसी एक आदमी की प्रतिष्ठा का सवाल बन जाये तो कोई जवाब नहीं हो सकता।

'विद्यार्थी क्या सोचते हैं?'

'विद्यार्थी साथ हैं। स्कूलों में पढ़ाई बन्द है। हाजिरी नहीं है। एस. पी., डी. एस. पी. कहीं - कहीं स्कूलों में पन्द्रह-बीस लड़कों को घेर कर बैठा लेते हैं। देहातों के स्कूलों में तो कोई बच्चा नहीं जाता।'

'पर बंसीलाल चैन की बंसी बजा रहा है' एक और शिक्षक बोल उठता है। शायद वह नहीं जानता कि कहीं कुछ भी हो इस देश की राजनीति चैन की बंसी बजाने की राजनीति है।

'प्रतिदिन कितने लोग अपने को गिरफ्तार कराते हैं?'

'कोई पांच सौ?'

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

अध्यापक आंदोलन

किसान-मजदूर सरकार के बिना पूंजीवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता

O रामधारी शास्त्री

हरयाणा बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की धरती है । यहां की जनता जहां निश्छल और निष्कपट है वहां बहादुर और कुर्बानी का माद्दा भी रखती है । हरयाणा प्रान्त अलग बनने के बाद हमने सोचा था, शायद यहां की जनता को कुछ सुख मिलेगा । परन्तु, इसके विपरीत गरीबों के दमन और शोषण को हम देख रहे हैं । अपना प्रान्त और अपनी सरकार का नारा देकर मीठी गोली के द्वारा एक भयंकर विष दिया जा रहा है । यहां की जनता कुछ करना चाहती है, परन्तु उसकी भावनाओं को यहां के नेताओं ने ठुकराया है । पहला विश्वासघात जनता के साथ यह हुआ कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया गया । पंजाब के साथ सीमा विवाद आदि विषयों को अब तक सुलझाया नहीं जा सका है, क्योंकि मुख्यमन्त्री हर कीमत पर प्रधान मन्त्री को खुश रखना चाहते हैं । **दूसरों के साथ लड़ने का सामर्थ्य तो उनमें है नहीं, परन्तु अपनों को कुचलने और उनका दमन करने में वे बड़े निपुण हैं ।** सारी बुद्धि और नीति शास्त्र का प्रयोग बंसीलाल ने आज अध्यापकों पर कर दिया । जिस कांग्रेसी शासन को यह जनता दुखत्राता मानकर चलना चाहती थी, आज वही खद्दर के वेश में भेड़िए बनकर इस जनता का खून पीना चाहते हैं ।

जिन्हें हम फूल समझे थे, गला अपना सजाने को ।
आज वे नाग बन बैठे हमको काट खाने को ।।

हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने अपना सिक्का जमाने के लिए सबसे पहला प्रहार शिक्षा पर किया । वे कहते हैं कि टट्टू पिटे और ताजन कांपे अर्थात् गरीब अध्यापकों पर रगड़ा चढ़ जाने से फिर कोई सिर नहीं उठा सकेगा और उन्होंने इसी दृष्टिकोण को लेकर पिछले चार साल से अध्यापकों के साथ द्वेष पूर्ण व्यवहार किया । परन्तु गई थी नमाज बकसवाने रोजे गले पड़ गए । बंसीलाल चाहते थे सिक्का जमाना, परन्तु अत्याचार पूर्ण इस व्यवहार ने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया और यह क्रान्ति कभी शान्त नहीं होगी ।

मैं पाठकों का ध्यान उन तथ्यों की ओर दिलाना चाहता हूँ जिनकी बंसीलाल अवहेलना करना चाहते हैं । जहां तक अध्यापकों के साथ व्यवहार की बात है आप सभी ने अपनी आंखों से ही देख लिया और सुन लिया होगा । **मेरे देश के गुरु को जीप के पीछे बांध कर घसीटा गया । गालीगलोच और अपमान जनक व्यवहार के साथ कुछ ऐसी बातें हैं जिनको लिखते लेखनी कांप जाती है । आखिर यह अध्यापक कहीं आकाश से तो नहीं उतरे। यह आपके ही बेटे-पोते, लड़के-लड़कियां हैं । आज उनको आपके सामने ही नंगा करके नचवाने का प्रयास किया जा रहा हो और आप आंखें बन्द कर लें, इससे कार्य नहीं चलेगा ।** जहां तक बात स्थानान्तरण नीति की है यदि यह भी सबके लिए बराबर होती तो भी सन्तोष हो जाता । मैं सैंकड़ों ऐसे उदाहरण दे सकता हूँ कि बंसीलाल, कांग्रेसी विधायकों और मन्त्रियों के सगे सम्बन्धी आज भी अपने घर के नजदीक स्कूलों में बैठे हैं । कहां गया वह बीस मील का नियम; नियम तो जरूर है परन्तु दूसरों के लिए 'अन्धा बांटे बाकली अपने अपनों को दे' वाली बात ठीक चरितार्थ होती है । यह नियम तो केवल कागजों में ही रह गया है, व्यवहार में नहीं । जब सरकार ने दूसरे अध्यापकों को स्कूलों में भेजने की कोशिश की तो बच्चों ने जगह-जगह पर पिटाई से उनका स्वागत किया, क्योंकि वे गद्दारी कर रहे थे । जब इनकी यह बात नहीं चली तो इन्होंने विद्या के स्तर को चार चांद लगाने की एक और योजना बनाई । गांव के ही पुराने चौथी पांचवी पास लड़कों को अध्यापक के रूप मैं कई जगह रखने का प्रयास किया गया, जिनमें से बहुत से बाद में छोड़ कर चले गए । अब आप सोचिए कि यह स्थानान्तरण नाम की नीति है या दुराग्रह है ? जब गांव के ही अनपढ़ों को अध्यापक बनाया जा रहा है तो बीस मील वाली बात कहां तक व्यावहारिक है ।

बंसीलाल अपने भाषणों में आजकल एक और बात कहते फिर रहे हैं कि मैं अध्यापकों को रगड़ कर रख दूंगा, क्योंकि वे शराब पीते हैं और प्रातः उनकी खाट के नीचे शराब की बोतल मिलती है । हम और हमारा दल (आर्य सभा) शराबबन्दी के लिए आन्दोलन चला रहा है और हमारे नेता स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश जेलों में पड़े हैं । परन्तु इस सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी । मैं पूछना **चाहता हूँ बंसीलाल से, क्या यह शराब किसान बनाते हैं या अध्यापक बनाते हैं या दुकानदार बनाते हैं ? आखिर बंसीलाल ही तो कारखानों में शराब का निर्माण कराता है** और दावा करता है कि शराब से सरकार को ग्यारह करोड़ की आमदनी होती है। हरयाणा सरकार शराब के कारखाने और ठेके खोलती है और जबरदस्ती लोगों को पीने के लिए बाधित किया जाता है । यह पूंजीवादी षड्यन्त्र है। आम जनता की जेब से पैसा लाल-पीली बोतल दिखाकर छीन लिया जाता है । यदि बंसीलाल शराबियों के ही विरोधी हैं तो कुछों को छोड़कर उनके सभी

विधायक, मन्त्री और बड़े-बड़े राजकर्मचारी शराब की प्याली में क्यों डूबे रहते हैं ? यदि शराब का बहाना लेकर कुचलना है तो पहले इनको कुचलना चाहिए ।

परन्तु कमाल इस बात में है कि बंसीलाल प्रत्येक व्यक्ति को लोभ और लालच देकर शासन करना चाहता है । यह तो ठीक है कि हरयाणा-विधान सभा के प्रत्येक प्रतिनिधि की जबान को ताला लगा दिया गया है और वे हर समय रात को दिन और दिन को रात कहने के लिए तैयार रहते हैं । परन्तु , उनके साथ भी यह हालत हो रही है, जो एक घटना से स्पष्ट होगी । एक व्यक्ति गधी पर सब्जी का भार लाद कर ला रहा था तो ज्यादा भार से पीड़ित होकर वह गधी जमीन पर बैठ गई । जब उस व्यक्ति के बार-बार पीटने पर भी वह पशु न उठा तो उसने एक योजना बनाई और मूली के हरे-हरे पत्ते उसको दिखाए । वह खड़ी हो गई । व्यापारी ने दो मूली के पत्ते गधी के सिर पर नीचे की ओर लटका कर बान्ध दिये और वह हरे पत्तों को प्राप्त करने के लालच में चलती रही । इसी प्रकार हरयाणा के विधायकों को भी बंसीलाल टुकड़ा दिखाते रहते हैं और वे उसको प्राप्त करने के लिए उसके पीछे चलते रहते हैं । हरयाणा के विधायक बंसीलाल की तानाशाही और जुल्मों को सह सकते हैं, परन्तु हरयाणा की जनता अब अंगड़ाई लेकर खड़ी हो गई है । अब इस षड्यंत्र को सहन नहीं किया जाएगा ।

जब हमने गांव-गांव में घूम कर देखा तो स्कूल पूर्ण रूप से बन्द पड़े थे । अब जनता की सहानुभूति भी अध्यापकों के साथ बन चुकी है । प्रत्येक विद्यार्थी और युवक गुरु के अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो गया है । शीघ्र ही विद्यार्थी भी प्रचण्ड रूप से आंदोलन की भट्ठी में कूद पड़ेंगे । आज का युवक शहीद बिस्मिल के अमर गीत को एक स्वर में गाने के लिए तैयार है—

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है ।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है ॥

आज हरयाणा का बच्चा-बच्चा उन गलत अफवाहों को समझ चुका है, जो हरयाणा सरकार द्वारा फैलायी जा रही है । आज बंसीलाल के चमचे गांव में जाकर कहते हैं कि यदि अध्यापकों का वेतन बढ़ गया तो किसानों पर कर बढ़ जाएगे । मैं इन चतुर प्रचारकों से पूछना चाहता हूं, क्या उन्होंने नए बजट को देखने की कोशिश की है, जिसमें किसानों को पीस कर रख दिया गया । इतने भारी कर आज तक किसी सरकार ने किसानों पर नहीं लगाये । एक ओर यह सरकार अपने आपको किसानों को शुभचिन्तक मानती है तो दूसरी ओर उन पर भयंकर प्रहार कर रही है । इस लिए अब जरूरत है आर्य सभा के नेतृत्व में किसानों और मजदूरों की सरकार बनाने की । इसके बिना इस पूंजीवादी सरकार से छुटकारा नहीं मिल सकता । *

महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, झज्जर रोड, रोहतक

हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा

(पृष्ठ २ का शेषांश)

'कौन पहले गिरफ्तार हो कौन बाद में, यह कैसे निश्चय होता है ?'

जिस का पैसा पहले खत्म होने लगता है वह गिरफ्तार हो जाता है । चलते समय कोई पंद्रह रुपया कोई, बीस-तीस रुपया डाल कर लाया था । यहां रोटी दाल में जब यह पैसा खत्म होने लगता है तब उसका नंबर आ जाता है ।

'लोग कितना पैसा ले कर भागे होंगे ?'

'यही बीस-तीस रुपये । उसके लिए भी जुगाड़ करनी पड़ी ।'

'आप कितना पैसा ले कर आये थे ?'

'सौ रुपया ?'

'खत्म हो गया सब ?'

'हां, कुछ की जेब में १५ रुपये भी नहीं थे ।'

बसों के सामने हथियारबंद पुलिस की पंक्तियां थीं । जैसे खूंख्वार अपराधियों को ले जाया जा रहा हो । कुर्सी पर बैठा एक आदमी नाम बोल रहा था । हाजिरी चल रही थी । सवाल और भी बहुत से थे पर खुली इजलास में ज्यादा समय नहीं था । मेरी जबान भी अटक गयी थी । सारी पूछताछ निष्फल प्रयोजन लगती थी । अपनी न्यायोचित मांग की लड़ाई में हर आदमी, हर वर्ग कितना अकेला है ? राजधानी मे बड़े-बड़े लेखक, कलाकार, बुद्धिजीवी, वकील डाक्टर हैं पर किसी को उस तकलीफ से सरोकर नहीं जो एक आम शिक्षक झेल रहा है । थोड़ी देर के बाद वे बसों में भर कर ले जाये जा रहे थे । कनाट प्लेस से हो कर उनकी नारें लगाती बसें जा रही थीं । ये रोजमर्रा की बातें हैं । किसी ने ध्यान देने की भी जरूरत नहीं समझी कि कौन लोग हैं ये ? कहां ले जाये जा रहे हैं ? क्यों ले जाये जा रहे हैं ? एक दूसरे की नियति से सब कितने उदासीन और तटस्थ हैं । हमने चलते समय एक बस के ड्राइवर से पूछा था 'कहां ले जा रहे हो इन्हें ? उसने कहा 'फिरोजपुर' । फिर एक सिपाही से पूछा । उसने कहा 'बरेली' । लेकिन शिक्षकों को नहीं मालूम था कि वे कहां जा रहे हैं । इस लोकतंत्र में क्या किसी को मालूम है ? *

दिनमान, बहादुरशाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली

आवरण-कथा

आवरण पृष्ठ पर राइफल की बट और लाठी से पिटता हुआ, भारत के भविष्य का निर्माता अध्यापक दिखाई दे रहा है ।

इस चित्र को राजस्थान के युवा चित्रकार सुमहेन्द्र ने लकड़ी पर काट कर भेजा है । उनका पता है—कलावृत्त, बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, जयपुर ।

भगतसिंह के बलिदान-दिवस पर विशेष लेख

जन क्रांति, जनता द्वारा, जनता के लिए


शहीद भगतसिंह

O रामशरण जोशी

हरयाणा प्रदेश में शिक्षकों का न्यायोचित संघर्ष दिन-ब-दिन तेजी से बढ़ता जा रहा है। उनका संघर्ष किसी अंग्रेज शासक या गोरी सत्ता के खिलाफ नहीं है। उनका संघर्ष है; भ्रष्ट चुनाव पद्धति पर आधारित तथाकथित जन प्रतिनिधि स्वदेशी सरकार, यानि 'काले आकाओं' की सरकार के खिलाफ है। आखिर ऐसा क्यों? आज भी हम गोरे आकाओं के स्थान पर काले आकाओं के कैदखाने में क्यों बन्द हैं? हमारी इस गुलाम अवस्था के विरुद्ध संघर्ष घोषणा सन् १९२८ में ही शहीद भगत सिंह ने कर दी थी—**"किसानों एवं मजदूरों को विदेशी हुकूमत के साथ-साथ देशी भूपतियों और पूंजीपतियों के शोषण से भी मुक्ति पाना है, किन्तु कांग्रेस का लक्ष्य यह नहीं है।"**

आखिर कांग्रेस का ऐसा लक्ष्य क्यों नहीं रहा? इस सिलसिले में तरुण शहीद का सही विश्लेषण था—'कांग्रेस देश को आजाद कराने के बाद श्रमिकों और कृषकों को पूंजीपतियों एवं भूपतियों के शोषण से मुक्त नहीं कराना चाहती। कांग्रेस दुकानदारों (बड़ा) और पूंजीपतियों के जरिये इंग्लैंड पर आर्थिक दबाव डाल कर कुछ अधिकार ले लेना चाहती है'। इसीलिए आज श्रमिक, कृषक, छात्र एवं शिक्षक वर्ग काले शोषकों की सत्ता को ध्वस्त करने के लिए सड़कों पर निकल पड़ा है।

शहीद की भविष्यवाणी के आधार पर प्रस्तुत लेख में मैं भगतसिंह के जीवन लक्ष्य पर चर्चा करना और उसे आज की जिन्दगी से जोड़ना अधिक पसंद करूंगा, क्योंकि उनकी जीवन-कथा के सम्बन्ध में प्रायः आज सभी पढ़ चुके हैं। वैसे संक्षेप में कहा जाए तो उनका जन्म २८ सितम्बर १९०७ को एक सिख परिवार में हुआ। परिवार में उनके अतिरिक्त चाचा अजीतसिंह व सुवरनसिंह भी देशभक्त रहे। भगतसिंह का सम्पर्क चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त, यशपाल, दुर्गा भाभी आदि क्रान्तिकारियों से रहा। ८ अप्रेल १९२९ को केन्द्रीय एसेम्बली की दर्शक दीर्घा से भगतसिंह ने चन्द साथियों के साथ बम फेंका। बम फेंकते समय नारे थे—'इंकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद का नाश हो, दुनिया के मजदूरों एक हो।'

मुकदमा चला। २३ मार्च को भगतसिंह, सुखदेव एवं राजगुरु फांसी पर चढ़ा दिए गए। फांसी से पूर्व एक सन्देश में उन्होंने कहा—"जनता द्वारा जनता के लिए क्रान्ति।"

यहीं से चर्चा का सिलसिला शुरू किया जाता है। भगतसिंह ने जब 'जनता' एवं 'क्रान्ति' कहा है तो प्रश्न उठता है, आखिर उनका इन शब्दों से क्या रिश्ता था? भगतसिंह एवं अन्य क्रान्तिकारियों की दृष्टि में जनता वही होती है जिसका सम्बन्ध मेहनतकश वर्ग से है। जनता से कृषक, श्रमिक तथा उन सभी व्यक्तियों को जोड़ा जा सकता है, जिनका जीवन-आधार 'श्रम' है और शोषण विहीन समाज रचना के लिये संघर्षरत है, प्रत्येक ढंग से। इस स्वप्न को साकार बनाने के लिये भगतसिंह ने घोषणा की थी—'मैं अपने दल में लक्ष्य और साधनों के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। दल का नाम होगा सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी और इसका कार्य समाजवादी समाज की स्थापना करना है। कांग्रेस और इस दल के लक्ष्य में यही भेद है कि **जब राजनीतिक क्रान्ति से शासन-शक्ति अंग्रेजों के हाथ से निकल कर हिन्दुस्तानियों के हाथों में आ जाएगी तो कांग्रेस यहीं रुक जाएगी, (जैसा कि उसने किया भी) जबकि हमारा लक्ष्य समाजवाद होगा। इसके लिए मजदूरों एवं किसानों को संगठित करना होगा। इनको विदेशी हुकूमत के जुए के साथ-साथ जमीदारों और पूंजीपतियों के जुए से भी उद्धार पाना है। परन्तु कांग्रेस का उद्देश्य यह नहीं है।"** (कितना बड़ा युग यथार्थ!)

अतः भगतसिंह की असली जनता वो ही है जो कमेरा है। आज भी इस कमेरे को संघर्ष करने की आवश्यकता है क्योंकि कांग्रेस ने तो अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया यानी देश के दस-पन्द्रह प्रतिशत वर्ग को स्वाधीनता दिला कर शोषण का राज स्थापित कर लिया है, परन्तु देश का ८५ प्रतिशत कमेरा वर्ग आज भी शोषण की चक्की में पिस रहा है। स्वयं शोषक सरकार के अनुसार देश के २०-२५ करोड़ व्यक्तियों की दैनिक आय ६० पैसे है। दूसरी तरफ देश के ६५ परिवारों की आय में कई सौ गुना वृद्धि हुई है। देश के प्रमुख शोषक बिड़ला समूह के पास ६३-६४ में १५१ कम्पनियां थीं और कुल चुकता पूंजी ७६ करोड़ थी एवं कुल परिसंपत्ति २९३.४० करोड़ थी। अब यह बढ़ कर १५९ से अधिक कम्पनियां, चुकता पूंजी १०५ करोड़ और कुल परिसम्पत्ति ५०९ करोड़ रु० से अधिक है। यही

स्थिति टाटा, साहू जैन, डालमिया, मार्टिन बर्न, जे.के. सिंघानिया, साराभाई, गोयनका, मफतलाल, किर्लोस्कर, एंड्रयू पूल आदि की है। संक्षेप में सर्वोच्च ७५ व्यवसायी घरानों की कुल चुकता पूंजी, तमाम गैर सरकारी और गैर बैंक कम्पनियों की कुल चुकता पूंजी का ४४ प्रतिशत है।

स्वदेशी पूंजीपति विदेशी पूंजीपतियों से मिल कर भारतीय श्रम को सस्ते दामों में खरीद कर विदेशों में सामान निर्यात कर मुनाफा कमा रहा है। यहां की जनता का लूट का माल विदेशों में उद्योग धन्धे स्थापित करने में लगा रहा है। भारतीय पूंजीपतियों ने विदेशों में १२६ औद्योगिक इकाइयां स्थापित की हैं। इस क्षेत्र में भी बिड़ला परिवार ने बाजी मार ली है।

भारतीय पूंजीपति दो तरफा मुनाफा कमा रहा है। एक तरफ तो वह अपनी दलाल सरकार पर दबाव डाल कर विदेशी वस्तुओं पर ऊंचे आयात कर लगवा देता है, दूसरी तरफ मनमाने भावों पर अपना सामान गरीब जनता को बेचता है। इसके अतिरिक्त देश में सस्ते दामों पर श्रम खरीदता है और मोटा मुनाफा कमाता है।

यह लूट एवं शोषण भारतीय संविधान के तहत जारी है, जिसे कांग्रेस ने १९४७ के बाद बनाया है। वास्तव में इस संविधान के निर्माता ऊंचे वर्गों के थे, जिनका भारत की जनता से कोई रिश्ता नहीं था। संविधान निर्माता भारत की कुल जनता के ९ से १३ प्रतिशत के प्रतिनिधि थे। इस प्रकार सामन्त, पूंजीपति एवं दलाल नौकरशाहों के संकेत पर संविधान भारतीय जनता पर बलात् लादा गया। मौलिक अधिकार एवं सम्पत्ति के अधिकार का आकर्षण दिखा कर जनता को गुमराह किया गया। वर्तमान काले शासकों ने यह भयंकर अपराध किया है, जिसके लिए उन्हें सख्त दण्ड दिया जाना चाहिए।

गोरे एवं कालों के चंगुल से मुक्ति के लिए भगतसिंह ने जन क्रांति का मार्ग दिखाया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में भारतीय जनता से कहा—'**क्रांति से हमारा अभिप्राय समाज की वर्तमान प्रणाली और संगठन को पूरी तरह उखाड़ फेंकना है। इस उद्देश्य के लिए हमें पहले सरकार की ताकत को अपने हाथों में लेना चाहिए। हम इसी उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं, परन्तु इसके लिए हमें साधारण जनता को शिक्षित करना चाहिए।** यानि कि परिवर्तन जनता के द्वारा, जनता के लिए।

इसी महान लक्ष्य की उपलब्धि के लिए सभी संघर्षरत वर्गों को एक जुट होना पड़ेगा। तभी शोषकों के विरुद्ध युद्ध सफल हो सकता है, क्योंकि क्रांति केवल सत्ता परिवर्तन तक ही सीमित नहीं रहती। मूलतः वह समाज की शोषक व्यवस्था और उस पर हावी घिनौनी ताकतों को ध्वस्त करती है। बुनियादी रूप से क्रांति के दौरान दो ही वर्ग होते हैं, शोषित एवं शोषक यानि कमेरा व लुटेरा (आर्य एवं दस्यु)।

ऐसी स्थिति में हमें एकजुट होना पड़ेगा। आज शिक्षकों का संघर्ष है, कल को श्रमिकों का होगा और परसों नौजवानों का। जब तक इनमें एकता नहीं होती और साफ नज़रों से काले शत्रु को नहीं देखते, तब तक संघर्ष अधूरा रहेगा।

युवकों ने प्रत्येक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहां तक कि वह एक सीमा तक 'अगुवाई-दल' का भी काम करता है। भगतसिंह ने ठीक ही कहा है— '**नौजवानों से हमारा कहना है कि इस उद्देश्य के लिए उन्हें कार्यकर्त्ता बन कर निकलना चाहिए। पर्चे, पुस्तिकाओं, छोटे-छोटे पुस्तकालयों, भाषणों, बातचीत आदि से हमें अपने विचारों का सर्वत्र प्रचार करना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा 'तरुण अपने होंठों पर मुस्कान लिए अत्यधिक अमानुषिक यंत्रणायें सह सकते हैं और बिना किसी हिचक मृत्यु की आंखों में आंखें डाल सकते हैं, क्योंकि मानव प्रगति का समूचा इतिहास ही तरुण-तरुणियों के रक्त से लिखा गया है।'**

वर्तमान परिस्थिति पर दृष्टि जाती है, तो चारों तरफ लूट का साम्राज्य दिखाई देता है। काला बाजारी, कर चोरी, जमाखोरी, महंगाई, भ्रष्टाचार पनप रहा है। सरकारी अनुमानों के अनुसार ३० अरब से भी अधिक का काला धन है। १३ से २० अरब के बीच सरकारी कर पूंजीपतियों पर बकाया है। कर-वंचक मंत्री सम्मान के साथ जी रहे हैं, जबकि एक गरीब किसान विवशता के कारण लगान नहीं दे पाता है तो उसकी भूमि कुड़क कर ली जाती है। शिक्षक संघर्ष करते हैं तो जेलों में ठूंसा जाता है, उनके विरुद्ध मुख्यमंत्री असभ्य बातें कहते हैं। देश की विभिन्न जेलों में आज हजारों लोग बंद हैं जिन्होंने जनता के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष में भाग लिया।

हुतात्मा भगतसिंह के माध्यम से की गई इस चर्चा का सार यही है कि हमें अभी वास्तविक मुक्ति प्राप्त करनी है। तभी हम भगत सिंह एवं अन्य क्रांतिकारियों को सही समझ की श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे।

चर्चा का सिलसिला यहीं खत्म करते हुए एक शेर याद आ रहा है—

हम ग़रीबों को भला खौफे बगावत क्यों हो
अपने कब्जे में जरो माल कहां रखा है,
छिन भी जाएंगे बस तौको सलसिल हमसे
और पाने के लिए एक जहां रखा है। *

१०८, राउज एवन्यू, नयी दिल्ली

आवश्यकता, उबलते रक्त की

o सोमदेव गोयल

विशाल देश की विशाल परम्परायें, विशाल प्रजातांत्रिक माध्यम से किया जाने वाला शोषण, विशाल तथाकथित सामाजिक व्यवस्था, सभी कुछ तो विशाल है। हृदय भी विशाल है, जिसने अनेक जातियों का, अनेक संस्कृतियों का समन्वय अपने आप में किया। आज के समाज की व्यवस्था के नीचे पिसती हुई नई पीढ़ी, जिसको कि शुरू से ही कुंठित बनाया जा रहा है। साम्राज्यवादी व्यवस्था ने इस समाज के अन्दर इस सुनियोजित ढंग से षड्यंत्र का चक्रव्यूह तैयार किया है जिसमें मानवता घुल-घुल कर अपना दर्दनाक अंत कर लेती है। गरीबी हटाओ और धर्म निरपेक्षता के नारों ने ही हमारे देश के प्रबुद्ध वर्ग के लोगों को सोचने के लिये बाध्य कर दिया है। सारी की सारी पूंजीवादी ताकतें, साम्राज्यवादी वारदातें हमारे मानव समाज और धर्म के लिये मंद जहर साबित हो रही है। आज की युवा शक्ति को कुंठित बनाया जा रहा है। नई पीढ़ी की भावनाओं को, विवेकशीलता को, महत्वाकांक्षाओं को, उन की प्रतिभा को इस तथाकथित समाजवाद और सामाजिक व्यवस्था ने रौंद कर रख दिया है।

समाजवाद का नारा देने वाली इंदिरा सरकार, धर्म निरपेक्षता की शुभ चिंतक, यह भ्रष्ट और नपुंसक कांग्रेसी सरकार, विदेशी ताकतों के आगे सिर झुकाने वाली इस सरकार ने मानव मात्र को अपने स्वाभिमान और गौरव से हजारों मील गहरे गर्त में धकेल दिया है। आश्चर्य की बात यह है कि जनमानस उसमें असहाय-सा, विवश-सा, निर्निमेष हो कर पिसता जा रहा है। पता नहीं उसकी शाम कब होती है, कब सुबह होती है। बस होती है और नित्य एक नवीन प्रहार कर जाती है, जिससे दिनों दिन वह इतना आतंकित होता जाता है कि जीने मात्र की भी उसे लालसा नहीं होती। सुबह से शाम तक गाढ़े खून का पसीना बहाकर अपने घर वापस आता है तो क्या मिलता है उसे ? बच्चों की निर्निमेष आँखें जो शायद बाहर निकलने को आकुल हो रही है। पत्नी की द्वार से लगी आंखों में व्याकुलता का दीप जो बार-बार अपनी दीप शिखा को इस तरह हिला रहा होता है मानो यह बुझने का आखिरी संदेश दे रहा हो। घर में घुसते ही चारों ओर भूख और बेबसी का अहसास उस अन्याय और शोषण में पिसे व्यक्ति को बरबस अपनी आँखें बन्द कर लेने के लिये बाध्य कर देता है। जैसे-तैसे राशन के कचरा मिले हुए गेहूं के आटे का सत्तू बनाकर खा लेना, उसको नाना प्रकार के मिष्ठान्नों से भी अधिक शांति देता है। वो जानता ही कहां है कि चीनी का स्वाद कैसा होता है ? उसे कल की चिन्ता सताने लगती है, कल क्या होगा ? भरी सर्दी का मौसम और झोंपड़ी में असंख्य खिड़कियां उसे रात भर सोने भी तो नहीं देती। आज भी दिन में गाँव के महाजन से पचास रुपये उस जीर्णशीर्ण झोपड़ी के लिये मांगे थे। मिन्नतें की थी, पैरों में सिर रखकर बहुत गिड़गिड़ाया था लेकिन क्या होता सब व्यर्थ ! कहां से लाता गिरवी रखने के लिये सामान ? पत्नी के जेवर और घर के बर्तन तो पहले ही उस सूदखोर की भेंट चढ़ा चुका था, अब बचा ही क्या है ? सारी रात सुबह के बारे में तारे गिन-गिन कर यही सोचता रहा कि जब सुबह होगी बच्चा कहेगा– 'बापू रोटी'। क्या जवाब होगा उसके पास ? क्या दे सकेगा उसको वह ? मात्र दो आंसू ! लेकिन इस बच्चे को आंसू नहीं, रोटी चाहिये !

उसके मन में एक विद्रोह की भावना जन्म लेती है। वह अपने बच्चों व पेट के लिये आज पहली बार चोरी का सहारा लेता है, लेकिन उसकी अंतरात्मा की आवाज ऐसा करने की आज्ञा नहीं देती है, दूसरी ओर अपने बच्चों का मासूम और निर्दोष चेहरा, अपनी पत्नी की व्याकुलता से भरी आँखें देख कर विवश हो जाता है। वापस हिम्मत करता है उन साम्राज्यवादी और पूंजीवादी जमाखोरों से बदला लेने की। जोश में आ कर घर में पड़ा सब्जी काटने का चाकू ही ले लिया। चोरी करते समय पकड़ा गया और वह निर्दोष सरमायेदारों व कानून के ठेकेदारों की जेल में आकर बंद हो गया। न तो बच्चों को रोटी ही मिल पाई और न अपने हृदय में जलती हुई आग की ज्वाला को ही बुझा सका। निढाल हो कर ही पड़ गया और वह सब्जी काटने का चाकू ही उसकी दर्दनाक मौत का कारण बन गया। कितनी ही मिसालें मिल जायेगी। इस समाजवादी खाल ओढ़े पूंजीवादी सरकार की नीतियों में। घिनौनी हत्यायें भी तो इस तथाकथित सरकार के मठाधीशों की आंखों के सामने होती रहती है। चलो मर गया एक भिखारी, एक भिखारी ही क्यों सरकार के लिये तो उसका अस्तित्व एक मच्छर से ज्यादा नहीं था। ताजमहल जैसे होटलों में बैठ कर सुरा सुंदरी के रंग में डूबे हुए क्या जाने गरीबी या भूख कैसी होती है ? मखमल के गद्दों में सोने वाले टाट-बोरियों के सपने देख ही कैसे सकते हैं ? ये समाजवादी खटमल मानव के शरीर को चूस-चूस कर मात्र ढांचा बना देना चाहते हैं। उनसे अब गिन-गिन कर बदला लेना होगा। उन्हें बता देना होगा कि एक शक्ति ऐसी भी है

जो उन जैसे दानवीय पशुओं का संहार करने की क्षमता रखती है।

दूसरी ओर, घूमते हुए शिक्षित बेरोजगार पता नहीं दिन में कितनी बार इन भाई भतीजावाद से घिरे लोगों के पास परिक्रमा लगाते हैं, जिसका कि फल उनको डांट फटकार या अपमान में मिलता है। मर गया है स्वाभिमान ! समाप्त हो चुकी है गौरव गरिमा ! भस्म हो चुकी है मानवता ! युवक जो कल का कर्णधार है, सूत्रधार है, इस देश का भारवाहक है, उसके कंधों को तो अभी से ही जख्मी कर दिया गया है। क्या बोझ झेल सकेगा वह राष्ट्र का ? उसको पनपने ही कहां दिया जाता है। यदि थोड़ी भी उग्रता दिखाये तो असामाजिक तत्व करार दे कर जेलों में ठूंस कर जेल तोड़ कर भागने के जुर्म में गोली का निशाना बना देते हैं और देश का कर्णधार हृदय विदारक अंत को प्राप्त होता है। यह इस तथाकथित समाजवादी सरकार की मनगढंत बातें या परिकल्पनाएं नहीं हैं बल्कि वास्तविकता है, जो युवकों का खून खौला देने के लिये काफी है। लेकिन प्रश्न तो इस बात का है कि वह खून खौल कर अन्दर ही रह जाता है बाहर नहीं निकल पाता। जब यह गर्म खून बाहर आयेगा तभी इस देश का आम व्यक्ति उन खून की बूंदों पर अपने बलिदानों से महल खड़ा करेगा और सरमायेदार व पूंजीपतियों को दफना देगा। जिस समाज में जातिवाद को प्रोत्साहन मिलता हो, अमीरी गरीबी का नगा नाच हो रहा हो, जिसने एक ऐसी खाई पैदा कर दी हो जो गरीबों और मेहनतकश लोगों को भयानक मौत दिलाने में सहायक हो, ऐसे समाज में पेट्रोल छिड़क कर आग लगानी है, ताकि उसमें पूंजीवादी खटमल, मठाधीश पिस्सु और सरमायेदार जोंके जल कर राख हो जाये और मानव चैन की सांस ले कर एक नये ढंग से समाज की रचना करे। देश प्रगति के उस उच्च शिखर पर पहुँच जाये, जहां देश प्रेम और राष्ट्र बलिदान की कद्र होती हो। आंखें फोड़ दी जाये उस दुश्मन की जो बुरी नियत से इस आर्य देश की तरफ देखता हो।

यही तो आर्य राष्ट्र है जिसकी स्थापना अत्यंत आवश्यक है। संहार करना होगा उन शोषकों का। लेकिन यह आर्य राष्ट्र ऐसे ही बन जायेगा ? क्या इसको बनाने के लिये कुछ भी आवश्यकता नहीं है ? क्या मात्र आर्य राष्ट्र का नारा इसके लिये पर्याप्त होगा ? क्या देश की युवा पीढ़ी इसको एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकालती रहेगी ? इसके लिये आवश्यकता है गर्म खून बहाने की। वही भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद की तरह स्वाधीनता संघर्ष को दोहराना होगा। बलि देनी होगी अपने स्वार्थों की ! परिवर्तन का पलीता तैयार हो चुका है, उसमें आग भी लग चुकी है, फैल रही है, जो शनैः शनैः एक दिन इन सरमायेदारों और जमाखोरों, पूंजीवादियों की अट्टालिकाओं को धाराशायी कर के रख देगी और इस जगह रहेगा वह गरीब जिसने अपने खून के गारे से उसको बनाया था। अब इस अग्नि को जितनी बुझाने की कोशिश की जायेगी उतनी ही फैलती चली जायेगी। अब वह समय शीघ्र आने वाला है जब तथाकथित इन मठाधीशों और सरमायेदारों की मुंडिया चोटी पकड़े हमारे हाथों में होगी। लेकिन इसके लिये उबलते हुए नये रक्त की आवश्यकता है। ❋

मंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, किशनपोल बाजार, जयपुर

लेखकों से निवेदन

- **शोषण, जीवन के दोहरेपन और वर्तमान सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों के दिग्भ्रम तथा पाखण्ड पर प्रहार करने वाली रचनायें, 'राजधर्म' सादर आमंत्रित करता है।**
- **विशेष अवसरों पर प्रकाशित की जाने वाली रचनाओं को, उस तिथि से एक माह पूर्व भेजा जाय। रचनायें सामान्यतः दो हजार शब्दों से बड़ी नहीं होनी चाहिए तथा सुस्पष्ट लिपि में लिखी या टंकित होनी चाहिए।**
- **'राजधर्म' वर्तमान में लेखकों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है। अतः यदि लेखक का कोई विशेष आग्रह हो, तो रचना पर इसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।**
- **स्वीकृत रचना के बारे में पन्द्रह दिन में सूचना दे दी जायगी। सूचना न मिलने की स्थिति में रचना को अस्वीकृत समझा जाय। रचना लौटाने के लिये टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजें।**
- **'हमारी कसौटी पर' स्तम्भ में, पुस्तक की दो प्रतियां आने पर ही समीक्षा हो सकेगी।**

शराबी भारत : देशी षड्यंत्र की कहानी

O नीरजकुमार शर्मा

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था– 'यदि मैं एक दिन के लिये हिन्दुस्तान का बादशाह बनूं, तो तमाम शराब व ताड़ी की बिक्री पर पाबंदी लगा दूं। शराबी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र नष्ट हो जाता है।' परन्तु अपने को गांधीवादी कहने वाला शासन तंत्र गांधी जी की इस अभिलाषा को पूरा करने में निष्ठा नहीं दिखा रहा है।

सन् १९६८ में गोआ में कांग्रेस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि सन् १९७५ तक सम्पूर्ण भारत में पूरी तरह नशाबंदी लागू कर दी जायेगी, परन्तु आज १९७३ में हम देखते हैं कि शराब-बिक्री के परमिट या लाइसेंस सरकार के द्वारा जारी किये जा रहे हैं। महानगरों में "असली शुद्ध शराब" की दुकानें अथवा केन्द्र खोले जा रहे हैं। भारत के जिन राज्यों में नशाबंदी का कानून चल रहा था उन्हें समाप्त किया जा रहा है। इसके पीछे सरकारी दलील यह दी जाती है कि इस कानून का कोई लाभ नहीं, क्योंकि इसके रहने पर भी शराब बिकती है, चाहे चोरी छिपे बिकती हो। इस दलील को देने वाले यह नहीं सोचते कि यदि कोई बुराई होती हो तो उसे रोकने का क्या प्रयत्न होना चाहिये ? पूरी कानूनी व्यवस्था होने के बावजूद भी चोरी डकैती होती है तो क्या यह बेहतर होगा कि चोरों और डाकुओं को भी लाइसेंस दे कर समाज में प्रतिष्ठित किया जाये ?

बड़े आश्चर्य की बात यह है कि महाराष्ट्र सरकार ने शराब की बोतल को आधे दामों में उपलब्ध कराने की घोषणा की है। वहां पर शराब को सस्ती बनाने के लिये सरकारी कर भी नहीं लगाया जाता। इससे सिद्ध हो जाता है कि शासक वर्ग दूध-दही की नदियां तो नहीं बहा सका, परन्तु देश में शराब की नदी बहाने को तत्पर है। आज महंगाई के कारण व्यक्ति की जरूरी आवश्यकतायें रोटी-कपड़ा व मकान उपलब्ध हो या न हो, परन्तु सस्ती शराब उपलब्ध कराने में शासन सकल्पबद्ध है।

कौन नहीं जानता कि शराब की लत आदमी को कहीं का नहीं छोड़ती। इसका आदी होकर व्यक्ति जर-जमीन व जनानी सब को बेच डालता है और फिर स्वयं अंधा अथवा कोढ़ी होकर अपने लिये नरक का रास्ता खोल लेता है। एक शराबी ने पिछले दिनों मुझे बताया- "साहब, मैं तो बच गया वरना इस शराब ने मुझे कहीं का न छोड़ा था, मेरी सारी सामाजिक प्रतिष्ठा धूल में मिल गयी थी। मुझे अपनी कुछ सुध ही नहीं रहती थी, मैं कहीं भी रात बे रात गली-नाली में पड़ा रहता था। बाद में घर वालों ने मुझे इस स्थिति से उबारने के लिये घर में ही 'खाने-पीने' का आग्रह किया और इस गन्दी लत से मेरा जीवन नष्ट होते-होते बचा। मेरा सारा रंग उल्टे तवे की तरह काला पड़ गया, जो कुछ खाता था वो हजम होना बन्द हो गया। इससे अगली यह दशा आई कि मेरे पैरों ने काम करना बन्द कर दिया। उनमें रक्त-संचालन एकदम समाप्त हो गया और वे बर्फ के समान ठंडे रहने लगे। इस स्थिति पर पहुँच कर मुझे बुद्धि आई और मैंने शराब जीवन में कभी न पीने की तौबा कर ली। इसके बाद धीरे-धीरे एक अनुभवी चिकित्सक के इलाज के कारण मेरी शारीरिक स्थिति सुधर गयी। अब तो सा'ब कोई मुफ्त की पिलाये और साथ में कुछ इनाम भी दे तो भी मैं नहीं पियूं।'

शराब के चलन को जनव्यापी बनाने में सरकार वैसे ही दिलचस्पी रखती है, जैसे कि वह चरस-अफीम-गांजे के प्रचलन के लिये, हिप्पीवाद के फैलाव में रखती है। जनता को पूरी तरह से सुलाये रखने में वह अपना हित समझती है। शासक वर्ग जानता है कि काठ की हांडी बार-बार चूल्हे पर तब चढ़ाई जा सकती है जब जनता एकदम विवेक शून्य बन जाये।

इन सबके साथ सैक्स का भी प्रचार करके स्वार्थ सिद्धि की जा रही है। धर्म में भी गुरुडम व पाखंड फैला कर जनता को मर्माहत किया जा रहा है। अशिक्षित, गरीब व बेरोजगार जनता को सरकार स्वधर्म व संस्कृति से विहीन करके उसे नपुंसक बना रही है और उसे अत्याचार, भ्रष्टाचार, महगाई, अधर्म के कांटों में फंसा कर एकदम मारने पर तुली हुई है। और फिर जैसे भागीरथ अपने पुरखों की मुक्ति के लिये गंगा को धरती पर लाये थे वैसे ही हमारे कर्णधार "अपनी प्रिय जनता" की मुक्ति के लिये शराब की नदी को भारत धरा पर उतारने में लगे हुए हैं।

जिस नाव को स्वयं माझी ही डुबाने लगे उसे कौन बचा सकता है ? ❋

२१/१ शक्ति नगर, नयी दिल्ली

महर्षि अरविन्द ने एक बार अपने शिष्यों से पूछा—"आप लोगों ने यतीन मुकर्जी के बारे में सुना है ?" इसके बाद वे गद्गद् होकर कहने लगे— "वे एक अलौकिक व्यक्ति थे। वे मानवता की मूर्ति थे। उनका डीलडौल एक योद्धा के समान था। मैंने सौन्दर्य के साथ ही साथ शक्ति का ऐसा सुन्दर समावेश अन्यत्र कहीं नहीं देखा जैसा यतीन्द्र में था। मुकर्जी बाघा यतीन के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। वे अपनी युवावस्था में अपने गांव में बंगाल के शाही चीते से लड़े थे और उसे अकेले ही मौत के घाट उतार दिया था। बाघा यतीन की जीवन गाथाएं आज पौराणिक कहानियां बन गयी हैं। वे हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के पथ प्रदर्शक थे। वे ब्रिटिश राज रूपी हाथी के लिए चीते के समान प्रचण्ड साहसी थे, किन्तु उनका हृदय अत्यन्त कोमल था। अपना सर्वस्व भी दान में दे कर रातदिन हैजे तथा प्लेग के रोगियों की सेवा शुश्रुषा करना, प्रसन्न मुद्रा से रोगियों के मल मूत्र को स्वयं फेंकना, सड़कों से पागल मनुष्यों को घर लाना, उन्हें नहलाना, आयुर्वेदिक तेल और औषधियों से उनकी चिकित्सा करना, उन्हें अच्छा भोजन तथा वस्त्र देना, असहाय और निर्धन विद्यार्थियों की सहायता करना, उनके अध्ययन एवं भलाई सम्बन्धी कार्यों को करना, गौरांग महाप्रभुओं के कोप भाजन असहाय मूल निवासियों की रक्षा करना, दुष्टों को दण्ड देना, निर्बल और अभावग्रस्त व्यक्तियों की रक्षा इत्यादि जन सेवा के कार्यों में सदा लगे रहते थे। उनके महान् कार्यों को देखने वाले बहुत से व्यक्ति अभी तक जीवित हैं।"

महान् क्रान्तिकारी डॉ० जयगोपाल ने कहा था—"जतीन का जीवन सजीव गीता था।" दूसरे महान क्रांन्तिकारी श्री एम. एन. राय ने लिखा है— 'वे आधुनिक भारत के प्रथम मानवतावादी थे।" यहां तक कि तत्कालीन बंगाल के प्रसिद्ध सी. आई.डी. कमिश्नर सर चार्ल्स टैगार्ट ने जब यतीन को ब्रिटिश मिलीटरी और पुलिस के सहारे अन्तिम हमले में पकड़ा, तब स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया कि —'उनके प्रति मेरे हृदय में महान सम्मान है। सबसे वीर भारतीय से मेरी आज भेंट हुई है, किन्तु क्या किया जाय, मुझे अपना कर्त्तव्य निभाना था।"

पारिवारिक जीवन और शिक्षा

यतीन्द्रनाथ जैसोर के सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में दिसम्बर १८७९ में पैदा हुए थे। जब वे पांच वर्ष के थे तब उनके पिता का देहावसान हो गया। इसलिये उनका लालन पालन उनकी माता शशि देवी के भाइयों ने किया। उनके पिता उमेशचन्द अपने समय के एक प्रकाण्ड विद्वान थे। इनके मामा भी अपने समय के बंगाल के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलनों में सुप्रसिद्ध व्यक्ति माने जाते थे।

यतीन्द्र के मामा ने शारीरिक शिक्षण, सुरक्षा एवं अस्त्र संचालन के लिए सीमान्त प्रदेश के एक पेंशनयाफ्ता मिलिटरी के व्यक्ति को यतीन्द्र की शिक्षा के लिए नियुक्त किया। कुछ ही समय में यतीन्द्र अस्त्र संचालन आदि में पारंगत हो गये। थोड़े समय बाद वे अच्छे घुड़सवार भी हो गये। कलकत्ते के सेन्ट्रल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे बंगाल सचिवालय में स्टेनोग्राफर के पद पर नियुक्त हुए। वहां उनके काम से उनका आफिसर इतना खुश था कि वह उन्हें सैक्रेटरी के पद के योग्य समझने लगा। थोड़े दिनों में ही वे बंगाल के गवर्नर के व्यक्तिगत सैक्रेटरी बना गये। सन् १९०० में उनका विवाह इन्दुबाला देवी से हो गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि यतीन्द्र का भावी जीवन अत्यन्त ही सुखकर है, लेकिन बंगाल के इस निर्भय बेटे के भाग्य में कुछ और ही बदा था।

आध्यात्मिक पुनर्जागरण से पहले आजादी

उन्हीं दिनों घोर विरोध के बाद भी लार्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन कर दिया। नतीजा यह हुआ कि इस निर्णीत बात को अनिर्णीत करने के लिये पूरा बंगाल एक होकर विरोध में खड़ा हो गया। भला इस राष्ट्रीय भावना की अद्भुत जागृति के समय यतीन्द्र कैसे अछूता रह सकता था ? ऐसे ही समय में यतीन्द्र की मुलाकात भगिनी निवेदिता एवं जे. एन. बनर्जी से हुई (ये बनर्जी बाद में स्वामी निरावलम्बन के नाम से प्रख्यात हुए)। इन दोनों के सम्पर्क में आने पर यतीन्द्र का स्वामी विवेकानन्द से भी परि-

भारत-जर्मन षड्यन्त्र के यतीन्द्रनाथ मुकर्जी

चय हो गया। यदि उन दिनों यतीन्द्र की मुलाकात स्वामी विवेकानन्द से नहीं हुई होती तो यतीन्द्र हरिद्वार के स्वामी भोलानन्द गिरि के शिष्य हो गये होते स्वामी विवेकानन्द की संगति से उन्हें यह विश्वास हो गया कि जब तक भारत आजाद नहीं हो जाता तब तक आध्यात्मिक पुनर्जागरण की बात करना ही व्यर्थ है।

क्रान्ति-पथ पर

बंगाल विभाजन आन्दोलन, प्रार्थना, दया एवं दरखास्तों के दायरों से बहुत आगे बढ़ गया। उसी समय यतीन्द्र के सम्पर्क में अरविन्द घोष एवं ब्रह्म बान्धव उपाध्याय सरीखे मेधावी क्रान्तिकारी आये। यद्यपि यतीन्द्र ब्रिटिश सरकार के उच्च पदाधिकारी थे फिर भी वे उसी राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए गुप्त समितियों का संगठन करने लगे।

अप्रेल १९०८ में मानकटोला की बम फैक्ट्री का पुलिस को सुराग लग गया। उन्ही दिनों खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चक्रवर्ती के हाथों कुमारी और श्रीमती कैनेडी की हत्या हो गयी। इस पर अरविन्द घोष तथा वारीन्द्र कुमार घोष के साथ-साथ अन्य क्रान्तिकारी भी गिरफ्तार कर लिए गये।

रकार ने भयंकर दमन करना आरम्भ कर दिया।

इस पर यतीन्द्र ने निश्चय किया कि राष्ट्रीय भावना को अवश्य ही रखना चाहिये। साथ ही विदेशी सरकार को भी मनमाने जुल्म और ार करने से बिल्कुल ही रोक देना चाहिये। अलीपुर षड्यन्त्र के मुकदमे मामले की जाँच करने के सिलसिले में आशुतोष विश्वास, पुलिस ़ूटर कैदियों से बेहद सख्ती का बर्ताव कर रहा था। इसलिए यतीन्द्र किया कि इसे खत्म ही कर देना चाहिये। इसके लिए यतीन्द्र ने प्रिय शिष्य चारु बोस को चुना। चारु के दाहिने हाथ को लकवा मार ा। अतः यतीन्द्र ने चारु की पंगु कलाई पर गोली भरा रिवाल्वर या। चद्दर के नीचे अपना दाहिना हाथ छिपाकर चारु ने यतीन्द्र को किया और सीधा अदालत में पहुँचा, वहां मुकदमा चल रहा था। के देखने के पहले ही चारु ने अपने बांये हाथ के सहारे दाहिना हाथ और गोली चला दी। आशुतोष विश्वास भरी अदालत में ढेर हो चारु ने भागने का कोई प्रयत्न नहीं किया। जब उसे गिरफ्तार किया उसने मुस्कराते हुए कहा– 'यह तो पूर्व निश्चित ही था कि आशुतोष म से मारा जाए और मैं फांसी पर लटकाया जाऊं।" फांसी के वक्त स १५ वर्ष का था।

इसके बाद ही शमसुल आलम, पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट की ी। उसके विषय में यह प्रचार था कि वह अलीपुर षड्यन्त्र के

न्यतम बौद्धिक नेता

० दीनानाथ व्यास

की पारिवारिक स्त्रियों के साथ अनुचित व्यवहार करता है। उसका ाम करने के लिए वीरेनदत्त गुप्त आगे आया। वीरेन ने जनवरी को कलकत्ता हाईकोर्ट में शमसुल आलम का काम तमाम कर दिया। रफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के समय उसकी उम्र बीस से थी। फांसी के पूर्व वीरेन ने बता दिया कि "इस आतंकवादी आन्दो- आत्मा यतीन्द्रनाथ है।"

यतीन्द्र गिरफ्तार और रिहा

तीन्द्र धनाभाव की पूर्ति के लिए डाके डालने के बिल्कुल विरुद्ध थे, ान्तिकारियों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने तथा जो पकड़े गये हैं रवार का पालन करने के लिए उन्हें कुछ डकैतियों का प्रबन्ध करने ूर होना पड़ा। इनमें से एक डकैती में यतीन्द्र का एक शिष्य क्रवर्ती गिरफ्तार हो गया। उसे अमानवीय यातनाएँ दी गयीं। स्वरूप वह मुखबिर हो गया। उसने यतीन्द्र नाथ को आतंकवादी नेता बताया। इस आधार पर यतीन्द्र २७ जनवरी १९१० को गये। उनसे भेद लेने के लिए उन्हें अत्यन्त अमानवीय कष्ट दिये गये, लेकिन उस व्यक्ति से भेद पा लेना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य था, जिसने बचपन में शेर को जान से मार डाला हो। अंत में घबरा कर पुलिस ने हावड़ा षड्यन्त्र के मुकदमे में उन्हें मुख्य अपराधी घोषित कर दिया। यह मुकदमा प्रायः १५ माह तक घिसटता रहा। सरकार की ओर से इस मामले को राजनीतिक षड्यन्त्र प्रमाणित करने के लिये एड़ी चोटी की कोशिश की गयी। इस मामले में ललितमोहन चक्रवर्ती और जतीन्द्रनाथ हाजरा मुखबिर हो गये थे, लेकिन हाईकोर्ट ने पुलिस के तमाम बयान रद्द कर दिये। परिणाम स्वरूप यतीन्द्र तथा उनके कई साथी छोड़ दिए गये।

१५ महीने बाद जब यतीन्द्र छूटे तो उन्होंने देखा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन प्रायः समाप्त हो गया है। वारीन्द्र कुमार घोष, उल्हासकर दत्त आदि अंडमान जेल भेज दिए गए हैं और अरविन्द घोष पान्डिचेरी में जाकर अध्यात्म साधन में दत्तचित्त हो गये हैं। आन्दोलन की स्थिति देखकर यह लगने लगा था कि सरकार ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को खत्म ही कर दिया है। यतीन्द्र को १५ महीने हवालात में रह कर बाहर की राजनीति का अध्ययन करने का काफी अवसर मिला। सारी स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि यदि सशस्त्र क्रान्ति से सफल होना है तो विदेश की सहायता अत्यन्त आवश्यक है।

जेल से बाहर आकर यतीन्द्र को बर्न हार्डी की आगामी महायुद्ध पर प्रकाशित पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। उसे पढ़ उन्होंने निश्चय कर लिया कि बिना जर्मनी की सहायता के अंग्रेजों को इस देश से भगाना असंभव है।

धंधे में लग जाने का नाटक

यतीन्द्र अब अपनी किसी भी गतिविधि का पता पुलिस से बचा कर ही रखना चाहते थे। उन्होंने अपने कलकत्ता केन्द्र को अपने एक विश्वस्त साथी के हाथों सोंप दिया और आप स्वयं जैसोर जाकर कांट्रेक्टर बन गये। इस धन्धे में उनको सफलता भी खूब मिली। पुलिस को भी भरोसा हो गया कि यतीन्द्र अब परिवार के साथ शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे हैं। लेकिन यह तो पुलिस को मूर्ख बनाये रखने की युक्ति थी, उनका दिमाग तो कहीं दूसरी ओर ही सक्रिय था।

उनके कुछ अन्तरंग साथियों ने भी धंधे में लग जाने का नाटक रचा। अमरेन्द्र चटर्जी और राम मजूमदार ने कपड़े की दुकान खोल ली और उसका नाम रखा "श्रमजीवी समवाय"। यह दुकान हरीसन रोड़ पर थी। हैरी एन्ड सन्स के नाम से हरि चक्रवर्ती ने एक फर्म बनायी। सुरेश मजूमदार ने कॉलेज स्क्वेयर में एक छापाखाना डाल लिया, जिसमें से आगे चल कर

"अमृत बाजार पत्रिका" और "हिन्दुस्थान स्टेण्डर्ड" जैसे पत्रों का प्रकाशन हुआ। शैलेश्वर बोस ने बालासोर में "यूनिवरसल एम्पोरियम" की स्थापना की।

लेकिन यह स्थिति अधिक दिनों नहीं चल सकी क्योंकि क्रांति की आग तो उन सभी के दिलों में बुरी तरह भड़क रही थी। जब १९१३ में बर्दवान और कोन्ताई में बाढ़ का प्रकोप हुआ तो सभी क्रांतिकारी सहायता कार्य के नाम पर वहां फिर एकत्रित हो गये। वहां बन्द कमरे में यतीन्द्र ने एक मीटिंग की जिसमें उसने महायुद्ध से फायदा उठाकर मातृभूमि को स्वतंत्र करने की योजना बनायी। सभी साथियों ने उसके नेतृत्व में काम करने का वचन दिया। यहां तक कि ढाके की अनुशीलन समिति ने भी पूरी सहायता देने और साथ देने का वायदा किया।

यतीन्द्र ने शीघ्र ही अपनी योजना को क्रियान्वित करने की तैयारी आरंभ कर दी। यतीन्द्र ने अपने चुने हुए साथियों को जर्मनी तथा अन्य देशों में भेजना आरंभ कर दिया। उनका काम यह था कि वे विदेशों से धन की ओर मुख्य तथा शास्त्रों की सहायता प्राप्त करने की चेष्टा करें। स्वयं यतीन्द्र भारत के विदेशों में रहने वाले क्रांतिकारियों जैसे वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय एवं लाला हरदयाल के निकट सम्पर्क में थे।

प्रायः प्रथम महायुद्ध आरंभ ही हुआ था कि यतीन्द्र ने अपने एक विश्वस्त साथी के सहारे, रोडा एण्ड कम्पनी में, जो कलकत्ते में शस्त्रों और गोला बारूद का व्यापार करती थी, एक डाका डाला। इस प्रकार १० माउजर पिस्तौल और उनमें काम आने वाली चालीस हजार गोलियां, उन्हें वहां से डाके में प्राप्त हुई। माउजर पिस्तौल की यह विशेषता है कि यदि उसमें एक बट लगा दिया जाय तो वह बन्दूक की तरह भी काम में लायी जा सकती है। इन माउजरों ने फिर सारे बंगाल में सनसनी फैला दी। महायुद्ध आरंभ हो ही गया था। जर्मन हाई-कमांड ने भी भारतीय क्रांतिकारियों से सम्बन्ध स्थापित करना आरंभ कर दिया था।

महायुद्ध के आरंभ हो जाने पर योजनाओं पर अमल करने के लिये यतीन्द्र के सामने जो जबर्दस्त कठिनाई थी वह पैसे की थी। इन कार्यों के लिये धन की आवश्यकता थी। इच्छा न होते हुए भी धन की कमी के लिये फिर यतीन्द्र को डकैतियों के लिये स्वीकृति देनी पड़ी। पहली डकैती १२ फरवरी १९१५ को गार्डन रीच में हुई। इस डकैती की योजना पहले ही बना ली गई थी। बर्ड एण्ड कम्पनी का एक आदमी, कार्टर्ड बैंक कलकत्ते से कम्पनी के गार्डन रीच वाली मिल में जो हुंगली के पास ही था, साप्ताहिक बीस हजार की रकम ले कर जाता था। क्रांतिकारियों ने रास्ते में ही हमला करके अट्ठारह हजार रुपये उस आदमी से छीन लिये। दूसरी डकैती बेलिया घाट में हुई। यहां एक टैक्सी के सहारे स्वयं यतीन्द्र ने ही एक चावल के व्यापारी से बीस हजार से भी अधिक की रकम लूट ली। इतनी रकम हाथ में आ जाने पर यतीन्द्र ने अपने अन्तरंग साथियों को बुला कर सलाह मशविरा किया। यह मीटिंग पथरिया घाट स्ट्रीट पर हुई। मीटिंग जब जारी थी तभी नीरोद हालदार आ गया। उसने यतीन्द्र को पहचान लिया और उसे आवाज भी दी। हालदार को देख कर एक क्रांतिकारी ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और हालदार पर गोली चला दी। मरने के पूर्व हालदार ने अपने बयान में यतीन्द्र को "बंगाल के आतंकवादी आन्दोलन की बौद्धिक प्रतिभा बताया"।

अब सारे बंगाल में आंदोलन जारी कर देने की योजना यतीन्द्र ने प्रायः तैयार कर डाली थी। यतीन्द्र ने इसके पूर्व भोलानाथ चटर्जी को जर्मनों से सम्बन्ध स्थापित करने के लिये बैंकाक भेज दिया था। यह वही समय था जब जतीन्द्रनाथ लाहिड़ी यूरोप होते हुए अमेरिका से लौट कर आये थे। वे अपने साथ जर्मनी की मदद के समाचार लाये थे। उन्होंने यतीन्द्र से बटाविया में अपना एक दूत भेजने की प्रार्थना की। लाहिड़ी ने यतीन्द्र से कहा कि जर्मनी के अस्त्र शस्त्र मेवेरिक जहाज से अमेरिका के रास्ते से आयेंगे। यतीन्द्र का दूसरा दूत सत्येन सेन भी जापान से लौट आया। वहां सत्येन सेन डा० सन्यात सेन से मिला था और उन्होंने भरपूर सहायता प्रदान करने का वचन दिया था।

असफल सैनिक बगावत

यह पूर्व निश्चित ही था कि उत्तरी भारत में आन्दोलन २१ फरवरी १९१५ को आरंभ होगा, लेकिन यह खबर कुछ अटपटी सी लग रही थी, क्योंकि पिंगले गिरफ्तार हो गया था, रास बिहारी बोस किसी प्रकार बचकर निकल गये थे। लेकिन २१ फरवरी को ही सिंगापुर में ५ वीं लाइट इन्फेन्टरी में बगावत हो गयी। बागियों ने किले पर हमला बोल दिया और उसे सात दिन तक अपने कब्जे में रखा। भारत से कोई भी सहायता प्राप्त न होने के कारण उन्हें आत्म समर्पण करना पड़ा।

आन्दोलन के ठंडा पड़ जाने पर चारों ओर निराशा हो गयी। यतीन्द्र ने अपने साथियों से पुनः परामर्श किया-मीटिंग में यह निर्णय किया गया कि नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य (जो बाद में एम. एन. राय के नाम से विख्यात हुए को बटाविया भेजा जाय और वहां जाकर नरेन्द्रनाथ जर्मन कौंसल से सम्बन्ध स्थापित करें। नीरेन्द्र सी. मार्टिन के नाम से अप्रेल में रवाना हुए। इन्हीं दिनों अवनी मुकर्जी को जापान से सहायता प्राप्त करने के लिये भेजा गया।

जर्मन अस्त्र नहीं पहुच सके

बटाविया में पहुँच कर नरेन्द्रनाथ (एम. एन. राय) ने थियोडोर हेलफेरिक जर्मन कौंसल से सम्बन्ध स्थापित किया।

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

वेद और समाजवाद

○ पं० शिवदयालु

समाजवाद अर्थात् समाज के हित को सामने रखकर कार्य करना और समाज का अहित करने वाले किसी कार्य को न करना। समाज के हित में व्यष्टि को जितनी हानि होती हो उसको सहन करना। समाज के उत्थान और विकास के लिये व्यक्ति अपने हितों को ही नहीं, अपना सर्वस्व तक यदि बलि चढ़ा देवे तो भी उस कार्य को श्रेष्ठ एवं पक्षीय समझना, ऐसा मानवों के लिये वैदिक आदेश है।

किन्तु व्यष्टि या व्यक्ति जो समाज का मूलाधार और प्राथमिक इकाई है, उसके उत्कर्ष अर्थात् उसके भौतिक एवं अध्यात्मिक उत्थान की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि ऐसा किया गया तो वह समाजवाद अधूरा और पंगु होगा। तात्पर्य यह है कि व्यष्टि और समष्टि के उत्थान की युगवत साधना करना ही आदर्श समाजवाद को मानवों में विकसित करना है।

यदि व्यक्तिगत उत्थान तक ही हमारी विचार धारा सीमित रहे और समाज, जाति व राष्ट्र के उत्थान की उपेक्षा की जाय तो समाज का पतन अवश्यंभावी है और अन्ततोगत्वा व्यक्तियों का उत्थान अभिशाप में परिवर्तित हो जाता है। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद के निम्न मंत्र विचारणीय हैं –

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासेत।
ततो भूय इव ते तमो य उसम्भूत्यां रताः॥
सम्भूतिञ्च विनाशञ्च यस्त द्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते॥
यजु० ४०/६, ११

अर्थ–जो मनुष्य व्यक्तिगत उत्थान का ही केवल चिन्तन करते हैं और समाज के उत्थान व उत्कर्ष की सर्वथा उपेक्षा करते हैं वे अन्धकार की ओर जाने वाले हैं और जो केवल समाज के उत्थान को ही एकमात्र सामने रख कर और व्यष्टि निर्माण की अवहेलना करके संसार में विचरते हैं वह उससे भी अधिक अन्धकार की ओर जाने वाले हैं। वेद में केवल व्यक्ति विशेष के ही हित साधन को विनाश की संज्ञा दी गई है। व्यक्ति मात्र की हित साधना से समाज के सर्व सद् गुणों का लोप शनैः शनैः हो जाता है और समाज का विनाश हो कर व्यक्तियों का भी विनाश अन्ततोगोत्वा अवश्यंभावी है। उदाहरणार्थ यदि नगर में आग लगी हो और व्यक्ति केवल अपने घर को ही आग की लपटों से बचाने में प्रयत्नशील रहे तो वह आग प्रचण्ड रूप धारण कर उस व्यक्ति के भवन को भी निश्चय ही भस्म कर डालेगी। इसलिये अपने भवन की चिन्ता त्याग कर जहां अग्नि लगी है उसको वहीं रोकने और शान्त करने का नगर व समाज के व्यक्तियों को सामूहिक प्रयत्न करना होगा।

यदि समाज की सब इकाइयां अपने-अपने क्षेत्र में उत्साह पूर्वक उन्नतिशील हों तो निश्चय ही जीवनोपयोगी वस्तुओं को ही जुटा सकेगी और समाज के हित को दृष्टि में रखकर यदि कर्मरत हों तो जहां उनका व्यक्तिगत उत्थान होगा वहां समाज व राष्ट्र का भी उत्थान होगा।

अतः वेद की दृष्टि में व्यष्टि और समष्टि दोनों के ही हितों को सामने रख कर मानव को व्यवहार करना चाहिये। यही मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्तियों का कल्याण होगा और समाज, जाति व राष्ट्र का भी उत्थान होगा। यही मार्ग है जिसका अनुसरण कर के प्रत्येक गृह, ग्राम और राष्ट्र को स्वर्ग बनाया जा सकता है। इसी तत्व को महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के ६ वें नियम में स्पष्ट अंकित किया है कि प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रह कर समाज की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। यह है वह नियम जिसकी घोषणा १६ वीं शती के महान् युगपुरुष दयानन्द ने की है।

व्यक्तिगत उन्नति अर्थात् शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य करनी चाहिये। आर्थिक उन्नति करना भी अभीष्ट है, किन्तु यह उन्नति समाज को हानि पहुंचा कर नहीं, अपितु समाज की उन्नति के साथ-साथ करनी चाहिये। अपनी उन्नति को सर्वथा समाज की उन्नति के साथ मिला देना चाहिये और आधीन कर देना चाहिये। समाज की उन्नति मुख्य वस्तु है और उसकी अपेक्षा व्यक्ति की उन्नति गौण। वह सब कार्य जिनके करने से व्यक्ति की तो उन्नति होती हो, किन्तु समाज को हानि पहुंचे हेय कार्य हैं। हां, समाज को हानि न पहुंचा कर व्यक्ति की उन्नति साधना मान्य है, किन्तु आदर्श नहीं। समाज को हानि पहुंचा कर व्यक्ति की उन्नति आसुरी उन्नति कहलाती है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥ वेद

अर्थ– सम्यक् प्रकार से साथ मिल कर ज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करो। समाज राष्ट्र हित के कार्यों को सब व्यक्ति यज्ञीय कर्म समझ कर उससे कन्धा से कन्धा मिलाकर संलग्न होवें। सम्यक् प्रकार से समाज एवं राष्ट्र हित को सामने रख कर भाषण करो, कोई भी ऐसी बात न कहो जिससे समाज व राष्ट्र का अपमान या अनहित होता हो। प्रेम पूर्वक एक-दूसरे के भावों को जानने का प्रयत्न करो। वृथा दूसरे के भावों को तोड़ मरोड़ कर

गलत रूप से प्रस्तुत करने का कभी यत्न न करो। जिस प्रकार संसार के विशेष ज्ञानी एवं अनुभवी पुरुष विवेक पूर्वक आचरण करते हैं, उसी प्रकार तुम भी अपने ध्येय को सामने रखकर कर्त्तव्य कर्मों में संलग्न हो जाओ। सबके साथ प्रीति पूर्वक यथा योग्य व्यवहार करना श्रेष्ठ मानव का धर्म है। वृथा निन्दा व द्वेष में लिप्त नहीं होना चाहिये।

पाश्चात्य समाजवाद में अधिकारों की तो दुहाई है किंतु कर्त्तव्यों के पालन पर बल नहीं दिया जाता। अधिकार और कर्त्तव्य का सामञ्जस्य बैठाने वाला कोई महापुरुष हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द था। उसने यथायोग्यवाद पर बल देकर सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न किया है और वैदिक संस्कृति के प्रकाश में समाजवाद को नूतन दिशा दी है।

गीता में "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन्" कह कर कर्म अर्थात् कर्त्तव्य को ही मानव जीवन में प्रमुखता दी है। फल व प्रतिफल जो अधिकार की सीमा में आता है उसको गौणता प्रदान की है। "कर्म प्रधान विश्व करि राखा" इस लोकोक्ति में भी कर्त्तव्य को ही प्रधानता दी गई है। कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने वाला समाजवाद निश्चय ही मानवों को अन्धकार की ओर ढकेलने वाला है। अधिकारों की दुहाई देने वाले व्यक्ति स्वार्थान्ध होकर और व्यष्टिवाद के पुजारी बन कर विनाश की दिशा में अपने समाज को ले जाने वाले हैं जैसा कि ऊपर वेद में वर्णित है—ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्यस्विद्धनम्॥
यजु०४०।१

अर्थ—परमपुरुष परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह सारे संसार का नियन्ता नियामक है। इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी गतिमान लोक लोकान्तर नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह आदि हैं सब पर वह नियन्त्रण करने वाला। वह अज्ञात पूर्ण ज्ञानमयी विश्व चेतना ही विश्व को गति देने वाली है। वह प्रभु तो निश्चय ही विश्व की गति का केन्द्र एवं अन्तिम विधान है। उसके आदेशानुसार ही विश्व में भोग्य पदार्थों को उपलब्ध करो और उनका यथायोग्य उपभोग करो। अपने प्रयत्न व पुरुषार्थ से जो उपलब्ध हो उस पर सन्तोष करो। दूसरे के धन सम्पत्ति-वैभव को देखकर कभी ईर्ष्या न करो। उस वैभव को येन-केन-प्रकारेण हस्तगत करने की कभी चेष्टा न करो। छीन झपट कर चोरी व डाके द्वारा दूसरों की सम्पत्ति को हस्तगत करना मानव को अपवित्र बना देता है। अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करो। पुरुषार्थ से ही मानव के मनोरथ सिद्ध होते हैं। समाज की जब प्रत्येक इकाई पुरुषार्थी बनेगी और परिश्रम उद्योग को अपनायेगी, तब ही समाज कल्याण होगा। बिना परिश्रम संचित धन पर वा दूसरे के धन पर निर्वाह करने वाला मानव पापी है। परिश्रम शून्य व्यक्ति समाज पर भार है और समाज के लिए अभिशाप है। वैदिक समाजवाद में शोषक वर्ग के लिए कोई स्थान ही नहीं है। समाज के प्रत्येक के लिए जीवनोपयोगी अनिवार्य वस्तुओं की यथायोग्य व्यवस्था करना समाजवादी शासन का कर्त्तव्य है। राष्ट्र की पिछड़ी हुई इकाई अर्थात पद-दलित व शोषित जनता का उत्थान करना उसका प्राथमिक कर्त्तव्य है। ❋

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

थियोडोर ने एम. एन. राय को सूचित किया कि जर्मन अस्त्र शस्त्रों से भरा जहाज शीघ्र ही करांची के बन्दरगाह पर पहुंच रहा है। राय ने कहा कि जहाज को करांची से बंगाल की ओर मोड़ दें। हेलफेरिक इस मामले में किसी निर्णय पर पहुंचने की स्थिति में नहीं था, लेकिन शंघाई के जर्मन कौंसल की राय लेकर उसने जहाज को बंगाल की ओर मोड़ देने की बात मान ली। बटाविया से राय ने कलकत्ते में हैरी एण्ड सन्स के मालिक हरि चक्रवर्ती को तार भेजा कि "धन्धा अपने लिये फायदेमंद रहेगा"। हरि ने राय को खबर दी कि इसके लिये धन की जरूरत है। इसके बाद तो हेलफेरिक की ओर से हैरी एण्ड सन्स को कई बार बटेविया से काफी धन मिलता रहा।

जून १९१५ में एम. एन. राय कलकत्ता लौट आये और यतीन्द्र से सम्पर्क साधा। दोनों ने मैवेरिक जहाज से आने वाले अस्त्र शस्त्रों को उतारने के विषय में तैयारी की। जहाज सुन्दरवन राय मनाल नामक स्थान में लंगर डालने वाला था। जहाज में तीस हजार रायफल और उन्हीं के चार सौ राउन्ड के लायक गोली बारूद था। इनके साथ ही दो लाख रुपये भी थे।

यतीन्द्रनाथ ने दूसरी बैठक अपने साथियों की बुलायी। इसमें यतीन्द्र के अलावा एम. एन. राय, जदुगोपाल मुकर्जी, अतुल घोष और भोलानाथ चटर्जी थे। इस बैठक में तय हुआ कि आये हुए शस्त्र तीन भागों में बांट दिए जाय और हटिया (पूर्वी बंगाल), कलकत्ता और बालासोर को भेज दिए जाय। यतीन्द्र पूरे बंगाल में आन्दोलन की शुरुआत करने की सोच रहे थे।

क्रान्तिकारियों का यह अन्दाज था कि वे बंगाल की पूरी फौज से भी अधिक समर्थ हैं। यदि उन्हें कोई भय था तो केवल यही कि यदि बाहर से सेना की सहायता आ जाये तो कैसे निपटा जाये। इस विचार को ध्यान में रखते हुए यतीन्द्र ने सलाह दी कि बंगाल की तीनों प्रमुख रेलों को रोक लिया जाय। इसके लिये रेल के पुलों को फौरन ही उड़ा दिया जाय। यतीन्द्र ने बालासोर से मद्रास जाने वाली रेल की जिम्मेदारी ली। बंगाल-नागपुर रेल की जिम्मेदारी चक्रधरपुर पहुंच कर भोलानाथ चटर्जीने संभाली और अजय पहुंचकर ईस्ट इंडियन रेलवे के पुल को उड़ादेने की जिम्मेदारी सतीश चक्रवर्ती ने ली।

नरेन चौधरी और फणीन्द्र चक्रवर्ती को जा कर हटिया में पूर्वी बंगाल को संभालना था, उसके बाद कलकत्ते पर हमला बोल देना था। विपिन गंगोली और एम. एन. राय को कलकत्ते में शस्त्रों को एकत्रित करके फोर्ट विलियम पर कब्जा कर लेना था। इस प्रकार यह महान् योजना हर तरह से तैयार हो चुकी थी। अब केवल एस. एस. मैवेरिक जहाज के पहुंचने भर की प्रतीक्षा थी।

डा. जदुगोपाल मुकर्जी राय मंगल पहुँचे और वहां कुछ स्थानीय जमींदारों से मिल कर जहाज को खाली कराने के लिए कुछ आदमी और कुछ रोशनी के लिए लाइटर्स मांगे। इनका अनुमान था कि मैवेरिक रात में वहीं पहुंचेगा और उसकी पहिचान के लिये जहाज में ही लैम्प इस तरह टंगे रहेंगे जिससे वह पहचाना जा सके, किन्तु जून के अन्त तक भी जहाज नहीं आया न बटाविया से कोई समाचार ही मिला कि उस जहाज को देर क्यों हो रही है?

उसी समय बैंकांक से एक समाचार मिला कि श्याम का जर्मन कौंसल शीघ्र ही पांच हजार रायफल और उतना ही गोला बारूद भेज रहा है और उसके साथ एक लाख रुपया राय मंगल भेजा जा रहा है। (शेषांश अगले अंक में)

मराठा गली, ढाबा रोड़, उज्जैन

संवाद ज़ारी है

भागचन्द जैन 'पुष्प'

एक नगर संवाद ज़ारी है
कि वे लोग
अपमानित थे, आत्महीनता से ग्रसित थे,
राशन की दुकान से लौट आए थे, खाली थैलों के साथ
खाली आजादी,
उनके लिए भूख देती थी
और उनकी जनाना ताकतें रात को रोटी कमाने को
मजबूर थी।
पर वे चुपचाप थे,
उनका वर्तमान, उनका भूत नर्क था
जो उनकी लाश को
भविष्य के कंधों पर ढो रहा था।
उन्होंने सोचा था कि मुक्ति द्वार कहीं निकट है
नारों की भीड़ में उनके हाथ टटोलते थे
अंधकार !
उन्होंने यह भी कहा था
कि उजाले की एक किरण
फूटी थी पूर्व में
और अंधकार ने उसे मौत दे दी
नगर संवाददाता के अनुसार जेल में !
उन लोगों के साथ धोखा हुआ।
संविधान और खूबसूरत चंडूखाना
(जिसके पात्र चुन लिए जाते हैं हर पांचव वर्ष, ताकि
वे धूर्तता का नाटक खेल सकें)
दोनों ही पवित्र हैं जैसे कोकशास्त्र और नारी देह
कि भूख मिटाई जा सकती है शरीर की
पेट एक दरम्याना चीज है, नाचीज है।
वे आदमी जिनके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता
अपने आपसे बातें कर रहे थे कि
उनका अस्तित्व नकार दिया गया है और एक लंबी
अंधेरी सुरंग है जिसके दूसरे छोर पर
उजाला है।
फैसला जरूरी था
ताकि उनके छोटे-छोटे बच्चे
जवानी आने से पहले ही नसबन्दी न करा लें,
और उनका कीमती खून
चंद टकों के बदले में
खटमली सेठों की नसों में पाप का भागी न बने।

नगर संवाद आगे कहता है
उन्होंने जीने के लिए अपनी कुछ जानें कुर्बान
करने का निश्चय किया
उन्होंने अपने चाकू तेज किए थे
और लैस हो गए थे एक साथ,
हत्या करने के लिए उन लोगों की जो
रोटी के बदले मौत देते हैं
न्याय के बदले कानून की संज्ञायें उछालते हैं।
उन सबने मिलकर माना था कि
वे शिकार हैं कुत्तों और भेड़ियों के नहीं
आदमी के विकृत आकार के
जो आदमखोर,
सभ्य (?) हैं।
जिसने व्यवस्था के नाम पर रचा है
एक धर्म और एक झंडा
(अत्याचारी है जिसका डंडा)
ये आदमखोर
उगलते हैं आग
जो मौत दे जाती है
कुछ नौजवानों को !
उन लोगों का खून उबला था,
सोच समझकर, उन्होंने चुपचाप निर्णय किया था,
उन्होंने अपने चाकू तेज कर लिए थे,
ताकि वे लटका सकें,
लाशें चौराहों पर
और लोग वमन करें उनकी नंगी देहों पर
उन्होंने ऐसा किया भी
नगर संवादवाता ने आगे बताया कि
जनता खुश हुई थी यह देख कर
आश्चर्य भी कर रही थी,
पर उसे दुःख भी हुआ
क्यों कि वे चाहते थे उन्हें जिन्दा ही
दफनाना।
पर नगर संवाददाता कहता है कि
यह सब हुआ या नहीं
इस बारे में
सूत्र विश्वसनीय नहीं। *

राजस्थान बैंक, अलवर

सम्पादक के नाम पत्र

वैदिक समाजवाद

वैदिक समाजवाद की जो रूपरेखा आर्य सभा द्वारा प्रस्तुत की गई है अत्यन्त सराहनीय है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस सिद्धांत को देश की जनता सहर्ष स्वीकार करेगी, किन्तु इसको समझने में समय लगेगा। लोगों को समझने के लिए घर-घर में व्यक्ति-व्यक्ति में इसका मंत्र फूंकना होगा। तब ही जन मानस इस इस सिद्धांत को हृदयंगम कर पायेगा।

मेरे मानस पटल पर जो समाजवाद की रूपरेखा है, उसे मैं विद्वद् समाज के समक्ष पेश करना चाहता हूँ। आर्य सभा ने वैदिक समाजवाद की जो रूपरेखा रखी है, उसके अनुसार समाज की व्यवस्था वर्ण व्यवस्था के सिद्धांतों के अनुरूप होगी तथा राज आर्य सभा, विद्या आर्य सभा एवं धर्म आर्य सभायें समाज व्यवस्था व राष्ट्रोन्नति में भागीदार होंगी। धर्म का सर्वोपरि स्थान होगा तथा सरकार धर्म की रक्षा करेगी। समस्त उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण कर समस्त मानव कल्याण की भावना की पुष्टि करने के लिये सभी को चाहे वह किसी भी वर्ण का हो, उसे सरकार की ओर से उन्नति के समान अवसर प्राप्त होगे। प्रत्येक व्यक्ति को उसके गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार शिक्षा, रोजगार, निवास, विवाह तथा वृद्धावस्था में जीवनयापन का प्रबन्ध सरकार करेगी। केवल प्रत्येक को नियत घटे काम करना अत्यन्त आवश्यक होगा। बिना नियत घंटे काम करने वाला देशद्रोही होगा। इस प्रकार के समाजवाद की कल्पना अत्यन्त सराहनीय है। बशर्ते कि व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन न हो। जहां व्यक्ति किसी भी बधन से बंध कर यह महसूस करने लगे मैं बंधा हुआ हूँ और सरकार की आशा अनुसार ही मुझे कार्य करना है, अन्यथा मेरी इच्छायें तो कुछ अन्य उत्तम से उत्तम कार्य करने की हैं, क्योंकि मनुष्य के विचार परिवर्तनशील है। कभी विचार प्रगतिगामी होते हैं तो कभी प्रतिरोधक विचारों का स्फुरण होता है जिस व्यक्ति की बुद्धि का तीव्र विकास बचपन से ही देखने मे आता है। उसे तीक्ष्ण बुद्धि कहा जाता है। किसी-किसी की बुद्धि का विकास धीरे धीरे कई वर्षों में होता है। फलस्वरूप वह अपने जीवन की उन्नति युवावस्था में भी नहीं कर पाता, इसके विपरीत प्रौढ़ावस्था में वह अपनी बुद्धि का विकास कर पाता है। मान लीजिये एक व्यक्ति के बचपन से मन्द बुद्धि होने से उसकी शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य में गतिरोध उत्पन्न हो गया, वह आगे शिक्षा प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहा, क्योंकि बेचारे के पास ऐसे कोई साधन नहीं जिससे वह अपनी बुद्धि का शीघ्र विकास कर सके अर्थात् तीव्र बुद्धि बन सके। क्योंकि बुद्धि तो प्रकृति प्रदान होती है, फिर उसका विकास होता भी है तो धीरे-धीरे। उसकी शिक्षा छूटने के उपरान्त माना उसे शूद्र अर्थात सेवा कार्य मिला, अब उसे कानूनन नियत घटे कार्य करना अत्यन्त आवश्यक हो गया। कुछ समय उपरान्त उसकी बुद्धि का विकास होने लगता है और मान लिया ३५ वर्ष के बाद उसकी बुद्धि का विकास हो कर उसके विचारों से परिवर्तन आता है, अब वह अपने जीवन को उन्नत करना चाहता है, मगर चूंकि वह बन्धन में है उसकी वजह से वह कुछ करने में असमर्थ है। हो सकता है उसकी इच्छायें इतनी बलवती हों, क्योंकि वह अपनी शिक्षा में वृद्धि कर, मजदूरी के स्थान पर अब इंजीनियर बनना चाहता है अथवा डाक्टर बनना चाहता है अथवा चुनाव लड़ कर आगे बढ देश सेवा करना चाहता है, मगर बंधन में बंधे होने के कारण उसके समस्त उन्नति के द्वार बन्द हैं। ऐसी अवस्था में उसे राज्य की ओर से कोई सहयोग न मिलने पर उसकी इच्छाओं का दमन होगा। यह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व इच्छाओं पर कुठाराघात होगा। वह जिस कार्य को करता है उसके करने में अरुचि दिखायेगा और वह कार्य रुचि पूर्वक न होने पर उन्नत तरीके से न हो कर अवनति का कारण बनेगा। इससे सभी कार्यों धन्धों पर कुप्रभाव पड़ेगा। इसके अन्तिम परिणाम स्वरूप राष्ट्रोन्नति में गतिरोध उत्पन्न होने की ही सम्भावना अधिक हो सकती है और जब समस्त साधनों के उत्पादन पर राज्य का आधिपत्य होगा तो उस कार्य में व्यक्तिगत रुचि न हो कर उस कार्य की वृद्धि में तन्मयता न रहेगी और वहां कार्य में गतिरोध सम्भव होगा। इस व्यक्तिगत रुचि को बढावा देने, ताकि वह अधिक तन्मयता से कार्य करे, इस प्रकार से प्रबन्ध किया जावे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि अनुसार कर्म करने की स्वतन्त्रता हो, जब वह अपनी रुचि अनुसार किसी भी कार्य को अधिक रुचि व तन्मयता से करता है, तो उसी कार्य को करने में उसे राज्य सरकार द्वारा पूर्ण सहयोग मिले, ताकि उसकी रुचि का तथा आत्मा का दमन न हो और वह अपनी रुचि अनुरूप कार्य को अत्यधिक हर्षोल्लास से करता हुआ राष्ट्रोन्नति में भागीदार बन सके। उस व्यक्ति को जो अधिक उन्नति का मार्ग अपनाता है सरकार उसे प्रोत्साहित करे और वह व्यक्ति विशेष सम्मान का अधिकारी हो। इस प्रकार प्रत्येक को उन्नति के समान अवसर भी मिलेंगे और इच्छाओं पर कुठाराघात भी नहीं

होगा। सभी अधिक सुरुचिपूर्ण व तन्मयता से कार्य करेंगे तथा जब सरकार प्रत्येक के लिए शिक्षा, रोजगार, निवास, विवाह तथा वृद्धावस्था में जीवनयापन का प्रबन्ध स्वयं करेगी तब प्रत्येक व्यक्ति की पारिवारिक चिन्तायें तो समाप्त हो ही जायेगी, उसको केवल इतना वेतन मिले जिससे कि वह अपने भोजन व वस्त्रों का व्यय भली प्रकार चला सके ताकि वह अच्छे भोजन तथा स्वच्छ वस्त्र धारण कर अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखे।

प्रत्येक व्यक्ति उसके गुण, कर्म, स्वभावानुसार शिक्षा, रोजगार तथा अन्य सुविधायें पाने का अधिकारी भी होगा तथा उसकी व्यक्तिगत रुचि अनुसार उसकी स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिए एक प्रावधान यह भी हो कि वह किसी कार्य को अपने गुण, कर्म, स्वभावानुसार जिस कार्य को अधिक रुचि पूर्वक व तन्मयता पूर्वक करना चाहे करे तथा अन्य समानान्तर से किसी भी कारण रूप विचारों में परिवर्तन आ भी जावें और उसके मन में अन्य अच्छे कार्य करने के दृढ़ संस्कार जाग उठते हैं तो उसे उसकी रुचि और कार्य क्षमता को देखते हुए पहले वाले कार्य को छोड़ कर नवीन कार्य करने की छूट हो और राज्य उसका पूर्ण सहयोग करे, परन्तु इसके साथ प्रत्येक व्यक्ति पर यह कठोर नियन्त्रण हो कि वह जो कार्य अपनी इच्छा व स्वतन्त्रता से करता है देश हित के लिए करेगा। अन्यथा वह व्यक्ति जो देशहित का कार्य नहीं करता है उसको देशद्रोही ठहराया जा कर कठोर दण्ड दिया जावे। दण्ड व्यवस्था अ य त कठोर होनी चाहिए, जिसके भय से कोई भी व्यक्ति गलत काम कर अराजकता न फैला सके।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र होगा। जिससे कि उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन न होगा। वह अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य को चुन कर सुरुचि पूर्वक व अधिक तन्मयता से करेगा और उसे सरकार द्वारा किसी भी कार्य के करने में पूर्ण सहयोग मिलेगा, तो वह और भी अधिक रुचि व लगन तथा कठिन मेहनत कर राष्ट्रोन्नति में सहायक होगा। जितना अच्छा कार्य अपनी स्वयं की रुचि अनुसार हो सकता है, उतना बंधन से जबरन नहीं करवाया जा सकता।

—जयसिंह 'मुमुक्षु', राजहंस आरोग्य मन्दिर, बाजपुर (नैनीताल)

फरवरी द्वितीयांक : प्रतिक्रियाएँ

'राजधर्म' बराबर मिल रहा है। सामग्री उत्साहवर्द्धक है। २८ फरवरी का सम्पादकीय बेहद पसन्द आया। पिछले पृष्ठ पर दी गयी कविता 'तुम रक्त हो क्या' अत्यन्त प्रभावशाली है। इन दोनों रचनाओं को 'क्रान्ति' में साभार लिया जा रहा है।

—अ. स. किरमानी, 'क्रांति' साप्ताहिक, ६६५, किशनगंज (तेलीबाड़ा), दिल्ली-६

फरवरी द्वितीय के 'राजधर्म' में सम्पादकीय 'स्वाधीनता संघर्ष के दिनों की याद आती है', 'सलीब पर चढ़ा एक मसीहा', महान् क्रान्तिकारी वीर सावरकर' व 'तुम रक्त हो क्या' कविता प्रशंसनीय है।

—भगवानसिंह आर्य, गाँव व डाक औरंगाबाद, जिला गुड़गांवां

२८ फरवरी का 'राजधर्म' पढ़ने को मिला। यह समाजवादी रहबरों को सही मार्ग दर्शन कराने में सफल होगा। मगर यह मुखौटाधारी बहुरूपिये पत्थर के सनम हैं। वक्त दूर नहीं जब इन्हें सच्चाई को स्वीकार करना होगा। हरयाणा के अध्यापकों को स्पष्ट समर्थन देने के लिए धन्यवाद! अति धन्यवाद!! हम दुखी अध्यापकों को काफी प्रेरणा और जोश मिला। मैं चालीस हजार साथियों की ओर से आभारी हूँ।

—राजधरणी सागर, आर.एन. १५, महेश नगर, अम्बाला कैन्ट

२८ फरवरी अङ्क एक नये परिवेश के साथ आया है। इसका रूप निखरने के साथ चयन सामग्री में सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर जो तीखा व्यंग्य किया गया है, वह जनता की पत्रिकाओं में हो, यह जरूरी है और 'राजधर्म' अपना उत्तरदायित्व निभा रहा है यह प्रसन्नता की बात है। यह पत्रिका भारत के लाखों-करोड़ों लोगों की पत्रिका बन जायगी। स्वामी इन्द्रवेश एवं स्वामी अग्निवेश को हार्दिक बधाई।

—अशोक जैन, प्रथम वर्ष वाणिज्य, राजर्षि कॉलेज, अलवर

समाचार पत्र जन भावना और जन हितों के अनुकूल जन जागृति पैदा करने वाला माध्यम होता है। भ्रष्टता के आधार पर मात्र व्यवसाय रह गया है। आप इस विपरीत वातावरण के युग की धारा को दिशा देने के लिए, अपनी शक्ति भर जन-जागृति का प्रयास कर रहे हैं।

—गजेन्द्र आर्य, द्वारा-बालीराम जनरल मर्चेन्ट, सिवहारा जनपद, बिजनौर (उ० प्र०)

'राजधर्म' शोषित शासन की नजरों में एक अटल समस्या खड़ी नजर आता है। यह दुराचारी सरकार इसके शोलों को दबाना चाहती है, पर दिन दूनी रात चौगुनी यह ज्वाला भड़कती ही जा रही है।

—नन्दलाल, मंत्री, आर्य समाज, मिर्जापुर खेड़ी

मार्च प्रथमांक : प्रतिक्रियाएँ

'राजधर्म' का नया अंक देखा। गरीब जनता के शोषण के विरुद्ध आग उगल कर एवं प्रशासन के छद्म रूप को सामने ला कर आपने पवित्र कार्य किया है। बधाई स्वीकारें।

'गरीबी हटाओ की जगह गरीब हटाओ बजट' (गिरजेश्वर आर्य) लेख यथार्थ सामने रख पाया है, तो 'सामयिकी' स्तम्भ में लिखा लेख भी ठीक था। 'कला' स्तम्भ नियमित होना चाहिए। 'और तब मैं एक अन्धेरा नहीं जीता' (सुरेन्द्र भारतीय) कविता जिस गंभीरता को ले कर प्रारंभ हुई थी, बाद में नारे और भाषणबाजी से साधारण होते हुए देख दुःख हुआ। कुल मिला कर कविता ठीक थी। अशोक चक्रवर्ती के लेख ने, अध्यापकों के शोषण का मार्मिक चित्र खींच आँखें खोल दी हैं। इस आन्दोलन में अध्यापिकाओं की भूमिका सराहनीय है।

—प्रभाकर द्विवेदी, श्रीराधाकृष्ण विहार, ८६, लक्ष्मी पथ, जयपुर

सम्पादकीय के अतिरिक्त ओम सैनी, अशोक चक्रवर्ती और भागचन्द जैन ने अङ्क को ताजगी दी है। 'पेशावर कांड का बागी' (रामसिंह बघेले) लेख, अन्धे लोगों की आँखें खोलने का प्रयास है। पिछले अङ्क की अपेक्षा यह अङ्क काफी बदला हुआ है।

—सुधाकर गोस्वामी एम. ए., हथरोई, जयपुर

समाचार दर्शन

स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश को बिना शर्त रिहा करने की मांग

देश भर से स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश को रिहा करने के लिये, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृहमंत्री आदि को तार भेजे जा रहे हैं व प्रस्ताव पारित हो रहे हैं।

दिल्ली के हिन्दी दैनिक 'वीर अर्जुन' और उर्दू दैनिक 'प्रताप' ने १० मार्च को सम्पादकीय लिख कर स्वामी अग्निवेश पर रोहतक जेल में किये जा रहे अत्याचार की घोर निन्दा की। इससे पूर्व इन पत्रों ने सामायिकी स्तम्भ में स्वामी इन्द्रवेश पर भावभीनी पंक्तियां लिख कर, सरकारी अत्याचारों की निन्दा की थी। जालंधर के 'वीर प्रताप' ने भी इन सन्यासियों पर सम्पादकीय लिख कर, इनके नेतृत्व की सराहना की है।

आर्य सभा, होशियारपुर ने एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि यह सभा आर्य सभा, हरयाणा के नेताओं स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को हरयाणा सरकार द्वारा कारागार में बन्द कर के किये जा रहे अमानुषिक अत्याचार की घोर निन्दा करती है तथा सरकार से मांग करती है कि आर्य सभा के नेताओं तथा अन्य सभा कार्यकर्त्ताओं को तुरन्त रिहा करे। अन्यथा स्थिति के अधिक बिगड़ने का सारा उत्तरदायित्व हरयाणा सरकार पर होगा। प्रस्ताव में अध्यापक आंदोलन तथा आर्य सभा द्वारा चलाये जा रहे शराब बन्दी आंदोलन का समर्थन किया गया है। इसकी प्रतियां प्रधानमंत्री व अन्य प्रमुख नेताओं को भेजी गयी हैं।

जयपुर के चार आर्य समाजों (बजाज नगर, आदर्श नगर, जौहरी बाजार तथा नगर आर्य समाज) ने एक विशेष बैठक में स्वामी अग्निवेश को जेल में मानसिक यातना देने की निन्दा करते हुए उन्हें बिना शर्त रिहा करने की मांग की। सभा में वक्ताओं ने आशा व्यक्त की कि आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा समस्त आर्य सभायें स्वामी जी को रिहा कराने के सम्बन्ध में शीघ्र कदम उठायेंगी।

दोनों सन्यासियों की बिना शर्त रिहाई की मांग करते हुए, आर्य समाज, अर्जुन नगर, गुड़गांवां ने प्रस्ताव पारित किया है। प्रस्ताव में आर्य नेताओं के साथ जेल में किये जा रहे दुर्व्यवहार की निन्दा की गयी है। प्रस्ताव में निर्धन अध्यापकों पर हो रहे अत्याचारों पर रोष व्यक्त किया गया है। ऐसा ही प्रस्ताव आर्य समाज, धूरी (पंजाब) ने भी पारित किया है।

प्रांतीय आर्य महिला सभा, दिल्ली की अध्यक्षा श्रीमती ईश्वरी देवी ने एक तार व पत्र द्वारा स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश तथा आर्य सभा के कार्यकर्त्ताओं की रिहाई के लिये प्रधानमन्त्री से हस्तक्षेप करने की मांग की है।

आर्य सभा, जिला मेरठ ने दोनों नेताओं की रिहाई की मांग करते हुए, मद्यनिषेध आंदोलन को पूर्ण समर्थन देने का निर्णय लिया है।

एक अन्य प्रस्ताव में गेहूँ का मूल्य निर्धारित करते समय, उत्पादन लागत को ध्यान में रखने की माँग की गयी।

आर्य समाज, श्रीगंगानगर ने भी रिहाई की मांग करते हुए, जेल में स्वामी जी पर हो रहे अमानवीय व्यवहार पर दुःख प्रकट किया है।

लाला रामगोपाल शालवाले ने दिल्ली में आर्य नेताओं की रिहाई की मांग की है।

गुरुकुल, मटिण्डू ने एक प्रस्ताव पारित कर, गुरुकुल के प्रधान व आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश और आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश को बिना शर्त रिहा करने की मांग की है। प्रस्ताव में अध्यापकों के आंदोलन का मुक्त कण्ठ से समर्थन किया गया और सरकार से मांग की गयी कि अध्यापकों की न्यायोचित मांगें वह तुरन्त स्वीकार करे। उपस्थित लगभग चार हजार व्यक्तियों ने हाथ उठा कर इस प्रस्ताव को एक मत से समर्थन दिया।

गुरुकुल, मटिण्डू के ९ से ११ मार्च तक आयोजित ५९वें वार्षिकोत्सव में आर्य सभा तथा आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता सम्मिलित हुए। इस अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और आर्य राष्ट्र सम्मेलन का आयोजन किया गया।

आर्य सभा कार्यकर्त्ता अध्यापकों के साथ दिल्ली में गिरफ्तार होंगे

पलवल। अ० भा० आर्य सभा ने यहां निर्णय लिया कि आर्य सभा के ११-११ कार्यकर्त्ताओं के जत्थे, आगामी २१ मार्च से दिल्ली में धारा १४४ को तोड़ कर, अध्यापकों के समर्थन में गिरफ्तारी देंगे। जत्थों के मुख्य नेता चुन लिये गये हैं।

प्रथम जत्था २१ मार्च को आर्य सभा, जिला गुड़गांवां के उपाध्यक्ष मनफूलसिंह के नेतृत्व में दिल्ली प्रस्थान करेगा।

मनफूलसिंह ने बताया कि जेल से आर्य सभा के नेताओं स्वामी अग्निवेश और आचार्य रामानन्द के पत्र आये हैं, जिन में उन्होंने आंदोलन को और अधिक गति देने के लिये कहा है।

आर्य सभा ने अध्यापकों की न्यायपूर्ण मांगों का समर्थन करते हुए, हरयाणा पुलिस द्वारा अध्यापकों, राजनैतिक नेताओं,

वकीलों तथा छात्र वर्ग के शांतिप्रिय नागरिकों के साथ पुलिस दुर्व्यवहार व अत्याचार की कठोर शब्दों में निन्दा की।

रोशनलाल आर्य द्वारा मुख्यमंत्री की कोठी पर ४८ घंटे की भूख हड़ताल

चंडीगढ़। हरयाणा आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष रोशन लाल आर्य ने, ९ मार्च की सुबह से मुख्यमंत्री की कोठी के बाहर, ४८ घंटे की भूख हड़ताल रखी।

रोहतक जिला कारागार से स्वामी अग्निवेश का वक्तव्य

आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश ने रोहतक जिला कारागार से दिए गए एक वक्तव्य में मांग की है कि हरयाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल को अपने मंत्रिमंडल सहित त्याग पत्र दे देना चाहिए, क्योंकि वे चालीस हजार अध्यापकों के आंदोलन को सुलझाने में बुरी तरह असफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि बंसीलाल के जिद्दी और दुराग्रह पूर्ण रवैये ने सारे देश में हरयाणा के पवित्र नाम को बदनाम ही नहीं किया है वरन् हरयाणा के लाखों बच्चों के जीवन से भी खिलवाड़ किया है।

आपने बताया कि आज से पांच साल पहले तोशाम हलके में कुछ अध्यापकों ने बंसीलाल के खिलाफ चुनाव में अपने एक रिटायर्ड साथी प्रिन्सिपल देवासिंह की मदद की थी। इस बात से चिढ़ कर बंशीलाल ने मुख्यमंत्री बनने के साथ ही समस्त अध्यापक बिरादरी को अपना व्यक्तिगत दुश्मन मान कर बदला लेने की ठान ली। अध्यापकों के महंगाई भत्ते में कटौती और स्थानान्तरण नीति उसी व्यक्तिगत दुश्मनी की भावना का परिणाम है। इन पांच सालों से हजारों अध्यापकों के प्रति बंसीलाल ने जो अपमान जनक रवैया अपनाया है, उससे अध्यापकों में असंतोष उबलता रहा और इसका सीधा प्रभाव हरयाणा के स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों बच्चों पर पड़ा है। परिणाम स्वरूप एक पूरी पीढ़ी आज शिक्षा की दृष्टि से अन्य प्रान्तों की तुलना में अयोग्य हो चुकी है और हरयाणा में शिक्षा का भविष्य अन्धकारमय हो गया है। आज पूरे एक मास से चल रहे हरयाणा अध्यापक संघ की जबरदस्त शांतिपूर्ण हड़ताल के बावजूद और इसे मिले देशव्यापी समर्थन के बावजूद हरयाणा के मुख्यमंत्री द्वारा हरयाणा अध्यापक संघ की उचित मांगों को ठुकराना उनके इसी जिद्दी और हठी स्वभाव का परिचायक है। इस सारे विवाद को उन्होंने अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है और अध्यापकों की मांगों को स्वीकार करने में वे अपनी बेइज्जती समझ रहे हैं। पैसों की कमी की बात केवल एक बहाना है। जो सरकार शिमला में हरयाणा के मंत्रियों और उनके परिवारों के ठहरने के लिए शाही कोठियां बनवा सकती है। मोरनी हिल्स और पिंजोर गार्डन जैसे आडम्बरपूर्ण स्थानों पर लाखों करोड़ों खर्च कर सकती है और सारे प्रान्त में पर्यटक केन्द्रों के नाम पर विलासिता के अड्डों का जाल बिछा सकती है, वह सरकार क्या अध्यापकों की उचित मांगों को पूरा करने के लिए केवल दो करोड़ रु० का प्रबन्ध नहीं कर सकती?

उन्होंने कहा कि बंसीलाल की आँखें अब इसलिए भी खुल जानी चाहिए कि अब उनकी दमन नीति और तानाशाही का संसद में एक भी कांग्रेसी सदस्य ने समर्थन नहीं किया। इसके विपरीत अध्यापकों की मांगों पर बहस में भाग लेते हुए विरोधी दल के नेताओं के साथ अनेक वरिष्ठ कांग्रेसी सदस्यों ने बंसीलाल के रवैये की भर्त्सना की है।

इस संदर्भ में हरयाणा के सिंचाई मंत्री और बंसीलाल के दाहिने हाथ भजनलाल का अम्बाला के भाषण में हरयाणा के ग्रामीणों को अध्यापकों के विरुद्ध उकसाने का प्रयत्न न केवल हास्यास्पद है वरन् कुटिलतापूर्ण और अनैतिक भी है। भजन लाल को पता होना चाहिए कि आज हरयाणा का एक-एक किसान, मजदूर और बुद्धिजीवी वर्ग अध्यापकों के साथ है और यदि भजनलाल और बंसीलाल अपना भ्रम दूर करना चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे इसी मुद्दे पर त्याग पत्र देकर एक महीने के अन्दर हरयाणा में पुनः चुनाव करा कर, अपने समर्थन का जायजा ले लें।

आपने कहा कि जो सरकार इस हड़ताल को केवल अत्यल्पसंख्यक शिक्षकों की हड़ताल मानती है उसी सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री भजनलाल द्वारा ८५ प्रतिशत अध्यापकों को अवांछनीय तथा केवल १५ प्रतिशत को वफादार बताना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि यह हड़ताल किस हद तक व्यापक है।

हरयाणा के पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा दिल्ली में प्रदर्शन व गिरफ्तारियां

१२ मार्च को हरयाणा के पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा, अपनी मांगों के समर्थन में दिल्ली में जुलूस निकाला गया। चौ० गंगाराम एडवोकेट, संयोजक, किसान मजदूर सभा और जयपालसिंह कश्यप, वकील, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदर्शकारियों के समक्ष भाषण देते हुए सरकार को चेतावनी दी कि अगर उसने 'पिछड़ा वर्ग आयोग' की रिपोर्ट ३ महीने के अन्दर लागू न किया तो लाखों स्त्री-पुरुष दिल्ली में विशाल प्रदर्शन करेंगे तथा लाखों की संख्या में गिरफ्तारियां दी जायेंगी। बोट क्लब पर १२ प्रदर्शनकारियों ने गिरफ्तारियां दी। गिरफ्तार लोगों में हरयाणा बैकवर्ड क्लासेज संघर्ष समिति के सदस्य श्री छत्तरसिंह, का० भलेसिंह व श्योबक्स जांगड़ा सम्मिलित थे।

आचार्यकुल, लोवाकलां

आचार्यकुल (कन्या विद्यालय) लोवाकलां, हरयाणा का ११ वां वार्षिकोत्सव २५ मार्च को सम्पन्न होगा।

चमनलाल आर्य का देहान्त

आर्य समाज, झज्जर के मंत्री चमनलाल आर्य का, गत ५ मार्च को लम्बी अस्वस्थता के उपरान्त निधन हो गया। आपकी आयु ४० वर्ष थी।

आपने अनेक पुस्तकों की रचना की। इनमें 'रंग में भंग', 'व्रत का स्वरूप' तथा 'चमन भजनावली' सर्वाधिक चर्चित पुस्तकें हैं। आपने आर्य समाज मन्दिर, झज्जर को समस्त हरयाणा में अपने अथक परिश्रम से, आर्य समाज का लोकप्रिय केन्द्र बना दिया।

आपके निधन पर अनेक शोक सन्देश प्राप्त हुए हैं। आर्य सभा, रोहतक के मंत्री डॉ० कृष्णदत्त, प्रसिद्ध समाजसेवी प्रो० हरिसिंह, हरयाणा प्रान्तीय पटवार संघ के महासचिव राव मूलचन्द तथा वैदिक कन्या पाठशाला, झज्जर की छात्राओं व अध्यापिकाओं ने आपके संघर्षमय जीवन को याद करते हुए, मार्मिक श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं।

'राजधर्म' परिवार उनके शोक संतप्त परिवार से आशा रखता है कि चमनलाल जी के महान् व्यक्तित्व के अनुसार, इस शोकावसर पर वह धैर्य धारण करेगा।

विरजानन्द नहीं रहे

गुरुकुल, आर्य नगर, हिसार की प्रबन्ध समिति के आजीवन सदस्य लालमनजी के सुपुत्र विरजानन्द के असामयिक निधन पर, 'राजधर्म' शोक व्यक्त करता है।

आर्य समाज, जोड़ासांकू

कलकत्ता। आर्य समाज, जोड़ासांकू का अष्टम् वार्षिकोत्सव २३ से २५ मार्च १९७३ तक, शहीद मीनार (आक्टर लोनी मनूमेन्ट मैदान) में मनाया जायगा।

आर्य युवक परिषद्, हाथरस

परिषद् का कार्यालय अब आर्य समाज, नयागंज, हाथरस में पहुंच गया है। पुस्तकालय व वाचनालय भी यहां स्थानान्तरित कर दिया गया है।

केन्द्रीय आर्य परिषद्, बम्बई

वृहत्तर बम्बई की एकमात्र आर्य संगठन संस्था केन्द्रीय आर्य परिषद् की ओर से ऋषि बोधोत्सव समुद्र तट चौपाटी पर मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह, उ०प्र० आर्य प्र०सभा के प्रधान प्रकाशवीर शास्त्री, संसद सदस्य प्रो० रामसिंह, विश्वविद्यालय कांगड़ी के कुलपति प्रो० रामसिंह, रेल सेवा आयोग के अध्यक्ष नरदेव स्नातक तथा आचार्य विजय कुमार त्यागी के भाषण हुए।

आर्य समाज, खेड़ी रामनगर

खेड़ी रामनगर। आर्य समाज, खेड़ी रामनगर (जिला कुरुक्षेत्र) के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। प्रधान-शेरसिंह 'शेर', मन्त्री- नाथूराम आर्य तथा कोषाध्यक्ष- कृष्णलाल आर्य।

थानेसर नगर पालिका के प्रशासक पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

भ्रष्टाचार विरोधी सभा, कुरुक्षेत्र से थानेसर, नगरपालिका के प्रशासक वधावाराम दुआ पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाने वाले, तीन मुद्रित पर्चे प्राप्त हुए हैं। इन पर्चों में उन पर अनियमितताओं, भ्रष्ट आचरण व रिश्वतखोरी के गंभीर आरोप लगाये गये हैं।

'थानेसर नगर पालिका के प्रशासक चुप क्यों' पर्चे में प्रशासक महोदय की चुप्पी को सन्देहास्पद बताया गया है। इसमें आरोप लगाया गया है कि उनकी नींव अखबारों पर है, अन्यथा ९० गांवों के प्रतिनिधि होने पर भी वे कमेटी चुनावों में हार गये थे। इसके अतिरिक्त भी उन पर अनेक गंभीर आरोप इस पर्चे में हैं।

'क्या श्री दुआ जांच कमेटी का सामना करेंगे', पर्चे में आरोप लगाया गया है कि दुआ ने रेलवे रोड थाने पर स्थित अमूल्य भूमि १६०×११ फुट राजनाथ को मामूली मूल्य ३२००।- में बेच दी, हालांकि इस भूमि का वर्तमान मूल्य दो सौ रु० गज है इस तर्क के प्रमाण में पर्चे में अनेक तथ्य दिये गये हैं। इसी प्रकार रामचन्द्र पुत्र गोपालदास को अमूल्य खसरा नं २०७/१० दर्रा कलां बिरला मन्दिर सड़क पर १६×११ फुट जमीन, जो हरयाणा सरकार की है, गुपचुप चार सौ रु० में बेच दी गयी। पत्रकार डॉ० शान्ति स्वरूप शर्मा के पुत्र जगदीशचन्द्र ने अमूल्य खसरा नं २१८/८ दर्रा कलां थानेसर पर २०×११ फुट भूमि पर दुकान नं. ३२० वार्ड ६ बनाकर एन्क्रोचमेंट कर रखी है। पर दुआ भ्रष्ट आचरण का परिचय दे, मामले को खटाई में डाले हुए हैं।

'श्री वधावाराम एडमिनिस्ट्रेटर के कारनामे' नामक पर्चे में प्रश्न किया गया है कि पत्रकार देवीदयाल नन्हा के अखबार 'गीता ज्योति' जिसे लोग 'चमचा ज्योति' कहते हैं, उसे नगर पालिका, थानेसर ने हजारों रु. के इश्तिहार क्यों दिए? नन्हा के पास नगर पालिका की सब्जी मंडी स्थित दुकान मामूली किराये पर क्यों है? नन्हा ने मकान बनवाने के लिये नगर पालिका की तरफ से क्या टूटी नहीं लगवायी? लगवायी तो क्यों? दुआ ने जितने जलसे किये, उनका स्टेज मंत्री नन्हा क्यों होता है? दुआ ने नन्हा को अपना तबादला रुकवाने के लिये क्या देकर दिल्ली भेजा? नन्हा के साले रवलिन्दाराम को दुआ ने नगर पालिका की दो दुकानें मात्र ९० रु० किराये में क्यों दी, जबकि दूसरे किरायेदारों से इनका किराया २०० रु० होता? दुआ, नन्हा के साले ओमप्रकाश से नगरपालिका, थानेसर के दो हजार रु. वसूल क्यों नहीं करते?

'राजधर्म' भ्रष्ट आचरण के ये उदाहरण मुद्रित पर्चों से किसी द्वेष भाव के कारण नहीं वरन् इसलिये छाप रहा है कि सम्बन्धित अधिकारी व व्यक्ति अपना चेहरा जनता के सामने साफ करेंगे और अपने अनियमित आचरण के बारे में स्पष्टीकरण देंगे।

आर्य सन्यासियों को शीघ्र मुक्त करो

बीकानेर। यहां आर्य युवक परिषद् जिला कार्यकारिणी द्वारा हरयाणा में आर्य युवक सन्यासी स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी इन्द्रवेश को बन्दी बनाकर उनके साथ जो अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है, उसकी तीव्र निन्दा की गई। साथ ही हरयाणा में सरस्वती के पुत्रों को पैरों तले रौंदा जा रहा है, उसके विरुद्ध भी क्षोभ प्रकट किया गया। कार्यकारिणी ने चौधरी बंसीलाल को चेतावनी देते हुए प्रस्ताव पारित किया कि आर्य जनता के पूज्य सन्यासियों से सम्मानित व्यवहार करते हुए भावी पीढ़ी के भाग्य से खिलवाड़ बन्द किया जाये। स्वतन्त्र भारत में लोकतंत्र की हत्या करने वाले दानवों का तांडव नृत्य सर्वथा असह्य है।

प्याऊ मनियारी से दिल्ली तक बसें चलाने की मांग

सोनीपत। दैनिक यात्री समिति प्याऊ मनियारी सोनीपत का एक विशेष समारोह इस क्षेत्र में यात्रियों को आवश्यक सुविधाएं देने के सिलसिले में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जनसंघ संसद सदस्य चौ. मुख्तारसिंह, कुंवर जसवंतसिंह चौहान, महानगर परिषद दिल्ली के सदस्य चौ. हीरासिंह और आर्य नेता स्वामी अग्निवेश ने भाग लिया।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने कहा कि सरकार जन सुविधाओं की ओर ध्यान नहीं देती। उन्होंने कहा कि यदि सरकार इस समस्या का समाधान नहीं करती तो आंदोलन करके राज्य और केन्द्र सरकार से इस क्षेत्र में परिवहन समस्या को हल करवाने का प्रयत्न किया जायगा। समिति के प्रवक्ता एम.आर. अग्रवाल के अनुसार इस बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें कहा गया कि दैनिक यात्री समिति प्याऊ मनियारी की मांगों पर समिति के कार्यकर्त्ता जन सहयोग प्राप्त करके कोई प्रभावशाली कदम उठाने के लिए विवश होंगे।

अध्यापक का राग, बंसी का फाग

(आवरण पृष्ठ २ का शेषांश)

मैं हूं अयूब का चचेरा भाई, अब तुम्हारी शामत आई। मेरा नहीं अक्ल से रिश्ता, जाओ जिले से बाहर ये सीधा रास्ता। ये भी खूब हुजूर, जितना ज्यादा पढ़ा, उतना घर से दूर। हमने हरयाणा को जंगल बनाना है। इसी में हमारा कल्याण है। अध्यापक ने लम्बी श्वांस भरी। नीचे का दम नीचे रह गया, ऊपर ले गया बंसी उठाए। कब के किये भोगे, वाह रे कलयुग के बंसी वाले तेरे करिश्मे। लगातार चार साल तक जब हाथ पसार कर थक गए, मैमोरैण्डम दिया किन्तु पढ़े कौन? अन्धे आगे रोए, अपने नयन खोए। पढ़ते तो बात ही क्या थी। पूछा ये कुत्ते कहां आ गए? उत्तर मिला-मामा के यहां! हाय-हाय, अब भौंकने में कसर क्यों रखता। रगड़ के रख दूंगा ये सिलबट्टा है या हमामदस्ता। आखिर में एक ही रास्ता नजर आया हड़ताल कर १२ फरवरी से! वह भी यही चाहता था, तुम दो दिन बाद करोगे। भेज दिया पुलिस को दिन पहले ही दस को। कराओ जबरदस्ती बन्द इन स्कूलों को। जो पढ़ाता मिले पहले उसे ही पकड़ो। देखते-देखते चार हजार बाराती हाथों में कंगना छनकाते आ गए। बाराती भी मस्ताने थे जब समधन के ज्यादा लठ पड़े, आगे छोड़ हरयाणा को दिल्ली में जा जुहारी डलवाई। अब तक डटे बैठे हैं राम लीला मैदान में, जायेंगे मांग ले के। ये निश्चय पक्का है। कभी बात न करने के ख्वाब भूल गया। अब कहता है अब जो चाहो दान दक्षिणा ले लो, कही सुनी माफ करो, बारह साल नलकी में रही सीधी न हुई, पर तुम ने दुम तोड़ दी। मुझे क्या पता था? मैं तो देशी ठर्रे के नशे में चूर था। सब पचों को राम-राम। अब पक्की कर लो। कभी आगे से ऐसा न होगा। ये कान पकड़ा। मैं हार गया, तुम जीत गये। मार को भूल जाना, फागुन का 'मस्त' महीना है। होली का फाग खेला है। पिला दो रस 'व्रती बासी' को। अपने प्रदेश में चलें, चण्डीगढ़ में सब रस्में होंगी। पर्दा गिरता है। *

मंत्री, जिला आर्यसभा, स्वस्तिक प्रेस, झज्जर (हरयाणा)

पंजीयन क्रमांक पी. ५५५
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

मेरे गाँव में

मेरे गाँव में

○ रेवतीरमण शर्मा

मेरे गांव में
कल भी वसन्त आया था
आज भी है
और कल भी रहेगा।
मेरे बूढ़े गांव में
एक सामन्ती सांप था
जो मेरे गांव वालों पर
फुंफकारता था
सावन में भी आग उगलता था
लोग उसे दूध पिलाते
दूध से उसका पेट न भर सका
वह सांप नर भक्षी बन गया
और जब विनाश की पराकाष्ठा हुई
लोग उठ खड़े हुए
और सबने एक साथ
सामन्ती सांप का फन कुचल डाला।

पर मेरे गांव में
अब भी वसन्त नहीं आया
सरसों के फूलों के साथ
मन भी पीला हो गया
एक सामन्ती सांप मरा
अनेक गोहरे आ बसे हैं
मेरे गांव में।

पहले एक सांप को
वसन्त आता था
और अब गोहरों को वसन्त आता है।
पहले मणिधर
सिर पर मणि मुकुट धारण करता था
अब मेरे गांव में
जो गोहरे आकर बसे हैं
वे टोपी ओढ़ते हैं
मेरे गांव में
वसन्त इन टोपियों पर
उतर आया है।

मेरे गांव में
हर साल वसन्त आता है
पर मेरे गांव वालों को नहीं।
पहले पुरवा सांप पर से
गुजरती थी
और उसे जिलाती थी।
अब पुरवा इन गोहरों पर से
गुजरती है
और हम सीलन भरी घुटनदार
हवा में जी रहे हैं।

दूर, बहुत दूर तक
आसमान से मिलती धरती
गांव वालों की नहीं
अब इन गोहरों की हो गई है।
खेतों से जब बांबियां हटी
तो गोहरों ने जमीन निगल ली
सबै भूमि गोपाल की नहीं
सबै भूमि गोहरों की हो गई।

मेरे गांव में
कल भी वसन्त था
आज भी है
पर मेरे गांव वालों को
न कल वसन्त था,
न आज है।

नगर पालिका कार्यालय, अलवर

राजधर्म प्रकाशन ... प्रकाशित एवं मुद्रित। दूरभाष : ८८२



शहीद भगतसिंह



पाक्षिक



वर्ष ५ अंक ६
२७ मार्च १९७३

सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : डॉ० महेन्द्र मधुप

वार्षिक १० रु०
एक प्रति ५० पैसे

- शोषण से मुक्ति के लिए पाखंड का विरोध आवश्यक
- हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा
- अध्यापक आन्दोलन : किसान-मजदूर सरकार के बिना पूंजीवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता
- शराबी भारत : देशी षड्यन्त्र की कहानी
- जन-क्रांति, जनता द्वारा, जनता के लिए
- आवश्यकता, उबलते रक्त की
- भारत-जर्मन षड्यन्त्र का अन्यतम बौद्धिक नेता यतीन्द्रनाथ मुकर्जी
- वेद और समाजवाद



अध्यापक का राग

बंसो का फाग

अध्यापक का राग, बंसी का फाग

डॉ० कृष्णदत्त

दूसरा महायुद्ध मित्र राष्ट्रों और धुरी राष्ट्रों के मध्य चल रहा था। यद्यपि जर्मन तानाशाह हिटलर के साहस और पराक्रम के कारण उन्हें पर्याप्त सफलताएँ मिली, किन्तु कई इतिहासकारों का मत है कि जर्मनी की अधिकांश विजय का श्रेय उस देश के प्रचार मन्त्री गोबेल्स को है। गोबेल्स ने कभी हाथ में हथियार लेकर सेना की अगवानी नहीं की, बल्कि इनका कार्य केवल आकाशवाणी के प्रसारण द्वारा झूठा-भ्रामक प्रचार करना था। ये बिल्कुल निराधार, बिना सिर पैर की झूठ गढ़ा करते थे। झूठ-मूठ में ही कह देते थे कि हमारी फौजों ने अमुक नगर को चारों ओर से घेर लिया है। दुश्मन की सेनाओं ने हथियार डाल कर आत्म समर्पण कर दिया है। इस प्रकार के झूठे प्रसारण से, सेना और जनता का मनोबल गिरने मात्र से कई विजय बिना रक्तपात किये उन्हें मिल जाती थी।

भारत पर पाकिस्तान ने सन् ६५ में आक्रमण किया। अयूब साहब सेनापति थे, किन्तु गद्दी पर बैठने पर ये लड़ना भूल गए। उन्हें गोबेल्स का बड़बड़ाना याद रह गया। उन्होंने घोषणा की कि हमारी फौजों ने भारत की फौजों को पीछे धकेल दिया है। अब हमारे बहादुर नौजवानों ने दिल्ली की तरफ कूच कर दिया है। ये दिल्ली के चांदनी चौक में घण्टे वाले की देशी घी की मिठाई खायेंगे, किन्तु अगले दिन ही पता चला कि पाकिस्तानी फौजों ने इच्छोगिल का मोर्चा खाली कर दिया और भारतीय फौजी टुकड़ियां स्यालकोट पहुंच गई। इसी तरह सन् ७१ में फिर पाक से न रहा गया। भुट्टो महाराज भी तो अयूब साहब के हम प्याला दोस्त रह चुके थे। उन्हें अब गोबेल्स और अयूब से भारी घोषणा करने में बाजी लेनी थी। ये रेडियो प्रसारण में कहते हैं कि हम एक हजार वर्ष तक लड़ेंगे, मानो इन्होंने रावण की भांति स्वर्ग और नरक दोनों को, अपने लिये रिजर्व करा लिया हो।

हम ये सोचा करते थे कि झूठ के छूत का रोग पाक के शासकों में पेशेवर होकर रह गया है। हमारे यहां तो पूरवा हवाएँ चलती हैं तो यह रोग हमारे यहां आने का सवाल ही नहीं, किन्तु इसकी खुजली हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० बंसीलाल की जीभ पर चलती देखी। बड़ा आश्चर्य हुआ यह कैसे? यदि पच्छवा चलती है तब भी रास्ते में तो ज्ञानी जैलसिंह पड़ते थे। बन्सी भैया का नम्बर कैसे पड़ा? अब तो इनकी कतरनी तेज हो गई। लम्बी घोषणा करने लगे। कभी-कभी ज्यादा जोश में आते तो अपने तीसमारखाँपने की दुहाई अलापने लगते। हमारी हैरानी बढ़ने लगी। हमने इनकी घोषणाओं पर ही पी-एच.डी. की उपाधि लेने की ठान ली। ये कहते थे पानी की कमी न रहने दूंगा। हमने सोचा आकाश में छेद करेगा या अर्जुन की तरह तीर चलाकर जमीन का पेट फोड़ेगा। देखा तो कुछ दिन में सारे हरयाणा को ही पानी में बैठा दिया और वो भी सूखे कालर में। अगली बात कही कि सभी गांव में बिजली भेजूंगा। देखा तो एकदम सारे प्रांत पर बिजली पड़ गई। हमने अंदाजा लगाया कि ये रेडियो झूठिस्तान है! अब इससे खबरें सुनिये। इन साहब का अयूब से कैसे रिश्ता जुड़ा। अयूब साहब रोहतक जिले के कलानौर के रांहगड़ मुसलमान हैं। ४७ में ये यहां से भाग खड़े हुए। भाग कर लुहारु के नवाब के पास ठहरे। उस समय बंसीलाल के अब्बाजान लुहारु नवाब के गुप्तचर विभाग में काम करते थे। सभी क्रांतिकारी देशभक्तों की डायरी ला कर देते थे। बंसी ने उनके साथ 'एक निवाला हम प्याला' की प्रीत बढ़ाई होगी। ये कीटाणु उस समय से रिजर्व होंगे? कहते हैं पागल कुत्ते का काटा बारह साल में उभरता है किन्तु इन्सान के रूप में हैवान का चौबीस साल में आकर उभरा! इनको नशा चढ गया। अब शिकार कौन बनेगा, इसकी चिन्ता थी। भिवानी से बाहर निकले ही थे कि इनको 'अकल चर भट्टू' कह कर उल्टे कान एंठने वाले स्कूली टीचर मिल गए। कहा–कहां जाते हो, लो तुम से मैं न पढ़ाया जा सका, बड़ा पिट्ठू लादा था अब तुम्हारा मुर्गा बनाऊंगा। जे. बी. टीचर भौचक्का रह गया। 'अरे हमारी बिल्ली हमी ही से म्याऊं,' तो अब मैं किस को खाऊं, कहो मैं अब किधर को जाऊं। कहा जाओ सीधे बीस मील। बेचारा शिष्य दक्षिणा दे कर भागा। आगे बी. टी. जी मिल गए। ए.बी.सी. पढ़ाते थे। मुझे टेन्स तक नहीं आते थे। ग्राउन्ड के बहुत चक्कर काटते थे। अब बताओ महाराज आ गया मेरा राज, हो गई मुझ को खाज।

(शेषांश आवरण पृष्ठ ३ पर)

सम्पादकीय

शोषण से मुक्ति के लिये पाखंड का विरोध आवश्यक

हरयाणा के चालीस हजार शिक्षक सरकारी शोषण के विरुद्ध, संघर्ष के बलिदान-पथ पर हैं। उन्होंने छोटे-छोटे झगड़ों व पारम्परिक पाखंड के विरुद्ध बगावत कर दी है। सत्य की रक्षा की इस क्रांति-यात्रा में, हरयाणा का शिक्षक अपने को अकेला अनुभव नहीं करता। क्योंकि सत्य का प्रत्येक अन्वेषक उसके साथ है। हरयाणा की धरती को असत्य और पाखंड से नफरत है। अतः उसका बच्चा-बच्चा अध्यापकों के साथ मर मिटने को तैयार है। जो व्यक्ति इस हड़ताल में सम्मिलित नहीं हैं, वे तीन प्रकार के हैं—प्रथम, छोटे-छोटे स्वार्थों में लिप्त दिग्भ्रमित लोग; द्वितीय, सरकार द्वारा भौतिक साधनों द्वारा खरीदे गये बिचोलिये तथा तृतीय, झूठ, शोषण और पाखंड को सफेद वस्त्रों में ढके सरकारी एजेन्टों के निर्माता पूंजीपति नेता, सामाजिक नेता तथा धार्मिक नेता। प्रथम प्रकार के व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें सत्य मार्ग दिखाने पर हमारे साथ आ जायेंगे। द्वितीय प्रकार के व्यक्तियों पर जब काम निकलने पर, सरकार की तीखी मार पड़ेगी, तो वे सरकार से धीरे-धीरे कटने लगेंगे। सबसे खतरनाक तीसरे प्रकार के व्यक्ति हैं। ये तथाकथित राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक नेता हैं। इनके छद्म को समझ कर, हमें परिवर्तन को शहरों के राजपथ के स्थान पर, ग्राम-पथ से लाना होगा।

यहीं वैचारिक संघर्ष की बात आती है। आधुनिकता के नाम पर हम विदेशी वादों से इतने प्रभावित हो जाते हैं कि अपनी मिट्टी की संस्कृति, मान्यताओं और दर्द से सामंजस्य नहीं कर पाते। अगर आधुनिकता के नाम पर कही जाने वाली बातें हमारे ग्रंथों में कही गयी हों या भारतीय चिन्तकों ने कही हों, तो हमें उन्हें उद्धृत करते हुए शर्म का अनुभव होता है।

स्वामी दयानन्द सामाजिक-क्रांति के योद्धा थे। विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविन्द आदि भारतीय चिन्तकों ने भारतीय संस्कृति, अर्थ व्यवस्था और राजनैतिक मूल्यों का गहन विश्लेषण किया था। भारतीय ग्रन्थों गीता, महाभारत और रामायण ने सारे विश्व को प्रभावित किया, किन्तु भारत का कोई भी तथाकथित प्रगतिशील चिन्तक इनके साहित्य को पढ़ना या उसका उल्लेख करना 'सामन्तवादी मनोवृत्ति' मानता है।

मार्क्स, एंगल्स आदि महामानव थे, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जमीन की गंध को भूल कर हम एक वाद या व्यक्ति के अंध मूर्ति पूजक बन जायें। जिन्होंने जीवन भर कर्म के स्थान पर बनी हुई पाखंड की मूर्ति को तोड़ने की भूमिका निभाई, उनकी मूर्ति बनाकर पूजा करना, उनके सिद्धांतों की हत्या करना है। एक चिन्तक को महान् बता कर, दूसरे को उसके जूते की धूल बताना, स्वाध्याय की कमी और 'तंग नजर' का द्योतक है। विश्व के किसी भी चिन्तक ने दूसरे चिंतक को कभी छोटा नहीं माना। स्वयं महर्षि दयानंद ने विश्व के सभी चिंतकों को सम्मान की दृष्टि से देखा। उनका मात्र यह कहना था कि सत्य के ग्रहण करने में और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

अतः शोषण के विरुद्ध क्रांति तब तक अधूरी रहेगी, जब तक हम स्वाध्याय की कमी को, दूसरों को गालियां देने का छद्म रच कर छिपाते रहेंगे। सत्य की खोज को, 'विश्व में हो रही घटनाओं से काट कर, इसलिये नहीं देखेंगे कि वे गलत है वरन् इस लिए देखेंगे कि हमें उनकी कोई जानकारी नहीं है। साथ ही कथित चिंतक भारतीय साहित्य और विचार धाराओं का अध्ययन-विश्लेषण नहीं करेंगे, तब तक परिवर्तन का कोई भी कार्यक्रम इस जमीन पर सही नहीं उतरेगा।

—महेन्द्र मधुप

सामयिकी

हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा

○ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

शाम के छः बजे थे। पार्लियामेंट स्ट्रीट की कचहरी के आंगन में हरयाणा के सैंकड़ों शिक्षक खुले में बैठे थे। तीन तरफ बरामदों में पुलिस थी और चौथी तरफ उन्हें जेलों में ले जाने के लिए चमचमाती तीन-चार प्राइवेट बसें खड़ी थीं। अधिकतर लोगों की सूरत ग्रामीण किसानों जैसी थी। थोड़ी देर पहले ये पटेल चौक में गिरफ्तार किये गये थे। उन्हें प्रदर्शन वर्जित क्षेत्र के भीतर प्रदर्शन करने, दफा १४४ तोड़ने पर गिरफ्तार किया गया था। उस शाम गिरफ्तार किये गये लोगों की संख्या पुलिस के अनुसार ४६१ थी और गिरफ्तार शिक्षकों के अनुसार ५०४। किसी शिक्षक से हमारी बात करने की इच्छा जान पुलिस ने खुद उनके नेता को बुला दिया। एक लंबी मज़बूत काठी। बिना हजामत का बुझा बुझा सा चेहरा, गुस्से, थकान और उदासी में दबा हुआ। जैसे राख में चिनगारी। नाम जगन्नाथ शास्त्री। जींद के राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल में संस्कृत के प्राध्यापक।

'गिरफ्तार शिक्षकों में किन-किन जगहों के लोग हैं ?

'सभी जगहों के—रोहतक, सोनीपत, हिसार, गुड़गांवां, करनाल, जींद, महेन्द्रगढ़, अम्बाला, खाली जींद के ७७ शिक्षक हैं।"

'दिल्ली आप लोग क्यों आये ? अपनी मांगों के लिए क्या वहीं लड़ाई नहीं लड़ सकते थे ?'

"वहाँ औरंगजेबी शासन है। दिसंबर से हम अपनी मांगों के लिए लड़ रहे हैं पर कोई सुनवायी नहीं। जुल्म बढ़ते ही जा रहे हैं। दिल्ली दो वजहों से आये थे एक तो अपनी फरियाद इंदिरा जी और दीक्षित जी को सुनाने, पर दोनों ने इंकार कर दिया। दूसरे अपनी जान बचाने। वहां बंसीलाल की पुलिस बहुत तंग कर रही है। हमारे घर की औरतों, बच्चों, भाई-बहनों तक को नहीं बख्शती। मेरा भाई पकड़ लिया। बहुत से शिक्षक डर कर भाग कर आ गये हैं। पैदल चल-चल कर आये हैं।"

"दिल्ली में आने वाले शिक्षकों की संख्या ?"

"१५ हजार।"

"आप लोग रह कहां रहे हैं ?"

"ज्यादातर लोग रामलीला मैदान में खुले में पड़े हैं। इसी (कंधे पर पड़ा कंबल दिखाते हुए) के सहारे रात काट देते हैं।"

गुजरात के सूखे में हजारों की तादाद में बेचारे पड़े मवेशी हमने देखे थे, खुले आसमान के नीचे। यहां न्याय के सूखे में घरबार छोड़ कर भटकते शिक्षक दिखाई देते हैं। जिस शाम बातचीत हुई थी उस शाम रात में बारिश आयी थी, सर्दी बढ़ गयी थी। पर क्या किसी ने सोचा ये शिक्षक कहां होंगे ? अन्याय की मार से घबरा कर शरणार्थी की तरह वे राजधानी आ गये। बिना किसी सामान के कंबल झोला लटकाये, इस विश्वास से कि लोकतंत्र में उनकी तकलीफ सुनने वाला कोई है, पर उन्होंने देख लिया कोई नहीं है।

'अब क्या करोगे ?'

'अब हरयाणा का नाश हो जायेगा, बच्चा-बच्चा...' वह एकदम उत्तेजित हो उठे। साथियों ने रोका।

'आपकी उम्र क्या है ?'

'पैंतालीस साल।'

'परिवार ?'

'परिवार में नौ सदस्य हैं। मैं अकेला कमाने वाला हूं। ३७५ रु० वेतन मिलता है। ९० रु० कट जाते हैं प्राविडेंट फंड में शिमला चले जाते हैं। इतने में गुजारा हो सकता है ? लेकिन औरंगजेब को हमारी मांगें गलत लगती हैं। वह जान से मारने की धमकी देते हैं। नौकरी खत्म करने, स्कूल बंद करने की धमकी देते हैं। हमारे शांतिपूर्ण आंदोलन की भी कोई सुनवायी नहीं। हम आंध्र की तरह तोड़फोड़ तो नहीं कर रहे ?'

इस का क्या जवाब हो सकता है। जब हर समस्या किसी एक आदमी की प्रतिष्ठा का सवाल बन जाये तो कोई जवाब नहीं हो सकता।

'विद्यार्थी क्या सोचते हैं ?'

'विद्यार्थी साथ हैं। स्कूलों में पढ़ाई बन्द है। हाजिरी नहीं है। एस. पी., डी. एस. पी. कहीं-कहीं स्कूलों में पन्द्रह-बीस लड़कों को घेर कर बैठा लेते हैं। देहातों के स्कूलों में तो कोई बच्चा नहीं जाता।'

'पर बंसीलाल चैन की बंसी बजा रहा है' एक और शिक्षक बोल उठता है। शायद वह नहीं जानता कि कहीं कुछ भी हो इस देश की राजनीति चैन की बंसी बजाने की राजनीति है।

'प्रतिदिन कितने लोग अपने को गिरफ्तार कराते हैं ?'

'कोई पांच सौ ?'

(शेषांश पृष्ठ ४ पर)

अध्यापक आंदोलन

किसान-मजदूर सरकार के बिना पूंजीवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता

O रामधारी शास्त्री

हरयाणा बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की धरती है। यहां की जनता जहां निश्छल और निष्कपट है वहां बहादुर और कुर्बानी का माद्दा भी रखती है। हरयाणा प्रान्त अलग बनने के बाद हमने सोचा था, शायद यहां की जनता को कुछ सुख मिलेगा। परन्तु, इसके विपरीत गरीबों के दमन और शोषण को हम देख रहे हैं। अपना प्रान्त और अपनी सरकार का नारा देकर मीठी गोली के द्वारा एक भयंकर विष दिया जा रहा है। यहां की जनता कुछ करना चाहती है, परन्तु उसकी भावनाओं को यहां के नेताओं ने ठुकराया है। पहला विश्वासघात जनता के साथ यह हुआ कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया गया। पंजाब के साथ सीमा विवाद आदि विषयों को अब तक सुलझाया नहीं जा सका है, क्योंकि मुख्यमन्त्री हर कीमत पर प्रधान मन्त्री को खुश रखना चाहते हैं। **दूसरों के साथ लड़ने का सामर्थ्य तो उनमें है नहीं, परन्तु अपनों को कुचलने और उनका दमन करने में वे बड़े निपुण हैं।** सारी बुद्धि और नीति शास्त्र का प्रयोग बंसीलाल ने आज अध्यापकों पर कर दिया। जिस कांग्रेसी शासन को यह जनता दुखत्राता मानकर चलना चाहती थी, आज वही खद्दर के वेश में भेड़िए बनकर इस जनता का खून पीना चाहते हैं।

जिन्हें हम फूल समझे थे, गला अपना सजाने को।
आज वे नाग बन बैठे हमको काट खाने को॥

हरयाणा के मुख्यमन्त्री ने अपना सिक्का जमाने के लिए सबसे पहला प्रहार शिक्षा पर किया। वे कहते हैं कि टट्टू पिटे और ताजन कांपे अर्थात् गरीब अध्यापकों पर रगड़ा चढ़ जाने से फिर कोई सिर नहीं उठा सकेगा और उन्होंने इसी दृष्टिकोण को लेकर पिछले चार साल से अध्यापकों के साथ द्वेष पूर्ण व्यवहार किया। परन्तु गई थी नमाज बकसवाने रोजे गले पड़ गए। बंसीलाल चाहते थे सिक्का जमाना, परन्तु अत्याचार पूर्ण इस व्यवहार ने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया और यह क्रान्ति कभी शान्त नहीं होगी।

मैं पाठकों का ध्यान उन तथ्यों की ओर दिलाना चाहता हूं जिनकी बंसीलाल अवहेलना करना चाहते हैं। जहां तक अध्यापकों के साथ व्यवहार की बात है आप सभी ने अपनी आंखों से ही देख लिया और सुन लिया होगा। **मेरे देश के गुरु को जीप के पीछे बांध कर घसीटा गया। गालीगलोच और अपमान जनक व्यवहार के साथ कुछ ऐसी बातें हैं जिनको लिखते लेखनी कांप जाती है। आखिर यह अध्यापक कहीं आकाश से तो नहीं उतरे। यह आपके ही बेटे-पोते, लड़के-लड़कियां हैं। आज उनको आपके सामने ही नंगा करके नचवाने का प्रयास किया जा रहा हो और आप आंखें बन्द कर लें, इससे कार्य नहीं चलेगा।** जहां तक बात स्थानान्तरण नीति की है यदि यह भी सबके लिए बराबर होती तो भी सन्तोष हो जाता। मैं सैंकड़ों ऐसे उदाहरण दे सकता हूं कि बंसीलाल, कांग्रेसी विधायकों और मन्त्रियों के सगे सम्बन्धी आज भी अपने घर के नजदीक स्कूलों में बैठे हैं। कहां गया वह बीस मील का नियम; नियम तो जरूर है परन्तु दूसरों के लिए 'अन्धा बांटे बाकली अपने अपनों को दे' वाली बात ठीक चरितार्थ होती है। यह नियम तो केवल कागजों में ही रह गया है, व्यवहार में नहीं। जब सरकार ने दूसरे अध्यापकों को स्कूलों में भेजने की कोशिश की तो बच्चों ने जगह-जगह पर पिटाई से उनका स्वागत किया, क्योंकि वे गद्दारी कर रहे थे। जब इनकी यह बात नहीं चली तो इन्होंने विद्या के स्तर को चार चांद लगाने की एक और योजना बनाई। गांव के ही पुराने चौथी पांचवी पास लड़कों को अध्यापक के रूप में कई जगह रखने का प्रयास किया गया, जिनमें से बहुत से बाद में छोड़ कर चले गए। अब आप सोचिए कि यह स्थानान्तरण नाम की नीति है या दुराग्रह है? जब गांव के ही अनपढ़ों को अध्यापक बनाया जा रहा है तो बीस मील वाली बात कहां तक व्यावहारिक है।

बंसीलाल अपने भाषणों में आजकल एक और बात कहते फिर रहे हैं कि मैं अध्यापकों को रगड़ कर रख दूंगा, क्योंकि वे शराब पीते हैं और प्रातः उनकी खाट के नीचे शराब की बोतल मिलती है। हम और हमारा दल (आर्य सभा) शराबबन्दी के लिए आन्दोलन चला रहा है और हमारे नेता स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश जेलों में पड़े हैं। परन्तु इस सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। **मैं पूछना चाहता हूं बंसीलाल से, क्या यह शराब किसान बनाते हैं या अध्यापक बनाते हैं या दुकानदार बनाते हैं? आखिर बंसीलाल ही तो कारखानों में शराब का निर्माण कराता है** और दावा करता है कि शराब से सरकार को ग्यारह करोड़ की आमदनी होती है। हरयाणा सरकार शराब के कारखाने और ठेके खोलती है और जबरदस्ती लोगों को पीने के लिए बाधित किया जाता है। यह पूंजीवादी षड्यन्त्र है। आम जनता की जेब से पैसा लाल-पीली बोतल दिखाकर छीन लिया जाता है। यदि बंसीलाल शराबियों के ही विरोधी हैं तो **कुछों को छोड़कर उसके सभी**

विधायक, मन्त्री और बड़े-बड़े राजकर्मचारी शराब की प्याली में क्यों डूबे रहते हैं ? यदि शराब का बहाना लेकर कुचलना है तो पहले इनको कुचलना चाहिए ।

परन्तु कमाल इस बात में है कि बंसीलाल प्रत्येक व्यक्ति को लोभ और लालच देकर शासन करना चाहता है । यह तो ठीक है कि हरयाणा विधान सभा के प्रत्येक प्रतिनिधि की जबान को ताला लगा दिया गया है और वे हर समय रात को दिन और दिन को रात कहने के लिए तैयार रहते हैं । परन्तु , उनके साथ भी यह हालत हो रही है, जो एक घटना से स्पष्ट होगी । एक व्यक्ति गधी पर सब्जी का भार लाद कर ला रहा था तो ज्यादा भार से पीड़ित होकर वह गधी ज़मीन पर बैठ गई । जब उस व्यक्ति के बार-बार पीटने पर भी वह पशु न उठा तो उसने एक योजना बनाई और मूली के हरे-हरे पत्ते उसको दिखाए । वह खड़ी हो गई । व्यापारी ने दो मूली के पत्ते गधी के सिर पर नीचे की ओर लटका कर बान्ध दिये और वह हरे पत्तों को प्राप्त करने के लालच में चलती रही । इसी प्रकार हरयाणा के विधायकों को भी बंसीलाल टुकड़ा दिखाते रहते हैं और वे उसको प्राप्त करने के लिए उसके पीछे चलते रहते हैं । हरयाणा के विधायक बंसीलाल की तानाशाही और जुल्मों को सह सकते हैं, परन्तु हरयाणा की जनता अब अंगड़ाई लेकर खड़ी हो गई है । अब इस षड्यंत्र को सहन नहीं किया जाएगा ।

जब हमने गांव-गांव में घूम कर देखा तो स्कूल पूर्ण रूप से बन्द पड़े थे । अब जनता की सहानुभूति भी अध्यापकों के साथ बन चुकी है । प्रत्येक विद्यार्थी और युवक गुरु के अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो गया है । शीघ्र ही विद्यार्थी भी प्रचण्ड रूप से आंदोलन की भट्टी में कूद पड़ेंगे । आज का युवक शहीद बिस्मिल के अमर गीत को एक स्वर में गाने के लिए तैयार है—

सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है ।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है ॥

आज हरयाणा का बच्चा-बच्चा उन गलत अफवाहों को समझ चुका है, जो हरयाणा सरकार द्वारा फैलायी जा रही है । आज बंसीलाल के चमचे गांव में जाकर कहते हैं कि यदि अध्यापकों का वेतन बढ़ गया तो किसानों पर कर बढ़ जाएंगे । मैं इन चतुर प्रचारकों से पूछना चाहता हूं, क्या उन्होंने नए बजट को देखने की कोशिश की है, जिसमें किसानों को पीस कर रख दिया गया । इतने भारी कर आज तक किसी सरकार ने किसानों पर नहीं लगाये । एक ओर यह सरकार अपने आपको किसानों को शुभचिन्तक मानती है तो दूसरी ओर उन पर भयंकर प्रहार कर रही है । इस लिए अब जरूरत है आर्य सभा के नेतृत्व में किसानों और मजदूरों की सरकार बनाने की । इसके बिना इस पूंजीवादी सरकार से छुटकारा नहीं मिल सकता । ✻

महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, झज्जर रोड, रोहतक

हरयाणा के 'मामूली' शिक्षक की दिल्ली यात्रा

(पृष्ठ २ का शेषांश)

'कौन पहले गिरफ्तार हो कौन बाद में, यह कैसे निश्चय होता है ?'

जिस का पैसा पहले खत्म होने लगता है वह गिरफ्तार हो जाता है । चलते समय कोई पंद्रह रुपया कोई, बीस-तीस रुपया डाल कर लाया था । यहां रोटी दाल में जब यह पैसा खत्म होने लगता है तब उसका नंबर आ जाता है ।

'लोग कितना पैसा ले कर भागे होंगे ?'

'यही बीस-तीस रुपये । उसके लिए भी जुगाड़ करनी पड़ी ।'

'आप कितना पैसा ले कर आये थे ?'

'सौ रुपया ?'

'खत्म हो गया सब ?'

'हां, कुछ की जेब में १५ रुपये भी नहीं थे ।'

बसों के सामने हथियारबंद पुलिस की पंक्तियां थीं । जैसे खूंख्वार अपराधियों को ले जाया जा रहा हो । कुर्सी पर बैठा एक आदमी नाम बोल रहा था । हाजिरी चल रही थी । सवाल और भी बहुत से थे पर खुली इजलास में ज्यादा समय नहीं था । मेरी जबान भी अटक गयी थी । सारी पूछताछ निष्फल प्रयोजन लगती थी । अपनी न्यायोचित मांग की लड़ाई में हर आदमी, हर वर्ग कितना अकेला है ? **राजधानी मे बड़े-बड़े लेखक, कलाकार, बुद्धिजीवी, वकील डाक्टर हैं पर किसी को उस तकलीफ से सरोकर नहीं जो एक ग्राम शिक्षक झेल रहा है ।** थोड़ी देर के बाद वे बसों में भर कर ले जाये जा रहे थे । कनाट प्लेस से हो कर उनकी नारें लगाती बसें जा रही थीं । ये रोजमर्रा की बातें हैं । किसी ने ध्यान देने की भी जरूरत नहीं समझी कि कौन लोग हैं ये ? कहां ले जाये जा रहे हैं ? क्यों ले जाये जा रहे हैं ? एक दूसरे की नियति से सब कितने उदासीन और तटस्थ हैं । हमने चलते समय एक बस के ड्राइवर से पूछा था 'कहां ले जा रहे हो इन्हें ? उसने कहा 'फिरोजपुर' । फिर एक सिपाही से पूछा । उसने कहा 'बरेली' । **लेकिन शिक्षकों को नहीं मालूम था कि वे कहां जा रहे हैं । इस लोकतंत्र में क्या किसी को मालूम है ?** ✻

दिनमान, बहादुरशाह जफर मार्ग, नयी दिल्ली

आवरण-कथा

आवरण पृष्ठ पर राइफल की बट और लाठी से पिटता हुआ, भारत के भविष्य का निर्माता अध्यापक दिखाई दे रहा है।

इस चित्र को राजस्थान के युवा चित्रकार सुमहेन्द्र ने लकड़ी पर काट कर भेजा है । उनका पता है—कलावृत्त, बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, जयपुर ।

| भगतसिंह के बलिदान-दिवस पर विशेष लेख |

जन क्रांति, जनता द्वारा, जनता के लिए

○ रामशरण जोशी



शहीद भगतसिंह

हरयाणा प्रदेश में शिक्षकों का न्यायोचित संघर्ष दिन-ब-दिन तेजी से बढ़ता जा रहा है। उनका संघर्ष किसी अंग्रेज शासक या गोरी सत्ता के खिलाफ नहीं है। उनका संघर्ष है; भ्रष्ट चुनाव पद्धति पर आधारित तथाकथित जन प्रतिनिधि स्वदेशी सरकार, यानि 'काले आकाओं' की सरकार के खिलाफ है। आखिर ऐसा क्यों? आज भी हम गोरे आकाओं के स्थान पर काले आकाओं के कैदखाने में क्यों बन्द हैं? हमारी इस गुलाम अवस्था के विरुद्ध संघर्ष घोषणा सन् १९२८ में ही शहीद भगत सिंह ने कर दी थी—**"किसानों एवं मजदूरों को विदेशी हुकूमत के साथ-साथ देशी भूपतियों और पूंजीपतियों के शोषण से भी मुक्ति पाना है, किन्तु कांग्रेस का लक्ष्य यह नहीं है।"**

आखिर कांग्रेस का ऐसा लक्ष्य क्यों नहीं रहा? इस सिलसिले में तरुण शहीद का सही विश्लेषण था—'कांग्रेस देश को आजाद कराने के बाद श्रमिकों और कृषकों को पूंजीपतियों एवं भूपतियों के शोषण से मुक्त नहीं कराना चाहती। कांग्रेस दुकानदारों (बड़ा) और पूंजीपतियों के जरिये इंग्लैंड पर आर्थिक दबाव डाल कर कुछ अधिकार ले लेना चाहती है'। इसीलिए आज श्रमिक, कृषक, छात्र एवं शिक्षक वर्ग काले शोषकों की सत्ता को ध्वस्त करने के लिए सड़कों पर निकल पड़ा है।

शहीद की भविष्यवाणी के आधार पर प्रस्तुत लेख में मैं भगतसिंह के जीवन लक्ष्य पर चर्चा करना और उसे आज की जिन्दगी से जोड़ना अधिक पसंद करूंगा, क्योंकि उनकी जीवन-कथा के सम्बन्ध में प्रायः आज सभी पढ़ चुके हैं। वैसे संक्षेप में कहा जाए तो उनका जन्म २८ सितम्बर १९०७ को एक सिख परिवार में हुआ। परिवार में उनके अतिरिक्त चाचा अजीतसिंह व सुवरनसिंह भी देशभक्त रहे। भगतसिंह का सम्पर्क चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त, यशपाल, दुर्गा भाभी आदि क्रान्तिकारियों से रहा। ८ अप्रेल १९२९ को केन्द्रीय एसेम्बली की दर्शक दीर्घा से भगतसिंह ने चन्द साथियों के साथ बम फेंका। बम फेंकते समय नारे थे—'इंकलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद का नाश हो, दुनिया के मजदूरों एक हो।'

मुकदमा चला। २३ मार्च को भगतसिंह, सुखदेव एवं राजगुरु फांसी पर चढ़ा दिए गए। फांसी से पूर्व एक सन्देश में उन्होंने कहा—"जनता द्वारा जनता के लिए क्रान्ति।"

यहीं से चर्चा का सिलसिला शुरू किया जाता है। भगतसिंह ने जब 'जनता' एवं 'क्रान्ति' कहा है तो प्रश्न उठता है, आखिर उनका इन शब्दों से क्या रिश्ता था? भगतसिंह एवं अन्य क्रान्तिकारियों की दृष्टि में जनता वही होती है जिसका सम्बन्ध मेहनतकश वर्ग से है। जनता से कृषक, श्रमिक तथा उन सभी व्यक्तियों को जोड़ा जा सकता है, जिनका जीवन-आधार 'श्रम' है और शोषण विहीन समाज रचना के लिये संघर्षरत है, प्रत्येक ढंग से। इस स्वप्न को साकार बनाने के लिये भगतसिंह ने घोषणा की थी—'मैं अपने दल में लक्ष्य और साधनों के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। दल का नाम होगा सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी और इसका कार्य समाजवादी समाज की स्थापना करना है। कांग्रेस और इस दल के लक्ष्य में यही भेद है कि **जब राजनीतिक क्रान्ति से शासन-शक्ति अंग्रेजों के हाथ से निकल कर हिन्दुस्तानियों के हाथों में आ जाएगी तो कांग्रेस यहीं रुक जाएगी, (जैसा कि उसने किया भी) जबकि हमारा लक्ष्य समाजवाद होगा। इसके लिए मजदूरों एवं किसानों को संगठित करना होगा। इनको विदेशी हुकूमत के जुए के साथ-साथ जमीदारों और पूंजीपतियों के जुए से भी उद्धार पाना है। परन्तु कांग्रेस का उद्देश्य यह नहीं है।"** (कितना बड़ा युग यथार्थ!)

अतः भगतसिंह की असली जनता वो ही है जो कमेरा है। आज भी इस कमेरे को संघर्ष करने की आवश्यकता है क्योंकि कांग्रेस ने तो अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया यानी देश के दस-पन्द्रह प्रतिशत वर्ग को स्वाधीनता दिला कर शोषण का राज स्थापित कर लिया है, परन्तु देश का ८५ प्रतिशत कमेरा वर्ग आज भी शोषण की चक्की में पिस रहा है। स्वयं शोषक सरकार के अनुसार देश के २०-२५ करोड़ व्यक्तियों की दैनिक आय ६० पैसे है। दूसरी तरफ देश के ६५ परिवारों की आय में कई सौ गुना वृद्धि हुई है। देश के प्रमुख शोषक बिड़ला समूह के पास ६३-६४ में १५१ कम्पनियां थीं और कुल चुकता पूंजी ७६ करोड़ थी एवं कुल परिसंपत्ति २९३.४० करोड़ थी। अब यह बढ़ कर १५६ से अधिक कम्पनियां, चुकता पूंजी १०५ करोड़ और कुल परिसम्पत्ति ५०९ करोड़ रु० से अधिक है। यही

स्थिति टाटा, साहू जैन, डालमिया, मार्टिन बर्न, जे.के. सिंघानिया, साराभाई, गोयनका, मफतलाल, किर्लोस्कर, एंड्रयू पूल आदि की है। संक्षेप में सर्वोच्च ७५ व्यवसायी घरानों की कुल चुकता पूंजी, तमाम गैर सरकारी और गैर बैंक कम्पनियों की कुल चुकता पूंजी का ४४ प्रतिशत है।

स्वदेशी पूंजीपति विदेशी पूंजीपतियों से मिल कर भारतीय श्रम को सस्ते दामों में खरीद कर विदेशों में सामान निर्यात कर मुनाफा कमा रहा है। यहां की जनता का लूट का माल विदेशों में उद्योग धन्धे स्थापित करने में लगा रहा है। भारतीय पूंजीपतियों ने विदेशों में १२६ औद्योगिक इकाइयां स्थापित की हैं। इस क्षेत्र में भी बिड़ला परिवार ने बाजी मार ली है।

भारतीय पूंजीपति दो तरफा मुनाफा कमा रहा है। एक तरफ तो वह अपनी दलाल सरकार पर दबाव डाल कर विदेशी वस्तुओं पर ऊंचे आयात कर लगवा देता है, दूसरी तरफ मनमाने भावों पर अपना सामान गरीब जनता को बेचता है। इसके अतिरिक्त देश में सस्ते दामों पर श्रम खरीदता है और मोटा मुनाफा कमाता है।

यह लूट एवं शोषण भारतीय संविधान के तहत जारी है, जिसे कांग्रेस ने १९४७ के बाद बनाया है। वास्तव में इस संविधान के निर्माता ऊंचे वर्गों के थे, जिनका भारत की जनता से कोई रिश्ता नहीं था। संविधान निर्माता भारत की कुल जनता के ९ से १३ प्रतिशत के प्रतिनिधि थे। इस प्रकार सामन्त, पूंजीपति एवं दलाल नौकरशाहों के संकेत पर संविधान भारतीय जनता पर बलात् लादा गया। मौलिक अधिकार एवं सम्पत्ति के अधिकार का आकर्षण दिखा कर जनता को गुमराह किया गया। वर्तमान काले शासकों ने यह भयंकर अपराध किया है, जिसके लिए उन्हें सख्त दण्ड दिया जाना चाहिए।

गोरे एवं कालों के चंगुल से मुक्ति के लिए भगतसिंह ने जन क्रांति का मार्ग दिखाया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में भारतीय जनता से कहा—'**क्रांति से हमारा अभिप्राय समाज की वर्तमान प्रणाली और संगठन को पूरी तरह उखाड़ फेंकना है। इस उद्देश्य के लिए हमें पहले सरकार की ताकत को अपने हाथों में लेना चाहिए। हम इसी उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं, परन्तु इसके लिए हमें साधारण जनता को शिक्षित करना चाहिए।** यानि कि परिवर्तन जनता के द्वारा, जनता के लिए।

इसी महान लक्ष्य की उपलब्धि के लिए सभी संघर्षरत वर्गों को एक जुट होना पड़ेगा। तभी शोषकों के विरुद्ध युद्ध सफल हो सकता है, क्योंकि क्रांति केवल सत्ता परिवर्तन तक ही सीमित नहीं रहती। मूलत: वह समाज की शोषक व्यवस्था और उस पर हावी घिनौनी ताकतों को ध्वस्त करती है। बुनियादी रूप से क्रांति के दौरान दो ही वर्ग होते हैं, शोषित एवं शोषक यानि कमेरा व लुटेरा (आर्य एवं दस्यु)।

ऐसी स्थिति में हमें एकजुट होना पड़ेगा। आज शिक्षकों का संघर्ष है, कल को श्रमिकों का होगा और परसों नौजवानों का। जब तक इनमें एकता नहीं होती और साफ नजरों से काले शत्रु को नहीं देखते, तब तक संघर्ष अधूरा रहेगा।

युवकों ने प्रत्येक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहां तक कि वह एक सीमा तक 'अगुवाई-दल' का भी काम करता है। भगतसिंह ने ठीक ही कहा है— '**नौजवानों से हमारा कहना है कि इस उद्देश्य के लिए उन्हें कार्यकर्त्ता बन कर निकलना चाहिए। पर्चे, पुस्तिकाओं, छोटे-छोटे पुस्तकालयों, भाषणों, बातचीत आदि से हमें अपने विचारों का सर्वत्र प्रचार करना चाहिए।**' उन्होंने आगे कहा '**तरुण अपने होठों पर मुस्कान लिए अत्यधिक अमानुषिक यंत्रणायें सह सकते हैं और बिना किसी हिचक मृत्यु की आंखों में आंखें डाल सकते हैं, क्योंकि मानव प्रगति का समूचा इतिहास ही तरुण-तरुणियों के रक्त से लिखा गया है।**'

वर्तमान परिस्थिति पर दृष्टि जाती है, तो चारों तरफ लूट का साम्राज्य दिखाई देता है। काला बाजारी, कर चोरी, जमाखोरी, महंगाई, भ्रष्टाचार पनप रहा है। सरकारी अनुमानों के अनुसार ३० अरब से भी अधिक का काला धन है। १३ से २० अरब के बीच सरकारी कर पूंजीपतियों पर बकाया है। कर-वंचक मंत्री सम्मान के साथ जी रहे हैं, जबकि एक गरीब किसान विवशता के कारण लगान नहीं दे पाता है तो उसकी भूमि कुड़क कर ली जाती है। शिक्षक संघर्ष करते हैं तो जेलों में ठूंसा जाता है, उनके विरुद्ध मुख्यमंत्री असभ्य बातें कहते हैं। देश की विभिन्न जेलों में आज हजारों लोग बंद हैं जिन्होंने जनता के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष में भाग लिया।

हुतात्मा भगतसिंह के माध्यम से की गई इस चर्चा का सार यही है कि हमें अभी वास्तविक मुक्ति प्राप्त करनी है। तभी हम भगत सिंह एवं अन्य क्रांतिकारियों को सही समझ की श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे।

चर्चा का सिलसिला यहीं खत्म करते हुए एक शेर याद आ रहा है—

हम गरीबों को भला खौफे बगावत क्यों हो
अपने कब्जे में जरो माल कहां रखा है,
छिन भी जाएंगे बस तौको सलसिल हमसे
और पाने के लिए एक जहां रखा है। *

१७८, राउज एवन्यू, नयी दिल्ली

आवश्यकता, उबलते रक्त की

o सोमदेव गोयल

विशाल देश की विशाल परम्परायें, विशाल प्रजातांत्रिक माध्यम से किया जाने वाला शोषण, विशाल तथाकथित सामाजिक व्यवस्था, सभी कुछ तो विशाल है। हृदय भी विशाल है, जिसने अनेक जातियों का, अनेक संस्कृतियों का समन्वय अपने आप में किया। आज के समाज की व्यवस्था के नीचे पिसती हुई नई पीढ़ी, जिसको कि शुरू से ही कुंठित बनाया जा रहा है। साम्राज्यवादी व्यवस्था ने इस समाज के अन्दर इस सुनियोजित ढंग से षड्यंत्र का चक्रव्यूह तैयार किया है जिसमें मानवता घुल-घुल कर अपना दर्दनाक अंत कर लेती है। गरीबी हटाओ और धर्म निरपेक्षता के नारों ने ही हमारे देश के प्रबुद्ध वर्ग के लोगों को सोचने के लिये बाध्य कर दिया है। सारी की सारी पूंजीवादी ताकतें, साम्राज्यवादी वारदातें हमारे मानव समाज और धर्म के लिये मंद जहर साबित हो रही है। आज की युवा शक्ति को कुंठित बनाया जा रहा है। नई पीढ़ी की भावनाओं को, विवेकशीलता को, महत्वाकांक्षाओं को, उन की प्रतिभा को इस तथाकथित समाजवाद और सामाजिक व्यवस्था ने रौंद कर रख दिया है।

समाजवाद का नारा देने वाली इंदिरा सरकार, धर्म निरपेक्षता की शुभ चिंतक, यह भ्रष्ट और नपुंसक कांग्रेसी सरकार, विदेशी ताकतों के आगे सिर झुकाने वाली इस सरकार ने मानव मात्र को अपने स्वाभिमान और गौरव से हजारों मील गहरे गर्त में धकेल दिया है। आश्चर्य की बात यह है कि जनमानस उसमें असहाय-सा, विवश-सा, निर्निमेष हो कर पिसता जा रहा है। पता नहीं उसकी शाम कब होती है, कब सुबह होती है। बस होती है और नित्य एक नवीन प्रहार कर जाती है, जिससे दिनों दिन वह इतना आतंकित होता जाता है कि जीने मात्र की भी उसे लालसा नहीं होती। सुबह से शाम तक गाढ़े खून का पसीना बहाकर अपने घर वापस आता है तो क्या मिलता है उसे? बच्चों की निर्निमेष आँखें जो शायद बाहर निकलने को आकुल हो रही है। पत्नी की द्वार से लगी आंखों में व्याकुलता का दीप जो बार-बार अपनी दीप शिखा को इस तरह हिला रहा होता है मानो यह बुझने का आखिरी संदेश दे रहा हो। घर में घुसते ही चारों ओर भूख और बेबसी का अहसास उस अन्याय और शोषण में पिसे व्यक्ति को बरबस अपनी आँखें बन्द कर लेने के लिये बाध्य कर देता है। जैसे-तैसे राशन के कचरा मिले हुए गेहूं के आटे का सत्तू बनाकर खा लेना, उसको नाना प्रकार के मिष्ठान्नों से भी अधिक शांति देता है। वो जानता ही कहां है कि चीनी का स्वाद कैसा होता है? उसे कल की चिन्ता सताने लगती है, कल क्या होगा? भरी सर्दी का मौसम और झोंपड़ी में असंख्य खिड़कियां उसे रात भर सोने भी तो नहीं देती। आज भी दिन में गाँव के महाजन से पचास रुपये उस जीर्णशीर्ण झोपड़ी के लिये मांगे थे। मिन्नतें की थी, पैरों में सिर रखकर बहुत गिड़गिड़ाया था लेकिन क्या होता सब व्यर्थ! कहां से लाता गिरवी रखने के लिये सामान? पत्नी के जेवर और घर के बर्तन तो पहले ही उस सूदखोर की भेंट चढ़ा चुका था, अब बचा ही क्या है? सारी रात सुबह के बारे में तारे गिन-गिन कर यही सोचता रहा कि जब सुबह होगी बच्चा कहेगा– 'बापू रोटी'। क्या जवाब होगा उसके पास? क्या दे सकेगा उसको वह? मात्र दो आंसू! लेकिन इस बच्चे को आंसू नहीं, रोटी चाहिये!

उसके मन में एक विद्रोह की भावना जन्म लेती है। वह अपने बच्चों व पेट के लिये आज पहली बार चोरी का सहारा लेता है, लेकिन उसकी अंतरात्मा की आवाज ऐसा करने की आज्ञा नहीं देती है, दूसरी ओर अपने बच्चों का मासूम और निर्दोष चेहरा, अपनी पत्नी की व्याकुलता से भरी आँखें देख कर विवश हो जाता है। वापस हिम्मत करता है उन साम्राज्यवादी और पूंजीवादी जमाखोरों से बदला लेने की। जोश में आ कर घर में पड़ा सब्जी काटने का चाकू ही ले लिया। चोरी करते समय पकड़ा गया और वह निर्दोष सरमायेदारों व कानून के ठेकेदारों की जेल में आकर बंद हो गया। न तो बच्चों को रोटी ही मिल पाई और न अपने हृदय में जलती हुई आग की ज्वाला को ही बुझा सका। निढाल हो कर ही पड़ गया और वह सब्जी काटने का चाकू ही उसकी दर्दनाक मौत का कारण बन गया। कितनी ही मिसालें मिल जायेगी। इस समाजवादी खाल ओढ़े पूंजीवादी सरकार की नीतियों में। घिनौनी हत्यायें भी तो इस तथाकथित सरकार के मठाधीशों की आंखों के सामने होती रहती है। चलो मर गया एक भिखारी, एक भिखारी ही क्यों सरकार के लिये तो उसका अस्तित्व एक मच्छर से ज्यादा नहीं था। ताजमहल जैसे होटलों में बैठ कर सुरा सुंदरी के रंग में डूबे हुए क्या जाने गरीबी या भूख कैसी होती है? मखमल के गद्दों में सोने वाले टाट-बोरियों के सपने देख ही कैसे सकते हैं? ये समाजवादी खटमल मानव के शरीर को चूस-चूस कर मात्र ढांचा बना देना चाहते हैं। उनसे अब गिन-गिन कर बदला लेना होगा। उन्हें बता देना होगा कि एक शक्ति ऐसी भी है

जो उन जैसे दानवीय पशुओं का संहार करने की क्षमता रखती है।

दूसरी ओर, घूमते हुए शिक्षित बेरोजगार पता नहीं दिन में कितनी बार इन भाई भतीजावाद से घिरे लोगों के पास परिक्रमा लगाते हैं, जिसका कि फल उनको डांट फटकार या अपमान में मिलता है। मर गया है स्वाभिमान! समाप्त हो चुकी है गौरव गरिमा! भस्म हो चुकी है मानवता! युवक जो कल का कर्णधार है, सूत्रधार है, इस देश का भारवाहक है, उसके कंधों को तो अभी से ही जख्मी कर दिया गया है। क्या बोझ झेल सकेगा वह राष्ट्र का? उसको पनपने ही कहां दिया जाता है। यदि थोड़ी भी उग्रता दिखाये तो असामाजिक तत्व करार दे कर जेलों में ठूंस कर जेल तोड़ कर भागने के जुर्म में गोली का निशाना बना देते हैं और देश का कर्णधार हृदय विदारक अंत को प्राप्त होता है। यह इस तथाकथित समाजवादी सरकार की मनगढंत बातें या परिकल्पनाएं नहीं हैं बल्कि वास्तविकता है, जो युवकों का खून खौला देने के लिये काफी है। लेकिन प्रश्न तो इस बात का है कि वह खून खौल कर अन्दर ही रह जाता है बाहर नहीं निकल पाता। जब यह गर्म खून बाहर आयेगा तभी इस देश का आम व्यक्ति उन खून की बूंदों पर अपने बलिदानों से महल खड़ा करेगा और सरमायेदार व पूंजीपतियों को दफना देगा। जिस समाज में जातिवाद को प्रोत्साहन मिलता हो, अमीरी गरीबी का नगा नाच हो रहा हो, जिसने एक ऐसी खाई पैदा कर दी हो जो गरीबों और मेहनतकश लोगों को भयानक मौत दिलाने में सहायक हो, ऐसे समाज में पेट्रोल छिड़क कर आग लगानी है, ताकि उसमें पूंजीवादी खटमल, मठाधीश पिस्सु और सरमायेदार जोंके जल कर राख हो जाये और मानव चैन की सांस ले कर एक नये ढंग से समाज की रचना करे। देश प्रगति के उस उच्च शिखर पर पहुँच जाये, जहां देश प्रेम और राष्ट्र बलिदान की कद्र होनी हो। आंखें फोड़ दी जाये उस दुश्मन की जो बुरी नियत से इस आर्य देश की तरफ देखता हो।

यही तो आर्य राष्ट्र है जिसकी स्थापना अत्यंत आवश्यक है। संहार करना होगा उन शोषकों का। लेकिन यह आर्य राष्ट्र ऐसे ही बन जायेगा? क्या इसको बनाने के लिये कुछ भी आवश्यकता नहीं है? क्या मात्र आर्य राष्ट्र का नारा इसके लिये पर्याप्त होगा? क्या देश की युवा पीढ़ी इसको एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकालती रहेगी? इसके लिये आवश्यकता है गर्म खून बहाने की। वही भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद की तरह स्वाधीनता संघर्ष को दोहराना होगा। बलि देनी होगी अपने स्वार्थों की! परिवर्तन का पलीता तैयार हो चुका है, उसमें आग भी लग चुकी है, फैल रही है, जो शनैः शनैः एक दिन इन सरमायेदारों और जमाखोरों, पूंजीवादियों की अट्टालिकाओं को धाराशायी कर के रख देगी और इस जगह रहेगा वह गरीब जिसने अपने खून के गारे से उसको बनाया था। अब इस अग्नि को जितनी बुझाने की कोशिश की जायेगी उतनी ही फैलती चली जायेगी। अब वह समय शीघ्र आने वाला है जब तथाकथित इन मठाधीशों और सरमायेदारों की मुंडिया चोटी पकड़े हमारे हाथों में होगी। लेकिन इसके लिये उबलते हुए नये रक्त की आवश्यकता है। *

मंत्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, किशनपोल बाजार, जयपुर

लेखकों से निवेदन

- **शोषण, जीवन के दोहरेपन और वर्तमान सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों के दिग्भ्रम तथा पाखण्ड पर प्रहार करने वाली रचनायें, 'राजधर्म' सादर आमंत्रित करता है।**
- **विशेष अवसरों पर प्रकाशित की जाने वाली रचनाओं को, उस तिथि से एक माह पूर्व भेजा जाय। रचनायें सामान्यतः दो हजार शब्दों से बड़ी नहीं होनी चाहिए तथा सुस्पष्ट लिपि में लिखी या टंकित होनी चाहिए।**
- **'राजधर्म' वर्तमान में लेखकों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है। अतः यदि लेखक का कोई विशेष आग्रह हो, तो रचना पर इसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।**
- **स्वीकृत रचना के बारे में पन्द्रह दिन में सूचना दे दी जायगी। सूचना न मिलने की स्थिति में रचना को अस्वीकृत समझा जाय। रचना लौटाने के लिये टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजें।**
- **'हमारी कसौटी पर' स्तम्भ में, पुस्तक की दो प्रतियां आने पर ही समीक्षा हो सकेगी।**

शराबी भारत : देशी षड्यंत्र की कहानी

O नीरजकुमार शर्मा

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था– 'यदि मैं एक दिन के लिये हिन्दुस्तान का बादशाह बनूं, तो तमाम शराब व ताड़ी की बिक्री पर पाबंदी लगा दूं। शराबी परिवार, समाज अथवा राष्ट्र नष्ट हो जाता है।' परन्तु अपने को गांधीवादी कहने वाला शासन तंत्र गांधी जी की इस अभिलाषा को पूरा करने में निष्ठा नहीं दिखा रहा है।

सन् १९६८ में गोआ में कांग्रेस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित हुआ था कि सन् १९७५ तक सम्पूर्ण भारत में पूरी तरह नशाबंदी लागू कर दी जायेगी, परन्तु आज १९७३ में हम देखते हैं कि शराब-बिक्री के परमिट या लाइसेंस सरकार के द्वारा जारी किये जा रहे हैं। महानगरों में "असली शुद्ध शराब" की दुकानें अथवा केन्द्र खोले जा रहे हैं। भारत के जिन राज्यों में नशाबंदी का कानून चल रहा था उन्हें समाप्त किया जा रहा है। इसके पीछे सरकारी दलील यह दी जाती है कि इस कानून का कोई लाभ नहीं, क्योंकि इसके रहने पर भी शराब बिकती है, चाहे चोरी छिपे बिकती हो। इस दलील को देने वाले यह नहीं सोचते कि यदि कोई बुराई होती हो तो उसे रोकने का क्या प्रयत्न होना चाहिये ? पूरी कानूनी व्यवस्था होने के बावजूद भी चोरी डकैती होती है तो क्या यह बेहतर होगा कि चोरों और डाकुओं को भी लाइसेंस दे कर समाज में प्रतिष्ठित किया जाये ?

बड़े आश्चर्य की बात यह है कि महाराष्ट्र सरकार ने शराब की बोतल को आधे दामों में उपलब्ध कराने की घोषणा की है। वहां पर शराब को सस्ती बनाने के लिये सरकारी कर भी नहीं लगाया जाता। इससे सिद्ध हो जाता है कि शासक वर्ग दूध-दही की नदियां तो नहीं बहा सका, परन्तु देश में शराब की नदी बहाने को तत्पर है। आज महंगाई के कारण व्यक्ति की जरूरी आवश्यकतायें रोटी-कपड़ा व मकान उपलब्ध हो या न हो, परन्तु सस्ती शराब उपलब्ध कराने में शासन संकल्पबद्ध है।

कौन नहीं जानता कि शराब की लत आदमी को कहीं का नहीं छोड़ती। इसका आदी होकर व्यक्ति जर-जमीन व जनानी सब को बेच डालता है और फिर स्वयं अंधा अथवा कोढ़ी होकर अपने लिये नरक का रास्ता खोल लेता है। एक शराबी ने पिछले दिनों मुझे बताया- "साहब, मैं तो बच गया वरना इस शराब ने मुझे कहीं का न छोड़ा था, मेरी सारी सामाजिक प्रतिष्ठा धूल में मिल गयी थी। मुझे अपनी कुछ सुध ही नहीं रहती थी, मैं कहीं भी रात बे रात गली-नाली में पड़ा रहता था। बाद में घर वालों ने मुझे इस स्थिति से उबारने के लिये घर में ही 'खाने-पीने' का आग्रह किया और इस गन्दी लत से मेरा जीवन नष्ट होते-होते बचा। मेरा सारा रंग उल्टे तवे की तरह काला पड़ गया, जो कुछ खाता था वो हजम होना बन्द हो गया। इससे अगली यह दशा आई कि मेरे पैरों ने काम करना बन्द कर दिया। उनमें रक्त-संचालन एकदम समाप्त हो गया और वे बर्फ के समान ठंडे रहने लगे। इस स्थिति पर पहुँच कर मुझे बुद्धि आई और मैंने शराब जीवन में कभी न पीने की तौबा कर ली। इसके बाद धीरे-धीरे एक अनुभवी चिकित्सक के इलाज के कारण मेरी शारीरिक स्थिति सुधर गयी। अब तो सा'ब कोई मुफ्त की पिलाये और साथ में कुछ इनाम भी दे तो भी मैं नहीं पियूं।'

शराब के चलन को जनव्यापी बनाने में सरकार वैसे ही दिलचस्पी रखती है, जैसे कि वह चरस-अफीम-गांजे के प्रचलन के लिये, हिप्पीवाद के फैलाव में रखती है। जनता को पूरी तरह से सुलाये रखने में वह अपना हित समझती है। शासक वर्ग जानता है कि काठ की हांडी बार-बार चूल्हे पर तब चढ़ाई जा सकती है जब जनता एकदम विवेक शून्य बन जाये।

इन सबके साथ सैक्स का भी प्रचार करके स्वार्थ सिद्धि की जा रही है। धर्म में भी गुरुडम व पाखंड फैला कर जनता को मर्माहत किया जा रहा है। अशिक्षित, गरीब व बेरोजगार जनता को सरकार स्वधर्म व संस्कृति से विहीन करके उसे नपुंसक बना रही है और उसे अत्याचार, भ्रष्टाचार, महगाई, अधर्म के कांटों में फंसा कर एकदम मारने पर तुली हुई है। और फिर जैसे भागीरथ अपने पुरखों की मुक्ति के लिये गंगा को धरती पर लाये थे वैसे ही हमारे कर्णधार "अपनी प्रिय जनता" की मुक्ति के लिये शराब की नदी को भारत धरा पर उतारने में लगे हुए हैं।

जिस नाव को स्वयं मांझी ही डुबाने लगे उसे कौन बचा सकता है ? ❁

२१/१ शक्ति नगर, नयी दिल्ली

भारत-जर्मन षड्यन्त्र

यतीन्द्रनाथ मुकर्जी

महर्षि अरविन्द ने एक बार अपने शिष्यों से पूछा—"आप लोगों ने यतीन मुकर्जी के बारे में सुना है ?" इसके बाद वे गद्गद् होकर कहने लगे— "वे एक अलौकिक व्यक्ति थे। वे मानवता की मूर्ति थे। उनका डीलडौल एक योद्धा के समान था। मैंने सौन्दर्य के साथ ही साथ शक्ति का ऐसा सुन्दर समावेश अन्यत्र कहीं नहीं देखा जैसा यतीन्द्र में था। मुकर्जी बाघा यतीन के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। वे अपनी युवावस्था में अपने गांव में बंगाल के शाही चीते से लड़े थे और उसे अकेले ही मौत के घाट उतार दिया था। बाघा यतीन की जीवन गाथाएं आज पौराणिक कहानियां बन गयी हैं। वे हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के पथ प्रदर्शक थे। वे ब्रिटिश राज रूपी हाथी के लिए चीते के समान प्रचण्ड साहसी थे, किन्तु उनका हृदय अत्यन्त कोमल था। अपना सर्वस्व भी दान में दे कर रातदिन हैजे तथा प्लेग के रोगियों की सेवा शुश्रुषा करना, प्रसन्न मुद्रा से रोगियों के मल मूत्र को स्वयं फेंकना, सड़कों से पागल मनुष्यों को घर लाना, उन्हें नहलाना, आयुर्वेदिक तेल और औषधियों से उनकी चिकित्सा करना, उन्हें अच्छा भोजन तथा वस्त्र देना, असहाय और निर्धन विद्यार्थियों की सहायता करना, उनके अध्ययन एवं भलाई सम्बन्धी कार्यों को करना, गौरांग महाप्रभुओं के कोप भाजन असहाय मूल निवासियों की रक्षा करना, दुष्टों को दण्ड देना, निर्बल और अभावग्रस्त व्यक्तियों की रक्षा इत्यादि जन सेवा के कार्यों में सदा लगे रहते थे। उनके महान् कार्यों को देखने वाले बहुत से व्यक्ति अभी तक जीवित हैं।"

महान् क्रान्तिकारी डॉ० जयगोपाल ने कहा था—"जतीन का जीवन सजीव गीता था।" दूसरे महान क्रांतिकारी श्री एम. एन. राय ने लिखा है— 'वे आधुनिक भारत के प्रथम मानवतावादी थे।" यहां तक कि तत्कालीन बंगाल के प्रसिद्ध सी. आई.डी. कमिश्नर सर चार्ल्स टैगार्ट ने जब यतीन को ब्रिटिश मिलीटरी और पुलिस के सहारे अन्तिम हमले में पकड़ा, तब स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया कि —'उनके प्रति मेरे हृदय में महान सम्मान है। सबसे वीर भारतीय से मेरी आज भेंट हुई है, किन्तु क्या किया जाय, मुझे अपना कर्त्तव्य निभाना था।"

पारिवारिक जीवन और शिक्षा

यतीन्द्रनाथ जैसोर के सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में दिसम्बर १८७९ में पैदा हुए थे। जब वे पांच वर्ष के थे तब उनके पिता का देहावसान हो गया। इसलिये उनका लालन पालन उनकी माता शशि देवी के भाइयों ने किया। उनके पिता उमेशचन्द्र अपने समय के एक प्रकाण्ड विद्वान थे। इनके मामा भी अपने समय के बंगाल के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलनों में सुप्रसिद्ध व्यक्ति माने जाते थे।

यतीन्द्र के मामा ने शारीरिक शिक्षण, सुरक्षा एवं अस्त्र संचालन लिए सीमान्त प्रदेश के एक पेंशनयाफ्ता मिलिटरी के व्यक्ति को यतीन्द्र शिक्षा के लिए नियुक्त किया। कुछ ही समय में यतीन्द्र अस्त्र संचा आदि में पारंगत हो गये। थोड़े समय बाद वे अच्छे घुड़सवार भी हो ग कलकत्ते के सेन्ट्रल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे बंगाल सचिवा में स्टेनोग्राफर के पद पर नियुक्त हुए। वहां उनके काम से उन आफिसर इतना खुश था कि वह उन्हें सैक्रेटरी के पद के योग्य सम लगा। थोड़े दिनों में ही वे बंगाल के गवर्नर के व्यक्तिगत सैक्रेटरी ब गये। सन् १९०० में उनका विवाह इन्दुबाला देवी से हो गया। ऐसा प्र होने लगा कि यतीन्द्र का भावी जीवन अत्यन्त ही सुखकर है, लेकिन ब के इस निर्भय बेटे के भाग्य में कुछ और ही बदा था।

आध्यात्मिक पुनर्जागरण से पहले आजादी

उन्हीं दिनों घोर विरोध के बाद भी लार्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन कर दिया। नतीजा यह हुआ कि इस निर्णीत बात को अनिर करने के लिये पूरा बंगाल एक होकर विरोध में खड़ा हो गया। भला राष्ट्रीय भावना की अद्भुत जागृति के समय यतीन्द्र कैसे अछूता रह सक था ? ऐसे ही समय में यतीन्द्र की मुलाकात भगिनी निवेदिता एवं जे. बनर्जी से हुई (ये बनर्जी बाद में स्वामी निरावलम्बन के नाम से प्रख्यात हु इन दोनों के सम्पर्क में आने पर यतीन्द्र का स्वामी विवेकानन्द से भी प चय हो गया। यदि उन दिनों यतीन्द्र की मुलाकात स्वामी विवेकानन्द नहीं हुई होती तो यतीन्द्र हरिद्वार के स्वामी भोलानन्द गिरि के शिष्य गये होते स्वामी विवेकानन्द की संगति से उन्हें यह विश्वास हो गया कि तक भारत आजाद नहीं हो जाता तब तक आध्यात्मिक पुनर्जागरण की करना ही व्यर्थ है।

क्रान्ति-पथ पर

बंगाल विभाजन आन्दोलन, प्रार्थना, दया एवं दरखास्तों के दा से बहुत आगे बढ़ गया। उसी समय यतीन्द्र के सम्पर्क में अरविन्द घोष ब्रह्म वान्धव उपाध्याय सरीखे मेधावी क्रान्तिकारी आये। यद्यपि यत ब्रिटिश सरकार के उच्च पदाधिकारी थे फिर भी वे उसी राज्य को उख फेंकने के लिए गुप्त समितियों का संगठन करने लगे।

अप्रेल १९०८ में मानकटोला की बम फैक्ट्री का पुलिस को सु लग गया। उन्हीं दिनों खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चक्रवर्ती के हाथों कुम और श्रीमती कैनेडी की हत्या हो गयी। इस पर अरविन्द घोष तथा वारी कुमार घोष के साथ-साथ अन्य क्रान्तिकारी भी गिरफ्तार कर लिए ग

ार ने भयंकर दमन करना आरम्भ कर दिया।

त पर यतीन्द्र ने निश्चय किया कि राष्ट्रीय भावना को अवश्य ही टखना चाहिये। साथ ही विदेशी सरकार को भी मनमाने जुल्म और ट करने से बिल्कुल ही रोक देना चाहिये। अलीपुर षड्यन्त्र के मुकदमे मामले की जाँच करने के सिलसिले में आशुतोष विश्वास, पुलिस र कैदियों से बेहद सख्ती का बर्ताव कर रहा था। इसलिए यतीन्द्र कया कि इसे खत्म ही कर देना चाहिये। इसके लिए यतीन्द्र ने य शिष्य चारु बोस को चुना। चारु के दाहिने हाथ को लकवा मार । अतः यतीन्द्र ने चारु की पंगु कलाई पर गोली भरा रिवाल्वर ा। चद्दर के नीचे अपना दाहिना हाथ छिपाकर चारु ने यतीन्द्र को किया और सीधा अदालत में पहुँचा, वहां मुकदमा चल रहा था। देखने के पहले ही चारु ने अपने बांये हाथ के सहारे दाहिना हाथ ीर गोली चला दी। आशुतोष विश्वास भरी अदालत में ढेर हो ारु ने भागने का कोई प्रयत्न नहीं किया। जब उसे गिरफ्तार किया उसने मुस्कराते हुए कहा– 'यह तो पूर्व निश्चित ही था कि आशुतोष से मारा जाए और मैं फांसी पर लटकाया जाऊं।'' फांसी के वक्त १५ वर्ष का था।

ाके बाद ही शमसुल आलम, पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट की ।। उसके विषय में यह प्रचार था कि वह अलीपुर षड्यन्त्र के

यतम बौद्धिक नेता

o दीनानाथ व्यास

ी पारिवारिक स्त्रियों के साथ अनुचित व्यवहार करता है। उसका म्म करने के लिए वीरेनदत्त गुप्त आगे आया। वीरेन ने जनवरी ी कलकत्ता हाईकोर्ट में शमसुल आलम का काम तमाम कर दिया। रफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के समय उसकी उम्र बीस से ी। फांसी के पूर्व वीरेन ने बता दिया कि "इस आतंकवादी आन्दो-ात्मा यतीन्द्रनाथ है।"

यतीन्द्र गिरफ्तार और रिहा

ीन्द्र धनाभाव की पूर्ति के लिए डाके डालने के बिल्कुल विरुद्ध थे, न्तिकारियों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने तथा जो पकड़े गये हैं वार का पालन करने के लिए उन्हें कुछ डकैतियों का प्रबन्ध करने र होना पड़ा। इनमें से एक डकैती में यतीन्द्र का एक शिष्य क्रवर्ती गिरफ्तार हो गया। उसे अमानवीय यातनाएं दी गयीं। स्वरूप वह मुखबिर हो गया। उसने यतीन्द्र नाथ को आतंकवादी नेता बताया। इस आधार पर यतीन्द्र २७ जनवरी १९१० को गये। उनसे भेद लेने के लिए उन्हें अत्यन्त अमानवीय कष्ट दिये गये, लेकिन उस व्यक्ति से भेद पा लेना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य था, जिसने बचपन में शेर को जान से मार डाला हो। अंत में घबरा कर पुलिस ने हावड़ा षड्यन्त्र के मुकदमे में उन्हें मुख्य अपराधी घोषित कर दिया। यह मुकदमा प्रायः १५ माह तक घिसटता रहा। सरकार की ओर से इस मामले को राजनीतिक षड्यन्त्र प्रमाणित करने के लिये एड़ी चोटी की कोशिश की गयी। इस मामले में ललितमोहन चक्रवर्ती और जतीन्द्रनाथ हाजरा मुखबिर हो गये थे, लेकिन हाईकोर्ट ने पुलिस के तमाम बयान रद्द कर दिये। परिणाम स्वरूप यतीन्द्र तथा उनके कई साथी छोड़ दिए गये।

१५ महीने बाद जब यतीन्द्र छूटे तो उन्होंने देखा कि क्रान्तिकारी आन्दोलन प्रायः समाप्त हो गया है। बारीन्द्र कुमार घोष, उल्हासकर दत्त आदि अंडमान जेल भेज दिए गए हैं और अरविन्द घोष पान्डिचेरी में जाकर अध्यात्म साधन में दत्तचित्त हो गये हैं। आन्दोलन की स्थिति देखकर यह लगने लगा था कि सरकार ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को खत्म ही कर दिया है। यतीन्द्र को १५ महीने हवालात में रह कर बाहर की राजनीति का अध्ययन करने का काफी अवसर मिला। सारी स्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि यदि सशस्त्र क्रान्ति से सफल होना है तो विदेश की सहायता अत्यन्त आवश्यक है।

जेल से बाहर आकर यतीन्द्र को बर्न हार्डी की आगामी महायुद्ध पर प्रकाशित पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। उसे पढ़ उन्होंने निश्चय कर लिया कि बिना जर्मनी की सहायता के अंग्रेजों को इस देश से भगाना असंभव है।

धंधे में लग जाने का नाटक

यतीन्द्र अब अपनी किसी भी गतिविधि का पता पुलिस से बचा कर ही रखना चाहते थे। उन्होंने अपने कलकत्ता केन्द्र को अपने एक विश्वस्त साथी के हाथों सौंप दिया और आप स्वयं जैसोर जाकर कांट्रेक्टर बन गये। इस धन्धे में उनको सफलता भी खूब मिली। पुलिस को भी भरोसा हो गया कि यतीन्द्र अब परिवार के साथ शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे हैं। लेकिन यह तो पुलिस को मूर्ख बनाये रखने की युक्ति थी, उनका दिमाग तो कहीं दूसरी ओर ही सक्रिय था।

उनके कुछ अन्तरंग साथियों ने भी धंधे में लग जाने का नाटक रचा। अमरेन्द्र चटर्जी और राम मजूमदार ने कपड़े की दुकान खोल ली और उसका नाम रखा "श्रमजीवी समवाय"। यह दुकान हरीसन रोड़ पर थी। हैरी एन्ड सन्स के नाम से हरि चक्रवर्ती ने एक फर्म बनायी। सुरेश मजूमदार ने कॉलेज स्क्वेयर में एक छापाखाना डाल लिया। जिसमें से आगे चल कर

"अमृत बाजार पत्रिका" और "हिन्दुस्थान स्टेण्डर्ड" जैसे पत्रों का प्रकाशन हुआ। शैलेश्वर बोस ने बालासोर में "यूनिवरसल एम्पोरियम" की स्थापना की।

लेकिन यह स्थिति अधिक दिनों नहीं चल सकी क्योंकि क्रांति की आग तो उन सभी के दिलों में बुरी तरह भड़क रही थी। जब १९१३ में बर्दवान और कोन्ताई में बाढ़ का प्रकोप हुआ तो सभी क्रांतिकारी सहायता कार्य के नाम पर वहां फिर एकत्रित हो गये। वहां बन्द कमरे में यतीन्द्र ने एक मीटिंग की जिसमें उसने महायुद्ध से फायदा उठाकर मातृभूमि को स्वतंत्र करने की योजना बनायी। सभी साथियों ने उसके नेतृत्व में काम करने का वचन दिया। यहां तक कि ढाके की अनुशीलन समिति-ने भी पूरी सहायता देने और साथ देने का वायदा किया।

यतीन्द्र ने शीघ्र ही अपनी योजना को क्रियान्वित करने की तैयारी आरंभ कर दी। यतीन्द्र ने अपने चुने हुए साथियों को जर्मनी तथा अन्य देशों में भेजना आरंभ कर दिया। उनका काम यह था कि वे विदेशों से धन की ओर मुख्य तथा शास्त्रों की सहायता प्राप्त करने की चेष्टा करें। स्वयं यतीन्द्र भारत के विदेशों में रहने वाले क्रांतिकारियों जैसे वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय एवं लाला हरदयाल के निकट सम्पर्क में थे।

प्रायः प्रथम महायुद्ध आरंभ ही हुआ था कि यतीन्द्र ने अपने एक विश्वस्त साथी के सहारे, रोडा एण्ड कम्पनी में, जो कलकत्ते में शस्त्रों और गोला बारूद का व्यापार करती थी, एक डाका डाला। इस प्रकार १० माउजर पिस्तौल और उनमें काम आने वाली चालीस हजार गोलियां, उन्हें वहां से डाके में प्राप्त हुई। माउजर पिस्तौल की यह विशेषता है कि यदि उसमें एक बट लगा दिया जाय तो वह बन्दूक की तरह भी काम में लायी जा सकती है। इन माउजरों ने फिर सारे बंगाल में सनसनी फैला दी। महायुद्ध आरंभ हो ही गया था। जर्मन हाई-कमांड ने भी भारतीय क्रांतिकारियों से सम्बन्ध स्थापित करना आरंभ कर दिया था।

महायुद्ध के आरंभ हो जाने पर योजनाओं पर अमल करने के लिये यतीन्द्र के सामने जो जबर्दस्त कठिनाई थी वह पैसे की थी। इन कार्यों के लिये धन की आवश्यकता थी। इच्छा न होते हुए भी धन की कमी के लिये फिर यतीन्द्र को डकैतियों के लिये स्वीकृति देनी पड़ी। पहली डकैती १२ फरवरी १९१५ को गार्डन रीच में हुई। इस डकैती की योजना पहले ही बना ली गई थी। बर्ड एण्ड कम्पनी का एक आदमी, कार्टर्ड बैंक कलकत्ते से कम्पनी के गार्डन रीच वाली मिल में जो हुंगली के पास ही था, साप्ताहिक बीस हजार की रकम ले कर जाता था। क्रांतिकारियों ने रास्ते में ही हमला करके अट्ठारह हजार रुपये उस आदमी से छीन लिये। दूसरी डकैती बेलिया घाट में हुई। यहां एक टैक्सी के सहारे स्वयं यतीन्द्र ने ही एक चावल के व्यापारी से बीस हजार से भी अधिक की रकम लूट ली। इतनी रकम हाथ में आ जाने पर यतीन्द्र ने अपने अन्तरंग साथियों को बुला कर सलाह मशविरा किया। यह मीटिंग पथरिया घाट स्ट्रीट पर हुई। मीटिंग जब जारी थी तभी नीरोद हालदार आ गया। उसने यतीन्द्र को पहचान लिया और उसे आवाज भी दी। हालदार को देख कर एक क्रांतिकारी ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया और हालदार पर गोली चला दी। मरने के पूर्व हालदार ने अपने बयान में यतीन्द्र को "बंगाल के आतंकवादी आन्दोलन की बौद्धिक प्रतिभा बताया"।

अब सारे बंगाल में आंदोलन जारी कर देने की योजना यतीन्द्र ने प्रायः तैयार कर डाली थी। यतीन्द्र ने इसके पूर्व भोलानाथ चटर्जी को जर्मनों से सम्बन्ध स्थापित करने के लिये बैन्काक भेज दिया था। यह वही समय था जब जतीन्द्रनाथ लाहिड़ी यूरोप होते हुए अमेरिका से लौट कर आये थे। वे अपने साथ जर्मनी की मदद के समाचार लाये थे। उन्होंने यतीन्द्र से बटाविया में अपना एक दूत भेजने की प्रार्थना की। लाहिड़ी ने यतीन्द्र से कहा कि जर्मनी के अस्त्र शस्त्र मेवेरिक जहाज से अमेरिका के रास्ते से आयेंगे। यतीन्द्र का दूसरा दूत सत्येन सेन भी जापान से लौट आया। वहां सत्येन सेन डा० सन्यात सेन से मिला था और उन्होंने भरपूर सहायता प्रदान करने का वचन दिया था।

असफल सैनिक बगावत

यह पूर्व निश्चित ही था कि उत्तरी भारत में आन्दोलन २१ फरवरी १९१५ को आरंभ होगा, लेकिन यह खबर कुछ अटपटी सी लग रही थी, क्योंकि पिंगले गिरफ्तार हो गया था, रास बिहारी बोस किसी प्रकार बचकर निकल गये थे। लेकिन २१ फरवरी को ही सिंगापुर में ५ वीं लाइट इन्फेन्टरी में बगावत हो गयी। बागियों ने किले पर हमला बोल दिया और उसे सात दिन तक अपने कब्जे में रखा। भारत से कोई भी सहायता प्राप्त न होने के कारण उन्हें आत्म समर्पण करना पड़ा।

आन्दोलन के ठंडा पड़ जाने पर चारों ओर निराशा हो गयी। यतीन्द्र ने अपने साथियों से पुनः परामर्श किया-मीटिंग में यह निर्णय किया गया कि नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य (जो बाद में एम. एन. राय के नाम से विख्यात हुए) को बटाविया भेजा जाय और वहां जाकर नरेन्द्रनाथ जर्मन कौंसल से सम्बन्ध स्थापित करें। नीरेन्द्र सी. मार्टिन के नाम से अप्रेल में रवाना हुए। इन्हीं दिनों अवनी मुकर्जी को जापान से सहायता प्राप्त करने के लिये भेजा गया।

जर्मन अस्त्र नहीं पहुच सके

बटाविया में पहुँच कर नरेन्द्रनाथ (एम. एन. राय) ने थियोडोर हेलफेरिक जर्मन कौंसल से सम्बन्ध स्थापित किया।

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)

वेद और समाजवाद

० पं० शिवदयालु

समाजवाद अर्थात् समाज के हित को सामने रखकर कार्य करना और समाज का अहित करने वाले किसी कार्य को न करना। समाज के हित में व्यष्टि को जितनी हानि होती हो उसको सहन करना। समाज के उत्थान और विकास के लिये व्यक्ति अपने हितों को ही नहीं, अपना सर्वस्व तक यदि बलि चढ़ा देवे तो भी उस कार्य को श्रेष्ठ एवं पक्षीय समझना, ऐसा मानवों के लिये वैदिक आदेश है।

किन्तु व्यष्टि या व्यक्ति जो समाज का मूलाधार और प्राथमिक इकाई है, उसके उत्कर्ष अर्थात् उसके भौतिक एवं अध्यात्मिक उत्थान की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि ऐसा किया गया तो वह समाजवाद अधूरा और पंगु होगा। तात्पर्य यह है कि व्यष्टि और समष्टि के उत्थान की युगवत साधना करना ही आदर्श समाजवाद को मानवों में विकसित करना है।

यदि व्यक्तिगत उत्थान तक ही हमारी विचार धारा सीमित रहे और समाज, जाति व राष्ट्र के उत्थान की उपेक्षा की जाय तो समाज का पतन अवश्यंभावी है और अन्ततोगत्वा व्यक्तियों का उत्थान अभिशाप में परिवर्तित हो जाता है। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद के निम्न मंत्र विचारणीय हैं —

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुवासेत।
ततो भूय इव ते तमो य उसम्भूत्यां रताः॥
सम्भूतिञ्च विनाशञ्च यस्त द्वेदोभयं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुने॥
यजु० ४०/६, ११

अर्थ—जो मनुष्य व्यक्तिगत उत्थान का ही केवल चिन्तन करते हैं और समाज के उत्थान व उत्कर्ष की सर्वथा उपेक्षा करते हैं वे अन्धकार की ओर जाने वाले हैं और जो केवल समाज के उत्थान को ही एकमात्र सामने रख कर और व्यष्टि निर्माण की अवहेलना करके संसार में विचरते हैं वह उससे भी अधिक अन्धकार की ओर जाने वाले हैं। वेद में केवल व्यक्ति विशेष के ही हित साधन को विनाश की संज्ञा दी गई है। व्यक्ति मात्र की हित साधना से समाज के सर्व सद् गुणों का लोप शनैः शनैः हो जाता है और समाज का विनाश हो कर व्यक्तियों का भी विनाश अन्ततोगोत्वा अवश्यंभावी है। उदाहरणार्थ यदि नगर में आग लगी हो और व्यक्ति केवल अपने घर को ही आग की लपटों से बचाने में प्रयत्नशील रहे तो वह आग प्रचण्ड रूप धारण कर उस व्यक्ति के भवन को भी निश्चय ही भस्म कर डालेगी। इसलिये अपने भवन की चिन्ता त्याग कर जहां अग्नि लगी है उसको वहीं रोकने और शान्त करने का नगर व समाज के व्यक्तियों को सामूहिक प्रयत्न करना होगा।

यदि समाज की सब इकाइयां अपने-अपने क्षेत्र में उत्साह पूर्वक उन्नतिशील हों तो निश्चय ही जीवनोपयोगी वस्तुओं को ही जुटा सकेगी और समाज के हित को दृष्टि में रखकर यदि कर्मरत हों तो जहां उनका व्यक्तिगत उत्थान होगा वहां समाज व राष्ट्र का भी उत्थान होगा।

अतः वेद की दृष्टि में व्यष्टि और समष्टि दोनों के ही हितों को सामने रख कर मानव को व्यवहार करना चाहिये। यही मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्तियों का कल्याण होगा और समाज, जाति व राष्ट्र का भी उत्थान होगा। यही मार्ग है जिसका अनुसरण कर के प्रत्येक गृह, ग्राम और राष्ट्र को स्वर्ग बनाया जा सकता है। इसी तत्व को महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के ६ वें नियम में स्पष्ट अंकित किया है कि प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रह कर समाज की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। यह है वह नियम जिसकी घोषणा १६ वीं शती के महान् युगपुरुष दयानन्द ने की है।

व्यक्तिगत उन्नति अर्थात् शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य करनी चाहिये। आर्थिक उन्नति करना भी अभीष्ट है, किन्तु यह उन्नति समाज को हानि पहुंचा कर नहीं, अपितु समाज की उन्नति के साथ-साथ करनी चाहिये। अपनी उन्नति को सर्वथा समाज की उन्नति के साथ मिला देना चाहिये और आधीन कर देना चाहिये। समाज की उन्नति मुख्य वस्तु है और उसकी अपेक्षा व्यक्ति की उन्नति गौण। वह सब कार्य जिनके करने से व्यक्ति की तो उन्नति होती हो, किन्तु समाज को हानि पहुंचे हेय कार्य हैं। हाँ, समाज को हानि न पहुंचा कर व्यक्ति की उन्नति साधना मान्य है, किन्तु आदर्श नहीं। समाज को हानि पहुंचा कर व्यक्ति की उन्नति आसुरी उन्नति कहलाती है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥ वेद

अर्थ— सम्यक् प्रकार से साथ मिल कर ज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करो। समाज राष्ट्र हित के कार्यों को सब व्यक्ति यज्ञीय कर्म समझ कर उससे कन्धा से कन्धा मिलाकर संलग्न होवें। सम्यक् प्रकार से समाज एवं राष्ट्र हित को सामने रख कर भाषण करो, कोई भी ऐसी बात न कहो जिससे समाज व राष्ट्र का अपमान या अनहित होता हो। प्रेम पूर्वक एक-दूसरे के भावों को जानने का प्रयत्न करो। वृथा दूसरे के भावों को तोड़ मरोड़ कर

गलत रूप से प्रस्तुत करने का कभी यत्न न करो। जिस प्रकार संसार के विशेष ज्ञानी एवं अनुभवी पुरुष विवेक पूर्वक आचरण करते हैं, उसी प्रकार तुम भी अपने ध्येय को सामने रखकर कर्त्तव्य कर्मों में संलग्न हो जाओ। सबके साथ प्रीति पूर्वक यथा योग्य व्यवहार करना श्रेष्ठ मानव का धर्म है। वृथा निन्दा व द्वेष में लिप्त नहीं होना चाहिये।

पाश्चात्य समाजवाद में अधिकारों की तो दुहाई है किंतु कर्तव्यों के पालन पर बल नहीं दिया जाता। अधिकार और कर्त्तव्य का सामञ्जस्य बैठाने वाला कोई महापुरुष हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द था। उसने यथायोग्यवाद पर बल देकर सामञ्जस्य बैठाने का प्रयत्न किया है और वैदिक संस्कृति के प्रकाश में समाजवाद को नूतन दिशा दी है।

गीता में "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन्" कह कर कर्म अर्थात् कर्त्तव्य को ही मानव जीवन में प्रमुखता दी है। फल व प्रतिफल जो अधिकार की सीमा में आता है उसको गौणता प्रदान की है। "कर्म प्रधान विश्व करि राखा" इस लोकोक्ति में भी कर्त्तव्य को ही प्रधानता दी गई है। कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने वाला समाजवाद निश्चय ही मानवों को अन्धकार की ओर ढकेलने वाला है। अधिकारों की दुहाई देने वाले व्यक्ति स्वार्थान्ध होकर और व्यष्टिवाद के पुजारी बन कर विनाश की दिशा में अपने समाज को ले जाने वाले हैं जैसा कि ऊपर वेद में वर्णित है—ईशावास्यमिद सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्यस्विद्धनम्॥

यजु०४०।१

अर्थ—परमपुरुष परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। वह सारे संसार का नियन्ता नियामक है। इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी गतिमान लोक लोकान्तर नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह आदि हैं सब पर वह नियन्त्रण करने वाला। वह अज्ञात पूर्ण ज्ञानमयी विश्व चेतना ही विश्व को गति देने वाली है। वह प्रभु तो निश्चय ही विश्व की गति का केन्द्र एवं अन्तिम विधान है। उसके आदेशानुसार ही विश्व में भोग्य पदार्थों को उपलब्ध करो और उनका यथायोग्य उपभोग करो। अपने प्रयत्न व पुरुषार्थ से जो उपलब्ध हो उस पर सन्तोष करो। दूसरे के धन सम्पत्ति-वैभव को देखकर कभी ईर्ष्या न करो। उस वैभव को येन-केन-प्रकारेण हस्तगत करने की कभी चेष्टा न करो। छीन झपट कर चोरी व डाके द्वारा दूसरों की सम्पत्ति को हस्तगत करना मानव को अपवित्र बना देता है। अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करो। पुरुषार्थ से ही मानव के मनोरथ सिद्ध होते हैं। समाज की जब प्रत्येक इकाई पुरुषार्थी बनेगी और परिश्रम उद्योग को अपनायेगी, तब ही समाज कल्याण होगा। बिना परिश्रम संचित धन पर वा दूसरे के धन पर निर्वाह करने वाला मानव पापी है। परिश्रम शून्य व्यक्ति समाज पर भार है और समाज के लिए अभिशाप है। वैदिक समाजवाद में शोषक वर्ग के लिए कोई स्थान ही नहीं है। समाज के प्रत्येक के लिए जीवनोपयोगी अनिवार्य वस्तुओं की यथायोग्य व्यवस्था करना समाजवादी शासन का कर्त्तव्य है। राष्ट्र की पिछड़ी हुई इकाई अर्थात पद-दलित व शोषित जनता का उत्थान करना उसका प्राथमिक कर्त्तव्य है। *

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

थियोडोर ने एम. एन. राय को सूचित किया कि जर्मन अस्त्र शस्त्रों से भरा जहाज शीघ्र ही करांची के बन्दरगाह पर पहुंच रहा है। राय ने कहा कि जहाज को करांची से बंगाल की ओर मोड़ दें। हेलफेरिक इस मामले में किसी निर्णय पर पहुंचने की स्थिति में नहीं था, लेकिन शंघाई के जर्मन कौंसल की राय लेकर उसने जहाज को बंगाल की ओर मोड़ देने की बात मान ली। बटाविया से राय ने कलकत्ते में हैरी एण्ड सन्स के मालिक हरि चक्रवर्ती को तार भेजा कि "धन्धा अपने लिये फायदेमंद रहेगा"। हरि ने राय को खबर दी कि इसके लिये धन की जरूरत है। इसके बाद तो हेलफेरिक की ओर से हैरी एण्ड सन्स को कई बार बटेविया से काफी धन मिलता रहा।

जून १९१५ में एम. एन. राय कलकत्ता लौट आये और यतीन्द्र से सम्पर्क साधा। दोनों ने मैवेरिक जहाज से आने वाले अस्त्र शस्त्रों को उतारने के विषय में तैयारी की। जहाज सुन्दर-वन राय मनाल नामक स्थान में लंगर डालने वाला था। जहाज में तीस हजार रायफल और उन्हीं के चार सौ राउन्ड के लायक गोली बारूद था। इनके साथ ही दो लाख रुपये भी थे।

यतीन्द्रनाथ ने दूसरी बैठक अपने साथियों की बुलायी। इसमें यतीन्द्र के अलावा एम. एन. राय, जदुगोपाल मुकर्जी, अतुल घोष और भोलानाथ चटर्जी थे। इस बैठक में तय हुआ कि आये हुए शस्त्र तीन भागों में बांट दिए जाय और हटिया (पूर्वी बंगाल), कलकत्ता और बालासोर को भेज दिए जाय। यतीन्द्र पूरे बंगाल में आन्दोलन की शुरुआत करने की सोच रहे थे।

क्रान्तिकारियों का यह अन्दाज था कि वे बंगाल की पूरी फौज से भी अधिक समर्थ हैं। यदि उन्हें कोई भय था तो केवल यही कि यदि बाहर से सेना की सहायता आ जाये तो कैसे निपटा जाये। इस विचार को ध्यान में रखते हुए यतीन्द्र ने सलाह दी कि बंगाल की तीनों प्रमुख रेलों को रोक लिया जाय। इसके लिये रेल के पुलों को फौरन ही उड़ा दिया जाय। यतीन्द्र ने बालासोर से मद्रास जाने वाली रेल की जिम्मेदारी ली। बंगाल-नागपुर रेल की जिम्मेदारी चक्रधरपुर पहुंच कर भोलानाथ चटर्जीने संभाली और अजय पहुंचकर ईस्ट इंडियन रेलवे के पुल को उड़ादेने की जिम्मेदारी सतीश चक्रवर्ती ने ली।

नरेन चौधरी और फणीन्द्र चक्रवर्ती को जा कर हटिया में पूर्वी बंगाल को संभालना था, उसके बाद कलकत्ते पर हमला बोल देना था। विपिन गंगोली और एम. एन. राय को कलकत्ते में शस्त्रों को एकत्रित करके फोर्ट विलियम पर कब्जा कर लेना था। इस प्रकार यह महान् योजना हर तरह से तैयार हो चुकी थी। अब केवल एस. एस. मैवेरिक जहाज के पहुंचने भर की प्रतीक्षा थी।

डा. जदुगोपाल मुकर्जी राय मंगल पहुँचे और वहां कुछ स्थानीय जमींदारों से मिल कर जहाज को खाली कराने के लिए कुछ आदमी और कुछ रोशनी के लिए लाइटर्स मांगे। इनका अनुमान था कि मैवेरिक रात में वहीं पहुंचेगा और उसकी पहिचान के लिये जहाज में ही लैम्प इस तरह टंगे रहेंगे जिससे वह पहचाना जा सके, किन्तु जून के अन्त तक भी जहाज नहीं आया न बटाविया से कोई समाचार ही मिला कि उस जहाज को देर क्यों हो रही है?

उसी समय बैंकांक से एक समाचार मिला कि श्याम का जर्मन कौंसल शीघ्र ही पांच हजार रायफल और उतना ही गोला बारूद भेज रहा है और उसके साथ एक लाख रुपया राय मंगल भेजा जा रहा है। (शेषांश अगले अंक में)

मराठा गली, ढाबा रोड़, उज्जैन

संवाद ज़ारी है

भागचन्द जैन 'पुष्प'

एक नगर संवाद ज़ारी है
कि वे लोग
अपमानित थे, आत्महीनता से ग्रसित थे,
राशन की दुकान से लौट आए थे, खाली थैलों के साथ
खाली आजादी,
उनके लिए भूख देती थी
और उनकी जनाना ताकतें रात को रोटी कमाने को
मजबूर थी।
पर वे चुपचाप थे,
उनका वर्तमान, उनका भूत नर्क था
जो उनकी लाश को
भविष्य के कंधों पर ढो रहा था।
उन्होंने सोचा था कि मुक्ति द्वार कहीं निकट है
नारों की भीड़ में उनके हाथ टटोलते थे
अंधकार !
उन्होंने यह भी कहा था
कि उजाले की एक किरण
फूटी थी पूर्व में
और अंधकार ने उसे मौत दे दी
जेल में !
नगर संवाददाता के अनुसार
उन लोगों के साथ धोखा हुआ।
संविधान और खूबसूरत चंडूखाना
(जिसके पात्र चुन लिए जाते हैं हर पांचवे वर्ष, ताकि
वे धूर्तता का नाटक खेल सकें)
दोनों ही पवित्र हैं जैसे कोकशास्त्र और नारी देह
कि भूख मिटाई जा सकती है शरीर की
पेट एक दरम्याना चीज है, नाचीज है।
वे आदमी जिनके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता
अपने आपसे बातें कर रहे थे कि
उनका अस्तित्व नकार दिया गया है और एक लंबी
अंधेरी सुरंग है जिसके दूसरे छोर पर
उजाला है।
फैसला जरूरी था
ताकि उनके छोटे-छोटे बच्चे
जवानी आने से पहले ही नसबन्दी न करा लें,
और उनका कीमती खून
चंद टकों के बदले में
खटमली सेठों की नसों में पाप का भागी न बनें।

नगर संवाद आगे कहता है
उन्होंने जीने के लिए अपनी कुछ जानें कुर्बान
करने का निश्चय किया
उन्होंने अपने चाकू तेज किए थे
और लैस हो गए थे एक साथ,
हत्या करने के लिए उन लोगों की जो
रोटी के बदले मौत देते हैं
न्याय के बदले कानून की सज़ायें उछालते हैं।
उन सबने मिलकर माना था कि
वे शिकार हैं कुत्तों और भेड़ियों के नहीं
आदमी के विकृत आकार के
जो क आदमखोर,
सभ्य (?) हैं।
जिसने व्यवस्था के नाम पर रचा है
एक धर्म और एक झंडा
(अत्याचारी है जिसका डंडा)
ये आदमखोर
उगलते हैं आग
जो मौत दे जाती है
कुछ नौजवानों को !
उन लोगों का खून उबला था,
सोच समझकर, उन्होंने चुपचाप निर्णय किया था,
उन्होंने अपने चाकू तेज कर लिए थे,
ताकि वे लटका सकें,
लाशें चौराहों पर
और लोग वमन करें उनकी नंगी देहों पर
उन्होंने ऐसा किया भी
नगर संवाददाता ने आगे बताया कि
जनता खुश हुई थी यह देख कर
आश्चर्य भी कर रही थी,
पर उसे दुःख भी हुआ
क्यों कि वे चाहते थे उन्हें जिन्दा ही
दफनाना।
पर नगर संवाददाता कहता है कि
यह सब हुआ या नहीं
इस बारे में
सूत्र विश्वसनीय नहीं। *

राजस्थान बैंक, अलवर

सम्पादक के नाम पत्र

वैदिक समाजवाद

वैदिक समाजवाद की जो रूपरेखा आर्य सभा द्वारा प्रस्तुत की गई है अत्यन्त सराहनीय है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस सिद्धांत को देश की जनता सहर्ष स्वीकार करेगी, किन्तु इसको समझने में समय लगेगा। लोगों को समझने के लिए घर-घर में व्यक्ति-व्यक्ति में इसका मंत्र फूंकना होगा। तब ही जन मानस इस इस सिद्धांत को हृदयंगम कर पायेगा।

मेरे मानस पटल पर जो समाजवाद की रूपरेखा है, उसे मैं विद्वद् समाज के समक्ष पेश करना चाहता हूँ। आर्य सभा ने वैदिक समाजवाद की जो रूपरेखा रखी है, उसके अनुसार समाज की व्यवस्था वर्ण व्यवस्था के सिद्धांतों के अनुरूप होगी तथा राज आर्य सभा, विद्या आर्य सभा एवं धर्म आर्य सभायें समाज व्यवस्था व राष्ट्रोन्नति में भागीदार होंगी। धर्म का सर्वोपरि स्थान होगा तथा सरकार धर्म की रक्षा करेगी। समस्त उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण कर समस्त मानव कल्याण की भावना की पुष्टि करने के लिये सभी को चाहे वह किसी भी वर्ण का हो, उसे सरकार की ओर से उन्नति के समान अवसर प्राप्त होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को उसके गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार शिक्षा, रोजगार, निवास, विवाह तथा वृद्धावस्था में जीवनयापन का प्रबन्ध सरकार करेगी। केवल प्रत्येक को नियत घंटे काम करना अत्यन्त आवश्यक होगा। बिना नियत घंटे काम करने वाला देशद्रोही होगा। इस प्रकार के समाजवाद की कल्पना अत्यन्त सराहनीय है। बशर्ते कि व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन न हो। जहां व्यक्ति किसी भी बंधन से बंध कर यह महसूस करने लगे मैं बंधा हुआ हूँ और सरकार की आज्ञा अनुसार ही मुझे कार्य करना है, अन्यथा मेरी इच्छायें तो कुछ अन्य उत्तम से उत्तम कार्य करने की हैं, क्योंकि मनुष्य के विचार परिवर्तनशील है। कभी विचार प्रगतिगामी होते हैं तो कभी प्रतिरोधक विचारों का स्फुरण होता है जिस व्यक्ति की बुद्धि का तीव्र विकास बचपन से ही देखने मे आता है। उसे तीक्ष्ण बुद्धि कहा जाता है। किसी-किसी की बुद्धि का विकास धीरे धीरे कई वर्षों में होता है। फलस्वरूप वह अपने जीवन की उन्नति युवावस्था में भी नहीं कर पाता, इसके विपरीत प्रौढ़ावस्था में वह अपनी बुद्धि का विकास कर पाता है। मान लीजिये एक व्यक्ति के बचपन से मन्द बुद्धि होने से उसकी शिक्षा प्राप्ति के लक्ष्य में गतिरोध उत्पन्न हो गया, वह आगे शिक्षा प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहा, क्योंकि बेचारे के पास ऐसे कोई साधन नहीं जिससे वह अपनी बुद्धि का शीघ्र विकास कर सके अर्थात् तीव्र बुद्धि बन सके। क्योंकि बुद्धि तो प्रकृति प्रदान होती है, फिर उसका विकास होता भी है तो धीरे-धीरे। उसकी शिक्षा छूटने के उपरान्त माना उसे शूद्र अर्थात सेवा कार्य मिला, अब उसे कानूनन नियत घंटे कार्य करना अत्यन्त आवश्यक हो गया। कुछ समय उपरान्त उसकी बुद्धि का विकास होने लगता है और मान लिया ३५ वर्ष के बाद उसकी बुद्धि का विकास हो कर उसके विचारों से परिवर्तन आता है, अब वह अपने जीवन को उन्नत करना चाहता है, मगर चूंकि वह बन्धन में है उसकी वजह से वह कुछ करने में असमर्थ है। हो सकता है उसकी इच्छायें इतनी बलवती हों, क्योंकि वह अपनी शिक्षा में वृद्धि कर, मजदूरी के स्थान पर अब इंजीनियर बनना चाहता है अथवा डाक्टर बनना चाहता है अथवा चुनाव लड़ कर आगे बढ देश सेवा करना चाहता है, मगर बंधन में बंधे होने के कारण उसके समस्त उन्नति के द्वार बन्द हैं। ऐसी अवस्था में उसे राज्य की ओर से कोई सहयोग न मिलने पर उसकी इच्छाओं का दमन होगा। यह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व इच्छाओं पर कुठाराघात होगा। वह जिस कार्य को करता है उसके करने में अरुचि दिखायेगा और वह कार्य रुचि पूर्वक न होने पर उन्नत तरीके से न हो कर अवनति का कारण बनेगा। इससे सभी कार्यों धन्धों पर कुप्रभाव पड़ेगा। इसके अन्तिम परिणाम स्वरूप राष्ट्रोन्नति में गतिरोध उत्पन्न होने की ही सम्भावना अधिक हो सकती है और जब समस्त साधनों के उत्पादन पर राज्य का आधिपत्य होगा तो उस कार्य में व्यक्तिगत रुचि न हो कर उस कार्य की वृद्धि में तन्मयता न रहेगी और वहां कार्य में गतिरोध सम्भव होगा। इस व्यक्तिगत रुचि को बढावा देने, ताकि वह अधिक तन्मयता से कार्य करे, इस प्रकार से प्रबन्ध किया जावे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रुचि अनुसार कर्म करने की स्वतन्त्रता हो, जब वह अपनी रुचि अनुसार किसी भी कार्य को अधिक रुचि व तन्मयता से करता है, तो उसी कार्य को करने में उसे राज्य सरकार द्वारा पूर्ण सहयोग मिले, ताकि उसकी रुचि का तथा आत्मा का दमन न हो और वह अपनी रुचि अनुरूप कार्य को अत्यधिक हर्षोल्लास से करता हुआ राष्ट्रोन्नति में भागीदार बन सके। उस व्यक्ति को जो अधिक उन्नति का मार्ग अपनाता है सरकार उसे प्रोत्साहित करे और वह व्यक्ति विशेष सम्मान का अधिकारी हो। इस प्रकार प्रत्येक को उन्नति के समान अवसर भी मिलेंगे और इच्छाओं पर कुठाराघात भी नहीं

होगा। सभी अधिक सुरुचिपूर्ण व तन्मयता से कार्य करेंगे तथा जब सरकार प्रत्येक के लिए शिक्षा, रोजगार, निवास, विवाह तथा वृद्धावस्था में जीवनयापन का प्रबन्ध स्वयं करेगी तब प्रत्येक व्यक्ति की पारिवारिक चिन्तायें तो समाप्त हो ही जायेंगी, उसको केवल इतना वेतन मिले जिससे कि वह अपने भोजन व वस्त्रों का व्यय भली प्रकार चला सके ताकि वह अच्छे भोजन तथा स्वच्छ वस्त्र धारण कर अपने स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखे।

प्रत्येक व्यक्ति उसके गुण, कर्म, स्वभावानुसार शिक्षा, रोजगार तथा अन्य सुविधायें पाने का अधिकारी भी होगा तथा उसकी व्यक्तिगत रुचि अनुसार उसकी स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिए एक प्रावधान यह भी हो कि वह किसी कार्य को अपने गुण, कर्म, स्वभावानुसार जिस कार्य को अधिक रुचि पूर्वक व तन्मयता पूर्वक करना चाहे करे तथा अन्य समानान्तर से किसी भी कारण रूप विचारों में परिवर्तन आ भी जावें और उसके मन में अन्य अच्छे कार्य करने के दृढ़ संस्कार जाग उठते हैं तो उसे उसकी रुचि और कार्य क्षमता को देखते हुए पहले वाले कार्य को छोड़ कर नवीन कार्य करने की छूट हो और राज्य उसका पूर्ण सहयोग करे, परन्तु इसके साथ प्रत्येक व्यक्ति पर यह कठोर नियन्त्रण हो कि वह जो कार्य अपनी इच्छा व स्वतन्त्रता से करता है देश हित के लिए करेगा। अन्यथा वह व्यक्ति जो देशहित का कार्य नहीं करता है उसको देशद्रोही ठहराया जा कर कठोर दण्ड दिया जावे। दण्ड व्यवस्था अ य त कठोर होनी चाहिए, जिसके भय से कोई भी व्यक्ति गलत काम कर अराजकता न फैला सके।

इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र होगा। जिससे कि उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन न होगा। वह अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य को चुन कर सुरुचि पूर्वक व अधिक तन्मयता से करेगा और उसे सरकार द्वारा किसी भी कार्य के करने में पूर्ण सहयोग मिलेगा, तो वह और भी अधिक रुचि व लगन तथा कठिन मेहनत कर राष्ट्रोन्नति में सहायक होगा। जितना अच्छा कार्य अपनी स्वयं की रुचि अनुसार हो सकता है, उतना बंधन से जबरन नहीं करवाया जा सकता।

—जयसिंह 'मुमुक्षु', राजहंस आरोग्य मन्दिर, बाजपुर (नैनीताल)

फरवरी द्वितीयांक : प्रतिक्रियाएँ

'राजधर्म' बराबर मिल रहा है। सामग्री उत्साहवर्द्धक है। २८ फरवरी का सम्पादकीय बेहद पसन्द आया। पिछले पृष्ठ पर दी गयी कविता 'तुम रक्त हो क्या' अत्यन्त प्रभावशाली है। इन दोनों रचनाओं को 'कान्ति' में साभार लिया जा रहा है।

—अ. स. किरमानी, 'कांति' साप्ताहिक, ९९५, किशनगंज (तेलीबाड़ा), दिल्ली-६

फरवरी द्वितीय के 'राजधर्म' में सम्पादकीय 'स्वाधीनता संघर्ष के दिनों की याद आती है', 'सलीब पर चढ़ा एक मसीहा', महान् क्रान्तिकारी वीर सावरकर' व 'तुम रक्त हो क्या' कविता प्रशंसनीय है।

—भगवानसिंह आर्य, गाँव व डाक औरंगाबाद, जिला गुड़गांवां

२८ फरवरी का 'राजधर्म' पढ़ने को मिला। य... जवादी रहबरों को सही मार्ग दर्शन कराने में सफल होग... यह मुखौटाधारी बहुरूपिये पत्थर के सनम हैं। वक्त ... जब इन्हें सच्चाई को स्वीकार करना होगा। हृदय... अध्यापकों को स्पष्ट समर्थन देने के लिए धन्यवाद... धन्यवाद !! हम दुखी अध्यापकों को काफी प्रेरणा अ... मिला। मैं चालीस हजार साथियों की ओर से आभारी हूँ...

—राजधरणी सागर, आर.एन. १५, महेश नगर, अम्बा...

२८ फरवरी अङ्क एक नये परिवेश के साथ अ... इसका रूप निखरने के साथ चयन सामग्री में सामा... राजनैतिक मूल्यों पर जो तीखा व्यंग्य किया गया है, वह... की पत्रिकाओं में हो, यह जरूरी है और 'राजधर्म' ... उत्तरदायित्व निभा रहा है यह प्रसन्नता की बात है। यह ... भारत के लाखों-करोड़ों लोगों की पत्रिका बन जायगी ... इन्द्रवेश एवं स्वामी अग्निवेश को हार्दिक बधाई।

—अशोक जैन, प्रथम वर्ष वाणिज्य, राजऋषि कॉलेज, ...

समाचार पत्र जन भावना और जन हितों के ... जन जागृति पैदा करने वाला माध्यम होता है। भ्रष्टता के ... पर मात्र व्यवसाय रह गया है। आप इस विपरीत वाताव... युग की धारा को दिशा देने के लिए, अपनी शक्ति भर ... जागृति का प्रयास कर रहे हैं।

—गजेन्द्र आर्य, द्वारा-बालीराम जनरल मर्चेन्ट, सिवहारा ... बिजनौर (उ...

'राजधर्म' शोषित शासन की नजरों में एक ... समस्या खड़ी नजर आता है। यह दुराचारी सरकार ... शोलों को दबाना चाहती है, पर दिन दूनी रात चौगु... ज्वाला भड़कती ही जा रही है।

—नन्दलाल, मंत्री, आर्य समाज, मिर्जापु...

मार्च प्रथमांक : प्रतिक्रियाएँ

'राजधर्म' का नया अंक देखा। ग़रीब जन... शोषण के विरुद्ध आग उगल कर एवं प्रशासन के छद्... को सामने ला कर आपने पवित्र कार्य किया है। बधाई स्वीक...

'गरीबी हटाओ की जगह गरीब हटाओ बजट' (... श्वर आर्य) लेख यथार्थ सामने रख पाया है, तो 'साम... स्तम्भ में लिखा लेख भी ठीक था। 'कला' स्तम्भ नि... होना चाहिए। 'और तब मैं एक अन्धेरा नहीं जीता' ... भारतीय) कविता जिस गंभीरता को ले कर प्रारंभ ... बाद में नारे और भाषणबाजी से साधारण होते हुए दे... हुआ। कुल मिला कर कविता ठीक थी। अशोक चक्र... लेख ने, अध्यापकों के शोषण का मार्मिक चित्र खींच... खोल दी हैं। इस आन्दोलन में अध्यापिकाओं की ... सराहनीय है।

—प्रभाकर द्विवेदी, श्रीराधाकृष्ण विहार, ८६, लक्ष्मी पथ, ...

सम्पादकीय के अतिरिक्त ओम सैनी, अशोक ... और भागचन्द जैन ने अङ्क को ताजगी दी है। 'पेशाव... का बागी' (रामसिंह बघेले) लेख, अन्धे लोगों की आँखें ... का प्रयास है। पिछले अङ्क की अपेक्षा यह अङ्क काफी ... हुआ है। **—सुधाकर गोस्वामी एम. ए., हथरोई, ...**

समाचार दर्शन

स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश को बिना शर्त रिहा करने की मांग

देश भर से स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश को रिहा करने के लिये, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृहमंत्री आदि को तार भेजे जा रहे हैं व प्रस्ताव पारित हो रहे हैं।

दिल्ली के हिन्दी दैनिक 'वीर अर्जुन' और उर्दू दैनिक 'प्रताप' ने १० मार्च को सम्पादकीय लिख कर स्वामी अग्निवेश पर रोहतक जेल में किये जा रहे अत्याचार की घोर निन्दा की। इससे पूर्व इन पत्रों ने सामायिकी स्तम्भ में स्वामी इन्द्रवेश पर भावभीनी पंक्तियां लिख कर, सरकारी अत्याचारों की निन्दा की थी। जालंधर के 'वीर प्रताप' ने भी इन सन्यासियों पर सम्पादकीय लिख कर, इनके नेतृत्व की सराहना की है।

आर्य सभा, होशियारपुर ने एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि यह सभा आर्य सभा, हरयाणा के नेताओं स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं को हरयाणा सरकार द्वारा कारागार में बन्द कर के किये जा रहे अमानुषिक अत्याचार की घोर निन्दा करती है तथा सरकार से मांग करती है कि आर्य सभा के नेताओं तथा अन्य सभा कार्यकर्त्ताओं को तुरन्त रिहा करे। अन्यथा स्थिति के अधिक बिगड़ने का सारा उत्तरदायित्व हरयाणा सरकार पर होगा। प्रस्ताव में अध्यापक आंदोलन तथा आर्य सभा द्वारा चलाये जा रहे शराब बन्दी आंदोलन का समर्थन किया गया है। इसकी प्रतियां प्रधानमंत्री व अन्य प्रमुख नेताओं को भेजी गयी हैं।

जयपुर के चार आर्य समाजों (बजाज नगर, आदर्श नगर, जौहरी बाजार तथा नगर आर्य समाज) ने एक विशेष बैठक में स्वामी अग्निवेश को जेल में मानसिक यातना देने की निन्दा करते हुए उन्हें बिना शर्त रिहा करने की मांग की। सभा में वक्ताओं ने आशा व्यक्त की कि आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा समस्त आर्य सभायें स्वामी जी को रिहा कराने के सम्बन्ध में शीघ्र कदम उठायेंगी।

दोनों सन्यासियों की बिना शर्त रिहाई की मांग करते हुए, आर्य समाज, अर्जुन नगर, गुड़गांवां ने प्रस्ताव पारित किया है। प्रस्ताव में आर्य नेताओं के साथ जेल में किये जा रहे दुर्व्यवहार की निन्दा की गयी है। प्रस्ताव में निर्धन अध्यापकों पर हो रहे अत्याचारों पर रोष व्यक्त किया गया है। ऐसा ही प्रस्ताव आर्य समाज, धूरी (पंजाब) ने भी पारित किया है।

प्रांतीय आर्य महिला सभा, दिल्ली की अध्यक्षा श्रीमती ईश्वरी देवी ने एक तार व पत्र द्वारा स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश तथा आर्य सभा के कार्यकर्त्ताओं की रिहाई के लिये प्रधानमन्त्री से हस्तक्षेप करने की मांग की है।

आर्य सभा, जिला मेरठ ने दोनों नेताओं की रिहाई की मांग करते हुए, मद्यनिषेध आंदोलन को पूर्ण समर्थन देने का निर्णय लिया है।

एक अन्य प्रस्ताव में गेहूँ का मूल्य निर्धारित करते समय, उत्पादन लागत को ध्यान में रखने की माँग की गयी।

आर्य समाज, श्रीगंगानगर ने भी रिहाई की मांग करते हुए, जेल में स्वामी जी पर हो रहे अमानवीय व्यवहार पर दुःख प्रकट किया है।

लाला रामगोपाल शालवाले ने दिल्ली में आर्य नेताओं की रिहाई की मांग की है।

गुरुकुल, मटिण्डू ने एक प्रस्ताव पारित कर, गुरुकुल के प्रधान व आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश और आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश को बिना शर्त रिहा करने की मांग की है। प्रस्ताव में अध्यापकों के आंदोलन का मुक्त कण्ठ से समर्थन किया गया और सरकार से मांग की गयी कि अध्यापकों की न्यायोचित मांगें वह तुरन्त स्वीकार करे। उपस्थित लगभग चार हजार व्यक्तियों ने हाथ उठा कर इस प्रस्ताव को एक मत से समर्थन दिया।

गुरुकुल, मटिण्डू के ६ से ११ मार्च तक आयोजित ५६वें वार्षिकोत्सव में आर्य सभा तथा आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता सम्मिलित हुए। इस अवसर पर शराबबन्दी सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और आर्य राष्ट्र सम्मेलन का आयोजन किया गया।

आर्य सभा कार्यकर्त्ता अध्यापकों के साथ दिल्ली में गिरफ्तार होंगे

पलवल। अ० भा० आर्य सभा ने यहां निर्णय लिया कि आर्य सभा के ११-११ कार्यकर्त्ताओं के जत्थे, आगामी २१ मार्च से दिल्ली में धारा १४४ को तोड़ कर, अध्यापकों के समर्थन में गिरफ्तारी देंगे। जत्थों के मुख्य नेता चुन लिये गये हैं।

प्रथम जत्था २१ मार्च को आर्य सभा, जिला गुड़गांवां के उपाध्यक्ष मनफूलसिंह के नेतृत्व में दिल्ली प्रस्थान करेगा।

मनफूलसिंह ने बताया कि जेल से आर्य सभा के नेताओं स्वामी अग्निवेश और आचार्य रामानन्द के पत्र आये हैं, जिन में उन्होंने आंदोलन को और अधिक गति देने के लिये कहा है।

आर्य सभा ने अध्यापकों की न्यायपूर्ण मांगों का समर्थन करते हुए, हरयाणा पुलिस द्वारा अध्यापकों, राजनैतिक नेताओं,

वकीलों तथा छात्र वर्ग के शांतिप्रिय नागरिकों के साथ पुलिस दुर्व्यवहार व अत्याचार की कठोर शब्दों में निन्दा की।

रोशनलाल आर्य द्वारा मुख्यमंत्री की कोठी पर ४८ घंटे की भूख हड़ताल

चंडीगढ़। हरयाणा आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष रोशन लाल आर्य ने, ९ मार्च की सुबह से मुख्यमंत्री की कोठी के बाहर, ४८ घंटे की भूख हड़ताल रखी।

रोहतक जिला कारागार से स्वामी अग्निवेश का वक्तव्य

आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश ने रोहतक जिला कारागार से दिए गए एक वक्तव्य में मांग की है कि हरयाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल को अपने मंत्रिमंडल सहित त्याग पत्र दे देना चाहिए, क्योंकि वे चालीस हजार अध्यापकों के आंदोलन को सुलझाने में बुरी तरह असफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि बंसीलाल के जिद्दी और दुराग्रह पूर्ण रवैये ने सारे देश में हरयाणा के पवित्र नाम को बदनाम ही नहीं किया है वरन् हरयाणा के लाखों बच्चों के जीवन से भी खिलवाड़ किया है।

आपने बताया कि आज से पांच साल पहले तोशाम हलके में कुछ अध्यापकों ने बंसीलाल के खिलाफ चुनाव में अपने एक रिटायर्ड साथी प्रिन्सिपल देवासिंह की मदद की थी। इस बात से चिढ़ कर बंशीलाल ने मुख्यमंत्री बनने के साथ ही समस्त अध्यापक बिरादरी को अपना व्यक्तिगत दुश्मन मान कर बदला लेने की ठान ली। अध्यापकों के महंगाई भत्ते में कटौती और स्थानान्तरण नीति उसी व्यक्तिगत दुश्मनी की भावना का परिणाम है। इन पांच सालों से हजारों अध्यापकों के प्रति बंसीलाल ने जो अपमान जनक रवैया अपनाया है, उससे अध्यापकों में असंतोष उबलता रहा और इसका सीधा प्रभाव हरयाणा के स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों बच्चों पर पड़ा है। परिणाम स्वरूप एक पूरी पीढ़ी आज शिक्षा की दृष्टि से अन्य प्रान्तों की तुलना में अयोग्य हो चुकी है और हरयाणा में शिक्षा का भविष्य अन्धकारमय हो गया है। आज पूरे एक मास से चल रहे हरयाणा अध्यापक संघ की जबरदस्त शांतिपूर्ण हड़ताल के बावजूद और इसे मिले देशव्यापी समर्थन के बावजूद हरयाणा के मुख्यमंत्री द्वारा हरयाणा अध्यापक संघ की उचित मांगों को ठुकराना उनके इसी जिद्दी और हठी स्वभाव का परिचायक है। इस सारे विवाद को उन्होंने अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है और अध्यापकों की मांगों को स्वीकार करने में वे अपनी बेइज्जती समझ रहे हैं। पैसों की कमी की बात केवल एक बहाना है। जो सरकार शिमला में हरयाणा के मंत्रियों और उनके परिवारों के ठहरने के लिए शाही कोठियां बनवा सकती है। मोरनी हिल्स और पिंजोर गार्डन जैसे आडम्बरपूर्ण स्थानों पर लाखों करोड़ों खर्च कर सकती है और सारे प्रान्त में पर्यटक केन्द्रों के नाम पर विलासिता के अड्डों का जाल बिछा सकती है, वह सरकार क्या अध्यापकों की उचित मांगों को पूरा करने के लिए केवल दो करोड़ रु० का प्रबन्ध नहीं कर सकती?

उन्होंने कहा कि बंसीलाल की आंखें अब इसलिए भी खुल जानी चाहिए कि अब उनकी दमन नीति और तानाशाही का संसद में एक भी कांग्रेसी सदस्य ने समर्थन नहीं किया। इसके विपरीत अध्यापकों की मांगों पर बहस में भाग लेते हुए विरोधी दल के नेताओं के साथ अनेक वरिष्ठ कांग्रेसी सदस्यों ने बंसीलाल के रवैये की भर्त्सना की है।

इस संदर्भ में हरयाणा के सिचाई मंत्री और बंसीलाल के दाहिने हाथ भजनलाल का अम्बाला के भाषण में हरयाणा के ग्रामीणों को अध्यापकों के विरुद्ध उकसाने का प्रयत्न न केवल हास्यास्पद है वरन् कुटिलतापूर्ण और अनैतिक भी है। भजन लाल को पता होना चाहिए कि आज हरयाणा का एक-एक किसान, मजदूर और बुद्धिजीवी वर्ग अध्यापकों के साथ है और यदि भजनलाल और बंसीलाल अपना भ्रम दूर करना चाहते हैं तो उन्हें चाहिए कि वे इसी मुद्दे पर त्याग पत्र देकर एक महीने के अन्दर हरयाणा में पुनः चुनाव करा कर, अपने समर्थन का जायजा ले लें।

आपने कहा कि जो सरकार इस हड़ताल को केवल अत्यल्पसंख्यक शिक्षकों की हड़ताल मानती है उसी सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री भजनलाल द्वारा ८५ प्रतिशत अध्यापकों को अवांछनीय तथा केवल १५ प्रतिशत को वफादार बताना इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि यह हड़ताल किस हद तक व्यापक है।

हरयाणा के पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा दिल्ली में प्रदर्शन व गिरफ्तारियां

१२ मार्च को हरयाणा के पिछड़े वर्ग के लोगों द्वारा, अपनी मांगों के समर्थन में दिल्ली में जुलूस निकाला गया। चौ० गंगाराम एडवोकेट, संयोजक, किसान मजदूर सभा और जयपालसिंह कश्यप, वकील, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदर्शकारियों के समक्ष भाषण देते हुए सरकार को चेतावनी दी कि अगर उसने 'पिछड़ा वर्ग आयोग' की रिपोर्ट ३ महीने के अन्दर लागू न किया तो लाखों स्त्री-पुरुष दिल्ली में विशाल प्रदर्शन करेंगे तथा लाखों की संख्या में गिरफ्तारियां दी जायेंगी। बोट क्लब पर १२ प्रदर्शनकारियों ने गिरफ्तारियां दी। गिरफ्तार लोगों में हरयाणा बैकवर्ड क्लासेज संघर्ष समिति के सदस्य श्री छत्तरसिंह, का० भलेसिंह व श्योबक्स जांगड़ा सम्मिलित थे।

आचार्यकुल, लोवाकलां

आचार्यकुल (कन्या विद्यालय) लोवाकलां, हरयाणा का ११ वां वार्षिकोत्सव २५ मार्च को सम्पन्न होगा।

चमनलाल आर्य का देहान्त

आर्य समाज, झज्जर के मंत्री चमनलाल आर्य का, गत ५ मार्च को लम्बी अस्वस्थता के उपरान्त निधन हो गया। आपकी आयु ४० वर्ष थी।

आपने अनेक पुस्तकों की रचना की। इनमें 'रंग में भंग', 'व्रत का स्वरूप' तथा 'चमन भजनावली' सर्वाधिक चर्चित पुस्तकें हैं। आपने आर्य समाज मन्दिर, झज्जर को समस्त हरयाणा में अपने अथक परिश्रम से, आर्य समाज का लोकप्रिय केन्द्र बना दिया।

आपके निधन पर अनेक शोक सन्देश प्राप्त हुए हैं। आर्य सभा, रोहतक के मंत्री डॉ० कृष्णदत्त, प्रसिद्ध समाजसेवी प्रो० हरिसिंह, हरयाणा प्रान्तीय पटवार संघ के महासचिव राव मूलचन्द तथा वैदिक कन्या पाठशाला, झज्जर की छात्राओं व अध्यापिकाओं ने आपके संघर्षमय जीवन को याद करते हुए, मार्मिक श्रद्धांजलियां अर्पित की हैं।

'राजधर्म' परिवार उनके शोक संतप्त परिवार से आशा रखता है कि चमनलाल जी के महान् व्यक्तित्व के अनुसार, इस शोकावसर पर वह धैर्य धारण करेगा।

विरजानन्द नहीं रहे

गुरुकुल, आर्य नगर, हिसार की प्रबन्ध समिति के आजीवन सदस्य लालमनजी के सुपुत्र विरजानन्द के असामयिक निधन पर, 'राजधर्म' शोक व्यक्त करता है।

आर्य समाज, जोड़ासांकू

कलकत्ता। आर्य समाज, जोड़ासांकू का अष्टम् वार्षिकोत्सव २३ से २५ मार्च १९७३ तक, शहीद मीनार (आक्टर लोनी मनूमेन्ट मैदान) में मनाया जायगा।

आर्य युवक परिषद्, हाथरस

परिषद् का कार्यालय अब आर्य समाज, नयागंज, हाथरस में पहुंच गया है। पुस्तकालय व वाचनालय भी यहां स्थानान्तरित कर दिया गया है।

केन्द्रीय आर्य परिषद्, बम्बई

वृहत्तर बम्बई की एकमात्र आर्य संगठन संस्था केन्द्रीय आर्य परिषद् की ओर से ऋषि बोधोत्सव समुद्र तट चौपाटी पर मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह, उ०प्र० आर्य प्र०सभा के प्रधान प्रकाशवीर शास्त्री, संसद सदस्य प्रो० रामसिंह, विश्वविद्यालय कांगड़ी के कुलपति प्रो० रामसिंह, रेल सेवा आयोग के अध्यक्ष नरदेव स्नातक तथा आचार्य विजय कुमार त्यागी के भाषण हुए।

आर्य समाज, खेड़ी रामनगर

खेड़ी रामनगर। आर्य समाज, खेड़ी रामनगर (जिला कुरुक्षेत्र) के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए। प्रधान- शेरसिंह 'शेर', मन्त्री- नाथूराम आर्य तथा कोषाध्यक्ष- कृष्णलाल आर्य।

थानेसर नगर पालिका के प्रशासक पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

भ्रष्टाचार विरोधी सभा, कुरुक्षेत्र से थानेसर, नगरपालिका के प्रशासक वधावाराम दुआ पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाने वाले, तीन मुद्रित पर्चे प्राप्त हुए हैं। इन पर्चों में उन पर अनियमितताओं, भ्रष्ट आचरण व रिश्वतखोरी के गंभीर आरोप लगाये गये हैं।

'थानेसर नगर पालिका के प्रशासक चुप क्यों' पर्चे में प्रशासक महोदय की चुप्पी को सन्देहास्पद बताया गया है। इसमें आरोप लगाया गया है कि उनकी नींव अखबारों पर है, अन्यथा ९० गांवों के प्रतिनिधि होने पर भी वे कमेटी चुनावों में हार गये थे। इसके अतिरिक्त भी उन पर अनेक गंभीर आरोप इस पर्चे में हैं।

'क्या श्री दुआ जांच कमेटी का सामना करेंगे', पर्चे में आरोप लगाया गया है कि दुआ ने रेलवे रोड थाने पर स्थित अमूल्य भूमि १६०×११ फुट राजनाथ को मामूली मूल्य ३२००/- में बेच दी, हालांकि इस भूमि का वर्तमान मूल्य दो सौ रु० गज है इस तर्क के प्रमाण में पर्चे में अनेक तथ्य दिये गये हैं। इसी प्रकार रामचन्द्र पुत्र गोपालदास को अमूल्य खसरा नं २०७/१० दर्रा कलां बिरला मन्दिर सड़क पर १६×११ फुट जमीन, जो हरयाणा सरकार की है, गुपचुप चार सौ रु० में बेच दी गयी। पत्रकार डॉ० शान्ति स्वरूप शर्मा के पुत्र जगदीशचन्द्र ने अमूल्य खसरा नं २१८/८ दर्रा कलां थानेसर पर २०×११ फुट भूमि पर दुकान नं. ३२० वार्ड ६ बनाकर एन्क्रोचमेंट कर रखी है। पर दुआ भ्रष्ट आचरण का परिचय दे, मामले को खटाई में डाले हुए हैं।

'श्री वधावाराम एडमिनिस्ट्रेटर के कारनामे' नामक पर्चे में प्रश्न किया गया है कि पत्रकार देवीदयाल नन्हा के अखबार 'गीता ज्योति' जिसे लोग 'चमचा ज्योति' कहते हैं, उसे नगर पालिका, थानेसर ने हजारों रु. के इश्तिहार क्यों दिए? नन्हा के पास नगर पालिका की सब्जी मंडी स्थित दुकान मामूली किराये पर क्यों है? नन्हा ने मकान बनवाने के लिये नगर पालिका की तरफ से क्या टूटी नहीं लगवायी? लगवायी तो क्यों? दुआ ने जितने जलसे किये, उनका स्टेज मंत्री नन्हा क्यों होता है? दुआ ने नन्हा को अपना तबादला रुकवाने के लिये क्या देकर दिल्ली भेजा? नन्हा के साले रवलिन्दाराम को दुआ ने नगर पालिका की दो दुकानें मात्र ९० रु० किराये में क्यों दी, जबकि दूसरे किरायेदारों से इनका किराया २०० रु० होता? दुआ, नन्हा के साले ओमप्रकाश से नगरपालिका, थानेसर के दो हजार रु. वसूल क्यों नहीं करते?

'राजधर्म' भ्रष्ट आचरण के ये उदाहरण मुद्रित पर्चों से किसी द्वेष भाव के कारण नहीं वरन् इसलिये छाप रहा है कि सम्बन्धित अधिकारी व व्यक्ति अपना चेहरा जनता के सामने साफ करेंगे और अपने अनियमित आचरण के बारे में स्पष्टीकरण देंगे।

आर्य सन्यासियों को शीघ्र मुक्त करो

बीकानेर। यहां आर्य युवक परिषद् जिला कार्यकारिणी द्वारा हरयाणा में आर्य युवक सन्यासी स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी इन्द्रवेश को बन्दी बनाकर उनके साथ जो अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है, उसकी तीव्र निन्दा की गई। साथ ही हरयाणा में सरस्वती के पुत्रों को पैरों तले रौंदा जा रहा है, उसके विरुद्ध भी क्षोभ प्रकट किया गया। कार्यकारिणी ने चौधरी बंसीलाल को चेतावनी देते हुए प्रस्ताव पारित किया कि आर्य जनता के पूज्य सन्यासियों से सम्मानित व्यवहार करते हुए भावी पीढ़ी के भाग्य से खिलवाड़ बन्द किया जाये। स्वतन्त्र भारत में लोकतंत्र की हत्या करने वाले दानवों का तांडव नृत्य सर्वथा असह्य है।

प्याऊ मनियारी से दिल्ली तक बसें चलाने की मांग

सोनीपत। दैनिक यात्री समिति प्याऊ मनियारी सोनीपत का एक विशेष समारोह इस क्षेत्र में यात्रियों को आवश्यक सुविधाएं देने के सिलसिले में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जनसंघ संसद सदस्य चौ. मुख्तारसिंह, कुंवर जसवंतसिंह चौहान, महानगर परिषद दिल्ली के सदस्य चौ. हीरासिंह और आर्य नेता स्वामी अग्निवेश ने भाग लिया।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने कहा कि सरकार जन सुविधाओं की ओर ध्यान नहीं देती। उन्होंने कहा कि यदि सरकार इस समस्या का समाधान नहीं करती तो आंदोलन करके राज्य और केन्द्र सरकार से इस क्षेत्र में परिवहन समस्या को हल करवाने का प्रयत्न किया जायगा। समिति के प्रवक्ता एम.आर. अग्रवाल के अनुसार इस बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें कहा गया कि दैनिक यात्री समिति प्याऊ मनियारी की मांगों पर समिति के कार्यकर्त्ता जन सहयोग प्राप्त करके कोई प्रभावशाली कदम उठाने के लिए विवश होंगे।

अध्यापक का राग, बंसी का फाग

(आवरण पृष्ठ २ का शेषांश)

मैं हूं अयूब का चचेरा भाई, अब तुम्हारी शामत आई। मेरा नहीं अक्ल से रिश्ता, जाओ जिले से बाहर ये सीधा रास्ता। ये भी खूब हुजूर, जितना ज्यादा पढ़ा, उतना घर से दूर। हमने हरयाणा को जंगल बनाना है। इसी में हमारा कल्याण है। अध्यापक ने लम्बी श्वांस भरी। नीचे का दम नीचे रह गया, ऊपर ले गया बंसी उठाए। कब के किये भोगे, वाह रे कलयुग के बंसी वाले तेरे करिश्मे। लगातार चार साल तक जब हाथ पसार कर थक गए, मैमोरैण्डम दिया किन्तु पढ़े कौन? अन्धे आगे रोए, अपने नयन खोए। पढ़ते तो बात ही क्या थी। पूछा ये कुत्ते कहां आ गए? उत्तर मिला-मामा के यहां! हाय-हाय, अब भौंकने में कसर क्यों रखता। रगड़ के रख दूंगा ये सिलबट्टा है या हमामदस्ता। आखिर में एक ही रास्ता नजर आया हड़ताल कर १२ फरवरी से! वह भी यही चाहता था, तुम दो दिन बाद करोगे। भेज दिया पुलिस को दिन पहले ही दस को। कराओ जबरदस्ती बन्द इन स्कूलों को। जो पढ़ाता मिले पहले उसे ही पकड़ो। देखते-देखते चार हजार बाराती हाथों में कंगना छनकाते आ गए। बाराती भी मस्ताने थे जब समधन के ज्यादा लठ पड़े, आगे छोड़ हरयाणा को दिल्ली में जा जुहारी डलवाई। अब तक डटे बैठे हैं राम लीला मैदान में, जायेंगे मांग ले के। ये निश्चय पक्का है। कभी बात न करने के ख्वाब भूल गया। अब कहता है अब जो चाहो दान दक्षिणा ले लो, कही सुनी माफ करो, बारह साल नलकी में रही सीधी न हुई, पर तुम ने दुम तोड़ दी। मुझे क्या पता था? मैं तो देशी ठर्रे के नशे में चूर था। सब पचों को राम-राम। अब पक्की कर लो। कभी आगे से ऐसा न होगा। ये कान पकड़ा। मैं हार गया, तुम जीत गये। मार को भूल जाना, फागुन का 'मस्त' महीना है। होली का फाग खेला है। पिला दो रस 'ब्रती बासी' को। अपने प्रदेश में चलें, चण्डीगढ़ में सब रस्में होंगी। पर्दा गिरता है। ✱

मंत्री, जिला आर्यसभा, स्वस्तिक प्रेस, झज्जर (हरयाणा)

पंजीयन क्रमांक पी. ५५५
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म

२७ मार्च १९७३

मेरे गाँव में

० देवकीरमण शर्मा

मेरे गांव में
कल भी वसन्त आया था
आज भी है
और कल भी रहेगा।
मेरे बूढ़े गांव में
एक सामन्ती सांप था
जो मेरे गांव वालों पर
फुंफकारता था
सावन में भी आग उगलता था
लोग उसे दूध पिलाते
दूध से उसका पेट न भर सका
वह सांप नर भक्षी बन गया
और जब विनाश की पराकाष्ठा हुई
लोग उठ खड़े हुए
और सबने एक साथ
सामन्ती सांप का फन कुचल डाला।

पर मेरे गांव में
अब भी वसन्त नहीं आया
सरसों के फूलों के साथ
मन भी पीला हो गया
एक सामन्ती सांप मरा
अनेक गोहरे आ बसे हैं
मेरे गांव में।

पहले एक सांप को
वसन्त आता था
और अब गोहरों को वसन्त आता है।
पहले मणिधर
सिर पर मणि मुकुट धारण करता था
अब मेरे गांव में
जो गोहरे आकर बसे हैं
वे टोपी ओढ़ते हैं
मेरे गांव में
वसन्त इन टोपियों पर
उतर आया है।

मेरे गांव में
हर साल वसन्त आता है
पर मेरे गांव वालों को नहीं।
पहले पुरवा सांप पर से
गुजरती थी
और उसे जिलाती थी।
अब पुरवा इन गोहरों पर से
गुजरती है
और हम सीलन भरी घुटनदार
हवा में जी रहे हैं।

दूर, बहुत दूर तक
आसमान से मिलती धरती
गांव वालों की नहीं
अब इन गोहरों की हो गई है।
खेतों से जब बांबियां हटी
तो गोहरों ने जमीन निगल ली
सर्व भूमि गोपाल की नहीं
सर्व भूमि गोहरों की हो गई।

मेरे गांव में
कल भी वसन्त था
आज भी
पर मेरे गांव वालों को
न कल वसन्त था,
न आज है।

नगर पालिका कार्यालय, अलवर

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। दूरभाष : ८८३

ओ३म्



स्वामी दयानन्द



पादकीय–किसान का शोषण
द हो, और अब विद्युत कर्म-
रियों पर दमन-चक्र आधुनिक
न्त के निर्माता की उपेक्षा।
ानन्द जैन द्वारा स्वतंत्रता-
मीन भारतीय गांव का वर्ग-
लेषण 'आज का भारतीय
' ।
प्रकाश माने का लेख 'अनन्त
हेरे के बलिदान की स्मृति रंग
गी' ।
ीक माथुर तथा रवीन्द्रकुमार
की दो मार्मिक अकाल कवि-
ं 'अकाल १९७३' ।
ानाथ व्यास के लेख की अन्तिम
ता 'भारत-जर्मन षड्यंत्र का
तन बौद्धिक नेता यतीन्द्र-
मुकर्जी' ।
सिंह शाण्डिल्य का लेख
म्भोग पर सीमा लगाई जाये' ।
द्यिकी–ओम सैनी का सवाल
ाजवाद कब आयेगा' और
जावत का प्रहार 'हरयाणा
कार द्वारा चावल के व्यापार
मुनाफाखोरी' ।

पाक्षिक



वर्ष ५ अंक ७
१२ अप्रैल १९७३

सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : डॉ० महेन्द्र मधुप

वार्षिक १० रु०
एक प्रति ५० पैसे



सुना था आजादी से पहले संन्यासियों
को हथकड़ी नहीं लगायी जाती थी
सुना था आजादी के बाद राजनैतिक बन्दी
विपक्षी नेताओं का सम्मान किया जाता है
लेकिन चित्र में स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश
के हाथों में हथकड़ी और ही कथा कहती है

गेहूं का उचित मूल्य दिलाने के लिए रोहतक में विशाल किसान रैली

आर्य सभा की इकाई किसान मजदूर सभा हरयाणा ने, ४ अप्रैल को रोहतक में किसानों को गेहूं का उचित मूल्य दिलाने के लिये, विशाल सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश ने की।

सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पारित कर गेहूं का क्रय मूल्य १२५ रु. प्रति क्विंटल व विक्रय मूल्य ७५ रु प्रति क्विंटल करने की मांग की। प्रस्ताव में कहा गया कि जब तक सरकार किसानों की मांगें नहीं मानेगी, तब तक वे उसे अनाज नहीं बेचेंगे। प्रस्ताव में सरकार को चेतावनी दी गयी कि उत्पादन मूल्य पर आधारित उन की मांगों को नही माना गया तो उनको विवश हो कर आंदोलनात्मक रुख अपनाना पड़ेगा। इसमें मंत्रियों व जिला अधिकारियों का घेराव तथा जिला न्यायालयों तथा खाद्य निगम कार्यालयों के बाहर धरने की धमकी दी गयी है। प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि १५ अप्रैल तक उनकी मांगें पूरी न होने पर २० अप्रैल से ५० हजार सत्याग्रही गिरफ्तारी देंगे।

रैली को सम्बोधित करते हुये आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश ने सरकार की किसान विरोधी राजनीति की आलोचना की। उन्होंने कहा कि सरकार निजी व्यापारियों से समझौता कर भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ पर चोट कर रही है। औद्योगिक प्रतिष्ठानों को पांच पैसे प्रति यूनिट बिजली मिलती है, जबकि किसान को ट्यूबवैल के लिए १७ पैसे प्रति प्रति यूनिट ! स्वामी अग्निवेश ने अनाज के थोक व्यापार के सरकारीकरण के लिये सरकार को बधाई दी, किन्तु अधिकारियों में भ्रष्टाचार के कारण किसान को वास्तविक लागत मूल्य मिल पायेगा, इसमें उन्हें सन्देह है। उन्होंने कहा कि किसान को अनाज का उचित मूल्य दिलाने का संघर्ष, भारत में समाजवादी समाज की स्थापना करने की ओर एक कदम मात्र है।

हरयाणा समाजवादी दल के प्रधान शंकरलाल ने कहा कि किसानों की मांगें पूरी कराने के लिये किसानों का संघ बनाया जाये। सभी शोषित वर्ग सरकार पर, एक मंच पर खड़े होकर हमला करें। उन्होंने कहा कि अन्य चीजें सरकार सस्ती कर दे, तो किसान भी गेहूं को सस्ते भाव में बेचने को तैयार है।

हरयाणा जनसंघ के अध्यक्ष चौ० मुख्त्यारसिंह ससद सदस्य ने किसानों को इस संघर्ष के लिये संगठित होने का अह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज किसानों को निर्णय लेना है कि वह मौत स्वीकार करेगा या जीवन। अनाज को हमें आग लगानी पड़ जाये, इस भाव से अनाज नहीं देंगे। आज मिल मालिक अपनी चीजों का दाम लागत मूल्य के आधार पर निर्धारित करते हैं, किन्तु अनाज का मूल्य निर्धारित करने में लागत मूल्य की उपेक्षा को जाती है। उन्होंने कहा प्रजातंत्र की गाड़ी जब तक विरोधी दल मजबूत नहीं होगा तब तक लड़खड़ाती रहेगी। हरयाणा जनसंघ किसानों के संघर्ष में हर पल साथ रहेगी।

हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक चौ. गंगाराम ने कहा कि किसान क्रांति की रीढ़ है आज वह जागृत हो गया है। दिल्ली किसान यूनियन के अध्यक्ष धर्मसिंह ने हरयाणा के किसानों को पूरा सहयोग देने का अश्वासन दिया। भूतपूर्व विधायक धर्मसिंह राठी ने कहा कि हिसार व करनाल में सरकारी कृषि फार्मों में उत्पादन मूल्य ११६-११७ रु. प्रति क्विटल है फिर किसान को ७६ रु० प्रति क्विटल मूल्य क्यों दिया जाता है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश ने हरयाणा के सभी राजनीतिक दलों, किसानों व श्रमिक संगठनों का आह्वान किया कि वे इस संघर्ष में एक मंच पर एकत्रित होकर, सरकारी शोषण का मुकाबला करें।

सभा को पं. रामचन्द्र आर्य, चौ. राजवीर, आचार्य रामानन्द तथा डॉ. कृष्णदत्त आदि ने भी सम्बोधित किया।

संघर्ष की रूपरेखा व गति देने के लिये आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश के संयोजकत्व में एक संघर्ष समिति का गठन किया गया। इसमें आर्य सभा के महासचिव स्वामी अग्निवेश, जनसंघ संसद सदस्य चौ. मुख्त्यारसिंह, हरयाणा समाजवादी दल के अध्यक्ष शंकरलाल, पुरानी कांग्रेस के विधायक दलसिंह, महन्त श्रेयोनाथ, धर्मसिंह राठी, रामसिंह (जीन्द), आचार्य रामानन्द (गुड़गांवां), बिशनसिंह एडवोकेट (कैथल), डॉ. महासिंह (सोनीपत), गंगाराम (गोहाना), विजयसिंह तथा इन्द्रसिंह सर्वसम्मति से मनोनीत किये गये।

सम्पादकीय | किसान का शोषण बन्द हो

हरयाणा के विभिन्न राजनैतिक दलों ने, किसानों के सरकारी शोषण के बिरुद्ध व्यापक आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है। इस आन्दोलन का सूत्रपात हरयाणा आर्य सभा ने किया था और अब विभिन्न राजनैतिक दलों के नेता भी, किसानों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिये, एक मंच पर आ खड़े हुए हैं।

पिछले चार वर्षों से अनाज का क्रय मूल्य, कृषि ओजारों, बीज व पानी तथा जीवनयापन की चीजों में मूल्य वृद्धि के बावजूद स्थिर है। इस वर्ष भारत सरकार ने यह मूल्य ७६ रु. क्रय व ७८ रु. विक्रय रखा है। आर्य सभा ने मांग की है कि सरकार ११२ रु. क्विटल के भाव से अनाज खरीद कर, ७८ रु. प्रति क्विटल के भाव से बेचे। इससे किसान को अनाज का उचित मूल्य मिलेगा और उपभोक्ता को उचित मूल्य पर अनाज!

इस सम्बन्ध में तमिलनाडू के भूतपूर्व मुख्यमंत्री आन्नदुरे द्वारा लिये गये निर्णय की याद हो आती है। अन्ना ने निर्णय लिया था कि केन्द्र सरकार व किसानों से किसी भी भाव से चावल मिले, तमिलनाडू की जनता को वह एक रु. प्रति कि० ग्रा० मिलेगा। तब से तमिलनाडू की जनता अपने इस जननेता की स्मृति में चावल को 'अन्ना-चावल' कहती है। अन्ना नहीं रहे, पर वहां की जनता के हृदय में उनकी स्मृति अमिट है।

और ऐसी ही धारणा आर्य सभा नेताओं की है। उन्होंने किसान व जनता के हित में जनवादी युद्ध आरम्भ कर दिया है। उन्हें विश्वास है कि हरयाणा के लाखों कमेरे (आर्य) किसान हाथ, सरकारी शोषण के विरुद्ध बगावत कर देंगे। उन्हें विश्वास है कि हरयाणा की जनता शोषक सरकार के विरुद्ध बगावत कर मांग करेगी कि राष्ट्रपति व सरकारी सफेदपोशों पर फिजुलखर्ची बन्द कर, न्यूनतम आय वालों को रोटी दी जाये।

कुछ सरकारी एजेन्ट यह प्रचार कर रहे हैं कि इस संघर्ष का सीधा अर्थ अनाज-व्यापार के सरकारीकरण का विरोध है। हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा इस नीति से कोई विरोध नहीं है। पहले हमने लालाओं द्वारा किये जा रहे शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया और अब सरकारी शोषण के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। जनता को लालाओं व उनके समर्थक राजनैतिक दलों के इस प्रचार से भी सावधान रहना चाहिये कि वे इस जन-संघर्ष में उनके साथ हैं। शोषक कभी शोषित के साथ नहीं हो सकता। अतः इस षड्यंत्र को समझना, इस जन-युद्ध को गलत दिशा में भटकने से रोकने के लिये आवश्यक है।

और अब विद्युत कर्मचारियों पर दमन-चक्र

हरयाणा के अध्यापकों पर बंसीलाल द्वारा किये गये अत्याचारों के शोले अभी शान्त भी नहीं हुए थे कि ३ अप्रैल से आरम्भ हुए पन्द्रह हजार विद्युत कर्मचारियों के आन्दोलन को कुचलने के लिये, सरकारी दमन-चक्र प्रारम्भ हो गया। हड़ताल से तीन-चार दिन पूर्व गिरफ्तारियां प्रारम्भ हो गयी तथा विद्युत कर्मियों के हड़ताल के वैध अधिकार को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

रोटी के बदले हथकड़ी दी गयी। पर विद्युत कर्मचारी अपने संघर्ष पथ पर अटल रहे। तब संघर्ष कर रहे विद्युतकर्मियों के संगठन हरयाणा राज्य विद्युत बोर्ड कर्मचारी यूनियन के प्रत्युत्तर में, सरकार के गुर्गे अधिकारियों ने, हरयाणा राज्य विद्युत कर्मचारी संघ का निर्माण कर, उसकी ओर से यह वक्तव्य निकलवाया कि विद्युतकर्मी हड़ताल नहीं चाहते। विद्युत कर्मचारियों ने बताया कि फर्जी संगठन का फार्म ले कर अधिकारी पुलिस के साथ आते हैं और धमकी देते हैं कि इस पर हस्ताक्षर न करने पर जेल जाना पड़ेगा। लोकतंत्र के नाम पर फासिस्टवाद का इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता।

अध्यापकों के बाद विद्युत कर्मचारियों पर इस दमन-चक्र से जनता को सरकार का वर्ग चरित्र समझ लेना चाहिये। जिन अध्यापकों को यह भ्रम है कि उमाशंकर दीक्षित व इन्दिरा गांधी गरीबों को हितचिन्तक हैं व बंसीलाल दुश्मन, उन्हें अब स्पष्ट हो जाना चाहिये कि इनमें कोई अन्तर नहीं है। ये राजनैतिक रंगमंच के अभिनेता हैं, जो एक वर्ग की स्वार्थ पूर्ति के लिये रूप बदलते रहते हैं।

अध्यापक जेल में था, पुलिस दमन का शिकार था- तब रोहतक की सड़कों पर जुलूस निकाल कर विद्युत कर्मियों ने नारा लगाया था- विद्युत कर्मचारी व अध्यापक भाई-भाई, बंसीलाल मुर्दाबाद। और आज जब विद्युत कर्मचारियों से जेलें भर रही हैं, उन पर दमन-चक्र तेज हो गया है, तब अध्यापक कहां है ?

आधुनिक भारत के निर्माता की उपेक्षा

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने 'आधुनिक भारत के निर्माता' नाम से जो ३२ पुस्तकें प्रकाशित की हैं, उनमें सामाजिक-क्रांति के योद्धा स्वामी दयानन्द की जीवनी का न होना, देश के प्रबुद्ध वर्ग के लिये अपमानजनक है।

सूचना तथा प्रसारण मंत्री इन्द्रकुमार गुजराल द्वारा संसद में दी गयी उपरोक्त सूचना से सम्पूर्ण देश में क्रोध की लहर फैल गयी है। कट्टर से कट्टर वामपंथियों का भी मानना है कि स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना अवश्य की, परन्तु उसके आधार पर उन्हें केवल धर्म गुरु नहीं कहा जा सकता। उन्होंने चिन्तन को क्रांतिकारी वे आधुनिक भारत के निर्माताओं में थे।

विदेशी वादों से उच्च सरकारी अधिकारी कितने प्रभावित हैं व अपनी जमीन से वे कितने कटे हुए हैं, इसका इससे बड़ा उदाहरण नहीं हो सकता। आधुनिक भारत के इस निर्माता की उपेक्षा करने वालों के विरुद्ध दिशा दी। कठोर कार्रवाई की जानी चाहिये।

—महेन्द्र मधुप



आज का भारतीय गाँव

भागचन्द्र जैन

एक चौथाई सदी गाँवों पर से गुजर गई है । शहर बढ़ते जा रहे हैं, गांवों की सीमाओं को तोड़कर, गाँव की जनता शहरी धूर्तता एवं आडम्बर को ओढ़ रही है । बढ़ती हुई दरिद्रता भूमिहीनों की तादाद में वृद्धि, पूंजीवादी शिक्षा के प्रसार ने गाँवों की स्थितियों में परिवर्तन करा है । गाँव में शहरी दुनियां का ऊपरी सौन्दर्य छाने लगा है, किन्तु गाँवों की आत्मा खत्म होती जा रही है । **गांव उन लोगों का हो गया है, जो पेशेवर राजनीतिज्ञ हैं, पूंजीपति हैं, सत्ता के आदमी हैं। गरीब एवं शोषित मेहनतकश अपने ही गांव में पराया हो गया हैं ।**

सन् १९६१ में ग्रामीण जनसंख्या का ३८ प्रतिशत केवल पन्द्रह रुपये माह में गुजर बसर करता था । भारतीय आत्मा की भुखमरी, नंगई बढ़ती ही जा रही है। १९७१-७२ में हरित क्रांति का सरकार ने प्रचार किया था । सम्भावना हुई थी कि गांवों की हालत में क्रान्तिकारी सुधार होंगे, किन्तु दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे ग्रामीण जनता का प्रतिशत बढ़ गया । देश की आधी जनता भुखमरी में जी रही है। प्रतिव्यक्ति आय में नगण्य वृद्धि हुई है और उसका भी बड़ा लाभ मध्यम एवं उच्च वर्ग को हुआ है । वैसे तो मध्यम वर्ग एव निम्न वर्ग के उपभोग स्तर में भी गिरावट हुई है। आय वृद्धि होती गई है । यदि सरकारी तंत्र के आंकड़ों एवं सम्भावनाओं पर विश्वास भी करें तो एक न्यूनतम जीवन-स्तर तभी प्राप्त हो जब कि आजादी के वर्ष पैदा हुई पीढ़ी बुढ़ापे को पार कर जाएगी । १९६९ की जनगणना के अनुसार ५५ करोड़ में से ४४ करोड़ गांव के लोग हैं और उसमें से ७० प्रतिशत खेती पर आश्रित हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की उन्नति के लिए हरित क्रांति की तकनीकें अपनाई गई हैं । कृषि उपज को बढ़ावा देने के पीछे सरकारी नीति के द्वारा गांवों में पूंजीवाद के विकास को बढ़ाना ही उद्देश्य रहा है । पिछले अनुभव बताते हैं कि बड़े जमींदारों ने निम्न जोतों वाले किसानों की भूमि पर कब्जा कर लिया है। कमजोर वर्ग के किसान को जो ऋण या अनुदान मिला है, उस का भी एक तिहाई भाग गांव के प्रधान, ग्राम सेवक या सरकारी अहलकार खा जाते हैं । भूमिहीनों की बढ़ती तादाद इस निम्न पूंजीपति वर्ग के द्वारा चूसी जा रही है । नयी कृषि प्रोत्साहन नीति के परिणामस्वरूप सम्पन्न किसान अधिक शक्तिशाली हुए हैं । छोटा किसान या तो मजदूर हो गया है और शहरों को भाग गया है या गांवों में बड़े किसानों की जूठन पर आश्रित हो गया है । पंजाब, हरयाणा एवं महाराष्ट्र के कुछ गाँवों में सरकार ने फिल्में बनाई, विदेशी अतिथियों को रंगीन दिल्ली एवं आस-पास के गाँवों की सैर कराई है । इस प्रकार हरित क्रांति का तथाकथित प्रचार किया गया है । कृषि मजदूरों की वेतन वृद्धि का भी प्रचार हुआ है । खेतिहर मजदूर की संख्या व गरीबी बढ़ती जा रही है। १९६१ में कुल संख्या का १६.२१ प्रतिशत खेतिहार मजदूर था वह १९७१ में जनसंख्या की वृद्धि के साथ २५.७६ प्रतिशत हो गया । उसकी दैनिक मजदूरी १ रु. से २ रु० तक है । मूल्यों में जहां वृद्धि दुगुनी तिगुनी हुई है वहां उनकी मजदूरी में विशेष वृद्धि नहीं हुई है । न काम के घन्टे निश्चित हैं और न ही श्रम कानून उन्हें सुरक्षा देते हैं। ९० प्रतिशत खेतीहर मजदूर पिछड़ा व दलित वर्ग का है, जिन्हें शोषण व बेकारी का भी सामना करना पड़ता है । मजदूरों की पीढ़ी पर पीढ़ी सूदखोरों के यहां बीत जाती है । किन्तु विश्व बैंक, अमेरिकन प्रचार केन्द्र तथा हमारी सरकार के जी भर कर कृषि उत्पादन में वृद्धि का प्रचार करने के बावजूद भी देश की ग्रामीण जनता अपने जी जान से प्यारे बैलों, बछड़ों और गायों को भूख से मरता देख कर रो रही है । अपनी जवान बेटियों को वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर कर रहा है, भ्रष्ट योजनाओं पर काम करने के लिए वह गांवों को छोड़कर भाग रहा है । अकाल पीड़ित क्षेत्रों में सहायता कार्यक्रमों पर उनके शोषण को देख कर प्रत्यक्षदर्शियों की इच्छा इस पूंजीवादी समाज को, इस व्यवस्था के ठेकेदारों को तिलमिल कर मौत देने की ईश्वर से प्रार्थना करने लगती है । जिन गाँवों में अनाज का उत्पादन बढा भी है वहां ग्रामीण जनसंख्या के भूखे रहने वाले वर्ग का प्रतिशत बढ़ा ही है। पंजाब एवं हरयाणा में हरित क्रांति के बाद भी दरिद्रता बढ़ी है । आसाम, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान से लेकर सुदूर भारत तक ग्रामीण जीवन स्तर में गिरावट आती जा रही है ।

राजस्थान के गांव धीरे-धीरे सिंधु घाटी की सभ्यता के चिन्हों के रूप में बदलते जा रहे हैं । रेगिस्तान का पट्ठा बालू के कुंए में प्यास बुझाए यह सरकार चाहती है । लोग जो कीड़ों की मौत मरते हैं, बालू से ढक दिए जाते हैं । पानी उतर गया है उतर जाता है, यदि पानी पीने को न मिले, पर शहरों में जहां गांवों की सम्पदा सिमट कर आ गई है धन्ना सेठों की खूबसूरत लड़कियां, उच्च सरकारी अफसरों के हिप्पीनुमा छोकरे के साथ शराब एवं पॉप संगीत की रंगीनियों में जिस्म का मजा लेती हैं, मानो कपड़े फैशन के अनुसार उतार कर फेंक दिए

हों। आज़ादी से पहले भी अकाल था और अब भी अकाल पड़ता है। भारतीय कृषक, धर्म एवं भगवान के नाम पर इतना डरा दिए गए हैं कि उनके लिए मौत ईश्वरीय देन है। सारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास एक कल्पना बन गया है। बंगाल में सन् ४३ का अकाल ३५ लाख लोगों को मौत देकर गुजर गया **और अब आदमी को न मरने दिया जाता है और न जिन्दा ही रहने दिया जाता है। जीवित लाशें यूं देखने को मिलती हैं, जैसे हम स्वस्थ ग्रामीण समाज से दूर नर कंकालों की बस्ती में आ गये हों। हम मुक्त हो गए हैं, पर भूख से मुक्ति मौत पाने पर ही मिलती है। यह कटु सत्य है, पर है स्थिति यही।** १९६५-६६ के बाद १९६७-६८ में और अब ७२–७३ में बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र के सैंकड़ों गांव वीरान हो गए हैं। एक आदमी एक रोटी खा कर दिन भर मजदूरी पर आमादा है, उस पर शहरी सभ्यता के ठेकेदार उन्हें मजूरी नहीं देते, जब तक उन की जवान लड़कियाँ और जवान बहुएँ रात को उनकी भूख नहीं मिटाएँ ! इस लेख के लेखक ने गोबर में बिखरे हुए अनाज को बीनते, कूड़े में पड़े दोनों को चाटते हुए लोगों को देखा है। शायद आप भी गरीब हरिजन जमात को जूठन खाते हुए देखते होंगे। यह शहरी हरिजन की औकात है, ग्रामीण हरिजन तो इससे भी दयनीय स्थिति में हैं। गांव का स्वर्ण वर्ग उसे जानवरों के जोहड़ से पानी लाने के लिए मजबूर करता है। अकाल या बाढ़ की पीड़ा दूर करने के लिए बाबा नाम केवलम् कोष, प्रधान मंत्री सहायता कोष, भारत सेवक समाज, देशी इजारेदार दान या सहायता का ढोंग रचते हैं, मानो देश में केवल सहायता, दान-दया का ठेका इन्हीं के पास है। अब भी धर्म के नाम पर यश लूटा जाता है। **राजस्थान में बिड़लाओं ने ऐसा ही एक नाटक रचा है ताकि जनता के शोषण से प्राप्त धन को जनता में दान धर्म के नाम पर बांट कर क्रांति की भावना को दबा दिया जाए।**

सरकारी घोषणाओं के अनुसार गाँव अपने रूप को बदल रहे हैं। गाँव की सामाजिक परम्पराएं, रीति-रिवाज, अन्ध-विश्वास टूट रहे हैं, किन्तु खेतों, बागों, पनघटों को तो कोई बदल नहीं सकता। सम्पूर्ण औद्योगीकरण के बाद भी अन्न-दाता इस धरती पर अपना पसीना बहाएगा ही। रासायनिक खादों, उन्नत बीजों के प्रयोग पर जोर दिया गया है, किन्तु इस का लाभ पूंजीपति वर्ग ही उठा सकता है। नया पूंजीपति किसान सिंचाई के साधनों, मशीनी उपकरणों के द्वारा वैज्ञानिक खोज़ों को अपनाकर सफल हुआ है। राष्ट्रीयकृत बैंकों, सहकारी बैंकों से कितने गरीब किसानों को ऋण सुविधाएं मिली हैं ? मोटे भूमिधरों को नयी कृषि नीति अपनाने के कारण, अनाज की अधिक कीमतें वसूल करने का भी सुअवसर मिला है। छोटे किसान ने भूमि को बढ़ती कीमतों के लाभ में जमीनें बेच दी हैं या साहूकार, सूदखोर बनिये ने भूमि की कीमतों के आकर्षण में उन्हें भूमिहीन कर दिया है। सरकार ने भूमि सुधार नीतियों को जानबूझ कर सही ढंग से कार्यान्वित नहीं किया। अधिका-धिक कृषि उत्पादन के लिए नीतियां बनाई, किन्तु भूमि सुधार, भूमि सीलिंग नीति का कार्यन्वयन न करके गरीब का मसला हल नहीं किया गया। पचहत्तर प्रतिशत किसानों के पास कुल कृषि योग्य भूमि का ३१ प्रतिशत है। शेष ६९ प्रतिशत भूमि २५ प्रतिशत बड़े जमींदारों के पास है। बिहार, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र तथा मैसूर का ३० प्रतिशत कृषक परिवार एक एकड के आस-पास ही भूमिपति है। केरल एवं तमिलनाडु में ५० कृषक परिवार एक एकड़ की जोत पर खेती करते हैं। असम, हरयाणा, बंगाल एवं पंजाब में यह प्रतिशत ४० प्रतिशत तक है। बड़े किसान खुद खेती नहीं करते, भूमिहीन या कम जोतों का स्वामी उनके लिए अपना खून पसीना एक करता है। भूमि सीमा अधिनियम सैद्धांतिक रूप में ही रह गया है। अवैध एवं वैध भूमि हस्तांतरण ने इस अधिनियम का मखौल उड़ाया है। राज्यों की नीति भी जुदा-जुदा रही, फलस्वरूप बचने के हेतु घन्ना जमींदारों ने तथाकथित तलाकों के नाटक भी खेले। विभिन्न राज्यों में सीमा अधिनियम ग्यारह एकड़ से २६ एकड़ तक रहा। फलस्वरूप बड़ा किसान अप्रभावित हुआ। इजारेदारों की, अर्द्ध-सामती व्यवस्था ने यही नाटक रचना चाहा था। आन्ध्र, बंगाल तमिलनाडू, राजस्थान व अन्य राज्यों में छीनी गई भूमि का हस्तांतरण भी नहीं हुआ। मूक व भाग्यवादी कृषक का सरकारी अफसरों और भ्रष्ट नेताओं ने शोषण किया। बेचारा गरीब किसान आँखों में आंसू लेकर इस बन्दर बांट को देखता रहा ! केवल कश्मीर में छीनी गई भूमि का सम्पूर्ण भाग भूमिहीनों में बांटा गया, क्योंकि सरकार जानती है कि कश्मीरियों को अफीम देते रहना जरूरी है। देश भर में २४ लाख एकड़ भूमि अति-रिक्त रूप में प्राप्त हुई और इसका ५० प्रतिशत ही वितरित हुआ। देश में जोती जाने वाली १३ करोड़ ८० लाख हेक्टर भूमि का केवल २० प्रतिशत भाग ही सिंचित है, वह भी अनि-श्चितता के झूले में झूलता है। देश में १ करोड़ ७५ लाख हेक्टर कृषि योग्य भूमि परती पड़ी है। कम उत्पादन के लिए इन्दिराजी इन्द्र पर जिम्मेदारी डालती है और अधिक उत्पादन के लिए अपनी उपजाऊ नीतियों की प्रशंसा करती है। यदि वर्षा को ही कृषि के लिए उत्तरदायी ठहराया जाये तो हरित क्रांति एक दिखावा है जो "बिल्ली के भाग से छींका टूटने" के समान है।

गाँवों का धन शहरों की ओर जा रहा है। गाँव की मानव-शक्ति कल कारखानों में पिसने के लिए, ऐय्याशों की

(शेषांश पृष्ठ १७ पर)

१९ अप्रैल को शहादत-दिवस पर विशेष लेख

अनन्त कान्हेरे के बलिदान की स्मृति रंग लाय

O जयप्रकाश माने

'उस नराधम कलेक्टर जैक्शन को मारने वाला क्या तुम्हारे नासिक में कोई नहीं है ? न हो तो मुझे कहो। यहां से से जाकर जैक्शन की अंतडियां बाहर कर दूं।' सत्रह साल के एक सुन्दर कुमार के मुख से यह शब्द सुन कर, सुनने वाले दो बागी वीर देशभक्त एक दूसरे का मुंह ताकते रह गये। वह बच्चा जो चार रुपये का वजीफा पाकर नवीं कक्षा में पढ़ रहा था, नाटकों में काम करने में दिलचस्पी रखता था, बचपने में बोल रहा है, मजाक कर रहा है या पूरी गंभीरता से कह रहा है, यह बात उसके साथियों की समझ से बाहर थी। वे देशभक्त तो थे नहीं, हाँ, जैसा कि आजकल अकसर दिखाई पड़ता है, उनकी देशभक्ति की भावना जबान चलाने तक ही सीमित थी। लेकिन उन्हें ललकारने वाला नौजवान फांसी के फंदे को झूला समझ कर मस्ती से उस पर झूलने की महत्वाकांक्षा रखने वाला वीर था। वह स्वतंत्रता यज्ञ में कूदने को बेकरार था। उसने सिर्फ जैक्शन को मारने का दावा ही नहीं किया, वह अपने नगर औरंगाबाद से नासिक गया और जैक्शन को सैंकडों लोगों के बीच मार गिराया। उस वक्त उसकी उम्र थी उन्नीस से कुछ कम और उसका नाम था अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे।

जैक्शन के हत्या का दृश्य पूरे नब्बे वर्षों के क्रांतिकार्य में सबसे अनूठा और रोमांचकारी है, क्योंकि यह हत्या एक रंगशाला में हुई, जबकि रंगमंच पर नाटक चल रहा था और सैंकडों दर्शक वहां उपस्थित थे। वर्णन पढ़ते या सुनते ही यदि दृश्य जैसा का तैसा आंखों के सामने साकार हो जाता है, तो यह कलाकार की प्रतिभा का प्रमाण है। कान्हेरे भी एक ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने जैक्शन की हत्या कर, अपने लहू से फांसी के फंदे पर अपनी कलाकृति को अमर बना दिया। हुआ यों... लेकिन नहीं ! हत्या के दृश्य का पर्दा खुलने के पहले रंगमंच के पीछे क्या चल रहा था, कान्हेरे की प्रेरणा कहां से मिली थी, जैक्शन के पापों का घडा कैसा भरा था, यह सब जान लेना आवश्यक है।

कान्हेरे परिवार का छोटा सा गाँव कोकण में खेड़ चिपलूण के रास्ते पर पड़ता है, किन्तु जन्म इंदौर में हुआ और वहीं उनका बचपन बीता। इंदौर उस वक्त राजभक्तों का शहर था। क्रांति के बीज वहां बोये ही नहीं गये थे। अगर कान्हेरे वहीं पढ़ता, तो उसे शहीदों की मस्त टोली में सम्मिलित होने का अवसर ही न मिलता। मगर वह शि
औरंगाबाद आया, जहां उसके मामा बरवे रहते थे।
था तो निझाज सरीके गद्दार इलाके में, मगर महारा
वाली राजनीतिक उथलपुथल और क्रांति डंके की आवाज
सुनाई पड़ती थी। पास ही नासिक था, जहां वीर
दामोदर और गणेश दामोदर, दो भाइयों ने "अभिन
नाम से संस्था चलाकर कई युवकों में आजादी के
मिटने की प्रेरणा भर दी थी।

१९०६ में वीर विनायक सावरकर उच्च शिक्ष
विलायत गये, लेकिन गणेश पत ने नासिक का क्रांति
रखा। "अभिनव भारत" के एक सदस्य श्री गोविंद द
थे। उनके पांव लकवा मार जाने के कारण बेकार
लेकिन दिल अपंग नहीं था। उनकी कविताएं न
हृदय में आग भर देती थी। औरंगाबाद में कान्हेरे उन
को पढ़कर अंग्रेजों का जानी दुश्मन बन गया। उधर
खबरें उसे बेचैन कर रही थी। पन्द्रह साल का लड़
सेन बेंत खाते-खाते खून से लथपथ हो गया, ले
मातरम्" गाता रहा। खुदीराम बोस ऐसे ठाठ से फां
की ओर जा रहे थे कि ऐसा प्रतीत होता था, मानो
चलने वाले सशस्त्र सिपाहीं उन्हें मंच की ओर नहीं
थे, बल्कि खुदीराम ही सिपाहियों को फांसी की ओर
थे। कन्हाई दत्त फांसी के चार दिन पहले परीक्षा में
में पास होने की खबर सुनकर, बड़े भाई से बोले थे—'
पत्र को मेरे साथ फांसी पर लटका दिया जाय।"
बंगाल की यह खबरें और उस पर लोकमान्य तिलक
में लिखी प्रखर टिप्पणियां कान्हेरे को स्वतंत्रता की
ओर अग्रसर कर रही थी। देशभक्ति का नशा चढ़ने
शहादत की तमन्ना मचल रही थी।

देशभक्ति की ज्वाला उनमें धधकने लगी थी,
ने उस पर और तेल छिड़क दिया। प्रसिद्ध आर्य स
लाला लाजपतराय और सरदार अजितसिंह को देश
दिया गया। बंगाल पर लिखे लेखों के कारण लोकम
को छह साल के दीर्घ कारावास का दण्ड देकर मांडले
गया था और जिन कवि गोविंद की कविताओं
प्रथम प्रेरणा पायी थी, उनकी कवितायें प्रकाशित

राध में गणेशपंत सावरकर को सजा हो गयी। इसको कान्हेरे बर्दास्त नहीं कर सके। अगर मामूली अपराध पर इतनी कठोर सजा से दंडित किया जाता है, तो दंडित करनेवाले के लिए एक ही दण्ड है—'मृत्यु ! कौन है वह गोरा न्यायाधीश जैक्शन, नासिक का कलेक्टर जैक्शन ! तो उसे मारना ही पड़ेगा और वह भी मेरे हाथों' मन ही मन जैक्शन-वध की प्रतिज्ञा कान्हेरे कर ही रहे थे कि नासिक में एक और वाकया हुआ। कुछ अंग्रेज अफसर गोल खेल रहे थे। एक बार गेंद मैदान लांघ कर रास्ते पर आकर गिरी। एक अनपढ़ किसान को जो रास्ते से जा रहा था, एक अफसर ने गेंद लाने के लिए अंग्रेजी में हुक्म दिया। जब वह बेचारा कुछ न समझा, तो गोल्फ स्टीक और लातों से उसे इतना मारा गया कि वह मर गया। इस बात को 'अभिनव भारत' ने सर्वत्र फैला दिया और मारने वाले अफसर को प्राणदण्ड मिलना ही चाहिए, ऐसा गरज-गरज कर जैक्शन से कहा। लेकिन कलेक्टर जैक्शन चुप बैठे रहे। इस बहरे को अब सिर्फ पिस्तौल की ही आवाज सुननी पड़ेगी, यह निश्चय करके ही कान्हेरे अपने मकान मालिक गंगाराम और नासिक के 'अभिनव भारत' के एक कार्यकर्ता गंगू वैद्य से बोल उठे थे—'उस नराधम कलेक्टर जैक्शन को मारने वाला क्या तुम्हारे नासिक में नहीं है ? न हो, तो मुझसे कहो मैं यहां से जाकर जैक्शन की अन्तड़ियाँ बाहर कर दूँ।'

कान्हेरे इस बात को जरा भी नहीं जानते थे कि जिस क्षण वे अपने इस निश्चय को कार्यान्वित कर देंगे, उसी मुहूर्त से वे केवल शहीदों की रक्तरंजित पंक्ति में ही नहीं बैठेंगे, किन्तु उस महान शृंखला के बीच की कड़ी को जोड़ देंगे, जिसे वीर सावरकर के साथी मदनलाल धिंगरा ने शुरू किया था। धिंगरा ने १ जुलाई १६०६ को लंदन में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया कौंसिल के एक सदस्य सर कर्जन वायली को लंदन के ही इम्पीरियल इन्स्टिट्यूट के हॉल में मार गिराया था और १७ अगस्त १६०६ को फांसी पर चढ़े थे। 'अभिनव भारत' की लंदन शाखा ने इसी कार्य से इस शृंखला की शुरूआत की थी। इसी शृंखला की तीसरी और अन्तिम कडी को 'अभिनव भारत' की दक्षिण भारतीय शाखा ने जोड़ा। जब वांचीअय्यर ने जिलाधीश ट्रेश को १७ जून १६११ को मानियाची जंक्शन पर मार डाला और स्वयं को गोली मार कर वहीं शहीद हो गया।

इन दो घटनाओं के बीच कान्हेरे का महान् कार्य आता है, इसलिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

कान्हेरे ने जैक्शन को मारने का अपना निश्चय गंगू वैद्य को बतलाया और वैद्य ने नासिक आकर सभी सदस्यों को यह खुशखबरी सुना दी। तुरन्त कान्हेरे को नासिक बुलवाया गया। उनकी परीक्षा ली गयी, शपथ ग्रहण कार्य पूरा हुआ और अपना शिकार अच्छी तरह से देख सके, इसीलिए उन्हें लगातार दो दिन कचहरी ले जाया गया। विनायक नारायण देशपांडे, जो पंचवटी नासिक में स्कूल मास्टर थे ने पिस्तौल से निशाना लगाना भी सिखाया। रेजीडेंसी क्षेत्र के पीछे एक घना जंगल था, वहां कान्हेरे ने पिस्तौल चलाने का रियाज किया। वीर सावरकर लन्दन से पिस्तौल भेजा करते थे। इस सामग्री को 'अभिनव भारत' के सदस्य कृष्ण गोपाल कर्वे बम्बई में उतार कर पेण (कोकण महाराष्ट्र का एक नगर) में अपने साथियों के पास भेज देते थे, जिनके मुखिया थे एक स्कूल मास्टर करंदीकर, जिन्हें जैक्शन की हत्या के बाद नाशिक लाकर पुलिस ने जेल में इतना मारा कि वे शहीद हो गये।

अब तक हमने जैक्शन हत्या की पृष्ठभूमि ही देखी और हत्या के बाद हुए परिणामों को देखा। आइये, अब कान्हेरे के साहसी कार्य को देखें।

जैक्शन को मारने के लिए कान्हेरे किसी एक साथी को चाहते थे, लेकिन पूरे नासिक में उन्हें कोई नहीं मिला। निरुत्साह होकर वे औरंगाबाद लौट गये। कर्वे भी बम्बई चले गये, जहां उन्होंने बम बनाने का एक छोटा सा कारखाना खोल रखा था। कुछ दिनों बाद कान्हेरे को खबर पड़ी कि जैक्शन का नासिक से बम्बई तबादला हो रहा है और 'गोड सेव द किंग' प्रार्थना रटने वालों ने २१ दिसम्बर १६०६ को विजयानद थियेटर में उनका विदाई समारोह आयोजित किया है। जैक्शन को जीवन से ही विदा करने का यह अन्तिम अवसर है, यह जानकर कान्हेरे ने नासिक में खबर भिजवाई कि मै अकेला ही जैक्शन को मारने के लिए राजी हूं और औरंगाबाद में मामा साहब को शक न हो, इसीलिए नासिक से एक क्रांतिकारी शोलापुर जिले के बार्शी गांव में गया, जहां कान्हेरे के बड़े भाई रहते थे और कान्हेरे को तार दिया कि 'भाई की तबियत खराब है, इसलिए तुरन्त बार्शी आओ'। कान्हेरे औरंगाबाद से बार्शी होते हुए ठीक समय पर नासिक पहुंचे।

२१ दिसम्बर १६०६ ! नासिक का विजयानंद थियेटर महाराष्ट्र के विख्यात कलाकार बाल गंधर्व द्वारा प्रस्तुत "शारदा" नाटक का मंचीकरण ! भारी भीड़ ! स्वयं जैक्शन आने वाले थे। शाम को कर्वे ने कान्हेरे को दो टिकट दिये। एक था बारह आने वाला और दूसरा दो रूप वाला कोट की जेब में एक और धोती के पल्ले में एक पिस्तौल छिपा कर कान्हेरे थियेटर में घुसे और पहली पंक्ति के सामने जो चबुतरा था, उस पर बैठ गये। वहां से जैक्शन पर आसानी से गोली चलाई जा सकती थी। नाटक शुरू हो गया। लोग मगन थे और कान्हेरे जैक्शन की

गैर हाजिरी से छटपटाते रहे थे। आखिर जैक्सन आया उस वक्त नाटक का पहला अंक खत्म हो चुका था और दूसरे अंक में नायक को दण्ड देने की भूमिका करने वाले जोगलेकर एक गाना शुरू कर रहे थे। जैक्शन अफसरों और मेमों के साथ सीढ़ियों पर ही था कि कान्हेरे ने चबूतरे पर खड़े हो कर, पहली गोली चला दी। निशाना चूक गया। तब वे भीड़ के बीच से भागते हुए जैक्शन के करीब पहुचे और इसके पहले कि कोई कुछ करे कान्हेरे ने पिस्तौल की नली जैक्शन के सीने पर टिका कर लगातार पांच गोलियां चलाई। जैक्शन वहीं ढेर हो गया। 'शारदा' नाटक में भारत माता का सच्चा प्यार गोलियों की गूंज से गरज उठा था। कलाकार मंच से भाग चुके थे। भीड़ ऐकत्रित होकर जैक्शन की लाश के पास धोती, कोट और गोल काली टोपी में मुस्कराने वाले सशक्त सुकुमार कान्हेरे को देख रही थी। उस दिन नाटक देखने जो दर्शक गये थे, उनमें से एक मुझे लातूर में मिले थे, जिनका नाम था कृष्णाजी बल्लाल महावल। उस वाक्य का जिक्र होते ही उनका शरीर कांप उठा। कहने लगे कि "ऐसी बहादुरी का कार्य कहीं हो सकता था।" कान्हेरे के कई साथी काला पानी भोगते हुए मर चुके थे। एक सज्जन गोपाल गणेश धारप, जो आज भी जीवित हैं, दस वर्ष सश्रम कारावास भुगत चुके हैं। आँखें अब अन्धी हो चुकी हैं, बुढापा मौत से मिलने को बेकरार हो रहा है, फिर भी धारप साहब कान्हेरे का कोई स्मारक होना चाहिए, इसके लिए कलाकारों, धनपतियों और सरकार को प्रार्थना पत्र लिखने में व्यस्त हैं।

कान्हेरे को इस बात की कोई फिक्र नहीं थी कि उन्हें स्वतंत्र भारत में याद किया जायेगा या नहीं। शायद वे हमारी पीढ़ी की कृतघ्नता को युग दृष्टा की दृष्टि से पढ़ चुके थे इसीलिए अदालत में वे जिरह सुनने के बजाय शायद अन्य किसी कार्य में व्यस्त रहते थे। अदालत के कटघरे में उन्हें रोजाना देखने वाले कांग्रेसी नेता बेरिस्टर जयकर अपने आत्म चरित्र के दूसरे खण्ड में लिखते हैं "मैं कान्हेरे पर चल रहे मुकदमे को हाईकोर्ट में सुनता था और हैरत में पड़जाता था कि यह नौजवान जिरह में क्या चब रहा है, उसे सुनता भी न था, न सवाल पूछता था, न पूछे गये सवालों का जवाब देता था। बस सब समय हाथों में किसी चीज को लिये मशगुल रहता था।"

ऐसे थे अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे ! उन्हें फांसी पर चढाया गया। अंग्रेजों की अदालत ने उन्हें शहीदों की पंक्ति में बैठा दिया, लेकिन कृष्ण गोपाल कर्वे और विनायक नारायण देश-पांडे को भी कान्हेरे के साथ ही फांसी पर चढ़ाया गया, जबकि बे काला पानी तक के ही अपराधी थे। चाफेकर भाइयों के सामने ये तीन क्रांतिकारी फांसी पर चढ़े। फांसी के फंदे को चूमकर कान्हेरे बोल उठे "जनता के न्यायालय का नियम ही ऐसा है कि जो भारतवासियों को कष्ट देगा, उसे मरना ही होगा। जैक्शन ने हमें छला और उसे सजा मिली। इस सजा के लिए मुझे चुना गया, इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूं।"

अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे, कृष्ण गोपाल कर्वे, विनायक नारायण देशपांडे फांसी पर चढे। उनके बलिदान की स्मृति रंग लायेगी।

द्वारा- सुरेशजी पोकर्ण, सोलापुर गली (दयानन्द पथ), लातूर, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

वैदिक समाजवाद पर पुस्तक छपे !

पिछले दिनों राजधर्म के सम्पादकीय लेखों में स्वामी अग्निवेश जी ने वैदिक समाजवाद के विभिन्न पहलुओं पर जो लेखमाला लिखी उसे से लोगों ने बहुत पसन्द किया। विशेषकर जिस प्रश्नोत्तर शैली का उन्होंने प्रयोग किया उससे बहुतों की शंकाओं का सहज रूप से समाधान होता चला गया। अब हमारे पास कई पत्र आते हैं कि इन लेखों को एक पुस्तक के रूप में इकट्ठा छपवा दिया जाये ताकि वैदिक समाजवाद की इस सुन्दर सरल और युगानुकूल व्याख्या को जन-जन तक पहुँचाया जा सके। स्वामी जी एक दो लेख और लिखकर इस लेखमाला को पूरा करना चाहते हैं और इस तरह यह सारी सामग्री पुस्तकाकार में लगभग १०० पृष्ठों की होगी। प्रथम बार में इसकी ५००० प्रतियों के प्रकाशन की योजना बनी है।

राजधर्म प्रकाशन अभी इस प्रकाशन व्यय को उठाने में समर्थ नहीं है। अतः सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस कार्य में हमारा सहयोग करें। १०० रु० अथवा अधिक देने वाले सज्जनों के नाम पुस्तक में प्रकाशित किये जायेंगे। सुन्दर सफेद कागज पर छपी और आकर्षक रंगीन कवर से युक्त इस पुस्तक की कीमत एक रु० प्रति होगी और इसकी बिक्री से प्राप्त धन द्वारा एक स्थायी ट्रैक्ट विभाग चलाया जायगा और समय-समय पर लघु पुस्तिकायें पाठकों की सेवा में समर्पित होंगी।

वैदिक समाजवाद पर लिखी इस पुस्तक को जो सज्जन दस या अधिक संख्या में मंगाना चाहते हों वे हमें अग्रिम सूचना दे दें ताकि हम उनकी प्रतियां सुरक्षित रख दें। दस या अधिक प्रतियां मँगाने वालों को दस प्रतिशत कमीशन और डाक व्यय मुफ्त होगा।

जा०. ५.

निवेदक

महेन्द्र मधुप



अकाल १९७३

अशोक माथुर

०

खूनउगलते जिस्म
और
बदबूदार मुर्दों ने
भर दिए हैं
श्मशान और जंगल।

हिरण
भागने लगे हैं पागल हो
शेरों की मांदों में।
शेरों ने शुरू कर दिया है
पत्ते खाना।

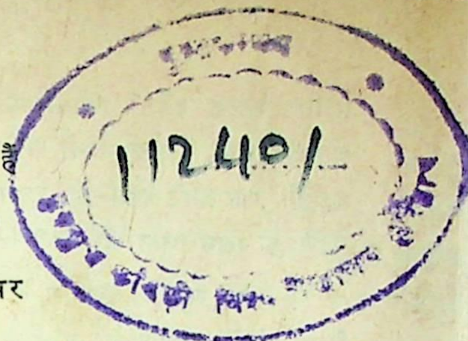
मांस पेशी रहित
कितने ही शव
घूमते हैं दिन रात विक्षिप्त हो
सड़कों पर
लाचार।

नरमुण्डों से सड़कें भरने र को नासिक बु
खून से

नालियां
हजारों नोची गई आंखें
पत्थर सी देखती हैं
चुपचाप।

सफेद आवरण में ढका
गर्दिश के दिन सा
गहरी धुंध में लिपटा
मेरा गांव
इन्दिरा गांधी के तूफानी दौरे
की प्रतीक्षा में
ठिठुरता खड़ा रहा है
बर्फीली सुबह से
मटमैली उदास सांझ तक
न:शब्द।

फर्राटे से दौड़ती
जीपों और कारों के बीच
अपने को
और अधिक



छोटा महसूसता
आंखों से रिसते हैं
लाल रक्त बीज ।

सिसकियों के स्वर
चूस लेती है
भीगी मिट्टी
हवा के थपेड़े
नंगे घड़ों पर
बर्फीली बारिश कर लौट जाते हैं
हर बार ।

लावारिस मुर्दों को लाते
सरकारी सिपाही, शोक-मग्न
गाते हैं फिल्मी गीत ।

आदमी !
हां, आदमी
इतना दयनीय क्यों होता जा रहा है
इन दिनों ।
रेत के साथ मीलों उड़ते
हाहाकर के स्वर
रेत से फैलते जाते हैं
दिन पर दिन
हरयाली पर हवा के झोंके
रेत बोए जाते हैं ।
२५ वर्षों में बढ़ा है
सिर्फ
मेरे गांव का श्मशान ★

सी १२०, सुन्दर मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

एक और अकाल कविता

रवीन्द्रकुमार शर्मा

हाँ कि नैराश्य का मारा हुआ हूँ
उजड़ा हुआ हूँ
टूटा हुआ हूँ
पेट में चले गये
मेरी जमीन के दो टुकड़े
मेरी पत्नी के जेवर
मेरी बपोती का निशानी मकान
और अच्छे दिनों में खरीदी मेरी दो भैंसें
खोल ले गया
मेरे गाँव का पटवारी ।
अब मेरी पत्नी भी
मुझसे नजरें नहीं मिलाती
मेरे चार बच्चे मेरी तरफ
आशा भरी दृष्टि से देखते हैं ।
गाँव के महाजन ने
दस जगह अंगूठे लगवा लिए
और
अन्त में ग्यारहवीं दफे
मुझे वापस भेज दिया ।
मेरी भूख से बिलबिलाती आत्मा
उसे कोस रही है ।
अभी मेरा पड़ोसी बतला रहा था
कि कल नेताजी का खाना
महाजन के घर था ।
मूक निगाहों के प्रश्न
पेटों से उठती हुई कुछ आवाजें
मेरे अन्तरमन को कचोटती हैं
कल मेरे आंगन के पीपल की
छाल भी खतम हो जाएगी । ★

राजर्षि कालेज, अलवर

(गतांक से आगे)

अगस्त के आरंभ में ही सी. आई. डी. के जाल से सरकार को यह पता चल गया कि हैरी एण्ड सन्स और श्रमजीवी समवाय और कुछ नहीं यतीन्द्र की क्रांतिकारी कारगुजारी के लिए बचाव के साधन भर हैं। इन दोनों जगहों की तलाशी ली गयी और कुछ गिरफ्तारियां भी की गयीं।

यतीन्द्र जहाज की प्रतीक्षा में मयूरभंज के जंगलों में काप्तिपाड़ा में बैठे थे। उनका शैलेश्वर बोस के जरिये यूनिवरसल इम्पोरियम से सम्बन्ध था। यतीन्द्र को समाचार मिला कि मैवेरिक जहाज को अंग्रेजों ने जावा में पकड़ लिया है। यह खबर सुनते ही यतीन्द्र ने एम.एन. राय तथा फणीन्द्र चक्रवर्ती को फौरन ही बटाविया भेजा। दोनों बटाविया से शंघाई पहुंचे। वे वहां जर्मन कौंसल से मिले और बंगाल में अस्त्र शस्त्र किसी दूसरे जहाज से पहुँचाने के लिये बातचीत करते रहे। शंघाई में वे रासबिहारी बोस से भी मिले। रासबिहारी बोस दो चीनी मित्रों के जरिये कुछ अस्त्र श्रमजीवी समवाय को पहुंचा चुके थे। अवनी चटर्जी ने भी कलकत्ते को कुछ हथियार भेजने का प्रबन्ध कर लिया था। अवनी चटर्जी और फणीन्द्र सिंगापुर में गिरफ्तार कर लिये गये। रासबिहारी जापान खिसक गये।

अब सी. आई. डी. के केन्द्रीय विभाग ने तय कर लिया कि यतीन्द्र को किसी भी तरह पकड़ा जाय। उन्हें अब पूर्ण रूप से विश्वास हो गया कि इस विराट षडयंत्र के पीछे अकेले यतीन्द्र का ही दिमाग काम कर रहा है। यतीन्द्र का फोटो चारों ओर भेजा गया और उसकी गिरफ्तारी के लिये एक बहुत बड़ी रकम की घोषणा की गयी।

सितम्बर के पहले हफ्ते में सी. आई डी. का अफसर नी. सी. डेन्हम, पुलिस का डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स टैगर्ट और एल. एन. वर्ड एक सूराग के सहारे बालासोर पहुंचे। उन्हें पता चला था कि यतीन्द्र यहीं कहीं है। टैगर्ट ने एकाएक यूनिवरसल इम्पोरियम में, जहां शैलेश्वर बोस काम करते थे छापा मारा। वहां उन्हें कागज का एक टुकड़ा मिला जिसपर "काप्तीपाड़ा" शब्द लिखा हुआ था। इस कागज के टुकड़े के आधार पर टैगर्ट, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट आर. जी. किल्वी के साथ काप्तीपाड़ा पहुँचे।

इसके आगे का वर्णन इतना रोमान्टिक और सनसनी पूर्ण है कि पढ़ने में ऐसे लगने लगता है जैसे एलेक्जेन्डर ड्यूमा का कोई उपन्यास हो।

इस समय यतीन्द्र और उनके साथी मयूरभंज के जंगलों में ३० मील अन्दर घुस चुके थे। यहां यतीन्द्र साधू बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे और उन्होंने वहां एक आश्रम बना लिया था। वहां यतीन्द्र देवता के समान पुजने लगे थे। यतीन्द्र को होमियोपैथिक और एलोपैथिक दवाइयों का अच्छा ज्ञान था बीमारियों का इलाज, लोगों के घर जाकर करते थे। गरीब देहा[illegible] उन्होंने एक आटे दाल की दुकान भी खोल दी थी और पढ़ने के लिए स्कूल भी खोल दिया था।

जब खुफिया विभाग के सदल बल पहुँचने का समाचा[illegible] मिला तो वे सच्चाई की जांच के लिए निकले। इस समय आ[illegible] चित्तप्रिय और मनोरंजन थे। जांच के बाद यतीन्द्र फौरन आ[illegible] और मनोरंजन से फौरन तैयार होने के लिए कहा। चित्तप्रिय [illegible] रंजन ने बार-बार यतीन्द्र से कहा कि "आप अधिक चिन्ता [illegible] अपनी रक्षा का प्रबन्ध करलें। यदि आप बच निकले तो कई [illegible] कार्य भविष्य में हो सकेंगे।" इस बात को सुनकर यतीन्द्र फो[illegible] से मिले। उसे पुलिस के आने की सूचना देकर १२ मील दू[illegible] नामक स्थान पर पहुंचे। यहां उनके दो शिष्य ज्योतिष और[illegible] जब इन दोनों ने भी यतीन्द्र से भागने की प्रार्थना की तो यत[illegible] कहा कि मेरा ख्याल है अब तक तो आप लोग मुझे समझ चुके ह[illegible] लोगों की जानकारी का क्या यही प्रमाण है? संकट में अपने [illegible] रक्षा करना क्या नेता का यही कर्तव्य है"? चित्तप्रिय, नरेन, मनो[illegible]

भारत-जर्मन षड्यन[illegible]
यतीन्द्रनाथ मुकर्जी

ज्योतिष चारों दृढ़ संकल्प होकर अपने सम्मानित नेता के ही पद [illegible] अनुसरण कर रहे थे।

८ सितम्बर की रात में यतीन्द्र मणीन्द्र के घर लौटे। व[illegible] थी। पुलिस की सतर्कता से मणीन्द्र फंस गये। पुलिस ने उन्हें खूब[illegible] इतनी सावधानी के बाद भी यतीन्द्र मणीन्द्र के पास पहुंच गये और [illegible] ही सावधान रहने को कहा। पुलिस ने कई हजार का इनाम देने क[illegible] मणीन्द्र को इसलिए दिया था कि वह यतीन्द्र को पकड़वा दे या [illegible] गतिविधि का पता देता रहे। मणीन्द्र ने यतीन्द्र को समझाया [illegible] आप इस घोर जंगल को पार करके दूसरी ओर निकल जायेंगे [illegible] जायेंगे। कृपया देश के लिए ऐसा शीघ्र ही कीजिए।" यतीन ने [illegible] कह दिया कि "अब न तो छिपने का अवसर है और न अपने [illegible] रक्षा करने का समय है। यह घड़ी हमारी परीक्षा की घड़ी [illegible] मणीन्द्र से कुछ रुपया और रायफल ले कर यतीन्द्र अपने चारों स[illegible] पास चले गये।

दूसरे ही दिन सुबह यतीन्द्र का दल बालासोर के किनारे ब[illegible] पर पहुंच गया। नदी में बाढ़ होने से कोई भी मल्लाह नाव ले [illegible] तैयार नहीं हुआ। एक मल्लाह जोर से चिल्लाकर कहने लगा—

हैं। इन्हें पकड़वाने पर अच्छा इनाम मिलेगा।" यतीन्द्र ने मल्लाह के साथ ही गांव वालों को विश्वास दिलाया कि वे डाकू नहीं हैं। पर भीड़ इनकी ओर दौड़ पड़ी। इस पर मनोरंजन ने उनकी ओर खाली गोलियां चलायीं। इस पर भीड़ पीछे हट गयी और यतीन्द्र वहां से भाग कर दूसरे गांव की ओर बढ़ गये पर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ रहे थे, भीड़ भी बढ़ती जा रही थी। जब वे कामतना ग्राम के पास थे, भीड़ ने यतीन्द्र पर आक्रमण कर दिया। पर यतीन्द्र ने उन्हें हटा दिया। ग्रामीणों से उन्होंने अनुरोध किया कि वे पीछा न करें। पर ग्रामीणों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। आखिर मनोरंजन ने एक को खत्म कर दिया। दूसरे को घायल कर दिया। आखिर भीड़ तितर-बितर होगयी। कुछ लोग सीधे पुलिस को सूचना देने चले गये। तब तक यतीन्द्र और उनके साथी मयूरभंज पहुंच गये। और वहां ऐसा स्थान खोजने लगे जहां सुरक्षित रह सकें।

कुछ दिनों तक इन बहादुरों ने बिना खाये पीये आगे बढ़ना जारी रखा। सोना तो इस भाग दौड़ में हराम हो चुका था। आखिर यतीन्द्र ने सोचा कि इस तरह तो जीवित रहना कठिन है। कुछ खाने पीने का प्रबन्ध होना ही चाहिए। रास्ते में एक हलवाई की दुकान मिली। वहां से उन्होंने लाई खरीदी। रेजगारी न होने से तथा ज्यादा देर खड़े रहने से खतरे में फंस

अन्यतम बौद्धिक नेता

o दीनानाथ व्यास

जाने के भय से वे हलवाई को दस रुपये का नोट देकर आगे बढ़ गये।

दूकानदार ने सोचा कि ये डाकू हैं अतः फिर भीड़ एकत्रित होने लगी। यतीन्द्र और उनके साथियों का फिर पीछा होने लगा। जिस समय शाहपुरा पहुंचे उन्होंने अपनी ओर पुलिस आती देखी। पुलिस को देखकर भीड़ को और साहस आ गया। भीड़ इस कदर उत्तेजित हो गयी कि यतीन्द्र को फिर खाली फायर करना पड़े। भीड़ के पीछे हटते ही वे नदी में कूद पड़े और तैर कर एक धान के खेत से होते हुए चासखण्ड गांव को पार कर गये।

नरेन बीमार था, इसलिये यतीन्द्र एक पहाड़ी पर रुक गये। पहाड़ी पर चढ़ कर उन्होंने सभी से माउजर पिस्तौलों से लैस होकर लड़ाई की तैयारी करने को कहा। चित्तप्रिय ने देखा कि पुलिस उन्हीं की ओर बढ़ी आ रही है। यतीन्द्र ने देखा कि एक ओर सुरक्षा विभाग का अधिकारी है और दूसरी ओर सार्जेन्ट रूथर फोर्ड, चार्ल्स टैगर्ट बर्ड, डैनहम, खुदाबक्ष तथा बाकी इन्सपेक्टर खासनवीस आदि बढ़े चले आ रहे हैं। एकाएक मनोरंजन ने किसी के इशारे को समझ लिया और उसे गोली का निशाना बना दिया। इधर पुलिस जान गयी कि क्रान्तिकारी कहां हैं। पर यह उनकी भूल थी। वे अनुमान से यही समझे कि क्रांतिकारी छोटी पहाड़ी की ओर हैं, किन्तु उधर गोलियां चलाने पर पुलिस को कोई जवाब नहीं मिला। इस पर पुलिस यह सोचने लगी कि यतीन्द्र के पास दूर तक की मार करने वाले शस्त्र नहीं हैं। यह यतीन्द्र की युद्ध विद्या की जानकारी और सूझ का नमूना था। इस प्रकार पुलिस इस विश्वास के साथ बढ़ने लगी कि क्रान्तिकारियों के पास दूरमारक शस्त्र नहीं है। ज्योंही पुलिस वाले उस पहाड़ी पर आगे बढ़े कि यतीन्द्र के दल ने गोलियों की बौछार करदी। इससे पुलिस दल का प्रायः दसवां भाग नष्ट हो गया और पुलिस को पीछे हटने को मजबूर होना पड़ा। पुलिस चित्त लेट गयी फिर भी गोलियों की बौछार से पुलिस घबरा गयी। पुलिस अधिकारी यतीन्द्र की युद्ध नीति से परेशान हो गये क्योंकि उनकी आधी फौज तब तक खत्म हो चुकी थी।

पुलिस घेरे में

तीन घन्टे की बौछार के बाद ज्योतिष ने यतीन्द्र से कहा कि गोलियां खत्म हो रही हैं। इस पर यतीन्द्र ने गोलियों की आखिरी थैली साथियों को दे दी। पर थैली की चाबी न लग सकने तथा थैली का चमड़ा मोटा होने से थैली खुल न सकी। वे थैली खोलने की कोशिश कर ही रहे थे कि इसी बीच एक सिपाही पेड़ पर चढ़ गया और उसने वहां से गोली चलाई। गोली चित्तप्रिय के मस्तक के पास से सनसनाती हुई निकल गयी। ज्योंही उसने सिर ऊपर उठाया कि दूसरी गोली से चित्तप्रिय का काम तमाम हो गया। उधर गोली लगने के पहले ही चितप्रिय की गोली इंसपेक्टर सुरेशचन्द्र मुकर्जी को लगी और वह भी चित्तप्रिय के साथ ही साथ ढेर होगया।

यतीन्द्र की बांयीं जांघ में गोली लग गयी फिर भी वे दाहिने हाथ से बराबर गोली चलाते रहे। चित्तप्रिय के शव को खींचकर उन्होंने अपनी गोद में रखलिया। गोलियों का स्टाक खत्म हो चुका था फिर भी बचे हुए चार साथी बराबर जुटे रहे। इसी बीच यतीन्द्र की कोख और पेट में भी गोलियां लगीं। रक्त तेजी से बहने लगा। उस रक्त धारा से चासखण्ड की भूमि एक पवित्र तीर्थ स्थल बन गयी। इधर नीरेन, मनोरंजन और ज्योतिष भी बुरी तरह घायल हो चुके थे। उन्हें अपनी रत्ती भर भी परवाह नहीं थी। वे यतीन्द्र के घावों से बहुत ही दुखी होगये। तीनों ने अपनी धोतियां फाड़ीं और यतीन्द्र की प्राथमिक चिकित्सा की। यतीन्द्र ने तीनों को देखकर कहा—"मैं आप तीनों को अपने पीछे छोड़ रहा हूं। अपने मरने के पूर्व देशवासियों को बता देना कि हम लोग डाकू नहीं थे। साथ ही देश भाइयों से निवेदन करना, हमारा लक्ष्य पूरा न हो सका, अब यह आपका काम है कि इसे आप लोग पूरा करें।"

इसी समय अंग्रेज अफसर और सिपाहियों ने चारों ओर से इन्हें घेर लिया। उनकी बहादुरी देखकर अफसरों ने अपने टोप

उतार कर यतीन्द्र का सम्मान करते हुए, उनके सामने सिर झुका दिया। यतीन्द्र की हालत ज्यादा खराब देख कर उन्हें बालसोर के सरकारी अस्पताल में ले जाने का शीघ्र ही प्रबन्ध किया गया।

अस्पताल में यतीन्द्र के आपरेशन की शीघ्र ही व्यवस्था की गई। आपरेशन से पूर्व यतीन्द्र ने अपने साथियों की भयंकर हालत देखकर टँगर्ट से कहा—"इन सब कार्यों की जिम्मेदारी मेरी है। मेरे ये साथी अभी बच्चे ही हैं। इन्होंने जो कुछ किया मेरे कहने से किया है। कृपया आप ध्यान रखिये कि इन निर्दोष बालकों को छोड़ दिया जाय।"

यतीन्द्र ने भौतिक शरीर त्यागा

यतीन्द्र का आपरेशन सफल रहा। १० सितम्बर १९१५ की सुबह जब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट किल्बी यतीन्द्र की सेवा में लगा हुआ था, यतीन्द्र को अचानक कुछ ख्याल आया और उन्होंने उठ कर एक ही झटके से अपने सब टांके और पट्टियों को हटा दिया। खून तेजी से बहने लगा। यतीन्द्र ने मुस्करा कर कहा—"किल्बी क्या अब भी मेरे शरीर में इतना रक्त बाकी रह गया है? यह मेरा सौभाग्य है कि मेरे रक्त की प्रत्येक बूंद माता के चरणों पर बह रही है।" यतीन्द्र को अचानक यह ख्याल आ गया था कि बहुत दिन पहले उनकी बड़ी बहन विनोदबाला ने उसे एक पत्र लिखते हुए कहा था— "यतीन, इस बात का ख्याल रखना कि हम कभी भी यह न सुनें कि सिंह पिंजड़े में बन्द हो गया है।" धन्य थी वह बहन जिसने अपने प्यारे भाई को मातृभूमि पर बलिदान होने के लिए प्रोत्साहित किया था।

यतीन्द्र उन उपायों को देखकर मुस्करा दिए जो विदेशी सरकार ने उनको जीवित रखने के लिए अपनाये थे।

चार्ल्स टँगार्ट यतीन्द्र को बरसों से जानते थे। यतीन्द्र के पास बड़ी उत्सुकता से आकर कहने लगे—"मुकर्जी! मुझे बताइये मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ?" मुस्कराते हुए यतीन्द्र ने जवाब दिया- "चार्ल्स! धन्यवाद, सब समाप्त हो गया" कहते हुए उन्होंने चार्ल्स से हाथ मिलाया और सब काम तमाम हो गया। देश के लिए ऐसे प्रेम महान त्याग को देखकर ब्रिटिश अधिकारी बहुत ही प्रभावित हुए और अश्रुपूर्ण नेत्रों से उनके पलंग के चारों ओर खड़े हो गये। चार्ल्स टँगर्ट ने कहा— 'उनके प्रति मेरे हृदय में महान सम्मान है। सबसे वीर भारतीय से मुझे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। क्या किया जाय मुझे अपना कर्त्तव्य निभाना जरूरी था।'

स्वतंत्रता प्रेमी यतीन्द्र के ३६ वर्ष के शानदार जीवन और मृत्यु को देखकर रो पड़े। उनका निधन १० सितम्बर १९१५ को हुआ। देश बन्धु चितरंजनदास और रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और गौरव के अजेय वीर को राष्ट्र की ओर से दी जाने वाली श्रद्धाञ्जलि में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

मनोरंजन और नीरेन को स्वस्थ हो जाने पर फांसी दे दी गयी। ज्योतिष को आजन्म कारावास का दण्ड मिला। वे जेल में पागल हो गये थे। उन्हें पागलखाने भेज दिया गया था, वहीं वो वर्षों बाद मर गये। *

मराठा गली, ढाबा रोड, उज्जैन

पहली हड़ताल २२ मई १८२७ को हुई

श्याम जी पंडित

हड़ताल का जन्म दिनांक २२ मई १८२७ को कलकत्ता की सड़कों पर हुआ था और इसे जन्म देने का श्रेय प्राप्त है पालकी ढोने वाले उड़िया कहारों को! उस समय गोरे लोग पालकी पर चला करते थे। लेकिन जब वे अपने गंतव्य पर पहुँच जाते थे, तब तय किया हुआ किराया नहीं देते थे और कहार के बहुत कहने सुनने पर उसे ठोकर मार कर भगा देते थे। यह रोग बढ़ता ही गया और कहीं भी उन पर हो रहे अत्याचार की सुनवाई नहीं हुयी। अन्त में कहारों ने आपस में संगठित होकर निर्णय किया कि अब सवारियों से पहले ही निश्चित किराया ले लिया जाय। गोरे लोग इससे चिढ़ गये और इसकी प्रतिक्रिया इस रूप में सामने आई कि पुलिस कमिश्नर कलकत्ता ने एक कानून बनाया। जिसके अंतर्गत कहारों के लिए लाइसेंस बांध दिया गया और लाइसेंस जमाकर पुलिस कमिश्नर द्वारा दिया गया बिल्ला लेना अनिवार्य कर दिया गया। कहार लोग पसीना बहाकर पैसा लेते थे, अतः स्वाभाविक ही था कि यह कानून उन्हें बहुत अन्यायपूर्ण लगा। उन लोगों ने संगठित होकर न्याय की मांग की। लेकिन जब गोरे अफसरों ने उनकी एक न सुनी, तो उन्होंने हड़ताल कर दी। उस समय आवागमन के और साधन भी न थे, अतः मई के महीने में लोगों का घर से निकलना ही दूभर हो गया। उस समय देश के कोने-कोने में इस हड़ताल की चर्चा हुई। लेकिन गोरे लोगों की प्रबल शक्ति के आगे गरीब कहारों का कमजोर सगठन कामयाब न हो सका और अन्त में उसे बाध्य होकर २६ मई १८२७ को हड़ताल वापस लेनी पड़ी। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी विद्रोह-भावना दब गयी थी।

निरंजनी अखाड़ा, दारागंज, प्रयाग—६

उपभोग पर सीमा लगाई जाये

○ रत्नसिंह शाण्डिल्य

देश में अनेक समस्याएं हैं जिनसे जनता परेशान है। नेता अपील करते हैं कि देश के निर्माण कार्यों में जनता एकजुट होकर लग जाय और विकास के लिए पेट पर पट्टी बांध कर काम करे, परन्तु जनता पर इन अपीलों का कोई प्रभाव नहीं होता। वह इन नेताओं की सलाह को एक कान से सुनती है तो दूसरे से निकाल देती है। उसे लगता है कि यह मेरे उपयोग के लिए नहीं हैं। सवाल है कि ऐसी स्थिति क्यों है और इसे कैसे बदला जाय?

उत्तर स्पष्ट है कि जब तक देश के नेता अभाव और कमी में, सभी चीजों की तंगी में, जो चाहे अकाल के कारण हो या मुफलिसी के कारण, अपनी साझेदारी नहीं निभाते, तब तक जनता पर ऐसी अपीलों का कोई प्रभाव नहीं होगा। जो लोग इस देश का निर्माण करने वाले हैं, सरकार चलाने वाले हैं अर्थात् देश के नेता हैं जब तक वे लोग विलासिता से रहते हैं, तब तक उन्हें जनता को पेट पर पट्टी बांध कर, निर्माण कार्यों में जुटने की बात कहने का न तो अधिकार ही है और न ही उसका कोई लाभ है। जनता उसे उन नेताओं का प्रलाप ही मानती रहेगी। यदि देश के निर्माण के लिए जन-जन को त्याग व तपस्या के लिए प्रेरित करना है तो नेताओं को अपने जीवन को संयमी बनाना होगा तथा त्याग व तपस्या का आदर्श अपने जीवन से प्रस्तुत करना होगा। नेता अपने आदर्शमयी जीवन से ही समाज को उत्प्रेरित कर सकते हैं।

यहां तक यह मामला चरित्र या आदर्श का है जिसे नेताओं को अपने जीवन में ढालना होगा अर्थात् विशिष्ट जन को आदर्श जीवनयापन करना होगा, तब सामान्य जन उसका अनुकरण करेगा। इसके आगे यह मामला सम्पत्ति का है जो समाज के जीवन में किसी भी प्रकार 'भगवान' से कम नहीं समझी जाती। प्राचीन काल में भारतीय चिन्तकों ने इस विषय में बहुत गहराई से विचार किया, परन्तु हमारे आर्थिक व वित्तीय (सम्पत्ति) मामलों के अधिकतर वर्तमान चिन्तकों पर यूरोपीय औद्योगिक क्रान्ति के बाद की विचार सारिणियों ने बहुत असर डाला है। इसीलिए उनका चिन्तन कुछ वादों (पूंजीवाद, समाजवाद, या साम्यवाद) तक ही सीमित हो गया है और उनका सारा सोच-विचार यूरोपीय की भांति एकांगीपन पीड़ित हो रहा है। भारतीय ऋषियों या मुनियों ने धर्म के दस लक्षणों में जिस 'अपरिग्रह' की मान्यता दी है, वह सम्पत्ति से सम्बन्धित है जिसमें अधिकतम उत्पादन, समान वितरण और न्यूनतम उपभोग की व्यवस्था है जबकि पूंजीवादी या साम्यवादी व्यवस्था में उत्पादन, वितरण व उपयोग पर इस प्रकार से सम्यक् नहीं हो सका।

वर्तमान परिस्थितियों में हमें अपने उस सन्तुलित आर्थिक चिन्तन को पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता से अधिक 'परिग्रहण' करने वाले को चोर समझ कर दण्डित करने को कहा गया है। मानव में भोग की इच्छा स्वाभाविक है और यदि उस पर कोई सीमा न लगायी गयी तो उसका कहीं अन्त नहीं। अतः हमें भोग पर सीमा लगानी होगी। वह संयम और नियंत्रण (कानून) दोनों से ही सम्भव है।

महंगाई बढ़ रही है और हर वर्ग महंगाई भत्ता बढ़ाने की मांग कर रहा है। प्रत्येक राजनीतिक दल वोट व सस्ती लोकप्रियता के चक्कर में फंसकर महंगाई भत्ता बढ़ाने का समर्थन करता है। महंगाई भत्ता बढ़ेगा तो महंगाई उससे कई गुना बढ़ेगी और इस प्रकार इस दुष्चक्र का कोई अंत नहीं हो सकता। इसलिए हमें इस दुष्चक्र को तोड़ने पर गम्भीरता से सोचने और दृढ़ता से सही कदम उठाने की जरूरत है। अब सवाल है कि सही कदम क्या है?

जाहिर है कि ऊपर के लोग विलासिता से रहना छोड़ें। बड़े लोगों के खर्च घटाये जायें। इनके उपयोग को सीमित किया जाये ताकि चीजों के दाम घट सकें और समाज के निचले वर्ग को उसका न्यूनतम भाग तो मिल ही सके। देश की ५६ करोड़ आबादी में से २२ करोड़ को गरीबी का न्यूनतम स्तर भी छूने में कठिनाई है और ऊपर का ५ प्रतिशत वर्ग राष्ट्रीय आय के १६.१७ प्रतिशत को डकार जाता है।

राष्ट्रीय आय के साथ-साथ उसके वितरण में विषमता बढ़ती जा रही है। देश की जनता के गरीबतम २० प्रतिशत वर्ग की राष्ट्रीय आय का केवल ७.८ प्रतिशत भाग मिलता है। जबकि जनता का २० प्रतिशत धनी वर्ग राष्ट्रीय आय का ३६.१६ प्रतिशत भाग का मालिक है। एकाधिकार जांच आयोग की रिपोर्ट के अनुसार सरकारी कम्पनियों तथा बैंकों छोड़ कर देश के अन्य सम्पूर्ण नियमित क्षेत्र की कुल परिदत्त पूंजी का ४४ प्रतिशत केवल ७५ औद्योगिक घरानों तथा कोई डेढ़ हजार कम्पनियों के स्वामित्व में है और देश की कुल औद्योगिक परिसम्पत्ति के ४७ प्रतिशत पर इनका अधिकार है। इसके विपरीत १६वें नेशनल सेम्पल सर्वे के अनुसार भारतीय ग्रामीण जनता

का ६२ प्रतिशत वर्ग एक रुपया प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति भी व्यय नहीं कर पाता। क्योंकि एक करोड़ से भी अधिक लोग ऐसे हैं जिनकी आय २७ पैसे प्रतिदिन की नहीं और ग्रामीण क्षेत्रों में ४६ करोड़ में से ३६ करोड़ ३० लाख लोगों की ७० प्रतिशत महगाई बढ़ने से प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पा रहा। यह विषमता रोकनी होगी।

प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने १९७१ के चुनाव में गरीबी हटाने का लक्ष्य घोषित किया जिसका अभिप्राय निचले वर्ग की आमदनी बढ़ाने से था। परन्तु एक ताजा सर्वे के अनुसार गरीबतम वर्ग की आय घटी है अर्थात् जिन एक करोड़ लोगों की पहले आय २७ पैसे आंकी गई थी, उनकी अब आमदनी २५ पैसे प्रतिदिन हो गयी है जबकि ऊपर के ५ प्रतिशत की आय १२०० रु० से बढ़कर १५०० रु० प्रतिदिन प्रति व्यक्ति हो गयी है। देश के शासन, शिक्षा व व्यापार पर भी इसी पांच प्रतिशत वर्ग का प्रभाव है। इस प्रकार हमारे देश में विशेषाधिकारी वर्ग का बोलबाला है। कहने को राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री पर १५-२५ लाख रुपए खर्च होता है, परन्तु वास्तव में दोनों पर ही डेढ़-दो करोड़ रु० वार्षिक से कम खर्च नहीं होता। संसद सदस्यों और मन्त्रियों का भी यही हाल है। तनख्वाह तो ६०० रु० से ३००० रु० मासिक ही है, परन्तु उनके भत्ते व सुविधाओं को मिलाकर दो-तीन लाख रु० सालाना से कम खर्च उन पर नहीं होता।

दरअसल हमारे समाज का यह विशेषाधिकारी वर्ग या ये तथाकथित नेता शौकीनी, शान शौकत व ऐश्वर्य में यूरोपीयों को भी मात करना चाहता है। हमने अब तक इसे रोकने के लिए जितने कदम उठाये हैं वे प्रभावहीन साबित हुए हैं। जैसे आय कर, सम्पत्ति कर, विक्रय कर आदि लगाये गए जिनसे बचने के प्रयत्नों ने देश में काले धन के अम्बार लगा दिए। वस्तुतः ये कदम ऊपरी हैं और गहराई से इस विषय में विचार करना होगा तथा इस समस्या के लिए मूल स्रोत पर जाना होगा। उदाहरणार्थ इस समय देश में छह लाख निजी मोटरों का इस्तेमाल हो रहा है। इन पर ३५० रु० से छह हजार रु० महीने खर्च होता है। यदि हम निजी मोटरों को बन्द कर दें तो तीन-चार अरब रुपए की बचत हो सकती है। यही हाल स्कूलों का भी है। यदि हम ऐसी शिक्षा व्यवस्था चालू करें जिसमें राष्ट्रपति और मंत्री, अधिकारी व धन्नासेठ का बालक सामान्य नागरिक के बच्चे के साथ पढ़ सके, तो सारे देश में शिक्षा का प्रसार हो सकेगा और दो अरब रु० तक बचत हो सकेगी।

इसके अतिरिक्त हमें उस सरकारी खर्च पर भी ध्यान देने की जरूरत है जिसमें ५० प्रतिशत से अधिक ऐसे कर्मचारियों पर व्यय होता है जिनका उत्पादन से कोई सम्बन्ध नहीं। कुल डेढ़ करोड़ कर्मचारियों में से ५०-६० लाख ऐसे हैं जिनकी कोई जरूरत नहीं है, परन्तु फिर भी ये लोग सरकारी खर्च पर पल रहे हैं। हमारी राय में इनको ऐसे कामों में लगा दिया जाय जो उपजाऊ हैं। इसके लिए श्रम को अनिवार्य करने की प्रक्रिया अपनायी जा सकती है जिसमें देश के धन्नासेठों, अधिकारियों व कर्मचारियों सहित सभी को वर्ष में कम से कम एक महीने श्रम युक्त उपजाऊ काम में लगाना होगा अर्थात् कभी उपभोक्ताओं को उत्पादक या श्रमिक बनाना होगा। इस योजना से लगभग चार अरब रूपए की बचत होगी और दूसरी ओर देश में उत्पादन व श्रम निष्ठा भी बढ़ेगी। सफेदपोशों को श्रम के महत्व का पता चलेगा।

वस्तुतः उपभोग पर सीमा सबके लिए समान करनी होगी। उसमें आवश्यकता व क्षमता के अनुरूप न्यूनतम व अधिकतम की रेखा निश्चित होगी। नेताओं को अपने संयमी जीवन से आदर्श की प्रेरणा देनी होगी और सामान्य जन को नियंत्रण (कानून) में बांधना होगा जिसे धन्नासेठों व अधिकारियों और नेताओं पर भी लागू करना होगा। परन्तु यह व्यवस्था शुरू में ऊपर के लोगों पर लागू करनी होगी। तब नीचे वाले लोग स्वतः अपना लेंगे। यदि ऊपर के लोगों को अपवाद या और किसी बहाने से छूट दी तो सारी व्यवस्था बेमानी होगी। व्यवस्था को भंग करने वालों के लिए कठोर दण्ड भी देना होगा। तब हम अधिकतम उत्पादन, समान वितरण व न्यूनतम उपभोग के अपरिग्रह के सिद्धांत को लागू कर सकेंगे और व्यक्ति के सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक विकास प्रदान कर सकेंगे। ❋

३८०८, सुभाष गली, दरियागंज पुल, दिल्ली—६

समाजवाद कब आयेगा ?

o ओम्म सैनी

आपको याद होगा श्रीमती गांधी वही प्रधानमन्त्री हैं जिन्होंने पहले सिंडिकेटियों की पकड़ से निकलने के लिये अपनी पार्टी में हंगामा मचाया था। उसके बाद में उन्होंने गिरि साहब को 'अन्तरात्मा' का गुर समझाया था। साथ ही लोगों को यह भी बताया कि समाजवाद के रास्ते के अब सारे अवरोध हट गये हैं। आप तो मेरे हाथ मजबूत कर दीजिये, फिर देखिये समाजवाद की सवारी कितनी धूमधाम से लाती हूँ। लोगों ने हिन्दुस्तान के कोने-कोने में उनके हाथ मजबूत कर दिये और तुरन्त बोले–अब बुलाइये समाजवाद ! तो श्रीमती जी ने फरमाया कि भय्या केन्द्र में हाथ मजबूत कीजिये तब आयेगा समाजवाद। लोगों ने कहा–अभी लो। केन्द्र में जब वह हाथ मजबूत कर गयी, तो घाये सांड की तरह पसर कर बैठ गई। लोगों ने कहा–महारानी यह क्या बात है ? तो बोली–आप लोग भी बड़े अहमक हैं ! हाथों में सरसों उगाना चाहते हैं। लोग सहम गये। केन्द्र और राज्यों के मन्त्रिमण्डल सहम गये। हाथ मजबूत होने के बाद मुख्यमंत्री वह बना जो प्रधानमंत्री भवन पर सन् ६७ से दुम हिला रहा था। नाम मुख्यमंत्रियों का और काम प्रधानमन्त्री का ! दुम हिलाने में जिसने गड़बड़ की, ऐसा गया गत्ते से कि नाम बदल कर 'भूतपूर्व' हो गया या उसकी भ्रष्टाचार की फाइलें खुल गई।

साथ ही जनता को वो जवाब दिये कि अनपढ़ जनता समाजवाद का मतलब रोटी, कपड़ा, मकान या नौकरी की गारंटी न समझ कर बैंक राष्ट्रीयकरण, सम्पत्ति पर सीलिंग और परिवार नियोजन समझने लगी। जनता ने कहा—चण्डी माँ कीमतें बढ़ रही हैं और पैसा है नहीं खरीदने को ! श्रीमती ने आँख मटका कर कहा अभी लो, इलाज करती हूँ। मुख्य-मन्त्रियों से कहा—जाओ घोषणा कर दो इस बार से अनाज का व्यापार करेंगे ! अनाज के सारे आढ़तिये घबराये हुये बोले–मां हम गरीब हो जायेंगे ! चण्डी ने फरमाया–कुछ नहीं आप लोग बहुत सर पर चढ़ गये हैं। कमाते हैं मेरे नाम पर और चन्दा और वोट देते हैं जनसंघ को ! आढ़तिये बोले—मां सिफारिशी पत्र लाये हैं अभी-अभी **जयप्रकाश बाबू जैसे गांधीवादी कह रहे थे अनाज का व्यापार आपको शोभा भी नहीं देता और इसे आप कर भी नहीं पायेंगी !** थर्राते हुये आढ़तियों को इन्दिरा जी बोली—तुम्हे होश भी है। तुमने मेरे शेर बंसीलाल को नहीं देखा ! किसानों से ७० पैसे किलो चावल खरीद कर २ रु. २५ पैसे किलो बेचता है व दो सौ प्रतिशत से भी अधिक मुनाफा कमा रहा है। आढ़तियों ने जब देखा कि मां बड़ी अभद्र हो रही है तो बोले—**हम हड़ताल करेंगे ! आमरण अनशन करेंगे ! पर, प्रधानमंत्री की कसम आढ़तियों का काम बंसी को नहीं करने देंगे।** अच्छा ! कह कर, इन्दिराजी ने रेडियो से घोषणा कर दी कि देखो जनता यह आढ़तिये समाज-वाद की राह में रोड़े खड़े कर रहे हैं।

जनता ने जब यह सुना तो शक्ति में आ गई ! बोली—देवी, पहले आप कहती थी मोरारजी भाई गड़बड़ हैं। हमने मोरारजी को लिटा दिया। यहां तक कि बेचारे मोरारजी आपके वित्त मंत्री को सराहने लगे। अब आप कहती हो कि आढ़तिये समाजवाद की राह में रोड़े हैं ! आखिर आपका यह समाजवाद चीज क्या है ? कितना मोटा है जो २५ साल से अपनी मरियल सी शक्ल लेकर अभी तक नहीं आ सका।

यह सवाल-जवाब आम आदमी की जिन्दगी के तल्ख सवाल हैं, जिन्हें श्रीमती गांधी शोषकों की भलाई के लिये समाजवाद की खाल से ढकती आई हैं। पर अब जब सवाल सीधे पेट और जान का बन गया है तो "राज्य धनवाद" की समाजवादी खाल को, भूख की नजर से श्रीमती गांधी नहीं बचा पायेंगी।

योजना का नाम लेकर चलने वाली सरकार आखिर इतनी योजनाओं से अपने समाजवाद के पशु जिस्म को कितने कदम चला पाई। कीमतें पिछले २५ साल में कई गुना बढ गयी। बेरोजगारी का हिसाब रोज बदल कर देखना होता है। आफतों पर आफतें आती हैं पर समाजवाद नहीं आता ! सड़क वाला अपनी पैदाइश बढ़ा रहा है तो बंगले वालों का कुनबा भी बढ़ रहा है।

गरीबी हटाने की जगह झोंपडियां हटाई जाती हैं और नगर विकास होता है ! गांव वाला पेट भरने के लिये शहर आ कर झुग्गियों में बसता है और नगर विकास के नाम पर झुग्गियां हटाकर वापस गाँव लौट कर भूख या तकदीर के नाम पर कसम खा कर मर जाता है ?

यह कमबख्त समाजवाद है कि या तो आता ही नहीं या चुपके से संजय गांधी को मोटर बनाने का लाइसेन्स देकर रातों रात बंसीलाल को आशीर्वाद देकर लौट जाता है। अब तो शायद बच्चे पैदा होकर जब अपनी मांओं से दूध मांगेंगे तो वे भी कह देंगी बेटा दूध तब मिलेगा जब समाजवाद आयेगा। इन्दिराजी कहती हैं समाजवाद केवल चुनावों के वक्त

तेजी से चलता है और वे उसकी चाल देख कर ही जनता से कह देती हैं कि अब पांच सालों में समाजवाद आ जायेगा। पर उनके हरकारे अलग-अलग खबर देते हैं। वित्तमंत्री चव्हाण कहते हैं जिस गति से 'समाजवाद जी' आ रहे हैं अभी उन्हें उस गति से हिन्दुस्तान पहुंचने में वक्त लगेगा। पर घर साहब सूचित करते हैं कि नहीं इस राकेट युग में समाजवाद इतनी देर में नहीं जल्दी ही पहुँचेगा। संसद के पेशेवर, नाराज या राजी होकर यह बात मान लेते हैं। पर बेचारी जनता! उलझ-उलझ कर रह जाती है इस सवाल में, कब आयेगा समाजवाद? *

इंडियन कॉफी हाउस, एम. आई. रोड, जयपुर

हरयाणा सरकार द्वारा चावल के व्यापार में मुनाफाखोरी

○ गिरजावत्त

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सिखलाया जाता है कि कोई भी आदमी इस व्यवस्था में सम्पन्न और पूंजीपति हो सकता है। निर्धन वर्ग इस भ्रम का शिकार होता है। प्रत्येक व्यक्ति पैसे वाला और सम्पन्न बनने के प्रयत्न में पूंजीवाद का समर्थक और दास बन जाता है। पूंजीवाद इस तरह जन साधारण की चेतना को दूषित करता है और उसकी वर्ग चेतना को समाप्त करके उसे व्यक्तिगत अर्थ संचय और सुविधावाद का मोहरा बनाता है। इस पूंजीवादी विचारधारा के परिणाम स्वरूप समाज में आर्थिक एवं सामाजिक महान गैरबराबरी साकार रूप धारण करती है और निरन्तर जीवन-स्तर को ऊँचा करते रहने की व्यक्तिगत इच्छा लोगों में घर करती जाती है। किसी भी मनुष्य को भ्रष्ट एवं बेईमान बनाने के लिए ये स्थितियां पर्याप्त है। अतः जब तक आर्थिक और सामाजिक विषमता बनी हुई है तब तक समाज से भ्रष्टाचार दूर नहीं किया जा सकता है। मनुष्य को किसी भी समाज की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था और परिस्थितियां भ्रष्ट या कर्त्तव्यपरायण बनाती है। अतः परिस्थितियों को बदले बिना नैतिकता सच्चाई और सादगी से भ्रष्टाचार दूर होने की आशा नहीं करनी चाहिए। भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने के लिए सामाजिक और आर्थिक गैरबराबरी को दूर करना अत्यन्त आवश्यक है। तभी मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से रहित समाजवादी समाज की स्थापना की जा सकती है।

वर्तमान सरकार अपने को लोकतांत्रिक समाजवाद के लिए प्रतिबद्ध एवं कृतसंकल्प मानती है। समाजवाद के नाम पर राष्ट्रीयकरण आदि के लिए कदम भी उठाती है, परन्तु आर्थिक एवं सामाजिक गैरबराबरी दूर करने की मूल समाजवादी भावना से अपने को दूर रखती है। ऐसी स्थिति में किसी को भी यह भ्रम हो सकता है कि क्या सरकार समाजवाद के नाम पर पूंजीवाद तो विकसित नहीं कर रही है। आदर्श या सिद्धांत की कसौटी असलियत है और असलियत की कसौटी आदर्श है। इस आधार पर कोई भी व्यक्ति सरकार के वास्तविक स्वरूप को भलीभांति समझ सकता है। वर्तमान सरकार समाजवादी सिद्धांतों की खाल ओढ़ कर पूंजीवादी भेड़िये की भूमिका अदा कर रही है। मार्क्सवादी नेता ज्योतिर्मय बसु ने हरयाणा में चावल की सरकारी खरीद और हरयाणा व महाराष्ट्र में उसकी बिक्री के जो भाव बताये हैं, उससे इस वास्तविकता की भलीभांति पुष्टि होती है।

मार्क्सवादी नेता के अनुसार हरयाणा सरकार ने चावल को ७० रुपये प्रति क्विंटल के भाव से खरीद कर महाराष्ट्र सरकार को १३३.४५ रुपये प्रति क्विंटल के भाव से बेचा। कृषि राज्यमन्त्री शिंदे के अनुसार सब किस्म के चावल की सरकारी खरीद का औसत भाव ६३.२६ रु० प्रति क्विंटल से अधिक नहीं बैठता। बसु के अनुसार हरयाणा सरकार महाराष्ट्र सरकार को यदि ६१.८० रुपये प्रति क्विंटल के भाव पर चावल बेचती तो इसे उचित माना जा सकता था, परन्तु हरयाणा सरकार ने लगभग सौ प्रतिशत मुनाफाखोरी की। महाराष्ट्र सरकार ने १३३.४५ रुपये प्रति क्विंटल के भाव से खरीदे गये चावल को सरकारी दूकानदारों को १४५ रुपये से १७७ रुपये प्रति क्विंटल के भाव पर बेचा। हरयाणा में जो चावल ७० पैसे प्रति किलो खरीदा गया, वह सरकारी दूकान से उपभोक्ता को २.२५ रुपये प्रति किलो बेचा गया। उपभोक्ता को चावल देने में सरकार ने खरीद के मुकाबले बिक्री के भाव २०० प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि कर दी। यह हालत तब है जब देश में सर्वत्र गेहूँ और चावल के व्यापार का सरकारीकरण नहीं किया गया। फिर भी इस उदाहरण से 'सरकारी पूत' के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि उसके पांव पलने में ही नजर आ रहे है।

अनाज के आंशिक थोक व्यापार का सरकारीकरण, भयंकर मुनाफाखोरी और सरकारी पूंजीवाद को ही बढाने में सहायक होगा तथा गरीब जनता को इससे कोई लाभ नहीं होगा, जब तक आर्थिक विकास के साथ सामाजिक न्याय को व्यावहारिक रूप नहीं दिया जाता। समता द्वारा सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए अधिकतम और न्यूनतम की मर्यादा को एक और दस के अनुपात में स्वीकार कर उसे क्रियान्वित नहीं किया जाता। ऐसा करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि तत्काल देश के प्रमुख उद्योगों जूट, कपड़ा, चीनी, छोटी-बड़ी खदानों, लोहा, इस्पात आयात-निर्यात, दवा, चाय, काफी आदि चीजों के उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण प्रशिक्षित व कुशल सही मशीनरी द्वारा किया जाये। कृषि उत्पादित तथा औद्योगिक वस्तुओं के दामों में सन्तुलन स्थापित किया जाय। दैनिक जरूरत की औद्योगिक वस्तुओं के बिक्री के मूल्य, लागत तथा ढुलाई आदि खर्चे के डेढ़ या दो गुने से ज्यादा किसी भी हालत में न हो। इसी तरह अनाज की भी मूल्य नीति स्वीकार होनी चाहिए। दो फसलों के बीच किसान द्वारा अनाज की बिक्री तथा सरकार द्वारा अनाज की बिक्री में, एक किलो अनाज के दाम में १६ या २० प्रतिशत से ज्यादा चढ़ाव-उतार न हो। ऐसा करके ही मूल्य वृद्धि जैसे भयंकर दुश्चक्र से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है और सरकारी पूंजीवाद को पनपने से रोका जा सकता है। *

द्वारा- 'राजधर्म', रोहतक

हमारी कसौटी पर

भारतीय गणतंत्र : वर्ष ७३ (उपलब्धियां) : प्रधान सम्पादक-रमेशकुमार, सौजन्य सम्पादक-डॉ० महेन्द्र मधुप, पता : 'श्रमर ज्योति' सा०, किशोर निवास, त्रिपोलिया, जयपुर।

'कल के भारत में और आज के भारत में फर्क सिर्फ इतना है कि पहले श्रम करने के लिये लोगों को खोजा जाता था और प्रकृति से जूझने का काम लिया जाता था उन्हीं से। लेकिन आज उसे इतना विवश कर दिया गया है कि शहरों और गांवों में, बाजारों में उसे खुद ढूंढने पड़ रहे हैं अपने श्रम के खरीदार, दूसरी बाजारू चीजों की तरह उसके श्रम शारीरिक और मानसिक, के सौदे किये जा रहे हैं। अपने श्रम का मूल्य आंकने वाले खुद नहीं, उसे तो आंकेंगे समाज की दौलत पर पंजा जमाये हुए ४-५ फीसदी लोग। दासता और गुलामी का यह नया रूप ! देश की महानता पर काला धब्बा ! फिर भी हम 'आजाद' हैं। हमारे श्रम की लूट का बाजार गर्म है, फिर भी हम 'आजाद' हैं। रोटी-रोजी के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं, फिर भी हम 'आजाद' हैं। और 'आजादी' की इसी नींव पर नये भारत, आने वाले कल के भारत का महल खड़ा किया जा रहा है। अंग्रेजी जुल्मों को भी शरमा देने वाले जुल्म ढाये जा रहे हैं, हजारों भारत माँ के सपूतों की लाशें ढेर की जा रही हैं, बीसियों हजारों लोग जेल के सींखचों में सड़ाये जा रहे हैं, लेकिन स्थापना हो रही है 'लोकतंत्र' की। विदेशी-देशी लूट का बोलबाला बढ़ता जा रहा है, सारे देश की दौलत सिर्फ ७५ परिवारों के पास कैद होती जा रही है……भूख, मौत और बरबादी के बादल छाए हुए हैं फिर भी देश में 'समाजवाद' आरहा है।'–यह निष्कर्ष है तेज़-तर्रार लोगों द्वारा प्रकाशित इस संग्रहणीय स्मारिका के !

आवरण पृष्ठ पर भूखे आदमी के चारों ओर लाठियां लिए हुए क्रुद्ध भीड़ का चित्र है। धूम्रकेतु ने 'पूंजीवाद के २५ वर्ष' लेख में पूंजीवादी षडयन्त्र को आंकड़ों से स्पष्ट कर आंखें खोल दी है। उनका मत है कि सरकारी नीतियों का दोगलापन, भ्रष्ट बुर्जुआ प्रशासन, जब तक जनता द्वारा प्रताड़ित नहीं होगा, तब तक पूंजीवादी राक्षस जनता का खून पीता रहेगा। इसी शोषण का चित्र 'स्वतंत्रता के २५ वर्ष' (विजय चावला) लेख में और अधिक स्पष्ट होता है।

'भारतीय गाँव' (भागचन्द जैन) लेख २५ वर्षों में भारतीय गाँव की तथाकथित विकास-कथा के अन्तर्विरोध को स्पष्ट करना है। 'कानून किसका है, क्यों है' (हरिशकर गोयल) लेख पढ़कर एक सवाल उठता है कि क्या सचमुच हम लोकतंत्रीय न्याय व्यवस्था से सचालित हैं या अर्द्ध सामन्ती न्यायव्यवस्था ने अपना नया नाम रख लिया है ?

'हिन्दी साहित्य के पच्चीस वर्ष' (जुगमन्दिर तायल) तथा 'पच्चीस वर्षों से पिछड़ता मुस्लिम समाज' (महरउद्दीन खान) लेख, देश के बुद्धिजीवी को सही दिशा में सोचने के लिए झकझोर देते हैं। ओम सैनी ने 'जन्नत' नाम से लंबी कविता में कश्मीर की वादियों में फैले दर्द और उदासी के रंग को, पाठक के दिल पर और अधिक गहरा कर दिया है। यह दर्द की जनवादी आवाज, इसे कश्मीर पर लिखी गिनीचुनी कविताओं में से एक बना देती है।

स्वतंत्रताकालीन भारत को समझने के लिए यह स्मारिका पढ़ना आवश्यक है। —**सुभाष नाहर**

द्वारा-हिन्दुस्तान ट्रांसमिशन प्राडक्ट्स, साकी विहार रोड, चांदीवली, साकीनाका, बम्बई–७२

(पृष्ठ ४ का शेषांश)

अट्टालिकाओं को खड़ा करने के लिए, नगरों की ओर भाग रही है। गंवई स्कूल का लड़का शहर के कॉलेज में पढ़कर 'हीरो' बन गया है। ऊंची धोती बांधने वाले का बेटा शहरी वातावरण में रहकर कुंठित हो गया है, उसकी शक्ति दादागीरी में खत्म होती है या हीन भावना में। गांव आता है तो वह छींट के बुशर्ट में, बेल बाटम में और नवीनतम फिल्मों के गानों के द्वारा किसान बालाओं को रिझाने पर तुल जाता है, यह परिवर्तन कोई आशा की झलक नहीं है अपितु पूंजीवाद की तीखी, मलिन दंत-श्रेणी का प्रदर्शन है। क्योंकि कृषक वर्ग की यह नई पीढ़ी खेत को छोड़ कर पूंजीपति की नौकरी में आयेगी या सड़कों पर ठोकरें खाएगी। **गाँव की पैदावार शहर में कम कीमतों में बिकती है और यही पैदावार शहर से गाँव में वापस आकर गाँव वालों को डेढे या दुगुने दामों पर बेच दी जाती है।**

हमारे देश की ग्रामीण जनता पिछले २५ वर्षों में केवल चुनाव के दौरान ही जागृत होती है। तभी उसे दलों के कर्ता, स्थानीय या प्रांतीय स्तर के नेताओं के ईश्वरीय रूप की झांकी मिलती है और उससे वह अपने को बड़ा आदमी समझने की भूल करती है। इसी के फलस्वरूप पंचायती राज वेश्यालयों के अड्डों के समान बन गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में धीरे-धीरे राजनैतिक दलों एवं नेताओं के प्रति आस्था खत्म होती जा रही है, परन्तु अब भी सरकार के तथाकथित समाजवादी नारे का भ्रम जाल उसे घेरे हुए है। यों तो पढ़ा लिखा किसान युवक भी शहर से आकर चौपाल में नेतागीरी करता है। राजनीति ने भूखों की राजनीति का फायदा वोट पकाने में उठाया है।

गाँवों में शहरीपन बढा है और उसका कारण गाँव के किसान का रोजी-रोटी की तलाश में शहर को भागना है, और जब वह गाँव को आता है तो भौंडे तरीके से शहरी सभ्यता का प्रदर्शन करता है। यदि इसे ही ग्रामीण समाज की समृद्धि का परिचायक मान लिया जाए तो देश समृद्ध हो गया है, पर क्या यह कहना जहर का घूंट पीने के बराबर नहीं है ? *

राजस्थान बैंक, अलवर

सम्पादक के नाम पत्र

विभिन्न धर्मावलम्बियों में समन्वय करें

मेरे मस्तिष्क में बार-बार एक प्रश्न उठता रहता है। वह प्रश्न यही है कि क्या समस्त धर्मावलम्बी जो अनेकों मत मतान्तरों को मानने वाले हैं, आर्यसभा के सार्वभौम सिद्धान्तों को अपनायेंगे? आज सभी के दिमाग में 'आर्य' शब्द एक साम्प्रदायिक तथा जातिवाचक शब्द बन गया है। यह हुआ है हमारी त्रुटियों से ही। क्योंकि अन्य मत मतान्तरों पर तीक्ष्ण शब्दों द्वारा वज्रपात किया गया है। आपस में समन्वयात्मक प्रयत्न का हमेशा अभाव रहा है। अब आर्य सभा को यही प्रयत्न करना उचित है कि वह समस्त धर्मावलम्बियों को अपने पास बैठाए, उन्हें अपने गले से लगाये और आपस में एक जगह बैठकर समस्त मतों से श्रेष्ठ सिद्धान्तों को इकट्ठा कर उसी को एक सार्वभौम धर्म के रूप में मान्यता प्रदान करे। आर्यसभा यह घोषणा करे कि आर्य सभा अन्य मतावलम्बियों के श्रेष्ठ सिद्धान्तों को ग्रहण करना चाहती है बशर्ते कि सब मिलकर एक निश्चित सत्य सनातन सिद्धान्त का निर्णय करें और उसे कार्य रूप में परिणित करें। इस प्रकार के प्रयत्न से आर्यसभा सभी धर्मावलम्बियों के दिलों में सौहार्दता का मुख्य स्थान प्राप्त कर सकेगी।

—जयसिंह 'मुमुक्षु', राजहंस आरोग्य मन्दिर, बाजपुर (नैनीताल)

धन्य तेरा इन्साफ देवी

सत्यानाश कर दिया उन सड़ियल दिमागों ने, जिन्होंने संविधान में ऐसी धारा लिख दी, जिनके अन्तर्गत एक निर्दोष भी अपना एक दुश्मन व दो झूठे गवाह अपने विरुद्ध बनाकर अदालत में दोषी बन जाता है वह चाहे जितना जुर्माना व सजा भोग सकता है, परन्तु एक ऐसा व्यक्ति जिसने गरीब जनता का खून चूस कर करोड़ों रुपये का गबन, शिक्षा जैसी अनिवार्य वस्तु का हनन व जनता में भ्रष्टाचार का बीज बोया हो और जिसके विरुद्ध १०० से अधिक ससद सदस्यों व अनेक ऐसे व्यक्तियों ने जिनका जनता पर प्रभाव है राष्ट्रपति तक शिकायत की हो और वह व्यक्ति (बन्सीलाल) केवल इन्दिरा के कहने से दोषी नहीं। अफसोस ही नहीं आश्चर्य भी है।

—धर्मवीरसिंह आर्य, प्रचार मन्त्री, आर्य सभा, झज्जर

मार्च प्रथमांक : प्रतिक्रियाएँ

'राजधर्म' की क्रांतिकारी सामग्री का हम 'पीपुल्स पावर' की ओर से स्वागत करते हैं। हरयाणा और केन्द्र सरकार की ओर से अध्यापकों और श्रमजीवी वर्गों पर जो दमन-चक्र चलाया जा रहा है, हम उसकी कड़ी भर्त्सना करते हैं। इस सिलसिले में स्वामी अग्निवेश और अन्य व्यक्तियों की गिरफ्तारियों की हम कठोर शब्दों में निन्दा करते हैं। व्यवस्था और शासन के खिलाफ, आपका संघर्ष सराहनीय है। 'पीपुल्स पावर' की बधाई स्वीकार करें।

—जगदम्बाप्रसाद दीक्षित, सम्पादक, 'पीपुल्स पावर', यूनिटी कम्पाउन्ड, जुहू, बम्बई- ५४

मुखपृष्ठ पर 'गरीब हटाओ बजट' वाला चित्र हृदयस्पर्शी है। सम्पादकीय आँखें खोलने वाला है। दोनों ऐतिहासिक लेख तथा अन्य सामग्री उत्कृष्ट है। निःसन्देह राजधर्म क्या है, यह 'राजधर्म' सिखाता है, मगर पाखण्डी सीखना नहीं चाहते। 'राजधर्म' सत्य का दर्पण है, जिसमें इन सत्ताधारियों को अपनी काली करतुतों की परछाइयां देखने को मिलती हैं। शोषण और अन्धी सत्ता के नशे को चूर करने में निःसन्देह 'राजधर्म' अग्रणी है।

—राजधरणी सागर, १५ महेश नगर, अम्बाला छावनी

हर लेख उत्तेजनापूर्ण है। आवरण पृष्ठ पर 'गरीब हटाओ बजट' चित्र से सरकार के असली रूप का पर्दाफाश होता है। मुझे आशा है कि और अधिक तीखी रचनायें भविष्य में प्रकाशित होंगी।

—कृपानाथ, नासरीगंज, दीघा, पटना-१२

'राजधर्म' पढ़ा, तो वर्तमान पापी सरकार का घृणित रूप सहन न हो पाया। महर्षि दयानन्द के विचारों का पता आपकी वाणी एवं 'राजधर्म' के अध्ययन से ही सुस्पष्ट समझ में आया। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस दुष्ट सरकार का शीघ्र पतन हो।

—स्वामी ब्रह्मानन्द, द्वारा : विजेन्द्रसिंह, बे० प्राइ० स्कूल, धनारी (बदायूं)

आवरण पृष्ठ पर दो बच्चों की फोटो हृदय में गरीबी के प्रति वेदना पैदा करती है। रामसिंह बघेले का लेख 'वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली' बहुत पसन्द आया।

—ओमसिंह दूहण गांव व डाक फूड़ी, जिला मेरठ

सूचना

मैं श्री कृशन सुपुत्र श्री जोगीराम गाँव कृष्णगढ़ जिला रोहतक का यह ऐलान करता हूं कि मेरा सज्जनसिंह सुपुत्र श्री जोगीराम गांव कृष्णगढ़ जिला रोहतक से कोई भी कानूनी या गैर कानूनी सम्बन्ध नहीं है।

श्री कृशन
गाँव व पो० ऑ० कृष्णगढ़,
जिला रोहतक

समाचार दर्शन

स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश रिहा

रोहतक। आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश और महामंत्री स्वामी अग्निवेश को, अध्यापक आन्दोलन की समाप्ति के उपरान्त, गत १६ मार्च को जेल से रिहा कर दिया गया। ज्ञातव्य रहे कि दोनों क्रमशः १७ व १६ फरवरी को अध्यापक आन्दोलन को आर्य सभा के माध्यम से सक्रिय सहयोग देने के कारण गिरफ्तार किये गये थे।

आर्य सभा कार्यालय में देश भर के आर्य सभाओं, आर्य समाजों, बुद्धिजीवियों और नेताओं की ओर से, सैंकड़ों की संख्या में तार व पत्र प्राप्त हुए, जिनमें हरयाणा सरकार के इस अलोकतंत्रीय कदम की आलोचना करते हुए धमकी दी गयी कि आर्य सभा के शीर्षस्थ नेताओं और कार्यकर्त्ताओं को शीघ्र रिहा नहीं किया गया, तो देशव्यापी आन्दोलन आरम्भ हो जायेगा।

आर्य सभा और 'राजधर्म' के लिये यह संभव नहीं कि सभी को व्यक्तिगत रूप से आभार व्यक्त कर सके। अतः हम अपने सभी शुभचिंतकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाते हैं कि शोषण मुक्त आर्य राष्ट्र के निर्माण के लिए रक्त की अन्तिम बूंद तक संघर्ष करते रहेंगे।

स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश का दिल्ली में अभिनन्दन

नई दिल्ली, २७ मार्च। आर्य सभा के महासचिव स्वामी अग्निवेश ने देश में वास्तविक समाजवाद की स्थापना के लिए समस्त व्यक्तिगत संपत्ति तथा उत्पादन के साधनों के राष्ट्रीयकरण पर बल दिया है।

स्वामी अग्निवेश ट्रेड यूनियन नेता डी.डी. सिंह की आध्यक्षता में सम्पन्न एक अभिनन्दन समारोह में बोल रहे थे। यह समारोह दिल्ली की एक दर्जन संस्थाओं द्वारा दोनों आर्य नेताओं के, हरयाणा अध्यापक आन्दोलन के उपरान्त जेल से रिहा होने पर आयोजित किया गया था। स्वामी इन्द्रवेश अस्वस्थता के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। अभिनन्दन करने वाली संस्थाओं में अ० भा० क्रांतिकारी युवा संघ, क्रांतिकारी युवाजन समिति (शक्ति नगर), जनवादी लेखक संघ, टैक्सटाइल मजदूर यूनियन, होटल एण्ड रैस्टोरेन्ट वर्कर्स यूनियन तथा चांदनी चौक प्रगतिशील सभा आदि के नाम मुख्य हैं।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने दृढ़ स्वर में कहा कि समाजवादी व्यवस्था का आधार वैदेशिक न हो कर भारतीय होना चाहिए।

नवभारत टाइम्स के समाचार सम्पादक हरिदत्त शर्मा ने स्वामी जी का स्वागत करते हुए इस बात से सहमति व्यक्त की कि हमें किसी भी देश की अंधी नकल से बचना चाहिए, परन्तु अन्य देशों के बुनियादी परिवर्तनों से सबक लेकर, उन्हें आधुनिक भारतीय परिवेश के अनुरूप बना कर ग्रहण करना चाहिए।

युवा पत्रकार रामशरण जोशी ने भी अपने पूर्व वक्ताओं से सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि सर्वहारा क्रांति में आस्थावान युवकों को चाहिए कि वे भारत की आँखों से देखें।

अध्यक्षीय भाषण में श्रमिक नेता डी.डी. सिंह ने कहा कि क्रांति के लिए यह आवश्यक है कि हम सही पार्टी व सही नेतृत्व को जन्म दें। उन्होंने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि अब तक वामपंथी दलों ने श्रमिकों को राजनीतिक चेतना से दूर रख कर अर्थवाद में उलझाये रखा है। इस अवसर पर युवा कवि श्याम शर्मा की नवीन जनवादी कविता का पाठ हुआ।

किसान को गेहूं का उचित मूल्य दिया जाये

आर्य सभा प्रचण्ड आन्दोलन करेगी

रोहतक, २६ मार्च। आर्य सभा, हरयाणा की कार्य समिति की २५-२६ मार्च को सोनीपत में हुई बैठक में एक प्रस्ताव पारित कर आर्य सभा ने हरयाणा के राजकीय अध्यापकों के प्रजातांत्रिक व न्यायोचित संघर्ष के लिये मास्टर सोहनलाल के नेतृत्व को बधाई दी। प्रस्ताव में अध्यापकों द्वारा ३२ दिवसीय संघर्ष में शांति बनाये रखने की प्रशंसा करते हुए, सरकार को चेतावनी दी गई कि वह ऐसा कार्य न करे जिससे पुनः अध्यापकों व सरकार के मध्य तनावपूर्ण वातावरण बने और हरयाणा के बालकों की शिक्षा पर कुप्रभाव पड़े। प्रस्ताव में आशा व्यक्त की गयी है कि हरयाणा सरकार अध्यापकों की मांगें स्वीकार करने की शीघ्र घोषणा करेगी।

एक अन्य प्रस्ताव में कार्य समिति ने किसानों के साथ सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये की कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए कहा कि किसान से गेहूं खरीदने के लिये सरकार ने इस वर्ष ७६ रु. क्विंटल का भाव निर्धारित किया है। यह भाव पिछले चार वर्ष से चला आ रहा हैं, जबकि खाद, बीज, बिजली, पानी आदि के दाम इस अवधि में डेढ़ गुने से दो गुने के मध्य बढ़े हैं।

प्रस्ताव में आरोप लगाया गया है कि वर्तमान नीति के कारण ६० प्रतिशत किसान कर्जदार हो चुका है।

अतः आर्य सभा की कार्य समिति ने निर्णय लिया है कि किसान को गेहूं का भाव ११२ रु क्विंटल मिलना चाहिये और सरकार को ७८ रु. क्विंटल के भाव से जनता को वितरित करना चाहिये।

आर्य सभा ने प्रस्ताव में कहा है कि इस कार्यक्रम को लागू कराने के लिये वह सारे हरयाणा में विशाल सम्मेलनों का आयोजन करेगी तथा शीघ्र ही सभी किसान-मजदूर संगठनों तथा राजनैतिक दलों के नेताओं की संघर्ष समिति की घोषणा करेगी।

आर्य सभा के प्रवक्ता ने बताया कि अगले पन्द्रह दिन में इस हेतु पचास हजार स्वयंसेवकों को भरती कर प्रचण्ड आंदोलन का सूत्रपात किया जायेगा। अतः उसने हरयाणा के किसानों से अपील की है कि वह अपने गेहूं को ११० क्विंटल से कम न बेचे।

जीन्द में किसान को अधिक मूल्य देने के लिये विशाल सम्मेलन

जीन्द, २८ मार्च। जिला किसान सभा द्वारा यहां किसानों को अनाज का उचित लागत मूल्य दिलवाने के लिये विशाल सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मांग की गयी किसान को ७६ रु. के स्थान पर १२५ रु. प्रति क्विंटल गेहूं का मूल्य दिया जायेगा।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि किसान यूनियन द्वारा अनाज की भाव वृद्धि से सम्बन्धित वर्तमान आन्दोलन का, अनाज व्यापार के सरकारीकरण से कोई विरोध नहीं है।

आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश ने किसानों का आह्वान किया कि यदि सरकार अनाज का मूल्य नहीं बढाये, तो वे सरकारी एजेंसियों को अनाज बेचने से इंकार कर दें।

चौ गंगाराम का छः दिवसीय अनशन समाप्त : व्यापक जन समर्थन

गोहाना, २६ मार्च। हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक चौ. गंगाराम ने, अपना ६ दिवसीय अनशन स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश की उपस्थिति में समाप्त कर दिया। वे श्रमिक महिला फूलकौर पर पुलिस द्वारा किये गये पाशविक अत्याचार के विरुद्ध भूख हड़ताल पर थे। श्रीमती फूलकौर भी २१ मार्च से भूख हड़ताल पर थीं।

इससे पूर्व किसानों और मजदूरों ने गोहाना की सड़कों पर विशाल प्रदर्शन करने के उपरान्त, अनाज मंडी में सभा आयोजित की। सभा को आर्य सभा नेताओं ने सम्बोधित किया। प्रदर्शन–कारियों ने गोहाना एस.डी.एम. को मैमोरेण्डम देकर अपराधी पुलिस कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त कदम उठाने की मांग की गयी। इन कर्मचारियों के पुतले जुलूस के रूप में पुलिस थाने के सामने ले जा कर जलाये गये।

चुनाव समाचार

आर्य सभा, पौली (जींद)

प्रधान- चतरसिंह, उप प्रधान- बिरखाराम, मन्त्री- चौ. हवासिंह, कोषाध्यक्ष- फतेहसिंह।

आर्य सभा, जिला मेरठ

संयोजक- वेदानन्द आर्य (औरंगाबाद), प्रधान- डॉ० जगतसिंह आर्य (जलालाबाद), उप प्रधान- आर्यदेवी (गाजियाबाद), मंत्री- रामपाल आर्य (हापुड़), उपमंत्री- पं करणसिंह आर्य (गोरा आलमगीरपुर) तथा प्रमिलाकुमारी (पिलखुवा), कोषाध्यक्ष- पदमसेन गोयल (सकौती), निरीक्षक–ब्रह्मसिंह आर्य (छपरौली), कार्यकारिणी सदस्य-रामसिंह आर्य (मोदीनगर), लक्ष्मीनारायण आर्य (मोदीनगर) तथा जगदीश आर्य (हापुड़)।

पंजाब पुलिस के कुकृत्यों की घोर निन्दा

फिलौर। पिछले दिनों फिलौर में पंजाब पुलिस के कर्मचारियों द्वारा जो अत्यन्त निन्दनीय एवं लज्जाजनक कुकृत्य किया गया है, आर्य सभा होशियारपुर ने उसकी घोर निन्दा की है। पंजाब सरकार की उच्छृंखलता का नग्न नृत्य फिलौर में हुआ है। लोकतंत्र के नाम पर स्त्री जाति का अपमान किया गया है। इस सभा के विचार में इस सारे कुकृत्य का उत्तरदायित्व पंजाब सरकार पर है, जिसके शासन में पंजाब पुलिस कार्य करती है। सभा ने मांग की है कि अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जावे जिससे अन्य पुलिस कर्मचारियों को सबक मिले और पुन : कोई इस प्रकार के मानवीय एवं निन्दनीय कार्य के लिके उत्साहित न हो।

पाखंड विरोधी जन मोर्चे की स्थापना

नयी दिल्ली। यहां पर प्रगतिशील साहित्यकारों, चिंतकों, पत्रकारों, राजनीतिक कर्मियों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने पाखंड विरोधी जन मोर्चे की स्थापना की। इसका उदघाटन विख्यात उपन्यासकार और चिंतक जेनेन्द्र कुमार ने करते हुए कहा कि मैं पाखंड-विरोधी अभियान में स्वयंसेवक के रूप में काम करने को तैयार हूँ। मन्मथनाथ गुप्त, लक्ष्मीनारायण लाल, हरिदत्त शर्मा, शिवचरण गुप्त, ब्रजमोहन, मास्टर नुरुद्दीन, हरस्वरूप शर्मा आदि अनेक वक्ताओं ने कहा कि व्यवस्थापक वर्ग बुनियादी परिवर्तनों से बचने के लिए पाखंड, ढोंग, अंधविश्वास और गुरुडम को बढ़ावा दे रहा है। उसकी इस हरकत का पर्दाफाश करके जनता को प्रबुद्ध बनाया जाना चाहिए। हर नगर कस्बे और ग्राम में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कुप्रवृत्तियों के विरुद्ध आन्दोलन चलाने ही चाहिये।

इस अवसर पर टाइम्स आफ इण्डिया के मैनेजर श्री रमेशचन्द्र का अभिनन्दन किया गया। उन्होंने साहस पूर्वक पाखंड का मुकाबला करने पर जोर दिया।

ओ३म्

आर्य युवकों का

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी में

१० जून से १८ जून तक

१ क्या आपकी आयु १६ वर्ष से अधिक और शैक्षणिक योग्यता कम से कम मैट्रिक है ?

२ क्या आपके हृदय में अपने देश के लिए प्यार, आपकी धमनियों में शहीदों का खून और आपके मन में ब्रह्मचर्य की प्रेरणा जागृत हो चुकी है ?

३ क्या आप अपनी जून की छुट्टियों में समय व्यर्थ गंवाने के बदले लगातार १० दिन तक उच्चकोटि के व्यामाचार्यों से आसन, व्यायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, मलखम्भ आदि का प्रशिक्षण लेकर शारीरिक रूप से बलवान बनने का और देश के प्रसिद्ध विद्वानों से ब्रह्मचर्य, राष्ट्रीयता, जीवन का उद्देश्य, नेतृत्व कला, भाषा कला आदि विषयों पर बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त कर मानसिक विकास करना चाहेंगे ?

शिविर में आपको:—

१ शिविर गणवेश (खाकी हाफपैन्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद कपड़े के जूते) कापी पैन्सिल तथा अपने कद की मजबूत लाठी लानी होगी।

२ दस दिन के खाने पीने, बिजली आदि का पूरा खर्च केवल १० रुपया अग्रिम जमा कराना होगा तथा अपने साथ सुविधानुसार किलो आध किलो घी लाना होगा।

३ आपको रविवार १० जून को सायं ५ बजे तक आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी में निश्चित रूप से पहुँच जाना पडेगा और १८ जून को प्रातः शिविर समाप्ति तक शिविराध्यक्ष के पूर्ण अनुशासन में रहना होगा।

आप सारे ही अवसर की तलाश में थे। उसे हाथ से न जाने दें। अपनी स्वीकृति अथवा विशेष जानकारी के लिए अविलम्ब सम्पर्क करें।

नोटः— (१) दादरी हरयाणा प्रान्त में रोहतक से नारनौल जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित है।

(२) दिल्ली से होकर आने वाले दिल्ली से रिवाड़ी होकर हिसार जाने वाली रेलगाड़ी से आ सकते हैं।

रामधारी शास्त्री

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्,

झज्जर रोड, रोहतक।

आवेदन पत्र

मैं शिविर में भाग लेना चाहता हूँ————————————

मेरा नाम———————————— आयु————————

पता———————————— कक्षा/शिक्षा————————

शिविर शुल्क के रूप में १० रुपया भेज रहा हूँ, जमा कर लें।

हस्ताक्षर

पंजीयन क्रमांक पी. ५५५
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म

१२ अप्रैल १९७३

मुझे ठीक वक्त पर दोबारा जन्म दिया

० हरिपाल त्यागी

...ब रोशनियों से होकर आती
स्वर्णिम आभाओं को
तुम पकड़ नहीं सकते
खोजते रहोगे कारखानों के
धुएं में।
तैरता हुआ दाढ़ी और
लम्बे बालों वाला चेहरा
खोज और झूठे शब्द वाक्य
तुम्हारी परिणति हो सकते हैं
मेरी नहीं।
मैं अपनी दसों उंगलियां
काट कर
गिरती दीवारों में ठोक दूंगा,
खूंटियों की तरह
कि वह किसी मजदूर की
लाल कमीज को सहारा दें,
कालर पर जमे
पसीने और मैल का स्पर्श करें,
...ंगलियां महसूस करें
...रे देश की मिट्टी की
...रिभाषा।
पश्चिम से आने वाली
हवाओं ने बदल दी हैं
उंगलियां अब तक,
कोई भी हथौड़ा या चाकू
पकड़ने में असमर्थ हैं।
अब तक किताबों और वाक्यों
से मिटते रहे प्यार और खूबसूरती
जैसे अस्वीकारे गये
शब्द!
तुम्हारे दरबार में खड़ा होकर मैं
यह घोषणा करूंगा—
तुम लोगों ने मेरी संवेदनशीलता को
धोखा दिया है
कि औरतों को बाजार में रक्खी
चट्टान बनाया है,

जिसका गर्भाशय जिस्म से
बाहर
सड़क पर फैला है।
दरबार में खड़ा होकर, मैं,
यह भी कहूंगा
तुमने मेरी जुबान में सुइयां,
चुभो चुभो कर
झूठ को
सच की तरह उगलवाया है।
मैं याद करता हूं वह दिन
जब तुमने सोने की सलाई को
शहद में डुबो कर
मेरी जुबान पर लिखा था
'हरि ओ३म्'!
पश्चिम से आने वाली हवाओं ने
मेरे देश की परिभाषा बदल दी
तुमने अपना नामोनिशान बदल कर
आंखे मूंद ली।
तुम्हारी आँखो में तैरता रहा,
झूठा हरा रंग,
हरी रोशनी फेंक कर
बंजर, चट्टानों को नाम दिया
हरित-क्रांति।
यह भ्रम-पूर्ण नाटक मेरी आंखों ने
तुम्हारे मंच पर आने से
पहिले भी देखा था।
देवी थी एक औरत
जिसका गर्भाशय सड़क पर
और खून मेरी आँखों में
फैला था।
मैं दरबार में खड़ा होकर
यह सब कहूंगा—
तुमने मेरे पैदा होने से पहले ही
मेरा दिमाग और जिस्म
लिख दिया था।
पश्चिम से आने वाली हवाओं के नाम

तुमने कभी चट्टानों को तोड़ते
मजदूरों की बात नहीं बताई,
तुमने जब कहानी सुनाई
बाग में फूल चुनती,
राजकुमारी की कहानी सुनाई।
मैं यह कहूंगा
तुम्हारे ही सामने
तुम अकेली नहीं हो
और मुझे नहीं चाहिये
तुम जैसी माँ या औरत,
मुझे चाहिये एक औरत
जो जन्म दे, हथियार और गोले!
तुमने नारों में उछाल कर
शब्दों के प्रभाव को
अपने नाम के साथ जोड़ा था।
भीड़ पर छुड़वा कर
अश्रु गैस
रोने को सामूहिक रूप से
मशीनीकरण का नाम दिया था,
कि तुमने अपनी सुविधा के लिये
हर सच को, मुस्कराहट पहनाई थी।
अब कुत्ते बिल्लियों और केमरामैनों से प्यार,
तुम्हारी आदत नहीं स्वभाव बन गया है।
मैं यह अच्छी तरह जान गया हूं
मैं तुम्हारा ही नहीं किसी भी
ऐसी औरत का पुत्र नहीं हो सकता,
सच तो सिर्फ यह है
कि तुमने मुझे जन्म नहीं दिया
तुमने जाना भी नहीं प्रसव पीड़ा और
पीड़ा क्या अर्थ रखती है।
इसी पीड़ा और संघर्ष ने
मुझे ठीक वक्त पर
दोबारा जन्म दिया
कि पश्चिम से आने वाली हवाओं का
मुझ पर असर नहीं हुआ। *

त्रिवेणी कला संगम, २०५ तानसेन मार्ग, दिल्ली

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, झज्जर रोड, रोहतक से स्वामी ओमानन्द द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। दूरभाष : ६६२

ओ३म्



स्वामी दयानन्द



स्वामी अग्निवेश-बिजली कर्मचारियों के साथ अन्याय का भण्डाफोड़ ।

राहुल सांकृत्यायन-पाखण्डियों के धर्म का क्षय हो ।

जयदेव शर्मा-जनता आस्तीन के सांपों से सावधान रहे ।

रामशरण जोशी- लम्बे नाटक की अंतिम किस्तः 'ये बस्ती ये लोग' ।

रामसिंह बघेले-क्रान्तिकारी शहीद रोशनलाल मेहरा ।

अरविन्द 'आंसू'-अध्यापकों व छात्रों से साक्षात्कारः 'निजी महाविद्यालयों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये' ।

ओम सैनी-कैदियों का राष्ट्रगीत ।

हरिप्रकाश त्यागी-कला को आम जनता से सम्बद्ध रहना ।

'समाचार दर्शन' में 'अमृतसर क्रान्तिकारी सम्मेलन' की विशेष रिपोर्ट ।

अन्य सभी स्तम्भ ।

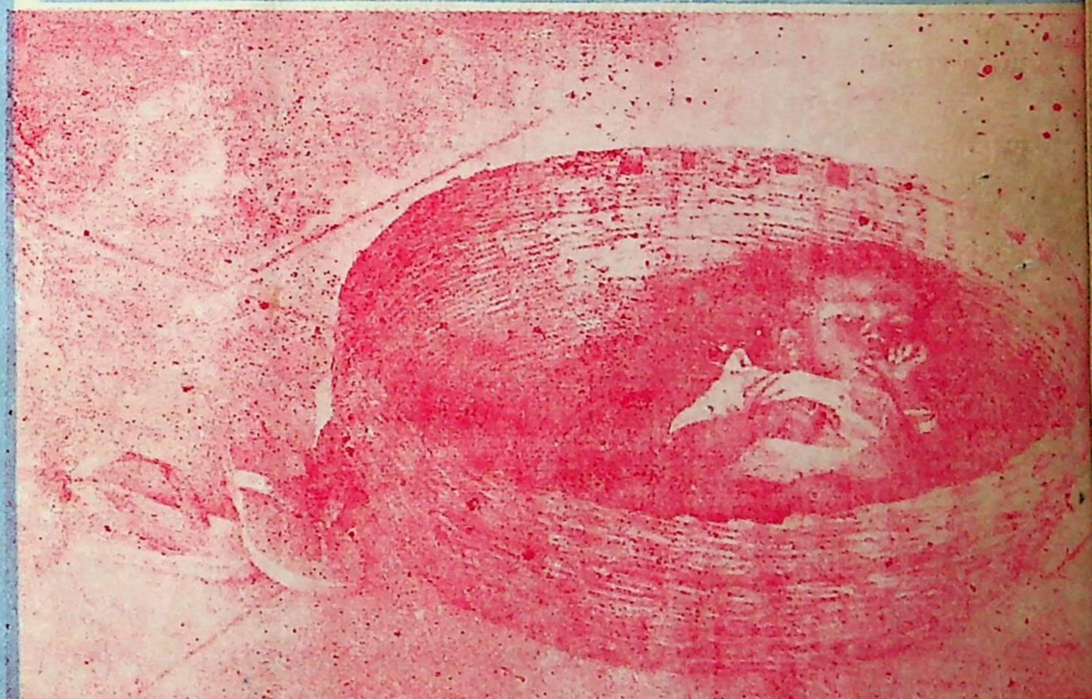
पाक्षिक

राजधर्म

वर्ष ५ अंक ९
१२ मई १९७१

सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : डॉ० महेन्द्र मधुप

वार्षिक १०
एक प्रति ५०





आम आदमी से कटी मौलिक अधिकारों पर ब

किसान को उचित मूल्य दो

आज जब हरयाणा का गरीब किसान संगठित होकर अपने खून पसीने की कमाई—गेहूं की फसल के लिये लागत पर आधारित उचित मूल्य की मांग का आंदोलन चला रहा है तो हरयाणा सरकार अपनी पुलिस और फौज की पूरी ताकत के साथ उसे कुचलने का प्रयास कर रही है। एक शांतिपूर्वक संवैधानिक ढंग से आरंभ होने वाले जन आंदोलन को विफल करने के लिये इस आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं को चुन-चुन कर जेल में बंद कर रही है। यहां तक कि देश की प्रधानमंत्री भी किसान की मांगों के औचित्य को स्वीकारे बगैर यह वक्तव्य बार-बार दे रही है कि यदि किसान सरकार को अपना गेहूँ नहीं बेचेंगे तो हम विदेशों से गेहूँ मंगायेंगे।

कुछ अन्य कांग्रेसी नेता किसान आंदोलन को बदनाम करने के लिये यह कह रहे हैं कि यह आंदोलन मंडी के व्यापारियों की चाल है जो गेहूं के थोक व्यापार के राष्ट्रीयकरण की योजना को विफल किया जा सके। मैं हरयाणा किसान संघर्ष समिति की ओर से यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि हरयाणा के किसानों का मंडी के राष्ट्रीयकरण को विफल करने का कोई इरादा नहीं है। सरकारी वसूली का काम इस विभाग को भ्रष्टाचार से मुक्त करके किसान को लाभ पहुँचाने की दृष्टि से किया जाय। पर सवाल केवल बिचौलियों को खत्म करने का ही नहीं है, वरन् उत्पादक को उचित मूल्य दिलाने का भी है।

नेताओं से प्रार्थना है कि वे किसान को धमकी देने, उसे बदनाम करने तथा उसके न्यायपूर्ण आंदोलन को कुचलने के बजाय ठंडे दिमाग से यह फैसला करें कि किसान को गेहूं के उत्पादन व्यय के आधार पर कितना मूल्य मिलना चाहिये।

गेहूं उत्पादन की लागत निकालने की दिशा में पूसा संस्थान दिल्ली, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश, हिसार कृषि विश्वविद्यालय हरयाणा और लुधियाना कृषि विश्वविद्यालय आदि ने जो स्तुत्य प्रयास किये हैं, उन्हें आधार मान कर गेहूं का मूल्य निश्चित किया जा सकता है। इन संस्थाओं में किये व्यापक परीक्षण के अनुसार एक एकड़ उपजाऊ जमीन में सभी परिस्थितियां अनुकूल हों तो १६ क्विटल (लगभग ४० मन) गेहूं पैदा हो सकता है और उसका कम से कम व्यय निम्न तालिका के अनुसार लगाया जा सकता है— जुताई (चार बार) ६० रु०, सिंचाई (पांच बार) २०० रु०, उर्वरक २२५ रु०, बीज ११५ रु०, कटाई ५२ रु०, गहाई ५५ रु०, खर पतवार छंटाई २५ रु०, निराई व गुड़ाई २५ रु०, भूमि व श्रम के रूप में पूंजी ८०० रु० आकस्मिक मजदूरी ५५ रु०, रखवाली ५० रु०, कीट नाशक छिड़काई व हानि ६० रु०, बाजार व परिवहन व्यय ३० रु०, कुल लागत १७९२ रु०। इस तरह कुल मिलाकर १७९२ रु० में १६ क्विटल गेहूं के उत्पादन व्यय के हिसाब से एक क्विटल की कीमत ११२ रु० पड़ती है। यदि किसान का गेहूं इसी लागत मूल्य पर ही खरीदा जाय तो उसे केवल भूसा लाभ के रूप मे बच रहता है।

अब यदि सरकार किसान को यह लागत मूल्य भी देने से इन्कार करती है तो किस आधार पर? ७६ रु० क्विटल का भाव सरकार द्वारा नियुक्त जिस कृषि मूल्य समिति ने निर्धारित किया है उस में दुर्भाग्य से एक भी किसान नहीं है। और फिर यह भाव आज से ६ साल पहले एक 'सपोर्ट प्राइस' के रूप में लागू किया गया था। उस समय सरकार की ओर से यह दलील थी कि ७६ रु० का भाव तो हमने कम से कम निश्चित किया है और किसान चाहे तो अपना अनाज व्यापारी को अधिक मूल्य पर बेच सकता है। अब अनाज व्यापार के राष्ट्रीयकरण के बाद १९६८ का वह 'सपोर्ट प्राइस' ही किसान के लिए एकमात्र वास्तविक मूल्य रह गया है। यदि एक सेकन्ड के लिए यह मान भी लिया जाय कि दिल्ली के एयरकंडीशन्ड भवनों में बैठकर, गेहूं का पेड़ होता है या पौधा तक न जानने वाले चन्द विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित ७६ रु० क्विटल का भाव सही माने में लागत पर आधारित है तो इस बात का क्या औचित्य है कि जो भाव सन् १९६८ में था वही भाव सन् ७३ में भी रहना चाहिये? क्या इन पिछले पांच छः वर्षों में किसान के काम आने वाले लोहे, सीमेन्ट, बीज खाद, कपड़े, चीनी और तेल का भाव स्थिर रहा? क्या रेल और बस के किराये से लेकर बिजली तक के रेट नहीं बढ़े? क्या इसी साल हरयाणा सरकार ने लगभग ५ करोड़ रुपये के नये करों का भार किसानों पर नहीं लादा है।

यदि इन पिछले पांच छः वर्षों की महंगाई की दर सरकारी आंकड़ों के अनुसार कम से कम ४० प्रतिशत भी लगा लें और और उसी अनुपात से गेहूं के उत्पादन व्यय में भी ४० प्रतिशत की वृद्धि करें तो भी कम से कम १०८ रु० क्विटल का भाव होना चाहिये।

जहां तक सवाल है किसान के गेहूं की मूल्य वृद्धि के कारण मजदूरों को होने वाली कठिनाई का—तो उसका समाधान (शेषांश आवरण पृष्ठ ३ पर)



आम आदमी से कटी मौलिक अधिकारों पर बहस

आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम की धारा १७ क को अवैध घोषित कर, सर्वोच्च न्यायालय ने जन स्वाधीनता के मौलिक अधिकार का समर्थन किया, वहां ६ के विरुद्ध ७ मतों से उसने संसद को मौलिक अधिकारों में कटौती का अधिकार देकर एक लम्बी बहस खड़ी कर दी। २४ अप्रैल को 'सामाजिक दृष्टिकोण, प्रगतिशील रुख और सामाजिक आर्थिक प्रश्नों की समझ व अनुभव' को ध्यान में रख कर, प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति ने तीन न्यायाधीशों की वरिष्ठता को ताक में रख कर, न्यायाधीश रे को मुख्य न्यायाधीश बना दिया। मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में हुए फैसले से विमत रखने वाले तीनों न्यायाधीशों ने इस निर्णय के विरुद्ध त्याग पत्र देकर, सारे राष्ट्र के शोषित व शोषक तबके को आन्दोलित कर दिया।

इस सारी बहस में पूंजीपति, बुद्धिजीवी व मध्यम वर्ग के व्यक्ति ने सरकारी तानाशाही की बात कर स्यापा किया। सेठों के प्रतिनिधि पालकीवाला ने कहा कि मैं जनता के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए जनता की तरफ से लड़ा हूँ। यह बात दूसरी है कि वे एक दिन की बहस के ३० हजार रुपये लेते हैं। सरकार ने कहा कि जनता द्वारा निर्वाचित संसद सर्वोच्च है। यह बात दूसरी है कि जिस देश की २२।। करोड़ जनता की आमदनी ५।। आने से कम है, उसके प्रतिनिधि लाखों रुपये खर्च कर जन-प्रतिनिधि बने हैं। त्याग पत्र देने वाले तीनों न्यायाधीशों को निर्धन जनता के अधिकारों को छिनने ने इतना भाव विह्वल कर दिया कि उन्होंने कुर्सी त्याग दी। यह बात दूसरी है कि जिन्दगी के साठ वर्ष उन्होंने हजारों रु० का वेतन, सुन्दर वातानुकूलित बंगलों व कारों में काटे हैं।

भारत का भूखा-नंगा व्यक्ति स्तब्ध है! उसे यह बहस समझ में नहीं आ रही। गरीबी हटाओ का नारा दे कर श्रीमती गांधी वोट ले गयी और प्रधानमंत्री भवन से रोटी के स्थान पर भाषण और विरोधियों को गालियां देने लगी। कुत्ते की तरह भौंकने और मौत का मौलिक अधिकार तो पिछले २५ वर्षों में इस देश के 'कथित महाराजाओं' ने दिया, किन्तु रोटी, कपड़े और मकान के मौलिक अधिकार में कटौती कर दी। बिड़ला, टाटा और साहूजैन की सम्पत्ति दिन ब दिन इतनी बढ़ती गयी कि उसे खर्चना उनके लिए कठिन हो गया। और अब जन-रक्त से तिजोरियाँ भरने वाले आदमी के दुश्मनों को, गरीब आदमी के मौलिक अधिकार का ध्यान आया तो ३० हजार रु० रोजाना में पालकीवाला और ऐसे ही अनेक जन रक्षकों (?) को सर्वोच्च न्यायालय में खड़ा कर दिया।

जिस संविधान की बात इस देश का पढ़ा-लिखा तबका करता है वह जनता के बहुसंख्यक प्रतिनिधियों ने नहीं बनाया वरन् एक सीमित तबके की 'समझ' का परिणाम है। जिस देश में पुलिस आई० पी० सी० की उन्हीं धाराओं से जनता को तंग करती हो, जिनका प्रयोग साम्राज्यवादी अंग्रेज सरकार क्रान्तिकारियों के विरुद्ध करती थी, उसके न्यायाधीश मुल्ला ने यह कहा हो—'पुलिस गुण्डों का कानूनी संगठन है', वहां मौलिक अधिकार की बात भूखे-नंगे तबके के लिए मजाक मात्र है? जिस सर्वोच्च न्यायालय और अन्य न्यायालयों में वकीलों को पैसा फेंकने के उपरान्त, गवाहों के झूठे सच्चे बयानों पर न्याय टिका हो, वहां गरीब आदमी कहां जाये? बीस-बीस वर्ष तक निर्णय की प्रतीक्षा से अच्छा है, न्यायालयों में जाने की जगह आम आदमी गला घोंट ले या...? सरकारी नौकरी तथा निजी उद्योगों में सेवा निवृत्ति की आयु ५५-६० वर्ष तक जबान बन्द रखने के बाद, कौनसा मौलिक अधिकार बच रहता है? नौकरी से निकालने पर, फटे चिथड़ों वाले आम आदमी के लिए संसद व सर्वोच्च न्यायालय की बात करना हास्यास्पद है।

संसद जिन जन अधिकारों के लिए विधेयक पारित करती है, उन्हें जन प्रतिनिधि सरकार के सहयोगी वाह्य रूप से जनता के लिए सुनहरा स्वप्न बना देते हैं और अन्दर से यत्न करते हैं 'गरीब' से उसकी गरीबी का मौलिक अधिकार न छिन जाये, इसके लिये जान लड़ा देते हैं। आम आदमी को तड़प-तड़प कर मरता देखना उनके भावुक हृदय से नहीं देखा जाता, अतः उसे वे मीठी 'मौत' देते हैं।

भारत के आम आदमी के पास भूख से तड़पती मौत का मौलिक अधिकार है, जिसे उससे संसद या संविधान कोई नहीं छीन सकता। जिस दिन ये भूखे-नंगे लोग स्वयं अपना संविधान, अपनी संसद और अपनी न्याय व्यवस्था के लिये उठ खड़े होंगे, उस दिन सच्ची बहस होगी, किन्तु संवादी बदल जायेंगे।

—महेन्द्र मधुप

सामयिकी

पूरे एक महीने से हरयाणा के बिजली कर्मचारी हरयाणा की जुल्मी तानाशाही सरकार से संघर्ष कर रहे हैं। कुल २२ हजार कर्मचारियों में से लगभग १५ हजार बिजली कर्मचारी हरयाणा और दिल्ली की जेलों में ठूंस दिये गये हैं और दिल्ली के पटेल चौक पर प्रतिदिन २-३ सौ कर्मचारी गिरफ्तारी दे रहे हैं। इतना होने पर भी सरकार के बहरे कानों पर जूं तक नहीं रेंग रही है। स्पष्ट रूप से बिजली बोर्ड के अध्यक्ष पी. एन. साहनी की झूठी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और हरयाणा सरकार द्वारा उन्हें दिया जा रहा अनुचित प्रश्रय सारे मामले को सुलझाने में बाधक हो रहा है और हजारों गरीब कर्मचारियों के जीवन के साथ खिलवाड़ का कारण बन रहा है।

बिजली कर्मचारियों की इस जबरदस्त हड़ताल में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि उन्होंने किसी नई मांग को ले कर हड़ताल नहीं की है। उनकी न्यायोचित मांग यही है कि बिजली बोर्ड और कर्मचारी यूनियन के बीच जुलाई ७२ में जो लिखित समझौता हुआ था उसे लागू किया जाय और यूनियन के नेताओं के खिलाफ सरकार ने जो दमन चक्र चलाकर उन्हें फौजदारी मुकदमों में जकड़ रखा है वह वापस लिया जाय।

जुलाई सन् ७२ समझौते के अनुसार, ये निर्णय हुए थे बिजली कर्मचारियों को स्वीकृत अन्तरिम भत्ता जनवरी १९७३ नकद दिया जायगा, २—वर्कचार्ज स्टाफ को २८० दिन के बाद नयमित किया जायगा और दो वर्ष की नौकरी के बाद हर कर्मचारी की सेवा को स्थायी किया जायगा, ३—कर्मचारी यूनियन के प्रधान एवं महासचिव को यूनियन कार्यों के लिये ड्यूटी पर समझा जायगा। इनके अलावा समझौते में यह भी तय हुआ था कि दमन चक्र वापस लेकर रिक्त पदों की पूर्ति की जायगी और दूर देहाती इलाकों में शिकायत अधिनियमों की रचना की जायगी।

लेकिन जब इन तयशुदा मांगों के क्रियान्वयन के लिये यूनियन के प्रतिनिधियों ने बोर्ड के अधिकारियों से बातें करने के लिये बैठक रखी तो लगातार तीन-चार बार इन बैठकों को बोर्ड के अधिकारियों ने स्थगित कर दिया और मांगों के बारे में टालमटोल करने लगे।

इधर फरवरी में हरयाणा के राजकीय अध्यापकों की हड़ताल शुरु हुई। उसी दौरान मार्च के प्रथम सप्ताह में बिजली कर्मचारी यूनियन की कार्यकारिणी की बैठक फरीदाबाद में हुई। इस बैठक में कार्यकारिणी ने हरयाणा के अध्यापकों के

बिजली कर्मचारियों के साथ अन्याय का भण्डाफोड़

स्वामी अग्निवेश

आन्दोलन को अपना नैतिक समर्थन देते हुए, सरकार के दमन-चक्र की आलोचना की। इस बात से चिढ़ कर हरयाणा सरकार ने यूनियन के नेताओं पर अत्याचार आरंभ कर दिया। यूनियन के महासचिव प्यारेलाल को १५ मार्च को और प्रधान बी डी. शर्मा को २३ मार्च को गिरफ्तार कर जेल की सीखचों में उन्हें यातनायें दी जाने लगीं। इसके विरुद्ध आवाज उठाने वाले प्रत्येक यूनियन कार्यकर्त्ता को हिरासत में लिया गया और जुल्मों का दौर शुरू कर के उन्हें सामूहिक हड़ताल के रास्ते पर जाने के लिये बाध्य किया गया। हड़ताल की निश्चित तिथि से पहले ही सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की अन्धाधुन्ध धरपकड़ और पिटाई शुरू कर दी गई और उनके घरों पर उनके मां बाप और मासूम बच्चों को भी सताया गया।

परन्तु इतने जुल्मोसितम के बावजूद भी हरयाणा के बिजली कर्मचारियों का हौसला दिन प्रतिदिन बुलन्द होता ही चला गया है और जेल की सीखचों में बन्द हजारों कंठों से इस अन्याय और तानाशाही के खिलाफ अन्तिम समय तक लड़ते रहने का उनका संकल्प गगनभेदी नारों से हरयाणा की धरती को एक नई चेतना प्रदान कर रहा है। उनका यह विश्वास है कि उन का यह त्याग और बलिदान व्यर्थ नहीं जायगा, अपने संगठन की एकता और अनुशासन के बल पर वे अपने न्यायोचित मांगों को मनवाने में अवश्यमेव कामयाब होंगे। उनका यह भी दृढ़ विश्वास है कि एक न एक दिन बिजली बोर्ड में व्याप्त भाई भतीजावाद तथा भ्रष्टाचार और गबन का पुलिन्दा जनता जनार्दन के सामने आयेगा ताकि जनता स्वयं फैसला कर सके कि हरयाणा बिजली विभाग में सबसे बड़ा अपराधी कौन है? ❋

केन्द्रीय कारागार, रोहतक

लेखकों से निवेदन

- ०शोषण, जीवन के दोहरेपन और वर्तमान सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों के दिग्भ्रम तथा पाखण्ड पर प्रहार करने वाली रचनायें, 'राजधर्म' सादर आमंत्रित करता है।
- ०विशेष अवसरों पर प्रकाशित की जाने वाली रचनाओं को, उस तिथि से एक माह पूर्व भेजा जाय। रचनायें सामान्यतः दो हजार शब्दों से बड़ी नहीं होनी चाहिये तथा सुस्पष्ट लिपि में लिखी या टंकित होनी चाहिए।
- ०'राजधर्म' वर्तमान में लेखकों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है। अतः यदि लेखक का कोई विशेष आग्रह हो, तो रचना पर इसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये।
- ०स्वीकृत रचना के बारे में पन्द्रह दिन में सूचना दे दी जायगी। सूचना न मिलने की स्थिति में रचना को अस्वीकृत समझा जाय। रचना लौटाने के लिये टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा भेजें।
- ०'हमारी कसौटी पर' स्तम्भ में पुस्तक की दो प्रतियां आने पर ही समीक्षा हो सकेगी।

पाखण्डियों के धर्म का क्षय हो

राहुल सांकृत्यायन

वैसे तो धर्मों आपस में मतभेद हैं । एक पूर्व में मुंह करके पूजा करने का विधान करता है, तो दूसरा पश्चिम की ओर । एक सिर पर कुछ बाल बढ़ाना चाहता है, तो दूसरा दाढ़ी । एक मूंछ कतरने के लिए कहता है, तो दूसरा मूंछ रखने के लिए । एक जानवर का गला रेतने के लिए कहता है, तो दूसरा एक हाथ से गर्दन साफ करने को । एक कुर्ते का गला दाहिनी तरफ रखता है, तो दूसरा बाईं तरफ । एक जूठ-मीठ का कोई विचार नहीं रखता, तो दूसरे के यहां जाति के भीतर बहुत से चूल्हे हैं । एक खुदा के सिवाय दूसरे का नाम भी दुनियाँ में रहने देना नहीं चाहता, तो दूसरे के देवताओं की संख्या नहीं । एक गाय की रक्षा के लिए जान देने को कहता है, तो दूसरा उसकी कुर्बानी से बड़ा सबाब समझता है ।

इसी तरह दुनियां के सभी मजहबों में भारी मतभेद हैं । ये मतभेद सिर्फ विचारों तक ही सीमित नहीं रहे, बल्कि पिछले दो हजार वर्षों का इतिहास बतला रहा है कि इन मतभेदों के कारण मजहबों ने एक-दूसरे के ऊपर जुलम के कितने ही पहाड़ ढाये । यूनान और रोम के अमर कलाकारों की कृतियों का आज अभाव क्यों दीखता है ? इसलिये कि वहां एक ऐसा मजहब आया जो ऐसी मूर्तियों के अस्तित्व को अपने लिए खतरे की चीज समझता था । ईरान की जातीय कला, साहित्य और संस्कृति को नामशेष-सा क्यों हो जाना पड़ा ?—क्योंकि, उसका एक ऐसे मजहब से पाला पड़ा, जो इन्सानियत का नाम भी धरती से मिटा देने पर तुला हुआ था । मेक्सिको और पेरू, तुर्किस्तान और अफगानिस्तान, मिस्र और जावा—जहां भी देखिये, मजहबों ने अपने को कला, साहित्य, संस्कृति का दुश्मन साबित किया । और खून खराबी ? इसके लिए तो पूछिए मत । अपने-अपने खुदा और भगवान के नाम पर, अपनी-अपनी किताबों और पाखण्डों के नाम पर मनुष्य के खून को उन्होंने पानी से भी सस्ता कर दिखलाया । यदि पुराने यूनानी धर्म के नाम पर निरपराध ईसाई बच्चे-बूढ़ों, स्त्री-पुरुषों को शेरों से फड़वाना तलवार के घाट उतारना बड़े पुण्य का काम समझते थे, तो पीछे अधिकार हाथ आने पर ईसाई भी क्या उनसे पीछे रहे ? ईसा-मसीह के नाम पर उन्होंने खुल कर तलवार का इस्तेमाल किया । जर्मनी में ईसाइयत के भीतर लोगों को लाने के लिए कत्ले-आम सा मचा दिया गया । पुराने जर्मन ओक वृक्ष की पूजा करते थे । कहीं ऐसा न हो कि ये ओक उन्हें फिर पथभ्रष्ट कर दें, इसके लिए बस्तियों के आसपास एक भी ओक को रहने न दिया गया । पोप और पेत्रियार्क, इंजील और ईसा के नाम पर प्रतिभाशाली व्यक्तियों के नाम पर विचार-स्वातंत्र्य को आग और लोहे के जरिये से दबाते रहे । जरा से विचार-भेद के लिएं कितनों को चर्खी से दबाया गया—कितनों को जीते जी आग में जलाया गया । हिन्दुस्तान की भूमि ऐसी धार्मिक मतान्धता का कम शिकार नहीं रही है । इस्लाम के आने से पहले भी क्या मजहब ने वेद मन्त्र से बोलने और सुनने वालों से मुंह और कानों में पिघले राँगे और लाख को नहीं भरा ? शंकराचार्य ऐसे आदमी थे जो कि सारी शक्ति लगा, गला फाड़-फाड़ कर यही चिल्ला रहे थे कि सभी ब्रह्म हैं, ब्रह्म से भिन्न सभी चीजें झूठी हैं तथा रामानुज और दूसरों के भी दर्शन जबानी जमा-खर्च से आगे नहीं बढ़े, बल्कि सारी शक्ति लगाकर शूद्रों और दलितों को नीचे दबा रखने में उन्होने कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी और इस्लाम के आने के बाद तो हिन्दू-धर्म और इस्लाम के खूंरेज झगड़े आज तक चल रहे हैं । उन्होंने तो हमारे देश को नरक बना रखा है । कहने के लिए इस्लाम शान्ति और विश्व-बन्धुत्व का धर्म कहलाता है; हिन्दू-धर्म ब्रह्मज्ञान और सहिष्णुता का धर्म बतलाया जाता है; किन्तु क्या इन दोनों धर्मों ने अपने इस दावे को कार्य-रूप में परिणत करके दिखलाया ? हिन्दू मुसलमानों पर दोष लगाते हैं कि वे बेगुनाहों का खून करते हैं; हमारे मन्दिरों और पवित्र तीर्थों का भ्रष्ट करते हैं; हमारी स्त्रियों को भगा ले जाते हैं । लेकिन, झगड़े में क्या बेगुनाहों का खून करने से बाज आते हैं । चाहे आप कानपुर के हिन्दू-मुस्लिम झगड़े को ले लीजिए या बनारस व इलाहाबाद के या आगरे के; सब जगह देखेंगे कि हिंदुओं और मुसलमानों के छुरे और लाठी के शिकार हुये हैं— निरपराध, अजनबी स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे । गांव या दूसरे मुहल्ले का कोई अभागा आदमी अनजाने उस रास्ते आ गुजरा और कोई पीछे से छुरा भोंक कर चम्पत हो गया । सभी धर्म दया का दावा करते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान के इन धार्मिक झगड़ों को देखिए, तो आपको मालूम होगा कि यहां मनुष्यता पनाह मांग रही है । निहत्थे बूढ़े और बूढ़ियां ही नहीं, छोटे-छोटे बच्चे तक मार डाले जाते हैं । अपने धर्म के दुश्मनों को जलती आग में फेंकने की बात अब भी देखी जाती है ।

एक देश और एक खून मनुष्य को भाई-भाई बनाते हैं । खून का नाता तोड़ना अस्वाभाविक है, लेकिन हम हिन्दुस्तान में

क्या देखते हैं ? हिन्दुओं की सभी जातियों में, चाहे आरम्भ में कुछ भी क्यों न रहा हो, अब तो एक ही खून दौड़ रहा है; क्या शक्ल देखकर किसी के बारे में आप बतला सकते हैं कि यह ब्राह्मण है और यह शूद्र। कोयले से भी काले ब्राह्मण आपको लाखों की तादाद में मिलेंगे और शूद्रों में भी गेहुएं रंग वालों का अभाव नहीं है। पास पास में रहने वाले स्त्री-पुरुषों के यौन-संबन्ध, जाति की ओर से हजार रुकावट होने पर भी, हम आए दिन देखते हैं। कितने ही धनी खानदानों, राजवंशों के बारे में तो लोग साफ कहते हैं कि दास का लड़का राजा और दासी का लड़का राजपुत्र। इतना होने पर भी हिन्दू धर्म लोगों को हजारों जातियों में बांटे हुए है। कितने ही हिन्दू, हिन्दू के नाम पर जातीय एकता स्थापित करना चाहते हैं, किन्तु वह हिन्दू जातीयता है कहां ? हिन्दू जाति तो एक काल्पनिक शब्द है। वस्तुतः वहां हैं ब्राह्मण-ब्राह्मण भी नहीं, शाकद्वीपी, सनाढ्य, जुझौतिया—राजपूत, खत्री, भूमिहार, कायस्थ, चमार आदि-आदि...। एक राजपूत का खाना-पीना ब्याह-श्राद्ध अपनी जाति तक सीमित रहता है। उसकी सामाजिक दुनियां अपनी जाति तक महमूद है। इसीलिए जब एक राजपूत बड़े पद पर पहुंचता है, तो नौकरी दिलाने, सिफारिश करने या दूसरे तौर से सबसे पहले अपनी जाति के आदमी को फायदा पहुँचाना चाहता है। यह स्वाभाविक है। जब कि चौबीसों घण्टे मरने-जीने, सब में साथ सम्बन्ध रखने वाले अपने बिरादरी के लोग हैं, तो किसी की दृष्टि दूर तक कैसे जायगी ?

कहने के लिए तो हिन्दुओं पर ताना कसते हुए इस्लाम कहता है कि हमने जात-पांत के बन्धनों को तोड़ दिया। इस्लाम में आते ही सब भाई-भाई हो जाते हैं, लेकिन क्या यह बात सच है ? यदि ऐसा होता तो आज मोमिन (जुलाहा), अन्सार (धुनिया), राइन (कुंजड़ा) आदि का सवाल न उठता। अर्जल और अशरफ का शब्द किसी के मुंह पर नहीं आता। सैयद-शेख मलिक-पठान, उसी तरह का ख्याल अपने से छोटी जातियों से रखते हैं, जैसा कि हिन्दुओं के बड़ी जात वाले। खाने के बारे में छूतछात कम है और वह तो अब हिन्दुओं में भी कम होती जा रही है, लेकिन सवाल तो है—सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्र में इस्लाम की बड़ी जातों ने छोटी जातों को क्या आगे बढ़ने का कभी मौका दिया ? धार्मिक नेता हों तो बड़ी-बड़ी जातों से। शाही दरबार औरसरकारी नौकरियां सभी जगहें बड़ी जातों के लिए सुरक्षित रहीं। जमींदार, ताल्लुकेदार, नवाब सभी बड़ी जातों के हैं। हिन्दुस्तानियों में से चार-पांच करोड़ आदमियों ने हिन्दुओं के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक अत्याचारों से त्राण पाने के लिए इस्लाम की शरण ली, लेकिन इस्लाम की बड़ी जातों ने क्या उन्हें वहां पनपने दिया ? सात सौ बरस बाद भी आज गांव का मोमिन, जमीदारों और बड़ी जातों के जुल्म का वैसा ही शिकार है, जैसा कि उसका पड़ोसी कानू कुर्मी। हिन्दुओं से झगड़ कर अंग्रेजों की खुशामद करके कौन्सिलों की सीटों, सरकारी नौकरियों मेंअपने लिए संख्या सुरक्षित करायी गयी, लेकिन जब उस संख्या को अपने भीतर वितरण करने का अवसर आया, तब उनमें से प्रायः सभी को बड़ी जाति वाले सैयद और शेख ने अपने हाथ में ले लिया। साठ साठ, सत्तर-सत्तर फीसदी संख्या रखने वाले मोमिन और अन्सार मुँह ताकते रह जाते हैं। बहाना किया जाता है कि उनमें उतनी शिक्षा नहीं, लेकिन सात सौ और हजार बरस बाद भी यदि वे शिक्षा में इतने पिछड़े हुए हैं, तो इसका दोष किसके ऊपर है ? उन्हें कब शिक्षित होने का अवसर दिया गया ? जब पढ़ाने का अवसर आया, छात्रवृत्ति देने का मौका आया, तब तो ध्यान अपने भाई बन्धुओं की तरफ चला गया। मोमिन और अन्सार, बावर्ची और चपरासी, खिदमतगार और हुक्काबरदार के काम के लिए बने हैं। उनमें से कोई यदि शिक्षित हो भी जाता है, तो उसकी सिफारिश के लिए अपनी जाति में तो वैसा प्रभावशाली व्यक्ति है नहीं और बाहर वाले अपने भाई-बन्धु को छोड़ कर उन पर तरजीह क्यों देने लगे ? नौकरियों और पदों के लिए इतनी दौड़धूप, इतनी जद्दोजहद सिर्फ खिदमते-कौम और देश सेवा के लिये नहीं है, यह है रुपयों लिये, इज्जत और आराम की जिन्दगी बसर करने के लिए।

हिन्दू और मुसलमान फरक-फरक धर्म रखने के कारण क्या उनकी अलग जाति हो सकती है ? जिनकी नसों में उन्हीं पूर्वजों का खून बह रहा है, जो इसी देश में पैदा हुए और पले, फिर दाढ़ी और चुटिया, पूरब और पश्चिम की नमाज क्या उन्हें अलग कौम साबित कर सकती है ? क्या खून पानी से गाढ़ा नहीं होता ? फिर हिन्दू और मुसलमान के फरक से बनी इन अलग-अलग जातियों को हिन्दुस्तान से बाहर कौन स्वीकार करता है ? जापान में जाइये या जर्मनी, ईरान जाइये या तुर्की, सभी जगह हमें हिन्दी और 'इण्डियन' कह कर पुकारा जाता है। जो धर्म भाई को बेगाना बनाता है, ऐसे धर्म को धिक्कार ! जो मजहब अपने नाम पर भाई का खून करने के लिए प्रेरित करता है, उस मजहब पर लानत ! जब आदमी चुटिया काट दाढ़ी बढ़ाने भर से मुसलमान और दाढ़ी मुंड़ा चुटिया रखने मात्र से हिन्दू मालूम होने लगता है, तो इसका मतलब साफ है कि यह भेद सिर्फ बाहरी और बनावटी है। एक चीनी चाहे बौद्ध हो या मुसलमान, ईसाई हो या कनफूसी, लेकिन उसकी जाति चीनी रहती है; एक जापानी चाहे बौद्ध हो या शिन्तो-धर्मी, लेकिन उसकी जाति जापानी रहती है; एक ईरानी चाहे वह मुसलमान हो या जरतुस्त, किन्तु वह अपने लिए ईरानी छोड़ दूसरा नाम स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं। तो हम हिन्दियों के मजहब

को टुकड़े-टुकड़े में बांटने को क्यों तैयार हैं और इन नाजायज हरकतों को हम क्यों बर्दाश्त करें ?

धर्मों की जड़ में कुल्हाड़ा लग गया है; इसलिए अब मजहबों के मेल-मिलाप की भी बातें कभी-कभी सुनने में आती है, लेकिन क्या यह सम्भव है ? "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"—इस सफेद झूठ का क्या ठिकाना ? अगर मजहब बैर नहीं सिखलाता तो चोटी-दाढ़ी की लड़ाई में हजार बरस से आज तक हमारा मुल्क पागल क्यों है ? पुराने इतिहास को छोड़ दीजिए, आज भी हिन्दुस्तान के शहरों और गाँवों में एक मजहब वालों को दूसरे मजहब वालों के खून का प्यासा कौन बना रहा है ? असल बात यह है—"मजहब तो है सिखाता आपस में बैर रखना। भाई को सिखाता है भाई का खून पीना।" हिन्दुस्तानियों की एकता मजहबों के मेल पर नहीं होगी; बल्कि मजहबों की चिता पर। कौए को धो कर हंस नहीं बनाया जा सकता। कमली धो कर रंग नहीं चढ़या जा सकता। मजहबों की बीमारी स्वाभाविक है। उसकी मौत को छोड़ कर कोई इलाज नहीं।

एक तरफ तो मजहब एक दूसरे के इतने जबरदस्त खून प्यासे हैं। उनमें से हर एक एक दूसरे के खिलाफ शिक्षा देता है। कपड़े-लत्ते, खाने-पीने, बोली-बानी, रीति-रिवाज में हर एक, एक दूसरे से उलटा रास्ता लेता है, लेकिन जो गरीबों को चूसने और धनियों की स्वार्थ-रक्षा का प्रश्न आ जाता है; तो दोनों एक बोली बोलते हैं। गदहा गांव के महाराज बेवकूफ बख्शसिंह सात पुश्त से पहले दर्जे के बेवकूफ चले आते हैं। आज उनके पास पचास लाख सालाना आमदनी की जमींदारी है, जिसको प्राप्त करने में न उन्होंने एक धेला अक्ल खर्च की और न अपनी बुद्धि के बल पर उसे छः दिन चला ही सकते हैं। न वे अपनी मेहनत से धरती से एक छटांक चावल पैदा कर सकते हैं, न एक कंकड़ी गुड़। महाराज बेवकूफ बख्शसिंह को यदि चावल, गेहूँ, घी, लकड़ी के ढेर साथ एक जंगल में अकेले छोड़ दिया जाये, तो भी उनमें न इतनी बुद्धि है और न उन्हें काम का ढंग मालूम है कि अपना पेट भी पाल सकें; सात दिन में बिलला-बिलला कर जरूर वे वहीं मर जायेंगे, लेकिन आज गदहा-गांव के महाराज दस हजार रुपया महीना तो मोटर के तेल में फूंक डालते हैं। बीस-बीस हजार रुपए जोड़े के सौ जोड़े कुत्ते उनके पास हैं। दो लाख रुपये लगा कर उनके लिए महल बना हुआ है। उन पर अलग डाक्टर और नौकर हैं। गर्मियों में उनके घरों में बरफ के टुकड़े और बिजली के पंखे लगते हैं। महाराज के भोजन-छाजन की तो बात ही क्या ? उनके नौकरों के नौकर भी घी-दूध में नहाते हैं और जिस रुपये को इस प्रकार पानी की तरह बहाया जाता है वह आता कहां से है ? उसके पैदा करने वाले कैसी जिन्दगी बिताते हैं ?— वे दाने-दाने को मुहताज हैं। उनके लड़कों को महाराज बेवकूफ बख्श के कुत्तों का जूठा भी यदि मिल जाये, तो वे अपने को धन्य समझें।

लेकिन, यदि किसी धर्मानुयायी से पूछा जाय कि ऐसे बेवकूफ आदमी को बिना हाथ-पैर हिलाये दूसरे की कसाले की कमाई को पागल की तरह फूंकने का क्या अधिकार है तो पण्डित जी कहेंगे— "अरे वे तो पूर्व जन्म की कमाई खा रहे हैं। भगवान् की ओर से बड़े बनाये गये हैं। शास्त्र कहते हैं कि बड़े-छोटे के बनाने वाले भगवान हैं। गरीब दाने-दाने को मारा-मारा फिरता है, यह भगवान की ओर से उसको दण्ड मिला है।" यदि किसी मौलवी या पादरी से पूछिये तो जवाब मिलेगा—"क्या तुम काफिर हो ? नास्तिक तो नहीं हो ? अमीर-गरीब दुनियां का कारबार चलाने के लिए खुदा ने बनाये हैं। राजी ब-रजा खुदा की मर्जी में इन्सान को दखल देने का क्या हक ? गरीबी को न्यामत समझो। उसकी बंदगी और फरमा-बरदारी बजा लाओ, कयामत में तुम्हें इसकी मजदूरी मिलेगी।" पूछा जाय—'जब बिना मेहनत ही के महाराज बेवकूफ बख्शसिंह धरती पर ही स्वर्ग का आनन्द भोग रहे हैं तो ऐसे 'अन्धेर नगरी चौपट राजा' के दरबार में बंदगी और फरमाबरदारी से कुछ होने-हवाने की क्या उम्मीद ?'

उल्लू शहर के नवाब नामाकूल खाँ भी बड़े पुराने रईस हैं। उनकी भी जमींदारी है और ऐशो-आराम बेवकूफ बख्शसिंह से कम नहीं है। उनके पाखाने की दीवारों में अत्तर चुपड़ा जाता है और गुलाब जल से उसे धोया जाता है। सुन्दरियों और हुस्न की परियों को फँसा लाने के लिए उनके सैकड़ों आदमी देश-विदेश में घूमा करते हैं। यह परियां एक ही दीदार में उनके लिये बासी हो जाती हैं। पचासों हकीम, डाक्टर और वैद्य उनके लिए जौहर, कुश्ता और रसायन तैयार करते हैं। दो-दो सौ साल की पुरानी शराबें पेरिस और लंदन के तहखानों से बड़ी-बड़ी कीमत पर मंगा कर रखी जाती हैं। नवाब बहादुर का तलवा इतना लाल और मुलायम है, जितनी इन्द्र की परियों की जीभ भी न होगी। इनकी पाशविक काम वासना की तृप्ति में बाधा डालने के लिये कितने ही पति तलवार की घाट उतारे जाते हैं, कितने ही पिता झूठे मुकदमों में फंसा कर कैदखाने में सड़ाये जाते हैं। साठ लाख सालाना आमदनी भी उनके लिये काफी नहीं है। हर साल दस-पांच लाख रुपया और कर्ज हो जाता है। आपको G.C.S.I.G.C.I.E. फर्जिन्द-खास फिरंग आदि बड़ी-बड़ी उपाधियां सरकार की ओर से मिली हैं। वाय-

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

जनता आस्तीन के सांपों से सावधान रहे

o जयदेव शर्मा

बात १४ मार्च को राज्यसभा में नामजद सदस्य अबू 'अब्राहम' ने भारत में खाद्य समस्या निवारण का एकमात्र उपाय गौ हत्या बताकर स्वयं को देश की भूख से छटपटाती जनता का परम हितैषी सिद्ध करने का बेहूदा प्रयास किया। एक सच्चे भारतीय नागरिक के हृदय पटल पर, इस सुझाव से अबू 'अब्राहम' का जो चित्र अंकित हुआ वह अभी धूमिल भी नहीं हो पाया था कि लोक सभा में निर्दलीय संसद शमीम अहमद 'शमीम' की (२८ मार्च को) इस शरारतपूर्ण गर्जना ने कि—"संसार की कोई ताकत मुसलमानों को 'वन्देमातरम्' गाने के लिये बाध्य नहीं कर सकती"— देश के करोड़ों हृदयों को तीव्र आघात पहुंचाने की भूमिका अदा की। यदि हम शांत वातावरण में, ठंडे दिमाग से इस पर सोचे तो हम पायेंगे कि इस तरह की राष्ट्र द्रोही कार्यवाहियों के लिये, कोई न कोई विदेशी शक्ति, चाहे वह अमेरिका की पिछलग्गू हो अथवा रूस, चीन या पाकिस्तान की, अवश्य उत्तरदायी है। इन विदेशी शक्तियों ने अपने 'एजेन्टों' को देश के बड़े-बड़े कार्यालयों, समाज-सेवी संस्थाओं, धार्मिक स्थलों और यहां तक कि विधान सभाओं और संसद में भी रख छोड़ा है। ये एजेन्ट्स वास्तव में इस देश की संस्कृति व मर्यादाओं को समाप्त करके, अपने देश की कुत्सित व घिनौनी विचारधाराओं को यहां लादने का प्रयास कर रहे हैं। क्या ये लोग आस्तीन के सांप नहीं हैं? इन सांपों को दूध पिला-पिला कर पालने वाली इन्दिरा सरकार सारी स्थिति से परिचित हो कर भी 'धर्म निरपेक्षता' और 'साम्प्रदायिक सद्भावना' की ओट में बैठ कर नपुंसकत्व का शर्मनाक खेल खेल रही है। वैसे तो इस तरह के सांप पालने का शौक कांग्रेसियों के लिये कोई नया नहीं है। इन्दिरा जी ने तो महात्मा गांधी और श्री नेहरू द्वारा प्रतिपादित परम्परा ही को आगे बढ़ाया है। अन्तर केवल इतना है कि गांधी और नेहरू ने, 'शेख अब्दुल्ला' और 'जिन्ना' जैसे कुछ गिने चुने सांपों को दूध पिलाया था जबकि आज श्रीमती इन्दिरा गांधी (जो दुर्भाग्य से देश की प्रधानमंत्री भी है) ने अपनी तथाकथित समाजवादी पिटारियों में इतने सांप पाल रखे हैं कि वर्त्तमान कानून और व्यवस्था के लिये तो इन्हें गिन पाना भी दूभर है, दण्ड देना तो दूर की बात है।

आप अपनी सुविधा के लिये इन सांपों को गुण, कर्म, स्वभावनुसार तीन प्रमुख श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं— धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक।

धार्मिक सांप, रूढ़िवादी अथवा भोग विलास प्रिय लोगों में क्रमशः पाखण्ड और व्यभिचार का ठण्डा जहर उगलते हैं और निर्धन व भोली जनता को मूर्ख बना कर स्वयं 'एयर कन्डीशन्ड' प्रसादों में, अपने व्यभिचारी व दुराचारी शिष्यों एवं शिष्याओं के मध्य, बैठकर राष्ट्र विरोधी कार्यवाहियां करते हैं। इनमें से कुछ कुछ मुख्य नाम हैं—बाल योगेश्वर, महेश योगी, सत्य सांई बाबा, जय गुरुदेव आचार्य रजनीश तथा आनन्द मूर्ति।

दूसरी श्रेणी अर्थात् राजनीतिक श्रेणी में मानवाकर सांप आते हैं। जिनमें से एक, हमें दूध पिलाकर पालन-पोषण करने वाली, गाय का कलेजा चीर कर खाने का उपदेश देता है, तो दूसरा भारत का एक जिम्मेदार नागरिक होकर राष्ट्रगीत का अपमान करता है अर्थात् देश के संविधान के साथ विश्वासघात करता है। ये लोग उनमें से हैं, जो भारत में रह कर इस देश के अन्न-जल से पोषित होकर भी दिन रात किसी दूसरे देश का गुणगान करते हैं अथवा गंगा-यमुना के कल-कल निनाद करते पावन जल से घृणा करते हैं और अरब के सूखे मरुस्थलों के हित की कामना करते है। इन्हें धर्म निरपेक्षता की आड़ में साम्प्रदायिकता का कटु जहर उगलने की पूरी स्वतन्त्रता है।

तीसरी श्रेणी के सांप सामाजिक किस्म के होते हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये सीमाओं पर लड़ रहे इस देश के नौजवान बेटों के गर्म खून से होली खेलते हैं, दिन-रात खेतों में अपना खून पसीना एक कर अन्न उपजाने वाले किसानों को दो वक्त भोजन उपलब्ध कराने में लज्जा का अनुभव करते हैं अपनी बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों व मिलों में काम कर रहे मजदूरों और उनके नन्हे-मुन्ने बच्चों को भूख से छटपटाते देख कर गर्व महसूस करते हैं और बी.ए., एम.ए. की डिग्रियां लिये, देश के करोड़ों युवाओं को नौकरी की तलाश में सड़कों की खाक छानता देखकर अट्टहास करते हैं तथा स्वयं कॉकटेल पार्टियों में या बड़े-बड़े क्लबों में, विदेशों से आयातित विभिन्न प्रकार की शराबों से छलकते जामों और नव यौवनाओं के उद्दाम यौवन की तरंगों में डूबते-उतराते नजर आते हैं। ये सांप देश की सम्पत्ति के बहुत बड़े भाग पर घेरा डाल कर बैठे हैं। उदाहरणार्थ–बिड़ला, टाटा, मोदी, तापड़िया गोयनका, मफतलाल आदि पूंजीपति तथा लाखों, करोड़ों रुपये अपने सोफासेटों एवं बाथरूमों में छुपा कर रखने वाले फिल्मी अभिनेता तथा निर्माता व जनता के समक्ष चुनावों के दौरान गिड़गिड़ा कर वोटों की भिक्षा मांग कर, उसी के साथ चुनाव के पश्चात् विश्वासघात करने वाले स्वार्थी नेता लोग, तीसरी किस्म के सांपों के गिनती में आते हैं।

उपर्युक्त तीनों श्रेणियां यद्यपि नाम की दृष्टि से भिन्न-भिन्न हैं, पर इनका उद्देश्य एक ही है और उसकी पूर्ति के लिये ये कभी अलग होकर और कभी एकजुट होकर हमारे सामने आती हैं। अतः जनता को एक हो कर इन आस्तीन के सांपों के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिये। *

ग्राम-पोस्ट करनावर, वाया-बसवा, जिला-जयपुर (राज०)

दो अंकों में समाप्य लम्बा नाटक

ये बस्ती, ये लोग

O रामशरण जोशी

(गताङ्क से आगे)

पिता: ओम जय जगदीश हरे
स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जन के संकट छन में दूर करे
ओम जय जगदीश हरे।

(आरती बजती है)

हे प्रभु, दीन बन्धु। तुम्हारी माया अपरमपार है। मरते मरते तुमने मुझे जीवन दे दिया। मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूंगा।

पत्नी: अजी सुनते हो।

पिता: क्या है कैंपा की मां?

पत्नी: कब तक पूजा करते रहोगे?

पिता: कैंपा की मां, पूरे तीन महीने बाद भगवान की पूजा कर रहा हूँ। सुनो कैंपा की मां, सन्तों की वाणी है–
दुःख में सुमरन सब करें,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमरण करे,
तो दुःख काहे को होए।

पत्नी: हां-हां बाबा, तुम्हारी बात मान गई। मगर तीन महीने की कसर एक ही दिन में निकालने से इन्द्रासन तो नहीं मिल जाएगा। वैसे भगवान भागे नहीं जा रहे?

पत्नी: अब तुमसे कौन माथापच्ची करे। बोलो क्या बात है?

पत्नी: देखो ये रजिस्ट्री आई है। शायद सतीश के बापू की लगती है।

पतिः लाओ देखूं। (रजिस्ट्री फाड़ता है। पढ़ता है) श्रीमान जानकीप्रसाद जी आपकी कैंपा हमें पसन्द है। सतीश को भी कैंपा पसन्द है। अब हमें यह रिश्ता मन्जूर है।

पत्नी: देखा मैंने क्या कहा था? मेरी बात सही निकली ना। अब तो मेरी बेटी के हाथ जरूर पीले हो जायेंगे।

पतिः तुमने तो हद कर दी। अरे भागवान, खत तो पूरा पढ़ लेने दो।

पत्नी: रुके क्यों हो, जल्दी पढ़ कर सुना दो। देखते नहीं मुझे ढेर सारी तैयारी करनी है। रिश्तेदारों को चिट्ठी लिखवानी है। प्रकाश को बुलाना है। कैंपा के कपड़े सिलाने हैं। सुनार को बुलवा कर गहने बनवाने हैं। देखा कितने काम हैं। अरे हां इस बार अच्छा हलवाई बुलवाना है। घर में पहली बारात आएगी (रुक कर) चलो अच्छा हुआ उस नीच कुन्दन से तो पीछा छूटेगा।

पतिः तुम तो अपनी ही हांके जा रही हो, खत तो पूरा करने दो।

पत्नी: अच्छा पढ़ो बाबा।

पतिः हां तो आगे लिखा है, वैसे तो जमुनादास जी हमें आपकी बेटी स्वीकार है। मगर आप तो जानते ही हैं कि बिरादरी में इज्जत का सवाल है। आपसे क्या छिपाऊं, कोई तीस हजार रु० लगेंगे। इन रुपयों का इंतजाम हो जाए तो रिश्ता पक्का समझो वरना...

पत्नी: वरना क्या कैंपा के बापू?

पतिः रिश्ता टूट जाएगा।

पत्नी: हम तीस हजार रुपये कहां से लाएंगे?

पतिः मकान पहले ही गिरवी है। अब तो कोई रुपया उधार नहीं देगा।

पत्नी: अब क्या होगा? क्या चौथा रिश्ता भी टूट जाएगा। इस बार जात बिरादरी में मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहेंगे।

पतिः यही तो मैं सोच रहा हूं। यदि यह रिश्ता भी टूट गया तो जाति वाले कैंपा को कभी नहीं अपना सकेंगे।

पत्नी: अब क्या होगा?

पतिः मेरा तो दिमाग काम नहीं दे रहा है।

पत्नी: प्रकाश ने पहले ही हरी झंडी दिखा दी है। यह रिश्ता भी टूट गया तो हम कहीं के नहीं रहेंगे।

पतिः समझ में नहीं आता इन जात-बिरादरी वालों को क्या हो गया है। पैसा नहीं मिलेगा तो लड़की नहीं अपनायेंगे।

पत्नी: जैसे हमारी लड़की कोई अछूत हो?

पतिः आज पैसा नहीं है तो हमारी ही जात वाले हमारे साथ अछूत जैसा व्यवहार कर रहे हैं। ऐसी संकट की घड़ी

म हमारी मदद करनी चाहिए, लेकिन सब हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं।

पत्नी: भगवान ही मालिक है मेरी कैंपा बेटी का।

कैंपा: (पास आते हुए) नहीं मां मैं स्वयं मालिक हूं।

पति: आओ कैंपा बिटिया, हम तुम्हारे बारे में ही बातचीत कर रहे थे।

कैंपा: मैंने सब सुन लिया है बापू। आप मेरी चिन्ता न करें।

पति: अरे पगली तेरी चिन्ता हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा?

कैंपा: कर्ज लेकर मेरी चिन्ता दूर करोगे? नहीं बापू ऐसा नहीं होगा। मैं ऐसी जाति से घृणा करती हूँ जिसका माप दौलत है।

पत्नी: कैंपा, शादी विवाह तो अपनी ही जात वालों में होता है।

कैंपा: मगर जिस जात में आज हम अछूत बन गए हैं क्या तब भी उसमें रहोगी?

पत्नी: मुझे मालूम है यह सब तू क्यों कह रही है। यह सब कुन्दन की सीख है।

कैंपा: नहीं मां, यह नये समाज की पुकार है। वैसे कोई शक नहीं कि मुझे कुन्दन से प्यार है। में इसमें कोई हर्ज नहीं मानती।

पति: खामोश! अपने बाप के सामने ऐसी बात करते हुए जरा भी शर्म नहीं आती।

कैंपा: मैंने कोई पाप नहीं किया है।

पति: एक अछूत लड़के से प्यार करना पाप नहीं तो पुण्य है?

कैंपा: न यह पाप है और न यह पुण्य, एक इन्सानी रिश्ता है। यह रिश्ता तुम्हारी जात वालों, तुम्हारी बस्ती वालों से, कहीं अधिक पवित्र और मजबूत है।

पत्नि: खबरदार, हमारे सामने कुन्दन का जो नाम लिया। हम उस अछूत की सूरत तक नहीं देखना चाहते।

मांजी: (दूर से चीखती हुई) बेटी कैंपा कुन्दन को ब···चा ·ओ।

कैंपा: क्या हुआ मांजी, इस प्रकार क्यों चीख रही हैं?

मांजी: कुन्दन को पहली बस्ती वालों ने घेर लिया है और उसे मार रहे हैं।

कैंपा: चलो में चलती हूँ।

पति: बेटी कैंपा वहां मत जाओ।

कैंपा: बापू, मेरा फर्ज मुझे बुला रहा है। मैं जरूर जाऊंगी। चलो मांजी। (जाती है)

पति: चलो हम भी चलें, इस लड़की ने तो नाक में दम कर रखा है।

पत्नी: चलो जल्दी करो।

(संगीत, शोर, हुल्लडबाजी)

भीड़: मारो.....मारो...मारो।

मांजी: छोड़ (चीख कर) मेरे कुन्दन को, छोड़ दो मेरे बच्चे को।

कैंपा: रुक जाओ। मैं कहती हूं रुक जाओ।

एक व्यक्ति: चुप रहो कैंपा बेटी। इस परली बस्ती के छोकरे ने तो तूफान मचा रखा है, हम इसे सबक सिखाना चाहते हैं।

दूसरा: आज परली बस्ती की यह हिम्मत, हम पहली बस्ती वालों से नजरे मिलायें?

पहला: हमारे कदम से कदम मिला कर चलें, पर हमारी बराबरी करें?

दूसरा: हमारी बस्ती में आकर सीना तान कर चलें?

पहला: ये लोग अपने पुराने दिन भूल गए। अब इन्हें वे दिन याद दिलाने होंगे।

दूसरा: चले हैं हमारे कुओं से पानी लेने। हाथ नहीं तोड़ देंगे।

पहला: यह सब इस कुन्दन की बदमाशी है। परली बस्ती में इसने ही आग लगायी है। वरना इन दरिद्रों की क्या मजाल जो आंख तक उठायें।

भीड़: मारो-मारो।

पहला: इसे गांव से बाहर निकाल दो।

कैंपा: मैं कहती हूँ रुक जाओ, वरना अच्छा नहीं होगा।

पहला: कैंपा, तुम क्यों सामने आ रही हो। शरम नहीं आती इन अछूतों का पक्ष लेने में।

दूसरा: हट जा कैंपा। हम आज इस सूखे बांस को जला देना चाहते हैं।

कैंपा: खबरदार, जो किसी ने एक कदम भी आगे बढ़ाया।

कुन्दन: (चीख कर) हट जाओ कैंपा। यदि ये मेरे खून से ही अपनी गली सड़ी दीवारों की रक्षा करना चाहते हैं तो करने दो। मेरे खून से अनगिनत कुन्दन पैदा होंगे। किस किस को मारेंगे।

कैंपा: नहीं कुन्दन। हम इन अंधे लोगों से लड़ेंगे।

पहला: कैंपा, हम अन्तिम बार चेतावनी देते हैं यहां से हट जाओ।

पत्नी: (दूर से चीख कर) कैंपा बेटी हट जा, ये अछूत लोग हैं।

कैंपा: पहली बस्ती वालों, तुम इन परली बस्ती वालों को अछूत मानते हो।

भीड़: हां ये अछूत हैं।

कैंपा: मैं कहती हूँ तुम अछूत हो।

पनला: कैंपा ! (चीखता है)

पति: कैंपा बेटी तुमने यह क्या कह डाला। अब हमें ये जाति बाहर कर देंगे।

कैंपा: मैं जानती हूँ। हमारा हुक्का पानी बन्द कर दिया जाएगा। मगर मैं कहती हूं आप स्वयं अछूत की जिन्दगी जी रहे हैं।

दूसरा: वो कैसे ?

कैंपा: यह मुझसे पूछते हो ? अपने आप से पूछो। क्या तुम्हारे खानदान वालों ने तुम्हें अलग नहीं कर दिया ? तुम्हारी जमीने नहीं छीन ली। (रुक कर) और रामू काका आज तुम्हारे लड़के के पास नौकरी नहीं है तो कोई भी लड़की देने को तैयार नहीं है। बंसी भाई, सच सच बताओ, तुम्हारी बहन को गांव का चौधरी उठा कर ले गया तो तुम चुपचाप देखते रहे। वो भी तो तुम्हारी बस्ती का था। कन्हैया काका, आज तुम कुन्दन को अछूत कह रहे हो। भूल गए इसी कुन्दन ने तुम्हारी ही जाति के रईस रिश्तेदार से तुम्हारी लड़की की इज्जत लुटने से बचाई थी। और आनन्द काका याद करो पिछली दिवाली। क्यों अपनी मासूम सीता को उस बूढे खूसट धनपति के हाथों बेच दिया ? मेरे बापू जमनादासजी खड़े हैं। आज इनके भाई बचों ने अकेला छोड़ दिया है। मेरे चार चार रिश्ते टूट चुके हैं क्योंकि मेरे बापू के पास दहेज के लिए पैसा नहीं है। क्या हम सवर्ण अपने वर्ग में अछूत नहीं बन गए हैं। महज इस लिए कि हमारे पास सम्पत्ति नहीं है। फिर इन परली बस्ती व लों को अछूत क्यों समझ रहे हो ? खामोश क्यों हो, जवाब दो ?

(भीड़ में कानाफूसी)

पहला: हम यह कुछ नहीं जानते। मगर ये अछूत हैं।

कैंपा: क्या इनमें लाल की जगह पीला खून है। जिस भूमि से तुम अन्न पैदा करते हो, उसी से ये ! समाज में जो दर्द तुम भोग रहे हो, वही ये। आप लोग भी गरीब हैं और ये लोग भी। वास्तव में हमारा असली दुश्मन कुन्दन नहीं है और कोई है जो हमें धर्म, संस्कृति और परम्पराओं के नाम पर गुमराह करके हमारी मेहनत लूट रहा है। हमारे गाढे पसीने की कमाई से उसकी चर्बी बढ़ती जा रही है। हमें उस दुश्मन को तलाशना है और उसकी सत्ता को ध्वस्त करना है।

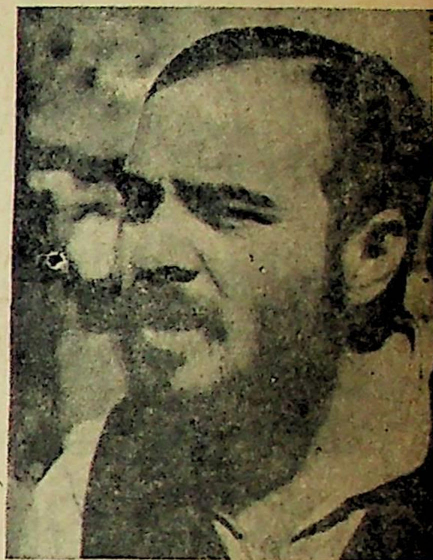
मांजी: (चीखती हुई) कैंपा बिटिया सम्हल कर····

(गोली चलने की आवाज, भीड़ में शोर)

कैंपा: मांजी, आपने मुझे क्यों बचाया ?

कुन्दन: मां···मां···· !

बंगला देश युद्ध में, युद्ध संवाददाता के रूप में एक नौजवान चे तल्खी के साथ उभरा। रेडियो, टेलीविजन तथा समा पत्रों में तेज तर्रार नाटकों व लेखों के माध्यम मे, राजस्थान एक युवा चेहरे ने सारे देश को प्रभावित किया। अ०भा० क्रान्तिकारी युवा संघ के अध्यक्ष के रूप में, व्यवस्था के विरुद्ध संघर्षरत एक क्रोधित चेहरा दिखाई देता है। वह चेहरा है दिल्ली के युवा पत्रकार रामशरण जोशी का। सम्प्रति का जन्म जयपुर के पास एक गाँव में कथित आजादी मिलने के कुछ वर्ष पूर्व हुआ था। किशोरावस्थ में ही आप घर के मोह से भाग खडे हुए। अंग्रेजी में एम.ए. क सघर्ष करते हुए अग्रणी पत्रकारों की श्रेणी में पहुंच गये हैं।



रामशरण जोशी

कैंपा: अब तो बुझ गई प्यास ? देखा इस अछूत अम्मा को जिसने अपनी जान देकर मेरी जान बचाई। खड़े क्यों हो ? कुन्दन को भी मार दो, जला दो इस परली बस्ती को।

मांजी: (बुझे स्वर में) बेटी कैंपा मुझे माफ कर दो। कुन्दन के कारण यह सब कुछ हुआ। बेटा कुन्दन हम लोगो की किस्मत में इसी तरह पिसना लिखा है।

कुन्दन: नहीं मां, संघर्ष तो अब चलेगा।

कैंपा: मांजी, असली लड़ाई तो अब होगी।

पति: कैंपा बिटिया !

कैंपा: क्यों बापू, अब तो पुण्य मिलेगा ना। एक अछूत को मार दिया। बहुत बड़ा पुण्य कमाया है।

पति: बेटी, मुझे माफ कर दे। कुन्दन की मां, हमें माफ कर दो, हम अंधकार में भटक रहे थे।

पत्नी: हां मांजी, आप महान हैं।

पति: हां मांजी वास्तव में आप महान हैं। कैंपा की जान बचाकर आपने सिद्ध कर दिया हम सब इन्सान हैं। हम एक ही पीड़ित बस्ती के लोग हैं। हमारा दुश्मन और ही कोई है।

पति: हमें उसे खोजना होगा।

मांजी: कैंपा के बापू, यह आपकी मेहरबानी है। कुन्दन प आप का ही साया है।

(शेषांश पृष्ठ १२ पर)

आजादी की लड़ाई का इतिहास ,भारतीय युवकों के दिल हिला देने वाले कारनामों से भरा पड़ा है। इस महान लड़ाई में हजारों युवकों ने अपनी आहुतियां दी हैं। इन लोगों की याद धीरे-धीरे मिटती जा रही है। गली कूचे में आज भी इनके दिल हिला देने वाले कारनामों का इतिहास छुपा पड़ा है। लेकिन इसे इन अन्धेरी गलियों से निकाल कर इतिहास की शक्ल कौन दे ? आजादी के लिए जो आहुतियां दी गई थी उनमें से एक है अमृतसर के एक खत्री परिवार का युवक रोशनलाल मेहरा। रोशनलाल मेहरा की कहानी आज तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत नहीं हुई। यह देश का दुर्भाग्य है। रोशनलाल मेहरा के एक साथी सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री शंभूनाथ आजाद से प्राप्त सामग्री के आधार पर यह सक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की जा रही है।

परिवारिक जीवन व शिक्षा

रोशनलाल मेहरा का जन्म अमृतसर के एक खत्री परिवार में सन् १९१४ संवत् १९७१ अगहन सुदी पूर्णमासी, दिन बुधवार को हुआ था। इनके पिता का नाम धनीराम तथा माता का नाम ललिता देवी था। इनके चार लड़के तथा दो लड़कियां थीं। इनके बड़े भाई श्री नन्दकिशोर हिन्दू मुस्लिम दंगे में मारे गए। शेष भाई तथा बहनें आज भी अमृतसर में रह रही हैं। वह मकान भी सुरक्षित है जिसमें रोशनलाल का जन्म हुआ था।

इनकी माता ललिता देवी चाहती थी कि देश में जो गुप्त क्रांतिकारी आन्दोलन चल रहा है, उसमें वे भी भाग लें। इसीलिए वे बंगाल की क्रांतिकारी "अनुशीलन समिति" से अपना सम्बन्ध बनाए हुए थी। वे चाहती थीं कि रोशनलाल भी बड़ा हो कर देश की आजादी के लिए लड़ी जा रही क्रांतिकारी लड़ाई में भाग लेकर दुश्मनों का मुकाबला करे। यह उनकी दिली इच्छा थी। ललितादेवी खुद भी क्रांतिकारी साहित्य पढ़ा करती थी तथा उन्हीं को कहानियों का रूप देकर बालक रोशनलाल को भी सुनाया करती थी। ललिता देवी ने क्रांतिकारियों को समय-समय पर आर्थिक सहायता भी दी। आजादी की क्रांतिकारी लड़ाई में जिसने भी थोड़ा सहयोग दिया है, उसे हमें आज सम्मान के साथ याद करना चाहिए। यह हमारा प्रथम व परम कर्तव्य है। ललिता देवी ने क्रांतिकारी आंदोलन में जो भी सहयोग दिया है उसे हमें भुलाना नहीं चाहिए।

रोशनलाल की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर के गवर्नमेंट कालेज में ही हुई। उन्होने उर्दू व हिन्दी में दसवीं कक्षा तक उक्त स्कूल में शिक्षा पाई। देश में क्रांतिकारियों का कार्य जोरों से चल रहा था। माँ के विचारों की छाप बेटे पर पूरी तरह पड़ी। आपने इसी धुन में स्कूल छोड़ कर सारा समय क्रांतिकारी कार्यों में लगाने का फैसला किया। १९२८ में इनकी माता ललिता देवी का देहान्त हो गया। जिस समय ललिता देवी का देहान्त हुआ, उस समय रोशनलाल की उम्र सिर्फ १४ वर्ष की ही थी।

क्रांति के पथ पर

१९२९ में बंगाल की 'अनुशीलन समिति' के सदस्य श्री दयानन्द पटेल अमृतसर में रह रहे थे। श्री पटेल ने ही शंभूनाथ आजाद से रोशनलाल को दल का सदस्य बना लेने की बात कही। १९३० से लेकर अक्टूबर १९३२ तक रोशनलाल का कार्यक्षेत्र अमृतसर ही रहा। इसी बीच पंजाब, संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) तथा बंगाल आदि के क्रांतिकारियों से बराबर संबंध बनाए रहे।

१९३१ में अमृतसर की एक गली में इन्होंने मकान किराये पर लिया। दिखने से ऐसा लगता था कि यह युवक संगीत आदि की शिक्षा में रत है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं थी। उन दिनों पुलिस बड़ा अत्याचार कर रही थी। इसी मकान में रोशनलाल और उमाशंकर ने यह फैसला किया कि अमृतसर पुलिस कोतवाली को बम से उड़ा कर बर्बर अधिकारियों को सचेत कर देना चाहिए। कार्यक्रमानुसार कोतवाली पर बम फेंका गया। इससे कोतवाली को काफी क्षति पहुँची। पुलिस पता नहीं लगा सकी कि यह कार्य किसने किया। लेकिन पुलिस पहले से अधिक सतर्क हो गई। दोनों साथी साफ बच गए।

क्रांतिकारी डकेती न डालें

सितम्बर १९३२ में विभिन्न प्रांतों के क्रांतिकारियों की एक बैठक अमृतसर में हुई। क्रांतिकारियों को हमेशा धन की जरुरत रहती थी। वे इस

क्रान्तिकारी शहीद

o राम्नसि

कमी को डकैतियां डाल कर पूरा करते थे। अम्बाला जिले में डाली एक डकैती की समीक्षा करते हुए रोशनलाल ने कहा—"इस डकैती में दो आदमियों का बलिदान व्यर्थ में गया और धन भी पर्याप्त नहीं मिला। क्रान्तिकारियों के जीवन में अब तक जितनी भी राजनैतिक डकैतियां डाली गई हैं, उनके नतीजे व प्रतिक्रियाओं को देखते हुए, अपने सम्पर्क के सभी साथियों को कठोरता से यह हिदायत दी जाए कि वे भविष्य में कोई डकैती नहीं डाले और न वे डकैतियों के कार्यों में सहयोग करे।" रोशनलाल के इन विचारों को सभी सदस्यों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

मद्रास में क्रांतिकारी संगठन

इसी मीटिंग में रोशनलाल ने मद्रास में क्रान्तिकारी आन्दोलन को संगठित करने के बारे में अपने विचार रखते हुए कहा "मद्रास प्रांत में लम्बे समय से कोई भी क्रांतिकारी संगठन कार्य नहीं कर रहा है, फलतः वहां के शासक बड़े चैन और घमण्ड के साथ बार-बार यह एलान करते हैं कि उनके प्रांत की जनता सबसे अधिक राजभक्त है। यह हमारे लिए चुनौती और लज्जा की बात है। इसीलिए हमें शीघ्र मद्रास प्रांत में पहुंचकर कार्य करना चाहिए। मद्रास प्रांत में पार्टी संगठन तथा पॉलिटिकल 'एक्शनों' के लि

मैं अपने घर से दूंगा।" रोशनलाल की यह राय सर्वसम्मति से मान ली गई। निश्चय ही उनकी यह राय महत्वपूर्ण थी, क्योंकि मद्रास प्रांत था और उसको आंच देना ही था।

उपरोक्त मीटिंग के बाद रोशनलाल ने शंभूनाथ आजाद को सूचित किया कि वे गोल बाग में मुझे मिल जावें। रोशनलाल के पिता की कपड़ों की एक दुकान थी। सभी लोग चाबियां इन्ही को दे कर कहीं चले गए थे। रुपया लेने का इससे अच्छा समय फिर शायद कभी हाथ न आता। रोशनलाल ने दुकान में से ५ हजार आठ सौ रुपये निकाल लिए। यह रुपये ले रोशनलाल गोल बाग में आए, जहां शंभूनाथ आजाद पहले से ही इनका इंतजार कर रहे थे। रोशनलाल ने यहां शंभूनाथ आजाद को मद्रास दल की स्थापना के लिए ५००० रु० दे दिए। शेष रुपया उन्होंने अपने पास रख लिया। इस घटना के बाद वे अपने घर से हमेशा के लिए चले गए। अब वे फरारी का जीवन बिता रहे थे। उपरोक्त घटना की गूंज शहर में जल्द ही फैल गई। पुलिस व गुप्तचर विभाग आश्चर्य में पड़ गया।

रोशनलाल के कहे मुताबिक शंभूनाथ आजाद ने उक्त रुपया लाहौर के श्री रामविलास शर्मा के पास आवश्यक हिदायत दे कर रख दिया। इस के बाद रोशनलाल श्री सीतानाथ डे के साथ दिल्ली आ गए। यहां शंभूनाथ आजाद ने एक मकान में दोनों को ठहरा दिया। इन दोनों के दिल्ली आने के तीन दिन बाद ही रोशनलाल के पिता और उनके साथ में अमृत-

रोशनलाल मेहरा

...गले

सी० आई० डी० वाले भी दिल्ली आ पहुँचे। उन्हें कुछ हाथ नहीं लगा। दिल्ली से रोशनलाल, सीतानाथ तथा शंभूनाथ आजाद मद्रास पहुँच गए। नित्यानन्द वात्सायन पहले ही मद्रास पहुंच चुके थे। मद्रास से तीनों ऊटकमण्ड गए तथा बाद को अपना कार्य आरंभ करने के लिए शहर आ गए। मद्रास आकर इन्होंने अपना केन्द्र कायम किया। इसी बीच खबर मिली कि बंगाल में पुलिस ने क्रांतिकारियों के कुछ गुप्त कागजात प्राप्त कर लिए हैं। इस खबर से इन्हें चिन्ता होना स्वाभाविक था। इस घटना के कारण सीतानाथ डे को कुछ दिनों के लिए बंगाल भेजा गया।

गिरफ्तारी के लिये पुरस्कार घोषित

इसी बीच रोशनलाल कई बार दिल्ली, पंजाब तथा ग्वालियर आए। इस वक्त तक दिल्ली तथा पंजाब से उनके लिए वारन्ट निकल चुका था। पुलिस ने इनकी गिरफ्तारी के लिए ५०,००० रु० का पुरस्कार घोषित किया। देश के विभिन्न स्थानों तथा रेलवे स्टेशनों पर रोशनलाल के बड़े-बड़े फोटो पहचान के लिए लगाये गये। इन सब खतरों के बावजूद वे अपने सारे कार्य निडर होकर करते रहे। वे जहां तहां घूमते रहे, लेकिन पुलिस उन्हें न पकड़ सकी।

अन्तरप्रांतीय षड्यंत्र केस, कलकत्ता के कुछ फरार साथियों को लाहौर में रामविलास शर्मा के यहां ठहरा रखा था। एक दिन रात के वक्त रामविलास शर्मा के यहां पुलिस ने छापा मार कर बंगाल के युवकों तथा पिस्तौल आदि हथियार ले लिए। रामविलास की पिटाई की गई। उसने डर से सारा भेद पुलिस को दे दिया। वह सरकारी गवाह बन गया। साथ ही मद्रास के लिए जो रुपया रखा था वह भी जाता रहा। इस घटना से दक्षिण भारत में पार्टी को काफी क्षति हुई और सभी साथियों पर आर्थिक संकट आ पड़ा।

डाके का विरोध

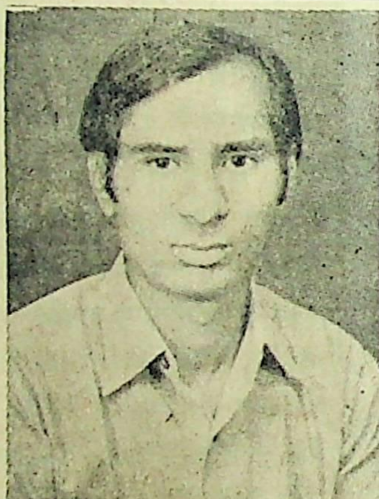
१९३३ के शुरु में बंगाल का गवर्नर मद्रास आया। उसे मार डालने की योजना बनाई गई। लेकिन यह योजना कार्यान्वित न हो सकी। अप्रैल १९३३ में रोशनलाल तथा इन्द्रसिंह मुनी, धन की व्यवस्था करने पंजाब चले गए। वे जल्द ही लौट आने की कह गए थे। कई दिन होने पर भी ये लोग पंजाब से धन की व्यवस्था कर के नहीं लौटे। यहां भी हालत खराब थी। मद्रास में आर्थिक संकट दूर करने के लिए नित्यानन्द आदि कुछ साथियों ने ऊटी बैंक को लूटने का फैसला किया। शंभूनाथ आजाद इसके पक्ष में नहीं थे। २५ अप्रैल १९३३ को नित्यानन्द तथा रत्नम के साथ ऊटी जाने ही वाले थे कि पंजाब से रोशनलाल वापिस आ गए। रोशनलाल रुपया लाने में असमर्थ रहे थे। बन्तासिंह ने रोशनलाल को ऊटी बैंक लूटने के निर्णय से अवगत कराया। इस पर रोशनलाल ने कहा "बैंक डकैती करने का फैसला निश्चय ही अफसोसजनक और घातक है। जो काम हमें नहीं करना है, वही आप करने जा रहे हैं। दक्षिण भारत में अपने कार्य का प्रारंभ, जिस बिन्दु से हम करने का संकल्प कर के आए थे, वहां से उसका श्रीगणेश होने नहीं जा रहा है।"

रोशनलाल को छोड़ कर अन्य साथी ऊटी के लिए रवाना हो गए। डकैती सम्पन्न हो गई। वहां से साथी मद्रास आ गए। ३० अप्रैल १९३३ को समाचार मिला कि नित्यानन्द तथा खुशीराम मेहता इरोड स्टेशन पर पुलिस से भिड़ते हुए पकड़ लिए गए हैं। नित्यानन्द ने पुलिस को सारा भेद बता दिया। इस खबर के मिलते ही, शंभूनाथ आजाद, रोशनलाल तथा अन्य साथी ने रायपुरम क्षेत्र के मकान को छोड़ कर तम्बू चट्टी स्ट्रीट के नए मकान पर आ गए।

बम परीक्षण में शहीद

यहां पर रोशनलाल ने एक छोटा बम परीक्षण के लिए तैयार किया। १ मई को रोशनलाल तथा साथियों ने तय किया कि बम को रात के साढ़े आठ बजे मद्रास बन्दरगाह की पूर्व दिशा में, पेट्रोल की टंकियों से दो फर्लांग आगे, रामपुरम क्षेत्र

के समुद्र तट पर बम का परीक्षण करेंगे। परीक्षण के लिए रोशनलाल, शंभूनाथ आजाद, गोविन्दराम वर्मा, इन्द्रसिंह मुनी आदि लोग गए। परीक्षण रोशनलाल को करना था। बाहर का कोई व्यक्ति न आ सके, इसके लिए शंभूनाथ आजाद, गोविन्दराम वर्मा तथा इन्द्रसिंह मुनी तीनों ओर दूर तक खड़े हो गए। १ मई १६३३ की भयानक काली रात थी। समुद्र का पानी भयंकर गर्जना कर रहा था। रोशनलाल बम लेकर समुद्र की ओर बढ़े। थोड़ी ही देर में जोर से धमाके के साथ रोशनी चमकी और चारों ओर धुआं फैल गया। तीनों साथी रोशनलाल के वापिस आने का इंतजार कर रहे थे। भीषण विस्फोट की आवाज के कारण रामपुरम क्षेत्र की पुलिस और जनता उस तरफ बढ़ी। जब मकान पर तीनों साथी पहुंचे तो


रामसिंह बघेले

क्या सत्ता का हस्तान्तरण स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले लोगों के हाथों में हुआ? यदि नहीं तो क्या राष्ट्रद्रोहियों के हाथों में हुआ? पच्चीस वर्ष बाद भी क्रांतिकारियों को भूख से तड़पते देख कर, यह सवाल रामसिंह बघेले को परेशान करता है। इसी कारण आपने मात्र क्रांतिकारियों पर लेख लिखे हैं, जो देश की सभी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। एक पुस्तक 'हमारे क्रान्तिकारी' मन्मथनाथ गुप्त की भूमिका के साथ अप्रकाशित पड़ी है। सम्प्रति का जन्म २५ अक्टूबर १६४८ को ग्वालियर में हुआ था। प्रमुख क्रांतिकारियों के सम्पर्क व उनके दर्द ने आपको लिखने की प्रेरणा दी। कुछ प्रेरणा बड़े भाई की पुस्तकों की दुकान पर एकत्रित होने वाली साहित्यकारों की मण्डली ने भी दी।

रोशनलाल किसी के साथ नहीं थे। यह मालूम होते ही कि रोशनलाल वापिस नहीं आया है, इन्द्रसिंह मुनी मद्रासी पोशाक पहनकर घटनास्थल पर पहुंचे। इन्द्रसिंह मुनी ने आकर खबर दी कि रोशनलाल की परीक्षण करते वक्त मृत्यु हो गई। उनका शव रामपुरम क्षेत्र के गिरजाघर के आगे पुलिस के सख्त पहरे में पड़ा हुआ था। बाद को मालूम हुआ कि पैर फिसल जाने के कारण रोशनलाल के हाथ में ही बम फट गया। २ मई १६३३ को मद्रास के अंग्रेजी अखबार इण्डियन एक्सप्रेस ने समाचार देते हुए लिखा "शेरदिल युवक की बम विस्फोट से दर्दनाक मृत्यु - मद्रास के जनरल हास्पीटल में यह युवक बार-बार पानी मांगता रहा, किन्तु अधिकारीगण यही कहते रहे कि अपना और अपने मित्रों का पता बतला दो, तभी उपचार वगैरा देंगे। मगर उस वीर युवक ने अन्तिम दम तक कोई भेद नहीं दिया। रात के बारह बजे वह सिंह हृदय युवक मर गया।"

इस तरह रोशनलाल मेहरा ने देश के लिए अपनी आहुति दी। उनके दिल में शुरु से ही ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने की प्रबल इच्छा थी। जब से रोशनलाल क्रांतिकारी दल में शरीक हुए थे तभी से उन्होंने खाट पर सोना तथा अच्छे कपड़े और अच्छा खाना खाना बन्द कर दिया था। उनका कहना था—"गरीब भारत में, हम क्रांतिकारियों को उतना ही खाना पहनना है, जिसके बिना जीवित रहना संभव न हो।"

इस तरह निरन्तर संघर्ष करते हुए रोशनलाल १ मई १६३३ को शहीद हो गए। रोशनलाल के इस बलिदान को क्या हमें भूला देना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि हमारी आजादी बरकरार रहे। हमारी पीढ़ी बरबाद न हो तो हमें रोशनलाल जैसे अनगिनत शहीदों को याद करना ही पड़ेगा। शहीदों को भूलाकर हम अपने देश की जनता को सुखी, सम्पन्न नहीं बना सकते। शहीदों का स्मरण अति आवश्यक है।

साहित्य संगम, नई सड़क, लश्कर, ग्वालियर-१

ये बस्ती, ये लोग

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

पतिः आप चिन्ता मत करें। कुन्दन अब हमारा लड़का है। अब हम एकजुट होकर असली शत्रु से लड़ेंगे, जिसने हमें अछूत बना दिया है।

पहलाः कैंपा बिटिया, गोली चलाने वाले का पता चल गया है।

कैंपाः कौन है रामू काका?

पहलाः चौधरी साहब का दलाल। लोग उसे पकड़ कर ला रहे हैं।

कुन्दनः माँ, मैं तुम्हारी शपथ लेता हूँ। हम मिलकर असली दुश्मन से लड़ेंगे और उसकी सत्ता को मिटा देंगे।

कैंपाः हां मांजी, मैं विश्वास दिलाती हूं। यह संघर्ष जारी रहेगा। अब हमने असली दुश्मन को पहचान लिया है। ❀ **(समाप्त)**

१०८, राउज एवन्यू, नयी दिल्ली

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस अंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें, जिससे आपकी रुचि जान कर तथा आपके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए हम आपके विशेष आभारी होंगे।

—सम्पादक

निजी महाविद्यालयों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये

o अरविन्द 'आंसू'

निजी शिक्षा संस्थायें क्या हैं? धर्म और जाति के नाम पर होने वाले दंगा-फसादों का अखाड़ा! राष्ट्रीय एकता के प्रतिकूल निजी स्वार्थों की पूर्ति का साधन और...। ये ही अनेक सारे सवाल थे, जिन्होंने मुझे विवश किया कि मैं अध्यापकों व छात्रों से बातचीत करके पता लगाऊं कि क्या वे चाहते हैं कि निजी महाविद्यालयों का राष्ट्रीयकरण हो जाये अथवा उन्हें मानवीय अनुभूतियों को खोखला करने वाली इन विषैली शिक्षण संस्थाओं का वर्तमान स्वरूप ही 'प्रिय' है।

सर्वप्रथम मैंने हरयाणा निजी महाविद्यालय प्राध्यापक संघ के भूतपूर्व मंत्री व पंजाब विश्वविद्यालय सीनेट के सदस्य **तेजासिंह** से सवाल किया, तो वे सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे। उनका मत था कि अगर शिक्षा का राष्ट्रीयकरण नहीं हुआ तो राष्ट्रीय एकता अनेकता में बदल कर उस सीमा तक पहुँच जायगी, जिसकी कल्पना भी भयावह है। इसमें सरकार कोई बहानेबाजी नहीं कर सकती। अगर सरकार चाहे तो एक दिन में वैधानिक बाधायें समाप्त कर, निजी महाविद्यालयों को अपने हाथ में ले कर, सारे देश में एक शिक्षा नीति लागू कर सकती है। कठिनाई कोई नहीं है, कठिनाई का बहाना धोखा देने की बात है।

पंजाब विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर केन्द्र रोहतक के निर्देशक **डॉ० जयदेव वर्मा** भी प्रो० तेजासिंह के मत से सहमत थे। उनका कहना था कि आज जाति व धर्म के नाम पर अनेक शिक्षण संस्थायें कार्य कर रही हैं। इनमें से अधिकांश की शिक्षा क्षेत्र में भूमिका ने राष्ट्रीय एकता को भारी धक्का पहुँचाया है। जाति विशेष के नाम पर चल रही संस्था में एक जाति का प्रभुत्व होता है, जिससे जातिगत विद्वेष को बढावा मिलता है। उन्होंने एक उदाहरण देते हुए बताया कि एक बैठक में जब उन्होंने कहा कि जाति पर नाम नहीं रखा जाये, तो उत्तर मिला यदि हम यह नाम नहीं रखेंगे, तो चन्दा कौन देगा?

डॉ० वर्मा ने विषय में और गहरा पैठते हुए, अपना दृढ़ मत व्यक्त किया कि इनमें से कुछ संस्थायें स्वार्थी राजनीतिज्ञों के राजनैतिक जीवन को सुदृढ़ करती हैं। अतः यदि राष्ट्र को एक रखना है, तो सरकार तुरन्त निजी महाविद्यालयों का राष्ट्रीयकरण करे।

इसके बाद मैंने रोहतक के तीन निजी महाविद्यालयों के प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं से उनके विचार जानने चाहे। वैश्य कॉलेज के राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक **नाहरचन्द जैन** का मत था कि राजनीतिज्ञों व धार्मिक संगठनों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थायें राष्ट्रीय एकता के लिये हानिकारक सिद्ध हुई हैं। उनका मत था कि सरकार को बारी-बारी से निजी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों का राष्ट्रीयकरण करना चाहिये। जैसे पहले प्रोफेशनल कॉलेज, फिर 'सिक' कॉलेज और फिर अन्य।

छोटूराम कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्राध्यापक **करणसिंह** का कहना था कि शिक्षा की नीति एक हो। यह राज्य सरकार का मामला न हो कर केन्द्र का मामला होनी चाहिये। शिक्षा को गलित साम्प्रदायिकता के दलदल से निकाल कर, स्वच्छ सुनहले उपवन में पलने दें, यह हमारा कर्त्तव्य है। निजी महाविद्यालयों की समाप्ति से असमानता व निजी प्रभुत्व के नाम पर जातिगत नियुक्तियों का षड्यंत्र समाप्त होगा व योग्यता को महत्व मिलेगा। सारे देश में एक ही पाठ्यक्रम, पुस्तकें, शिक्षा स्तर, प्राध्यापकों का वेतन व अध्ययन शुल्क होगा। इससे लोकतंत्र में समानता के सिद्धांत को दृढ़ता मिलेगी। उन्होंने निजी महाविद्यालयों के राष्ट्रीयकरण में, आर्थिक समस्या की बाधा के प्रचार को, स्वार्थी तत्वों का षड्यंत्र बताया।

वैश्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन में प्राध्यापिका **कु० मधु बंसल** ने बिना लागलपेट के एक पंक्ति में ही अपना मत व्यक्त कर दिया—यदि वास्तव में सरकार समाजवाद की ओर बढना चाहती है तो उसे बैंकों, बीमा कम्पनियों, यातायात और अनाज व्यापार के राष्ट्रीयकरण की भांति शिक्षा का भी राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिये, ताकि रोज-रोज होने वाले दंगा-फसादों से विद्यार्थी वर्ग की शिक्षा को नुकसान न हो और शान्ति पूर्वक हम सब देश की उन्नति में लगे रहें, एकता के धागे में बंधे रहें।

साक्षात्कार के मध्य, एक और निजी महाविद्यालय कलानौर के सतजिन्दा कल्याण कॉलेज की प्राध्यापिका **निर्मल बिन्दल** से भी रोहतक में भेंट हो गयी। मैंने मौका छोड़ना उचित नहीं समझा और अपना प्रश्न उनके सामने प्रस्तुत कर दिया। उनका कहना था—निजी शिक्षा संस्थाओं के स्वार्थपूर्ण व्यवहार, धर्म तथा जाति के नाम पर दी जाने वाली सुविधाओं के बंटवारे से, शिक्षक वर्ग ही नहीं विद्यार्थी वर्ग भी तंग आ गया है और आज एक नई जागृति लिये शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की मांग को मनवाने के लिये अग्रसर हुआ है। शिक्षा का राष्ट्रीयकरण एकता की भावना को जागृत करने में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

कु० बिन्दल से भेंट करने के उपरान्त मैं रोहतक के कुछ छात्रों से मिला। मेडिकल कॉलेज के अन्तिम वर्ष के छात्र व 'वर्त्तिका' के सह सम्पादक **श्याम 'अकेला'** की समझ में नहीं आ रहा था कि सरकार ने अभी तक शिक्षा का राष्ट्रीयकरण क्यों नहीं किया ! मेडिकल कॉलेज के ही छात्र **विजय शर्मा** का कहना था कि शिक्षा वह विभाग नहीं, जिसे जो चाहे अपने हाथ में ले ले और दुकानदार की तरह लाभ के लिये जुट जावे। राजकीय महाविद्यालय के बी. ए. द्वितीय वर्ष के छात्र **दिनेश शर्मा** ने चुनौतीपूर्ण शब्दों में कहा कि यदि हम शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की मांग को झुठलायेंगे, तो इतिहास इस बात का गवाह रहेगा कि हम कायर थे। वैश्य कॉलेज के नेता **जयपाल** ने शिक्षा के राष्ट्रीयकरण की मांग को, मांग नहीं वरन् सरकार को सही पथ प्रदर्शन करने हेतु सलाह बताया।

इस प्रकार मैं प्राध्यापकों व छात्रों से निजी महाविद्यालयों के राष्ट्रीयकरण के विषय पर साक्षात्कार लेने के उपरान्त, इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि वे इससे भी एक कदम आगे सारे देश की शिक्षा व्यवस्था का राष्ट्रीयकरण चाहते हैं, जिससे एक शिक्षा नीति हो, एक शिक्षा लक्ष्य हो और हम जातिगत भेद-भाव से बहुत दूर, एकता के सूत्र में बंधे राष्ट्र के उत्थान में लगें। ✱

वैश्य कॉलेज स्टाफ कॉलोनी, रोहतक

कैदियों का राष्ट्रगीत

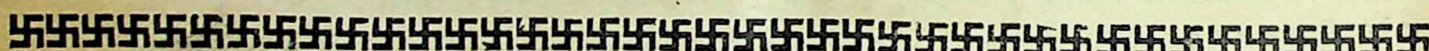
o ओम्न सैनी

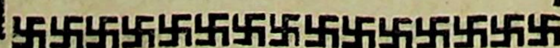
पोथों में बद न्याय
आजाद कराओ आओ !
मौत से पहले
अलसायी जनता को
बेचैनी का मंजर दिखाओ
आओ !

संसद के प्रजातन्त्र की लाश
दफना दिये जाने से पहले
कफन उठाओ,
"न्याय द्वार" की सच्ची कथा
सुनाओ आओ !

आओ, मौत हो गई
इन्सानियत की,
जागो और जगाओ आओ ! ✱

इण्डियन कॉफी हाउस, जयपुर





कला

कला को आम जनता से सम्बद्ध रहना है

O हरिप्रकाश त्यागी

अपनी बात को इस प्रकार कहना ज्यादा बेहतर होगा, अगर हम आरम्भिक समय से ही शुरू करें, जहां तक कला, संस्कृति और देश का प्रश्न है, वह उसी देश की भौगोलिक और आर्थिक स्थितियों से गहरा सम्बन्ध रखती है। इन्ही स्थितियों के बीच मानव ने एक आकार लिया, यही आकार मानव समाज कहलाया। प्राचीन मनीषियों ने समय के अनुसार कुछ आचार व्यवहार सम्बन्धी नियम और सिद्धांत बनाये। तब यह कहना कि किसी देश की कला समाज के आचार विचार, व्यवहार, राजनीति, विज्ञान और जीवन दर्शन का यथार्थवादी चित्रण ही कला है तो गलत न होगा, परन्तु प्राचीन समय के सामाजिक चेतना विचार, धर्म, राजनीति, कला और संस्कृति में कुछ इस प्रकार घुला मिला कर आज हमारे सामने रखे जाते हैं कि हम जान नहीं पाते कि कला और संस्कृति में राजनीति कहां से आ गई और हम कला को गलत अर्थों में समाज से जुड़ा हुआ मानते रहते हैं,जबकि प्राचीन भारतीय कला में ऐसी कोई भी बात नजर नहीं आती, जहां भारतीय कला बड़े पैमाने पर भारतीय जन समुदाय से सम्बन्ध रखती हो। उदाहरण के तौर पर अगर मैं कहूं या सोचूं, इन्ही राजनैतिक सम्बन्धों और धार्मिक स्थितियों के विषय में, तो वह इस प्रकार होगा— किसी दार्शनिक ने प्राकृतिक भय और प्राकृतिक रहस्यों के विषय में सोचा और व्यक्त किया, वह उस समय का बुद्धिजीवी ही होगा, उसके विचारों का सामान्य समाज पर गहरा असर पड़ा। भय से बचने के लिये उसने ईश्वर की स्थापना की जो प्रत्येक देश में हुई। भारतीय परिवेश के अनुसार या पद्धति के अनुसार नेताओं या समूह के अगुआ मनुष्यों की गिनती भी देव पुरुष या ईश्वरीय अवतार के नाम से होनी शुरू हो गई, जबकि उन अगुआ किस्म के लोगों ने भी काफी बड़े जन समुदाय को गुलाम रखा। इन मनुष्यावतारों के कारनामों या विजय की लड़ाइयों को, कहानियों और पौराणिक कथाओं में सच और झूठ को मिला कर सुरक्षित रख लिया गया। यही कहानियां और कथाएं जन साधारण में भय आतंक फैलाने का भी काम करती रहीं। इस तरह जन शक्ति के अगुआ किस्म के लोगों ने एकाधिकार की तरह शक्ति का प्रयोग कर, सामान्य जन के लिये स्वयं को आराध्य और दिव्य पुरुष बना लिया।

समय-समय पर इनकी कथाएं साधारण जन समूह में प्रचारित होती रहीं और इसी सामाजिक चेतना को कलाकार या चित्रकार ने अपना प्रेरणा श्रोत बनाया। चित्रकार और कलाकारों ने कथाओं को अपनी बुद्धि कल्पना से सांकेतिक भाषा तथा प्रतीकों का सहारा लेकर चित्रित किया? इन्ही चित्रों की आज हम पूजा करते हैं साथ ही प्रतीकों का सूक्ष्मतर अध्ययन! परन्तु आज इस वैज्ञानिक समाज में यह सब प्रतीक हमें कहां तक प्रभावित करते हैं, देखना यह भी है! और मुझे लगता है विज्ञान का प्रभाव इस युग के प्रत्येक मनुष्य पर पड़ा है। वह सब प्रतीक अभी भी सिर्फ गांवों में कुछ विशेष त्यौहारों पर दिखाई देते हैं जिसे हम लोक कला के नाम से जानते हैं।

इस प्रकार आरम्भ में ही भारतीय कला, भारतीय दर्शन की तरह यथार्थता को छोड़ कर अलौकिकवाद, आदर्शवाद और रहस्यवाद में घुस गई! कलाकार बेचारा तब कर ही क्या सकता था। उसको वही चित्रण करना पड़ा जो धर्माधिकारियों द्वारा बनाये समाज में प्रचारित था। उन सिद्धांतों की महत्ता समयानुसार सामाजिक जीवन में रही या नहीं, यह एक अलग बात है। परन्तु धर्म प्रवर्त्तकों ने धर्म से आस्था बनाए रखने के लिये चित्रकारों और कलाकारों की सहायता जरूर ली। इस प्रकार चित्रकार सामाजिक चेतना को चित्रित करते-करते स्वयं तथा समाज को ऐसे लक्ष्य की ओर ले गया, जो रहस्यमय और अन्ध विश्वासों से परिपूर्ण था। यह कलाकार ने स्वयं ही नहीं किया धर्म प्रवर्त्तकों का समाज पर प्रभाव और सामाजिक या जन चेतना का कलाकार मस्तिष्क पर प्रभाव तथा समकालीन राजा और महाराजाओं का दबाव कलाकार मन पर सदैव रहा। तब भी चित्रकार या कलाकार अपने समकालीन दार्शनिकों और धर्माधिकारियों से पीछे नहीं रहा। जहां भगवान बुद्ध ने निर्वाण की कल्पना की वहीं चित्रकारों और कलाकारों ने उसी बौद्धिक स्तर पर पत्थरों और भित्ति चित्रों में उसे चित्रित कर सामने भी रखा। भगवान बुद्ध ने समयानुसार जो भी सिद्धांत और नियम जनता के सामने रखे वे ठीक थे, क्योंकि राजकुमार सिद्धार्थ को सामन्तवादी क्रूरता, गुलामी और समाज को पीड़ित तथा दुःखी देख कर ही राजसिंहासन और भोग विलास का जीवन छोड़ने की प्रेरणा मिली थी। यह राजकुमार सिद्धार्थ का एक क्रांतिकारी कदम था, जो एक बहुत बड़े सामाजिक समुदाय को खुशहाल बनाने के लिये उठाया गया था। तब राजकुमार सिद्धार्थ भारतीय समाज में साधारण जनता के आदमी होने पर और समाज में फैली कुरीतियों अन्ध विश्वासों

और अन्य बुराइयों का सामाजिक विश्लेषण कर के (जिसको हम तपस्या भी कह सकते हैं) अन्ध विश्वास 'मोक्ष' और कुछ सिद्धांत जनता को खुशहाल बनाने के लिए समाज में प्रचारित कर गये ! बाद में कुछ सामन्तवादी धर्माधिकारी ने जनता को खुशहाल बनाने और मुक्ति तथा गुलामी से बचाने वाले सिद्धांतों को, अपनी सुविधाओं और अपनी मान्यताओ के कारण जन साधारण से दूर अमूर्तवाद और रहस्यवाद की ओर ले गये या कहना चाहिये जो धर्म प्रवर्तक थे वे जनता के हित के लिये विचार करते थे। राजनैतिक और अपने धर्म समुदाय सम्बन्धी कुछ नियम बनाते थे, परन्तु सामन्तवादियों और इसी तरह के अन्य तत्वों ने समाज की एक इकाई को उन सिद्धांतों के लाभ से वंचित कर दिया और धर्म को वह फूट डालने व अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए प्रयोग करते रहे। उदाहरण के तौर पर कबीर हिन्दू और मुसलमान दोनों ही धर्मों का विरोध करते थे। उन्होंने जन कवि के तौर पर प्रसिद्धि पाई और जन भाषा में दोनों ही धर्मों पर करारी चोट की, परन्तु आज कबीर को भी रहस्यवादी बना कर, जन साधारण से दूर कर दिया गया। यह सब अपनी सत्ता और शक्ति को बरकरार रखने के लिये किया जाता रहा है।

ठीक इसी प्रकार से कि भगवान बुद्ध द्वारा अपने को चित्रित करने पर पाबन्दी लगाने के बावजूद भी उन को चित्रित किया गया। कारण सिर्फ यही रहा कि रहस्यवाद दर्शन और अमूर्तवाद की ओर बढ़ते हुए धर्म के कारण साधारण जन की आस्था धर्म से उठती गई और इस आस्था को सन्तुलित समाज में सदैव बनाए रखने के लिए भगवान की निषेधाज्ञा के बावजूद चित्रों और मूर्तियों की स्थापना हुई, परन्तु यह कला भी जन साधारण चेतना से दूर की चीज साबित हुई। धर्म के रहस्यीकरण और अमूर्तता को जन साधारण के लिए चित्रित करने के लिए फिर नये प्रतीकों और संकेतों को आधार बनाया गया। समाज की एक बड़ी इकाई ने इसको समझने से इन्कार कर दिया, क्योंकि रहस्यवादी प्रतीक अलौकिक रंग, अमूर्तवाद चित्रण के धर्म के साथ विकसित होने के साथ-साथ ही, कलाकार का अपना व्यक्तित्व और दर्शन, अलौकिक मुद्राएं, धर्म, संस्कृति भी कला में संजोई होती हैं जो आज भी एक साधारण आदमी से दूर की चीज है, क्योंकि कला में साधारण आदमी से दूर की समझ का सरलीकरण, जिसकी आज भी आवश्यकता है, नहीं होता। कला को अलौकिकवाद और रहस्यवादी बनाए रखने के लिये सामन्तवाद का एक ही लक्ष्य होता है जो आज भी उसी रूप में मान्य है कि अलौकिक शक्तियां या रहस्यवादी शक्तियां कभी भी मनुष्य को मुक्त करने के लिए नहीं होती, बल्कि सशक्त रूप से गुलाम या नष्ट करने के लिए होती हैं।

अजन्ता और एलोरा कालीन कला सिर्फ मनोरंजन के लिए रची हुई कला है। राजाओं और महाराजाओं ने अपने मनोरंजन और प्रसन्नता तथा भव्यता हेतु इनका निर्माण कराया था। यहां पर चित्रित की गई नारियां समकालीन समाज की साधारण नारी नहीं है। उसके अलौकिक सौन्दर्य वस्त्राभरण की भव्यता यानि सब कुछ राजसी है। यह कहना गलत न होगा कि तब चित्रकार राजाओं का खरीदा हुआ दास होता था, जिस को दरबार और राजशाही सामन्तवादी स्त्रियों से अलग हट कर साधारण समाज की ओर देखने का समय नहीं था और वह जो देखता था वही चित्रित भी करता था।

अब स्थितियां बिल्कुल बदल गई हैं। विज्ञान और वामपंथी भौतिकवादी दर्शन ने जीवन सच्चाइयों से काला पर्दा उठाया है। अब चित्रकार अगर सामाजिक चित्रकार या जनवादी कलाकार है तब वह वर्ग चेतना के मूल और यथार्थ में घुस कर अपने कर्त्तव्य को समझ कर चित्र की रचना करे। उसको अपने दर्द, संघर्ष और पीड़ा को सामाजिक दर्द, संघर्ष और पीड़ा नहीं बनाना है बल्कि सामाजिक दर्द, संघर्ष और पीड़ा को अपनी समझ कर अभिव्यक्ति देनी है। अभिव्यक्ति के साथ-साथ शोषित समाज को निष्ठा पूर्वक चित्रों द्वारा भी जागृत करना है। चित्रकारों को मजदूरों, किसानों या अन्य मेहनतकश लोगों के साथ सहानुभूति रखकर चित्रित करने की कतई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस तरह के चित्र जो वर्ग खरीदता है वह चित्रों को सिर्फ मनोरंजन या एक चित्रण मात्र ही समझता है या मजदूर किसान एक ऑब्जक्ट भर रह जाते हैं। इसलिए मजदूरों, मेहनतकशों और किसान को सहानुभूति न देकर चित्रों द्वारा संघर्ष की ओर अग्रसर करना है।

दूसरे महायुद्ध के बाद मानव सम्बन्धों पर प्रभाव, युद्धनीति, विनाश और मानवता की बर्बर शक्तियों के विरुद्ध पाब्लो पिकासो जैसे चित्रकार ने यह जानते हुए भी कला बर्बर शक्तियों के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती, समाज के भीतर एक अलग स्वतंत्र मोर्चा नहीं खोल सकती आवाज उठाई थी। पिकासो का यह कहना कहां तक सत्य है यह देखना जरूरी हो गया ? यह बात राजनैतिक कारणों और समाज में प्रचलित शिक्षा के आधार पर सामाजिक बौद्धिक स्तर से सम्बन्ध रखती है। जोन मीरो ने युद्ध के टूटते बिखरते सम्बन्धों को भी चित्रित किया। जर्मन चित्रकार फर्नेन्द्र लेजे ने आज के वैज्ञानिक समाज, मशीन और मनुष्य को एक साथ चित्रित कर के, मशीन और मनुष्य द्वारा प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। जर्मन चित्रकार ओरोजो ने भी क्रान्तिकारियों, कैदियों की यातनाओं और टूटती आशाओं को कुछ इस प्रकार अभि-

व्यक्ति दी कि दर्शक क्रांतिकारियों और कैदियों के साथ सहानुभूति न रख कर यातनाओं के कारणों को जान कर, उनके विरुद्ध कुछ करने का साहस कर सकता हैं। अमरीकी चित्रकार बेन शान ने चित्रकार और समाज के कुछ नये सिद्धांत बताते हुए, यथार्थवादी समाज में जीना सिखाया। वे पूंजीवादी समाज में फैली कुरीतियों पर फन्तासी शैली में गहरी चोट करते हैं। यही कारण है कि अमेरिका उनको मान्यता नहीं देता। इन सब चित्रकारों में मैक्सिकन चित्रकार तमायों ने और डिगो रिवेरा ने सबसे क्रांतिकारी ढंग से साम्राज्यवादी सरकार के विरुद्ध जो चित्र बनाए, उन्होंने सरकार को हिला दिया। युद्ध के बाद विश्व के इन प्रसिद्ध चित्रकारों ने समाज में क्रान्ति का आह्वान किया। समाज को यथार्थ से जी कर उसका सिर्फ चित्रण ही नहीं किया, बल्कि जनता को कुछ करने के लिए प्रेरित भी किया। युद्ध से पहले यूरोप में जहाँ कला सिर्फ राजभवनों अर्द्धनग्न यूरोपियन सुन्दरियों, सेवों, बोतलों और सन्तरों सम्बन्ध रखती थी। कला में वस्तु चित्र और अचल जीवन सिर्फ शयन कक्षों और अतिथि कक्षों में सज्जा पूर्ण नमूने तक ही सीमित रह गया था इन्हीं कारणों से वान गाग जैसे चित्रकार ने आत्महत्या की, क्योंकि वह इस तरह के वस्तु चित्रण से कला को निकाल कर साधारण समाज में ले आया था। उसके चित्रण को बुर्जुआ वर्ग ने मान्यता नहीं दी। वान गाग के लिए कला दार्शनिक दुविधा नहीं थी, जिसके कारण उसने आत्महत्या की, रोटी एक सामाजिक आवश्यकता थी, जिसके न मिलने पर आत्महत्या करनी जरूरी हो गया। ओल्ड मास्टर्स में भी हमें एक ऐसा चित्रकार मिलता है जिसने बड़ी मछली छोटी द्वारा खा जाने वाले मुहावरे को चित्रित किया। जेरोम वोश ने सामाजिक अत्याचारों से प्रभावित होकर चित्र बनाए, जो बहुत कम कला पुस्तकों में प्रकाशित हुए मिलते हैं। उसी तरह समय-समय कुछ चित्रकारों ने कला द्वारा सही रास्ता अपनाने का प्रयास किया, परन्तु राजनैतिक कारणों और साम्राज्यवादी देशों की संस्कृति और कला के भयानक प्रचार ने आज के चित्रकार को आज भी जनता से काट रखा है, भारतीय चित्रकारों की तो बात ही निराली है। साम्राज्यवादी देशों ने कला कला के लिए कह कर कला को समाज से अलग कर अमूर्तता को बढावा दिया। अमूर्त्त शैली और प्रतीकात्मक शैली कला की दुरुपयोगिता को खुल कर बढावा देती है। इस तरह की कला साहित्य समाज की न हो कर, एक खास वर्ग के लिए महत्व रखती है।

अपने देश में तो अपना ही चित्रकार अजनबी है। कुल मिला कर चित्रकारों का दो तरह से विश्लेषण किया जा सकता है। एक वे जो अति विदेशवादी हैं अमेरिका वे या अन्य साम्राज्यवादी देशों की कुंठा और अमूर्त्तता जबरदस्ती अपने ऊपर ओढ कर भारतीय समाज पर भी थोपना चाहते हैं या विकसित शैलियों का अपना झण्डा शीघ्र कला क्षेत्र में गाड़ना चाहते हैं। जे० स्वामीनाथन जैसे कलाकार एक क्रांतिकारी चेहरा सिर्फ फैशन के तौर पर लिए घूमते थे और अब यह कह कर "आई डोन्ट बिलिव योअर सूडो सोशलिज्म, आई एम हिन्दू एन्ड आई बिलिव इन हिन्दुइज्म" अपनी सुविधाएं साफ साफ बचा जाते है। दूसरे है अति देशवादी, जो अभी भी जन्म कुंडली आदि का प्राचीन पुस्तक से अनुकरण करके अपने को भारतीय मस्तिष्क और भारतीय आत्मा घोषित करना चाहते हैं। सही अर्थों में भारत क्या है, ५६ करोड़ मानव समाज क्या है, भारतीय समाज में विरोध, क्षोभ, कुन्ठाएं संत्रस विसंगति क्यों है, यह जानने और समझ कर चित्रित करने तथा जनता में चेतना लाने के लिए उनके पास समय नहीं है। पिछले पच्चीस वर्षों में भारतीय समाज की कुरीतियों और विसंगतियों को चित्रित किया रामेश्वर बरुटा ने। उसने एक ऐसी शैली की स्थापना की जो व्यंग्यात्मक है। सरकार नीतियों, नौकरशाहों और कार्य प्रणाली पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया जो साधारण आदमी के समझ से दूर की चीज नहीं है। इसलिये आज जरूरी है कि कला सही अर्थों में विकसित हो। जरूरत है एक सही मस्तिष्क की, जो भारतीय समाज में स्वस्थ सामाजिक चेतना को और जनवादी कला को जागृत करे।

इसके लिए सभी कलाकारों को जनवादी कला के माध्यम से जन समाज में चेतना के मोर्चे खोलने हैं, सर्वहारा जीवन दृष्टि देनी है जो श्रमिक वर्ग में तो प्रचलित है ही मध्यम वर्ग में भी प्रचलित हो, जिसका सीधा सम्बन्ध क्रान्तिकारी चेतना से हो! केवल जनवादी कला और साहित्य ही प्रगतिशील कार्य की पूर्ति कर सकता है और वर्ग संघर्ष में एक अनिवार्य अस्त्र या शस्त्र के रूप में क्रांतिकारी चेतना का विकास कर सकती हैं। जबकि कला अब तक राजनैतिक शक्तियों के बदलने और बिगड़ने के साथ-साथ, स्वयं भी अपने रूपों और आकारों को बदलती रही है। कला सामाजिक व्यवस्था के उन्मूलन के लिए होने वाले संघर्ष पर आधारित होती है जो समाज में एक विशेष स्तर पर आकर स्वयं उत्पन्न होता है।

अतः कला की नियति अन्त में क्रान्ति से जुड़ी है और इस अवस्था में ये जरूरी हो जाता है कि कला कलाकार को खींच कर सड़क पर ले आए। इस तरह से कला को निश्चित रूप से आम जनता, से सबसे अधिक जर्जर देह और प्रकृति से सम्बद्ध रहना है, पूरी तरह सड़कों की जिन्दगी से सरोकार रखना है। *

त्रिवेणी कला संगम, २०५, तानसेन मार्ग, दिल्ली-१

हमारी कसौटी पर

कमेरा और लुटेरा

लेखक : मुनीश्वर देव, प्राप्ति स्थल : ज्ञान धाम, सदर बाजार, करन तालाब, करनाल, पृष्ठ : ७६, मूल्य : ६० पैसे।

कमेरे वर्ग को शोषक वर्ग के षड्यन्त्र के विरुद्ध संगठित करने में व लोक मानस में क्रान्ति चेतना भरने में भजनोपदेशकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मुनीश्वर देव ने इस यथार्थ को समझ, क्रान्तिकारी शैली में 'कमेरा और लुटेरा' पुस्तक लिख कर प्रशंसनीय कार्य किया है।

पुस्तक की कविताओं व भजनों में पूंजीवाद पर गहरी चोट है। किसान-मजदूर की पीड़ाओं व समस्याओं का इसमें गहनता से आकलन है। वयोवृद्ध क्रांतिकारी भजनोपदेशक स्वामी भीष्म जी की रचनाओं ने इस पुस्तक का महत्व और बढ़ा दिया है।

आर्यसमाज के ज्योति स्तम्भ

लेखक : पं० दीनानाथ 'सिद्धान्तालंकार', प्रकाशक : जन ज्ञान प्रकाशन, १५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५, पृष्ठ ७६, मूल्य : ३ रु०।

प्रस्तुत पुस्तक में आर्य समाज के बारह ज्योति स्तम्भों महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विरजानन्द दंडी, पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, सर्वदानन्द सरस्वती, महात्मा नारायण स्वामी, स्वतन्त्रानन्द तथा पं० रामचन्द्र देहलवी का जीवन-चरित्र रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

भारत में सामाजिक कुण्ठाओं व गली-सड़ी मान्यताओं के विरुद्ध संघर्ष करने वाले नेताओं के बारे में जो व्यक्ति जानना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

—डॉ० कृष्णदत्त

पाठकों से निवेदन

० जिन ग्राहकों का 'राजधर्म' का शुल्क समाप्त हो गया है, उनकी प्रति पर रबड़ मोहर लगी है 'आपका शुल्क समाप्त हो गया है'। तुरन्त शुल्क न भेजने पर, अगला अङ्क नहीं भेजा जायगा।

० 'राजधर्म' का २७ मई अङ्क 'भगवतीचरण बोहरा अङ्क' होगा। भारतीय क्रान्तिकारी इतिहास के सम्बन्ध में, इस महत्वपूर्ण अङ्क की प्रति पाठक पहले ही सुरक्षित करा लें, अन्यथा उन्हें निराश होना पड़ेगा। --व्यवस्थापक

पाखण्डियों के धर्म का क्षय हो

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

सराय के दरबार में सबसे पहले कुर्सी इनकी होती है और उनके स्वागत में व्याख्यान देने और अभिनन्दन-पत्र पढ़ने का काम हमेशा उल्लू शहर के नवाब बहादुर और गदहा-गांव के महाराजा बहादुर को मिलता है। छोटे और बड़े दोनों लाट इन दोनों रईसुल् उमरा की बुद्धिमानी, प्रबन्ध की योग्यता और रियायापरवरी की तारीफ करते नहीं अघाते।

नवाब बहादुर की अमीरी को खुदा की बरकत और कर्म का फल कहने में पण्डित और मौलवी, पुरोहित और पादरी सभी एक राय हैं। रात-दिन आपस में तथा अपने अनुयायियों में खून-खराबी का बाजार गर्म रखने वाले, अल्लाह और भगवान यहां बिलकुल एक मत रखते हैं। कुरान, इजील और बायबिल की इस बारे में सिर्फ एक शिक्षा है। खून चूसने वाली इन जोंकों के स्वार्थ की रक्षा ही मानो इन धर्मों का कर्त्तव्य हो और मरने के बाद भी बहिश्त और स्वर्ग के सबसे अच्छे महल, सबसे सुन्दर बगीचे, सबसे बड़ी आँखों वाली हूरें और अपसराएं, सबसे अच्छी शराब और शहद की नहरें उल्लू शहर के नवाब बहादुर तथा गदहा-गाँव के महाराज और उनके भाई-बन्धुओं के लिये रिजर्व है, क्योंकि उन्होंने दो-चार मस्जिदें, दो-चार शिवालय बना दिये हैं; कुछ साधु-फकीर और ब्राह्मण-मुजावर रोजाना उनके यहां हलवा-पूड़ी, कबाब-पुलाव उड़ाया करते हैं।

गरीबों की गरीबी और दरिद्रता के जीवन का कोई बदला नहीं। हाँ, यदि वे हर एकादशी के उपवास, हर रमजान के रोजे तथा सभी तीर्थ-व्रत, हज और जियारत बिना नागा और बिना बेपरवाही से करते रहे, अपने पेट को काट कर यदि पण्डे-मुजावरों का पेट भरते रहे, तो उन्हें भी स्वर्ग और बहिश्त के किसी कोने की कोठरी तथा बची-खुची हूर अपसरा मिल जायेगी। गरीबों को बस इसी स्वर्ग की उम्मीद पर अपनी जिन्दगी काटनी है, किन्तु जिस स्वर्ग-बहिश्त की आशा पर जिन्दगी भर के दुःख के पहाड़ों को ढोना है, उस स्वर्ग बहिश्त का अस्तित्व ही आज बीसवीं सदी के इस भूगोल में कही नहीं है। पहले जमीन चपटी थी, स्वर्ग इसके उत्तर के सात पहाड़ों और सात समुद्रों के पार पर था। आज तो न उस चपटी जमीन का पता है और न उत्तर के उन सात पहाड़ों और सात समुद्रों का। जिस सुमेरू के ऊपर इन्द्र की अमरावती क्षीर सागर के भीतर शेषशायी भगवान थे, वह अब सिर्फ लड़कों के दिल बहलाने की कहानियां मात्र हैं। ईसाइयों और मुसलमानों के बहिश्त के लिये भी उसी समय के भूगोल में स्थान था। आजकल के भूगोल ने तो उनकी जड़ ही काट दी है। फिर उस आशा पर लोगों को भूखों रखना क्या भारी धोखा नहीं है? *



सम्पादक के नाम पत्र

अप्रैल प्रथमाङ्क : प्रतिक्रियाएँ

पत्रिका निरन्तर निखर रही है। यह उन तथाकथित वामपंथी साहित्यकारों को राह दिखायगी जो जनता के आंदोलन से नहीं जुड़ते और वामपंथी होने का दम भरते हैं। यहां के लोगों से मैंने कहा है कि तुम्हें सहयोग दें, अन्यथा अपने आपको वामपंथी नहीं कहें क्योंकि वे छिपे तौर पर स्तर एवं नाम के आडम्बरों से जुड़ना चाहते हैं।

शाण्डिल्य का लेख 'उपभोग पर सीमा लगाई जाय' बहुत ही सरल एवं तीखा है। ऐसे लेख छपते रहने चाहिये।

—भागचन्द जैन, राजस्थान बैंक, अलवर

स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश के हाथों में लगी हथकड़ी का चित्र हृदय विदारक एवं मर्मस्पर्शी है। आशा ही नहीं विश्वास भी है कि 'राजधर्म' भारतीय जनता के मानस पटल को प्रकाशित एव जागृत करता रहेगा।

—डॉ० कृष्णकुमार गोस्वामी, ८७ बी, औट्रम लाइन्स, किंग्जवे, दिल्ली—६

अप्रैल द्वितीयाङ्क : प्रतिक्रियाएँ

लूट जुल्म पर टिकी समाज-व्यवस्था को नंगा कर जनवादी समाज की स्थापना में आपकी पत्रिका निस्सन्देह एक अभूतपूर्व भूमिका निभा रही है। देश का सारा तरुण क्रांतिकारी आपके प्रयासों को सराहेगा। भारत का राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम विश्व सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयवाद का ही अंग है और क्रांतिकारी राष्ट्रीयता तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयता में कोई द्वन्द नहीं है। आप इस देश के तरुण क्रांति वीरों को विश्व के लड़ाकू नौजवानों एवं बहादुर कौमों के इतिहास से भी परिचित करायें।

देश की विभिन्न जेलों में ३२ हजार से अधिक नक्सलपंथी बन्दी हैं। तानाशाही की ओर अग्रसर इन्दिरा सरकार उन्हें जेलों में कायरतापूर्ण तरीके से गोली मार रही है। जनवादी मूल्य जो कि देश की मेहनतकश जनता ने बड़े संघर्ष एवं कुर्बानियों से प्राप्त किये हैं का इससे बड़ा हनन कुछ नहीं हो सकता। नागरिक स्वाधीनता की आर्य सभा सदैव पक्षधर रही है।

आदरणीय स्वामी जी स्वयं बंसीलाल की गुडागर्दी के विरुद्ध संघर्षरत हैं। इस मांग को उसी संघर्ष का एक भाग समझते हुए आपके लोकप्रिय पत्र द्वारा जनता तक पहुंचायें।

सम्पादकीय (२७ अप्रैल अंक) पढ़ा। गेहूं के थोक व्यापार के सरकारीकरण पर आपके विचार वर्तमान सन्दर्भ में उचित हैं। दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावाद, जिसको अमेरिकी साम्राज्यवाद का संरक्षण प्राप्त है इसे अपनी गलत लड़ाई का मोहरा बनाना चाहता है। यद्यपि इन्दिरा सरकार की बेईमानी पर विश्वास है, फिर भी वामपंथी ताकतों के दबाव में आ कर और समय की परिस्थितियों के दबाव में अपने स्वार्थ का ध्यान रख कर, यह अच्छा कदम उठाया है। आपने दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावाद के संभावित मन्सूबों पर पानी फेर दिया है। आपके प्रयासों को हमारा सदैव समर्थन रहेगा।

—के० सी० त्यागी, ५१, म्युनिसिपल मार्केट, कनाट सर्कस, नई दिल्ली—१

२७ अप्रैल के 'राजधर्म' के सम्पादकीय में जो कुछ आपने कहा है लगता है जैसे आपने हमारे दिल की बात छीन ली है। सच्चाई भी यही है। प्रतिक्रियावादी वर्तमान परिस्थितियों में ऐसे फंसे हैं कि उनके चेहरे पर ढकी हुई नकाब सड़-सड़ कर गिर रही है और मेहनतकश जनता उनके असली चेहरे को पहचान रही है, लेकिन कुछ लोग फिर से नकाब चढ़ा कर अपने आपको छुपाने की कोशिश कर रहे हैं।

बेइन्साफी की हद हो चुकी है। एक तरफ मजदूर दुनिया भर के सुखों का सामान, अपना खून पसीना बहा कर तैयार करता है, दूसरी तरफ उसे खुद पेट भरने के लिये रोटी नहीं मिलती। बरसात और धूप में सर छुपाने के लिये जगह नहीं मिलती। सड़कों पर फर्राटे भरती हुई वातानुकूलित एक-एक लाख की कारों में एक तरफ आप बड़े-बड़े सेठों और मंत्रियों को बैठे हुए जाते देखेंगे और दूसरी तरफ उस सड़क को बनाने के लिये कड़कती धूप में महिलायें व बूढ़े अधनंगे पत्थर तोड़ते मिलेंगे, उनके बच्चे अधनंगे ही नहीं पूरी तरह नंगे बदन मैले कुचेले उन्हीं तपते हुए पत्थरों पर बिना साये के खेलते हुए मिलेंगे। यही है आज समाज के ठेकेदारों का सामाजिक न्याय ! हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि जल्द ही आने वाले समय में मेहनतकश जनता रंगे सियारों की नकाबें नोंच फेंकेगी और अपना हिसाब चुकता करेगी।

—नन्दलाल, जनवादी नौजवान सभा, २३८३ बुरशाबुल्ला, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

आपके सम्पादकीय लेख में मेहनतकश लोगों के प्रति जो ईमानदारी और विश्वास प्रदर्शित है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि मेहनतकश लोगों के संघर्ष में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

—जयकिशन, नेहरू नगर, नयी दिल्ली

पत्र में प्रकाशित रचनायें, वर्तमान व्यवस्था को खत्म कर के, शोषण रहित सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने में, महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में समर्थ हैं।

—विजयकुमार, नाई बाड़ा, चावड़ी बाजार, दिल्ली

अमृतसर में क्रान्तिकारी सम्मेलन

(विशेष प्रतिनिधि रामसिंह बघेले द्वारा)

१३ से १५ अप्रैल तक अमृतसर के महान ऐतिहासिक स्थल जलिया वाला बाग में क्रांतिकारियों का एक अखिल भारतीय स्तर का सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलन में गदर पार्टी के बाबाओं से ले कर अन्डमान में रहे सैनानी तथा आजन्म काले पानी की सजा पाने वालों के साथ-साथ ६-६ माह की सजा पाने वाले कांग्रेसी सत्याग्रहियों ने भी भाग लिया। देश के प्रत्येक भाग से आए हुए जंगे आजादी के सिपाहियों ने इस सम्मेलन में भाग ले कर उसे सफल बनाने का भरपूर प्रयास किया।

जिन क्रांतिकारियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया, उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं- डॉ० भगवानदास माहौर, सदाशिवराव मल्कापुरकर (दोनों मुसावल बम केस के), मन्मथनाथ गुप्त, रामकृष्ण खत्री (दोनों काकोरी षडयंत्र केस के), जयदेव कपूर (लाहौर षड्यंत्र केस के), कल्पना जोशी (चटगांव षड्यंत्र केस की), बाबा पृथ्वीसिंह, आजाद, (गदर पार्टी), सुशीला आजाद, तथा वीरेन्द्र पाडे (दोनों करांची षड्यंत्र केस के)। इसके अतिरिक्त उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल के प्रतिनिधियों के साथ ही अमर शहीद भगतसिंह की मां विद्यावती, बहन अमर कौर तथा भाई कुलवीरसिंह और कुलतारसिंह भी इसमें पधारे थे।

समाचार दर्शन

मुझे भी इस सम्मेलन में भाग लेकर क्रांतिकारी तपस्वियों के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अमृतसर की जनता, पजाब सरकार तथा अमृतसर म्युनिसिपल कारपोरेशन ने क्रांतिकारियों का एक शानदार जुलूस निकाल कर और हवाई जहाज से उनके ऊपर फूलों की वर्षा करा कर क्रांतिकारियों का स्वागत किया। अमृतसर की जनता ने जंगे आजादी के सिपाहियों को बता दिया कि हम तुम्हें भूले नहीं हैं।

सम्मेलन में उपस्थित होकर मैंने यह महसूस किया कि यह सम्मेलन क्रांतिकारियों का न होते हुए केन्द्रीय और प्रादेशिक मंत्रियों का है। कहने को क्रांतिकारी भी इस सम्मेलन में उपस्थित थे मगर उनकी स्थिति मात्र दर्शक की ही रही। सभी क्रांतिकारी सिर्फ मंच की ही शोभा बढ़ाते रहे। सम्मेलन के पहले दो दिन जलियां वाला बाग में जो कार्यक्रम चलता रहा, उसमें केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल, कांग्रेस अध्यक्ष डा० शंकर दयाल शर्मा, लोकसभा अध्यक्ष गुरुदयालसिंह ढिल्लो, संसद सदस्य दरबारासिंह, ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिर और पंजाब सरकार के अनेक मंत्रियों के ही भाषण होते रहे। इन दो दिनों में यदि कोई क्रांतिकारी बोला तो वह थे बाबा पृथ्वीसिंह आजाद।

बाबा अब पहले से अधिक कमजोर हो गए हैं। उन्हें भरपूर आराम की जरूरत है। इन सबके बावजूद उनमें आज भी गजब का जोश है। वे शरीर से वृद्ध हो गए हैं मगर मन से आज भी नौजवान हैं। उन्होंने जलियां वाला बाग में जो भाषण दिया उससे क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त काफी खिन्न हुए। उनका कहना था कि यह भाषण क्रांतिकारी परम्परा से हट कर है।

अमृतसर स्टेशन पर मन्मथनाथ गुप्त ने मुझसे कहा कि "बाबा एक क्रांतिकारी हैं तो उन्हें मंत्रियों के सामने इस तरह अपनी उपेक्षा का रोना नहीं रोना चाहिए था।"

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का भाषण इस प्रकार था— "आज की सरकार हमें कुछ नहीं समझती है, जबकि विदेशी सरकार हमें अपना दुश्मन तब भी समझती थी। आज का नौजवान हमारे दर्शन तक नहीं करना चाहता, वह हमारी सूरत तक नहीं देखना चाहता। इससे बढ़ कर हमारे लिए शर्म की और क्या बात हो सकती है? हमारे विचारों को प्रोत्साहन नही दिया गया, हमें आगे बढ़ कर काम करने का मौका नही दिया गया। मुझे मौका दीजिये। मुझे जनता के सामने ले जाकर खड़ा कर दीजिये। मैं अपना दिल खोल कर उनके सामने रख दूंगा। मैं बताऊंगा कि अभी देश आजाद हुआ है, आबाद नहीं।"

इन तमाम सम्मेलनों का गंभीरता से अध्ययन करने तथा देहरादून और अमृतसर सम्मेलन में भाग ले कर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि प्रत्येक क्रांतिकारी अपने-अपने ढंग से काम कर रहा है। उन सब को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करना व्यर्थ है।

जब क्रांतिकारियों से इन सम्मेलनों पर प्रतिक्रिया मांगी गई तो अधिकांश ने यही कहा कि इस तरह के आयोजनों का कोई महत्व नहीं है। क्रांतिकारी महज इस गरज से एकत्र हो जाते हैं ताकि उनके पुराने साथी जो वर्षों से अलग-थलग पड़े हैं एक जगह मिल जाएंगे।

मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि जो क्रांतिकारी आज खुद महज एक तमाशा बनकर रह गए हैं वह देश को क्या दिखा सकेंगे? वह देश की जनता में क्या उत्साह जगा सकेंगे? क्रांतिकारी आज किस मनोवृत्ति के होते जा रहे हैं इस पर

कानपुर सम्मेलन में क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने कहा था—"कल के क्रांतिकारी आज समय की गति से पिछड़ कर निष्क्रिय ही नहीं प्रतिक्रियावादी और प्रति क्रांतिवादी तक हो जाते हैं।"

अब अगर भविष्य में इस तरह के सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं तो इनमें ठोस रचनात्मक कार्यों का किया जाना बहुत जरूरी है। इन कार्यों के किए बिना सम्मेलन महज एक तमाशे के कुछ नहीं हो सकता और आज देश को तमाशों की नहीं ठोस और रचनात्मक कार्यों के लिए जनता को एक नई दिशा देने की जरूरत है।

इस तरह के सम्मेलनों के बारे में सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी विजयकुमार सिन्हा ने बहुत ही सुलझे हुए विचार प्रस्तुत किए हैं। इन विचारों का लाभ उठा कर हम आने वाले सम्मेलनों को अधिक सफल बना सकते हैं। सिन्हा साहब ने यह विचार २९ मार्च ७३ को मुझे लिखे गये एक पत्र में व्यक्त किए हैं। उन्होंने लिखा है "क्रांतिकारी कान्फ्रेंसों का मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी शहीदों का उज्ज्वल दृष्टांत रखना होना चाहिए। साथ ही उनके आखिरी युग के जो विचार थे स्पष्ट समाजवादी, उन पर जोर देना चाहिए। यदि कान्फ्रेंस में एकत्र अधिक लोग अपने ही निजी जीवन के त्याग और तपस्या का प्रचार करने लगे तो यह कार्य गलत और क्रांतिकारियों ने जीवनादर्शों की परिपाटी के विरुद्ध होगा। यह दुख की बात है कि ऐसा ही कहीं कहीं होने लगा है।"

किसान आन्दोलन पर सरकारी दमन-चक्र

हरयाणा किसान संघर्ष समिति द्वारा, लगभग एक माह से चलाये जा रहे किसान आन्दोलन को कुचलने के लिये सरकारी दमन चक्र जारी है। किसान संघर्ष समिति तथा आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश एवं आर्य सभा के महामंत्री स्वामी अग्निवेश को गत १९ अप्रैल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। आर्य सभा जिला रोहतक के उप-प्रधान पं० रामचन्द्र आर्य, नाहड़ तहसील के प्रमुख कार्यकर्त्ता जयदयाल आर्य तथा बेरी से अतरसिंह जेल में हैं। अब तक आर्य सभा के लगभग सौ कार्यकर्त्ता हरयाणा में गिरफ्तार किये गये हैं।

दिल्ली में संघर्ष समिति के ढाई सौ स्वयंसेवकों ने गेहूं के लागत मूल्य की मांग को ले कर गिरफ्तारी दी।

५ मई को संगठन कांग्रेस के विधायक तथा किसान संघर्ष समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष दलसिंह को पुलिस ने जीन्द में गिरफ्तार कर लिया।

हरयाणा किसान संघर्ष समिति ने रोहतक में ५ मई की रात, आचार्य रामानन्द की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय लिया कि दिल्ली में गिरफ्तारियां जारी रहेंगी।

करनाल जेल में सरकार ने समस्त लोकतांत्रिक मान्यताओं को त्याग कर, स्वामी इन्द्रवेश पर अत्याचार प्रारम्भ कर दिये हैं। बंसीलाल सरकार के संकेत पर सप्ताह में छः दिन स्वामी जी से कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता। उनसे मात्र सोमवार को भेंट की जा सकती है। आर्य सभा व संघर्ष समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भेंट के लिये एस०डी०एम० को प्रार्थना पत्र दिया, जो अस्वीकृत कर दिया गया।

स्वामी अग्निवेश को १९ अप्रैल को बहुत प्रातः आर्य सभा कार्यालय से गिरफ्तार किया गया था, किन्तु पुलिस के रोजनामचे में प्रातः ११ बजे बिजली-पानी का बिल जमा कराने की दूकान पर उनका ताराचन्द नामक व्यक्ति से झगड़ा दिखा कर, उसके बाद उनकी गिरफ्तारी दिखायी गयी है। धिक्कार है इस लोकतंत्र को! धिक्कार है हमें कि हमारा रक्त पानी हो गया है।

रोहतक जेल से एक वक्तव्य में स्वामी अग्निवेश ने कहा कि कथित लोकतन्त्र, पुलिस व न्याय व्यवस्था में मेरा विश्वास नहीं रहा। हरयाणा के किसान को सरकारी गुण्डाराज से मुकाबला कर, लागत मूल्य की मांग को पूरा करवाना चाहिये। यदि हम सरकारी अत्याचार के सामने झुक गये, तो आने वाला इतिहास हमें कभी क्षमा नहीं करेगा।

किसान को उचित मूल्य दो

(शेषांश आवरण २ का)

यही है कि सरकार गेहूं उत्पादक को उसका लागत मूल्य दे और उपभोक्ता को अनिवार्य राशन की व्यवस्था कर ८०-८५ रु० के रियायती भाव पर गेहूं वितरण करे। ऐसा करके सरकार जहां एक ओर गेहूं के उत्पादन को प्रोत्साहन देगी और किसान को भी न्याय मिलेगा वहां दूसरी ओर महंगाई को और बढ़ने से रोकने में सुविधा होगी। गेहूं की ही तरह सरकार को चाहिये कि अन्य सभी आवश्यक वस्तुओं का लागत के आधार पर मूल्य निर्धारित करे और उसे कठोरता से लागू करे।

किसान मजदूर को तबाही से बचाने के लिए यह एक सामयिक उपचार है—स्थायी रूप से इन मरीजों का तो कल्याण तभी संभव है जब तमाम उत्पादन के साधनों का राष्ट्रीयकरण करके देश में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना होगी।

—सम्पादक

पंजीयन क्रमांक पी. [illegible]
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
१२ मई, १९७१

२४. श्री कुलपति गुरुकुल कांगड़ी,
सहारनपुर

लाल : हरे स्वप्न के बीच

o गोविन्द माथुर

तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा
कि तुम्हारे आंगन में
कभी लाल सोना भी उगने लगेगा
और तुम
हथियारों से लैस होते हुए भी
बड़ी चालाकी से लूट लिए जावोगे
और तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बच पाएगा
सिर्फ एक हरे स्वप्न के अतिरिक्त !

तुम आसमान की ओर मुंह किए
पेट भरने के लिए खड़े रहोगे
तेजी से धूल उड़ाती गाड़ियां
कुछ सफेद पर्चे बांट जायेंगी
जिनका सीधा सम्बन्ध
आसमान से टपक पड़ने वाले आश्वासन से होगा।

वर्ष में एक दिन ऐसा भी आता है
कि तुम्हारे सूखे चेहरों पर
खुशी रंग दी जाती है
तुम अमूर्त कला से
फैशन परेड में सम्मिलित कर
राष्ट्र की प्रगति के प्रतीक बना दिए जाते हो।

तुमने कभी सोचा भी न होगा
कि तुम्हारे आंगन में
कभी लाल सोना उगलने लगेगा
और तुम
अपनी झोपड़ियों के पीछे
तेज कच्ची शराब में धुत
समाजवाद आने की प्रतीक्षा में
देशी गालियों का शुद्ध उपयोग कर रहे होगे।

न तुम लोग इतने कमजोर ही थे
और न थे इतने ताकतवर
पर तुमने गरीबी हटाने के लिए
अपने हाथ कटा दिए
कुछ दिन पेट भरने के लिए
हमेशा के लिए एक छाप
देश की प्रगति के लिए लगा दी
फिर एक चकाचौंध कर देने वाला प्रकाश था
जहां तुम्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था।

मैं
तुम्हे कुछ भी नहीं कह सकता
तुम राष्ट्र के प्रतीक हो
वे राष्ट्र के कर्णधार
मैं तुम दोनों को देख कर आंसू बहा सकता हूं
इसलिए नहीं कि
मैं कमजोर हूं
सिर्फ इसलिए कि
तुम्हारे आंगन में लाल सोना उगने लगा था
और तुम
हथियार से लैस होते हुए भी
बड़ी चालाकी से लूट लिये गये हो। *

डी-४१, टाउनशिप, खेतड़ीनगर

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, कचहरी रोड, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित । दूरभाष : [illegible]

ओ३म्



स्वामी दयानन्द



म्पादकीय-

ाधीनता सैनानियों को क्या
गया ?

र्नसिंह बघेले-
र्गी भाभी से एक भेंट ।

लानाथ व्यास-
न्ति - पुत्र भगवतीचरण
हूरा ।

द्योदय दीक्षित-
र्गी भाभी का संघर्षमय
वन ।

पाल-
हुतक में बम बने ।

पाक्षिक

राजधर्म

वर्ष ५ अंक १०-११
१२ जून १९७३

सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : डॉ० महेन्द्र माथुर

वार्षिक १० रु०
एक प्रति ५० पैसे



भगवती चरण बोहरा अंक

दुर्गा भाभी के क्रान्तिकारी अतीत को समर्पित





सम्पादकीय

स्वाधीनता सैनानियों को क्या हो गया ?

अमर शहीद भगवतीचरण बोहरा की पुण्य स्मृति में यह अङ्क पाठकों के सामने प्रस्तुत करते समय, एक ओर स्वाधीनता-पूर्व फांसी पर लटकते व पुलिस गोलियों से भौतिक शरीर-मुक्त होते हुए स्वाधीनता सैनानियों की याद आती है, तो दूसरी ओर ताम्र पत्र व पेंशन के लिए हाथ पसारे क्रान्तिकारियों की जीवित लाशें हमारे सामने आकर, युवा पीढ़ी को यह सोचने को विवश करती हैं कि क्या ये ही वे क्रांतिधर्मी हैं जिन्होंने शोषण मुक्त समाज के लिए बारूद को अपना बिस्तर बनाया था ? यदि ये वे ही हैं, तो इन्हें क्या हो गया ? पच्चीस वर्षों से इनमें से अधिकांश भूख व शोषण के विरुद्ध बगावत कर रही जनता से अपने को कैसे काटे रहे, और अब उन्हे ताम्र पत्र लेते समय क्रांति की बातें कैसे याद आयीं ? शेष क्रान्तिकारी शोषकों की चारण शब्दावली व अभिजात्य वर्ग के अंग बन कर, जनता के स्थान पर शोषकों के प्रवक्ता कैसे बन गये ?

ये पंक्तियां लिखते समय मैं किसी पर आरोप नहीं लगाना चाहता । न मानवीय पहलू से काट कर कोई तथ्य स्थापित करना चाहता हूँ । स्वतन्त्रता-उपरान्त भारत ने स्वाधीनता संग्राम के योद्धाओं को भूख से तड़पती मौत दी । जिन्हें यह मौत स्वीकार थी, वे घुट-घुट कर दम तोड़ गये । जिन्हें अपने बलिदानों का बदला लेना था वे मंत्री से प्रधानमन्त्री बन कर, दोनों हाथों से देश को तबाह कर कोठियां भरने लगे । कुछ हैं जो अब भी भूखे मर रहे हैं । जिन्होंने स्वतन्त्र भारत में २५ वर्ष के कष्टमय जीवन के उपरान्त ताम्र पत्र व पेंशन को 'गाली' समझा और उसे लेने से इन्कार कर दिया । वे श्रद्धा के पात्र हैं और धिक्कार है हमें !

आजादी के बाद पैदा हुई पीढ़ी सच्चाई को समझ रही है । वह खून के बदले खून बहाना जानती है । अहसानफरामोश वे लोग थे, जिन्होंने षड्यन्त्रों की रचना कर, तथाकथित स्वाधीन भारत की सत्ता व प्रशासन हथिया लिया ।

किन्तु इस पीढ़ी की आंखों में एक ही सवाल तैर जाता है कि यह कैसे हुआ कि विदेशी शोषण के विरुद्ध लड़ने वाले, देशी शोषण के भयावह घटना-चक्र के दर्शक मात्र रहे । यह सवाल इसलिए भी उठता है कि शोषण व विदेशी–देशी गुलामी के विरुद्ध संघर्ष करना कोई त्याग नहीं होता वरन् जीने का तरीका होता है । कोई शोषण से जुड़ कर जीता है, कोई तटस्थ रह कर और कोई शोषण के विरुद्ध ज्वालामुखी बन कर । विदेशी गुलामी से मुक्ति इस पथ पर प्रथम विजय होती है । इसके उपरान्त शोषण के देशी षड्यन्त्रों व मानसिक ढांचे के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है । इस तथ्य को भूल यह शिकायत करना कि देश हमें भूल गया, हमें कोई याद नहीं करता; इतना लिजलिजा है कि इन संवादों में स्वार्थ व अहम् की जहरीली गंध आती है ।

दुर्भाग्य है कि विदेशी गुलामी से मुक्ति के उपरान्त अधिकांश क्रांतिकारी देश के राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक जीवन के 'नाराज दर्शक' रहे, क्योंकि उन्हें कुर्सियां नहीं मिली ।— और जनता को पथ-भ्रष्ट करने के लिए २५ वर्ष बाद शोषकों के प्रतिनिधियों ने जब ताम्र पत्र दिये व पेंशनें बांटी तो छाती फुलाकर उन्होंने कहा कि हम हजारों ताम्र पत्रधारी इस देश के निर्माता हैं । धन्य हैं ये निर्माता और धिक्कार है हमें !

अब समय आ गया है जब क्रान्तिकारियों व जनता के लिए रक्त बहाने का दावा करने वाले युवकों को आत्म विश्लेषण करना है कि उनका संघर्ष जीवन-दर्शन है या निजी सुख-प्राप्ति के स्वप्न को भुनाने का सिक्का मात्र ?

—महेन्द्र मधुप

आवरण-कथा

अमर शहीद भगवतीचरण बोहरा, उनकी क्रान्तिकारी सहधर्मिणी दुर्गादेवी तथा पुत्र शचीन्द्रकुमार । सुख से बसे इस परिवार ने अपने आपको हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र सेना के क्रान्ति-प्रयासों के लिए अर्पित कर दिया ।

दुर्गा भाभी से एक भेंट

O रामसिंह बघेले

आजादी की लड़ाई में जिन महिलाओं ने अपना सर्वस्व बलिदान किया है तथा जिन्होंने चरखे की जगह बम और बन्दूक हाथ में लेकर ब्रिटिश साम्राज्य के छक्के छुड़ा दिए, उनमें से कुछ महिलाएं आज भी हमारे बीच हैं। इन्हीं कुछ बम और बन्दूक वाली महिलाओं में श्रीमती दुर्गादेवी बोहरा, जिन्हें दुर्गा भाभी के नाम से लोग जानते हैं, एक हैं।

गत वर्ष २६ दिसम्बर १९७२ को मुझे दुर्गादेवी जी से साक्षात्कार का अवसर मिला। मैं लखनऊ में आयोजित '१३वें अखिल भारतीय बाल एवं युवक समारोह' में भाग लेने गया था। मेरे साथ ग्वालियर के नौजवान कार्यकर्त्ता कामरेड गंगाराम आजाद तथा एक अन्य युवा साथी श्री दीपक शर्मा भी थे।

थोड़ी देर इधर-उधर भटकने के बाद शीघ्र ही हम उनके निवास स्थान लखनऊ मोन्टेसरी स्कूल, पुराना किला पहुँच गए। वे लखनऊ में ही एक मोन्टेसरी स्कूल चला रही हैं। यह स्कूल उन्होंने सन १९४० में स्थापित किया था।

जब उन्होंने सुना कि ग्वालियर से कुछ लोग उनसे मिलने आये हैं तो तुरन्त ही हमें बुला लिया। हम सबने जाकर उन्हें नमस्कार किया और उनका संकेत पा कर पास ही पड़ी हुई कुर्सियों पर बैठ गए। हम खुश थे कि हम एक ऐसी महिला से मिल रहे हैं जिसने स्वाधीनता की क्रांतिकारी लड़ाई में अमर शहीद भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया।

उन्होंने चूल्हा चक्की छोड़कर बम और बन्दूक से अंग्रेजी सरकार को नाच नचाया। उन्होंने अपना घर, पति सभी कुछ देश के लिए अर्पित कर दिया। उनके पति सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी भगवती चरण बोहरा थे। भगवतीचरण ने रावी नदी के किनारे एक बम का परीक्षण करते हुए उस बम के हाथ में ही फट जाने से बड़ी दर्दनाक अवस्था में शहादत पाई थी।

हम यहां उनके क्रांतिकारी जीवन के बारे में कुछ न लिखते हुए, 'आजाद के साथ विश्वासघात किसने किया', इस पर चल रहे विवाद के बारे में दुर्गा भाभी के निष्पक्ष विचार ही सामने रख रहे हैं। वे दोनों पक्षों में से किसी के भी साथ नहीं हैं। उनका कहना है कि इस तरह के विवादों को सार्वजनिक तमाशा बनाने से क्रांतिकारियों की बनी बनाई प्रतिष्ठा को धूल में मिलाया जा रहा है।

उन्हें इस बात का जरा भी अभिमान नहीं है कि उन्होंने कभी देश के लिए कुछ किया था, और न ही वह इसके बदले में कुछ चाहती हैं। वे आत्म प्रचार की भावना से भी कोसों दूर हैं। उन्होंने चर्चा आने पर कहा— "हमने जो कुछ किया था, अपना कर्त्तव्य समझ कर किया था। अब हमें न उसकी कोई कीमत चाहिए और न ही अन्य किसी प्रकार का लाभ।"

'आजाद के साथ विश्वासघात किसने किया'— यह पूछे जाने पर उन्होंने कहा— "आप लोग क्यों इस झगड़े में पड़ रहे हैं? यशपाल तथा सुखदेवराज से आज भी मेरे सम्बन्ध अच्छे हैं। लेकिन मैं किसी को दोष दिए बिना ही यह कहना चाहती हूं कि इस तरह के विवादों को सार्वजनिक रूप से सामने ला कर हम क्रांतिकारियों की बनी बनाई 'इमेज' को ही खराब कर रहे हैं। कल तक जिन लोगों के मन में क्रांतिकारियों के प्रति श्रद्धा थी वे आज क्या सोच रहे होंगे या आने वाली पीढ़ी जब यह सब पढ़ेगी तो क्या सोचेगी?"

'सुखदेवराज, यशपाल, नन्दकिशोर निगम, मन्मथनाथ गुप्त तथा वैशम्पायन आदि ने इस प्रसंग को लेकर जो भी कुछ लिखा है, मैने नहीं पढ़ा और न ही मैं पढ़ना चाहती हूं। वैशम्पायन द्वारा लिखित चन्द्रशेखर आजाद की जीवनी मैंने पढ़ी है, क्योंकि वैशम्पायन आजाद के अधिक निकट रहते थे, लेकिन इस पुस्तक का वह परिशिष्ट जिसमें एक दूसरे पर कीचड़ उछाली गई है, मैंने नहीं पढ़ा।'

'हां हो सकता है, हमारे अन्दर कुछ बुराइयां रही हों, जैसी कि आमतौर पर हर संगठन में होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं होता कि उनको आम लोगों के सामने ला कर तमाशा बनाया जाये। जरूरत इस बात की है कि लोगों को यह बताएं कि क्रांतिकारी क्या थे? उनके आदर्श क्या थे? तथा उन्होंने किन कष्टों को सहते हुए हंसते-हंसते अपने को बलिदान कर दिया या जीवन भर अन्डमान में सड़ते रहे।"

कुछ दिन पूर्व श्री सुखदेवराज ने एक बयान में कहा था कि आजाद का माउजर यशपाल के पास ही है, इस पर विचार प्रगट करने को उनसे कहा गया तो उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा "दल के हर सदस्य को अपनी रक्षा तथा जरूरत पड़ने पर मुकाबला करने के लिए एक पिस्तोल दी जाती थी। मुझे खुद याद नहीं है कि मेरा अपना पिस्तोल कहां गया। दल के पास सिर्फ एक ही माउजर था जो कभी-कभी विशेष 'एक्शन' में ही निकाला जाता था।"

इतना सब कहने के बाद उन्होंने दो टूक शब्दों में यह

(शेषांश पृष्ठ २२ पर)

२८ मई — बलिदान दिवस पर विशेष लेख

क्रान्ति-पुत्र भगवतीचरण बोहरा

० दीनानाथ व्यास

१२-४-७३

प्रिय भाई महेन्द्र,

आपका कार्ड मिला। 'राजधर्म' लगातार आ रहा है। उसके लिए धन्यवाद।

आप लोगों को कुछ ऐसा भ्रम है कि जितने भी पुराने क्रान्तिकारी हैं, वे सब लेखक हैं। तो विश्वास दिलाती हूँ कि मैं लेखक नहीं। चित्र भी मेरे पास इस समय कोई नहीं। न अपना और न बोहरा जी का। मेरे पास जो कुछ भी सामग्री थी वह मैंने व्यास जी को भेज दी।

संस्था के अन्य कार्य तथा अपने कुछ शिथिल स्वास्थ्य के कारण मैं उन पिछली बातों की ओर ध्यान ही नहीं देती। अब आप लोगों का समय है— जो भी लिखें या जो कुछ भी करें।

आपके प्रयत्न सराहनीय हैं।

भवदीया
दुर्गादेवी बोहरा

भगवतीचरण के पिता प० शिवचरण आगरा से लाहौर आ गये, वे रेलवे के दफ्तर में बहुत ऊंचे पद पर कार्य करते थे। उनके कार्य के उपलक्ष में उन्हें रायसाहब का खिताब भी दिया गया। पं० शिवचरण के पिता आगरा में जीविका के लिये किताबत का काम करते थे क्योंकि उस समय तक हिन्दी में छापे के टाइपों का निर्माण नहीं हुआ था। यशपाल ने लिखा है कि भगवतीचरण जी के कथनानुसार उनके दादा एक रु. रोज से अधिक मजदूरी कभी नहीं करते थे, जब एक रु. का काम कर चुकते तो बाकी काम को छोड़ देते थे। उन दिनों एक रु. का मूल्य आज के समय में २० रु. से कम नहीं था। भगवती चरण जाति के गुजराती ब्राह्मण थे किन्तु ब्राह्मण वृत्ति न करने के कारण उन की उपजाति बोहरा थी। इसीलिये भगवतीचरण बोहरा कहलाते थे।

भगवतीचरण हृष्ट पुष्ट छः फीट लम्बे, दुहरे बदन के कसरती चुस्त नवयुवक थे। गंदमी रंग, चेहरा गंभीर, कुछ भारी होंठ तथा आंखों पर चश्मा लगाते थे। भगवतीचरण पैदा लाहौर में ही हुए थे, इसलिये पंजाबी इतनी अच्छी बोलते थे कि कोई भी यह शंका नहीं कर सकता था कि वे गुजराती ब्राह्मण हैं। भगवतीचरण नेशनल कालेज में पढ़ते थे। यशपाल भगतसिंह आदि विद्यार्थियों से वरिष्ठ थे। वे शहर में रहते थे, अतः एक ही कालेज के छात्र होते हुए भी भगतसिंह आदि में तथा भगवतीचरण में आरंभ में अन्तरंगता नहीं थी। ज्योंही उन्होंने विश्वविद्यालय से विज्ञान में इन्टरमीडियट पास किया कि वे असहयोग आन्दोलन में शरीक हो गये थे। यशपाल, भगतसिंह आदि का परिचय उनसे सबसे पहले १९२४ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन के समय तथा १९२५ में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का परचा बांटने के समय हुआ। तभी भगतसिंह आदि समझ गये कि भगवतीबाबू भी क्रांतिकारी कार्यों में भाग लेते हैं। भगवतीबाबू की आत्मीयता भगतसिंह, यशपाल आदि से हो गयी। तभी से ये सब एक ही टोली के साथी हो गये।

नौजवान भारत सभा

प्रो. जयचन्द्र विद्यालंकार उन दिनों नेशनल कालेज में भारतीय इतिहास एवं राजनीति के उनके अध्यापक थे। उनके सूत्रों से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का एक परचा वितरण के लिये लाहौर आया था जो भगवतीबाबू के मकान पर ही रखा गया था। उसे बांटने में भगवती बाबू ने पूरा सहयोग दिया। भगवती बाबू में एक विशेषता यह थी कि पहचान होते ही वे आत्मीयता फौरन ही प्रगट कर देते थे। उन्हीं दिनों नौजवान भारत सभा भी इन युवकों ने गुप्त कार्य करने एवं उग्र राष्ट्रीयता के प्रचार के लिये स्थापित कर ली। उस सभा के मुख्य संचालक भी भगवती बाबू एवं भगतसिंह ही थे। सभा प्रत्यक्ष में तो सभी काम सार्वजनिक हो करती थी, किन्तु वास्तव में उसमें गुप्त कार्य ही प्रधान था। यों कहिये कि सभा गुप्त कार्यों के लिये सार्वजनिक आधार के रूप में थी। भगतसिंह नौजवान सभा के जनरल सैक्रेटरी और भगवती बाबू प्रोपेगेण्डा सेक्रेटरी थे। प्रमुख सहयोगी थे धन्वन्तरी एवं एहसानअली। इसके समाजवादी सिद्धान्तों के कारण इसके सहयोगी डाक्टर सत्यपाल एवं डा० किचलू भी थे। इस सभा का सम्पूर्ण कार्य भगतसिंह एवं भगवती बाबू ही करते थे। बाद में भगवती बाबू, भगतसिंह आदि पर वारन्ट निकल जाने के बाद

इस सभा का कार्य रामकृष्ण, धन्वन्तरी एवं एहसानअली आदि चलाते रहे। यह नौजवान सभा का ही साहस था कि १९१४ के लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त १८ वर्षीय करतार सिंह को फांसी हो जाने पर, बैंडला हाल लाहौर में उसकी बरसी मनाई गई और उसके चित्र का उद्घाटन किया गया। इस चित्र को बड़ा बनवाया भगवती बाबू ने। भगवती बाबू की क्रांतिकारिणी पत्नी दुर्गा भाभी ने तथा सुशीला दीदी ने अपनी उंगलियों से रक्त निकाल कर इस फोटो पर छिड़का। मुख्य भाषण भी भगवती चरण बोहरा का ही हुआ। यह सभा नौजवानों के क्रान्ति में सम्मिलित होने का ही खुला संकेत था। यह सभा ऐसे भोजों का भी आयोजन करती थी जिसमें सभी जाति के लोग साथ बैठकर खाते थे। इस सभा के दो नारे थे—इन्कलाब जिन्दाबाद तथा हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। इस सभा का सूत्र प्रो जयचन्द्र विद्यालकार के हाथों में था। १९२६ तक भगवती बाबू अपना समय कुछ तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काम में लगाते और कुछ समय सभा के काम में। इधर जिस तरह भगवती बाबू कुछ ठोस कार्य सामने न होने से खीज रहे थे, उसी तरह भगतसिंह, सुखदेव भी खीज खा रहे थे, पर सूत्राधार जयचन्द्र जी स्वभाव से बच कर चलने वाले थे अतः वे किसी भी कार्य को बहस मुबाहिसे से आगे कभी बढ़ने ही न देते थे। इसलिए पिता से परेशान तथा गुरु जयचन्द्र जी से दुःखी भगतसिंह कुछ करने का सूत्र बढ़ाने के हेतु लाहौर से भाग कर दिल्ली एव कानपुर चले गये। दिल्ली में भगतसिंह ने अर्जुन में अवैतनिक नौकरी कर ली। उन्हीं दिनों काकोरी षड्यन्त्र के सिलसिले में धड़ाधड गिरफ्तारियां जारी थीं। दोस्तों की सलाह से वे भाग कर कानपुर चले आये। पर यहां भी उन्हें यही सलाह दी गयी अतः वह पुनः दिल्ली आ गये और कानपुर से प्राप्त सूत्रों के आधार पर वे यहां संगठन जमाने की चेष्टा करने लगे। जयचन्द्र जी की डरपोक नीति के कारण सुखदेव भी लायलपुर चला गया। बेकार बैठने से घबरा कर भगवती बाबू भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन का शृंखलाबद्ध इतिहास लिखने में व्यस्त हो गए। भगवती बाबू ग्वालमण्डी में अपने "शिव निवास" में रहते थे। उनका यह मकान क्रान्तिकारी युवकों का आश्रय स्थल हो गया था। वे स्वय सम्पन्न थे अतः आने जाने व ठहरने वालों को कोई कष्ट नहीं था।

दुर्गा भाभी

भगवती बाबू के पिता शिवचरण जी एव दुर्गा भाभी के पिता पं० बांकेबिहारी नागर पुराने विचारों के थे। अतः दोनों का विवाह भी बहुत ही छोटी उम्र मे हो गया था। दुर्गा भाभी की शिक्षा दीक्षा भगवती बाबू ने ट्यूशन करा कर पूरी की। भगवती बाबू के एकमात्र पुत्र शचीन्द्रकुमार का जन्म १९२५ में हुआ था। पति के लक्षणों से वे ताड़ गयी थीं कि पैतृक सम्पत्ति का भरोसा नहीं किया जा सकता। १९२६ में इसलिए उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी की "प्रभाकर" परीक्षा पास कर ली। इसके बाद वे लाहौर के महिला कालेज में प्रोफेसर बन गयीं। यद्यपि वे भगवती बाबू के क्रांतिकारी कार्यों में न सम्मिलित होती थीं न कुछ बोलती थीं पर समय आने पर किसी भी प्रकार की सहायता से इन्कार भी नहीं करती थीं। भगवती बाबू दुर्गा भाभी को देहाती मानकर क्रांति की बातें उनसे करते भी नहीं थे।

जयचन्द्र से मतभेद

भगतसिंह ने लाहौर से भाग कर दिल्ली और कानपुर में क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित कर लिए थे। युक्त प्रान्त का दल काकोरी के कैदियों को छुड़ाने की योजना बना रहा था किन्तु काकोरी के षड्यन्त्र के बाद की गिरफ्तारियों के कारण दल छिन्न भिन्न हो गया था और दूसरे अर्थाभाव भी था। पंजाब के दल से भी कुछ युवक मांगे गये थे। भगवती बाबू ने इस प्रकार की बातें सुन कर जयचन्द्र जी से चर्चा चलाई पर उनकी हर बार की अड़ियल नीति से वे तंग आ चुके थे। अतः जयचन्द जी से उन्होंने खुल कर कह दिया कि 'यदि आप कुछ नहीं करते तो हमें जो कुछ करना होगा वही हम करेंगे। कोरी प्रतीक्षा में हम समय बरबाद करना नहीं चाहते।" इससे जयचन्द जी को भगवती बाबू पर आशंका हो गयी। इसका एक कारण और भी था कि भगवती बाबू का इन दिनों विदेशों में भारत के लिए काम करने वाले क्रान्तिकारियों से सम्पर्क हो गया था। लाहौर में ऐसे क्रान्तिकारियों की डाक रूपया पेशावर आदि स्थानों से भगवती बाबू के नाम ही आता रहता था। परन्तु कुछ दिनों बाद इन लोगों के प्रयत्नों में कोई व्यवस्था न देख भगवती भाई ने अपने आपको फंसा देना उचित न समझ कर धीरे धीरे इन लोगों से सम्पर्क विच्छेद कर लिया। इसलिये इस तरह के लोग भी नाराज होगये।

सुशीला दीदी का त्याग और जयचन्द का भगवती बाबू पर आरोप

जयचन्द्र जी काकोरी के बन्दियों के छुड़ाने के लिये लाहौर में रुपया एकत्रित कर रहे थे। उन्होंने सुशीला दीदी से भी रुपया मांगा। वे जालन्धर महाविद्यालय में अध्यापिका थीं और उस समय भगवती बाबू के घर ही ठहरी थीं। सुशीला दीदी ने अपनी सोने की चूड़ियां दे दीं। भगवतीबाबू को यह बात बुरी लगी और चूड़ियां उसने अपने पास रख लीं। इसी बीच जयचन्द्र जी ने चूड़ियों के लिये कहा कि मेरी भांजी का विवाह है इसलिये मै ये चूड़ियां वहां दे दूंगा और सोने का दाम दे दूंगा। भगवतीबाबू ने साफ इन्कार कर दिया कि एक नौकर औरत तो चूड़ी देने को तैयार है और जयचन्द्र चूड़ियों की

लागत बचाने पर उतारू हैं। इस बात को लेकर जयचन्द्र जी नाराज तो थे ही और भी चिढ़ गये क्योंकि इसमें उनकी क्रांति दल के प्रति प्रामाणिकता पर भी गहरी आंच आती थी। इसके लिये जयचन्द्र जी ने चूड़ियों वाली बात को छिपा लिया और धीरे-धीरे उन्होंने सभी को कह दिया कि मुझे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ कि भगवती बाबू खुफिया पुलिस के व्यक्ति हो गये हैं।

'जब ज्योति जगी' पुस्तक के लेखक ने इस सम्बन्ध में लिखा है यहां यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि जयचन्द्र वाली घटना का जिक्र मुझसे भाभी ने किया और सुशीला दीदी ने भी, पर भगवतीचरण ने इतना निकट होने के बावजूद भी कभी जयचन्द्र के विरुद्ध कोई बात मुझसे नहीं की। आज भी जब कि जीवन की संध्या में इन घटनाओं के घटित होने के चालीस वर्ष बाद एक निष्पक्ष और तटस्थ दर्शन के रूप में मैं इसे लिपिबद्ध कर रहा हूँ तो भगवती चरण के त्याग, सहन शक्ति साहस और देशभक्ति के आगे मेरा सिर स्वतः ही श्रद्धा से झुक जाता है।'

सी.आई.डी. कर्मचारी समझने लगे

इसके बाद जब भगवती बाबू और यशपाल फरारी के दिनों में अपना समय व्यतीत कर रहे थे तब यशपाल के जयचन्द्र से मिलने पर उन्होंने फिर वही बात दुहराई कि उनके कार्यों का भगवतीचरण को पता नहीं लगे, साथ ही दिल खोलकर उनकी निन्दा भी की। जयचन्द्र जी यह जानते थे कि भगवती चरण फरार है। फिर क्या वे यह नहीं सोच सके कि फरार व्यक्ति खुफिया का आदमी कैसे हो सकता है? जब भगवतीबाबू शहीद हो गये तब भी जयचन्द्र यही कहते रहे कि वह बड़ा चालाक है, कहीं छिप गया है और मरने का प्रचार कर रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि भगवती बाबू पर लोगों को और खासकर दल के लोगों को शक हो गया। शक होने का कारण यह था कि एक तो वे सम्पन्न थे दूसरे रायसाहब के पुत्र होने के कारण उन्हें ऊंची नौकरी मिलने में भी कोई कठिनाई नहीं थी। मगर प्रत्यक्ष में भगवतीबाबू एक पैसा भी फिजूल खर्च न करने वाले तमाशबीनी से बहुत दूर, किवाड़ बन्द किये हमेशा लिखने पढ़ने में व्यस्त रहने वाले युवक थे। इन कारणों से वास्तविकता का पता लगाना भी कठिन था। कुछ भी हो लेकिन दल को काम करने में अड़चने आने लगीं क्योंकि भगवती बाबू के जाने हुए सूत्रों से काम किया जाय और यदि वे सचमुच खुफिया के व्यक्ति हुए तो पूरा का पूरा दल एक ही सपाटे में गिरफ्तार किया जा सकता था। थोड़े ही दिनों में भगवतीबाबू के खुफिया होने की बात भारत नौजवान सभा, गुप्तदल एवं कांग्रेस तक में फैल गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि काकोरी के बन्दियों को छुड़ाने का काम

दीनानाथ व्यास का जन्म २८ जुलाई १९०७ को हुआ। १९२६ से आप रियासती एवं विदेशी शासन की नींव हिला



देने वाले लेख लिख रहे हैं। तेरह पुस्तकें व लगभग डेढ हजार लेख प्रकाशित करा चुके हैं। क्रांतिकारी लेखों के कारण पुलिस ने तीन बार आपके घर पर छापा मार कर क्रांतिकारी रचनाओं को जब्त कर लिया। १९४३ में आपकी बागी लेखनी से परेशान हो कर सरकार ने आपको गिरफ्तार कर लिया। तीन सप्ताह तक उज्जैन में असह्य शारीरिक कष्ट देने के बाद आपको ग्वालियर सेन्ट्रल जेल ले जाया गया। वहां भी जबान न खोलने पर अमानवीय यातनाओं के कारण आप की स्थिति चिन्ताजनक हो गयी। वहां से उज्जैन लाने पर आप तीन दिन तक अचेतन रहे। अतः नवम्बर १९४३ से ९ फरवरी १९४४ तक आप घर में नजरबन्द रखे गये। भयंकर यंत्रणाओं के कारण स्थाई रूप से हृदय रोगी हैं

स्थगित हो गया। इसका पूरा कारण भगवती बाबू बाबू पर डाल दिया गया। मदद न पहुंचने से युक्त प्रान्तीय दलों में भगवती बाबू के खुफिया होने की खबर फैल गयी। जयचन्द्र जी को कुछ करना तो था नहीं, इसी आड़ का बहाना लेकर खूब प्रचार करने लगे।

भगतसिंह कुछ कर डालने पर तुले थे। वे भगवती बाबू पर पूर्ण विश्वास भी करते थे किन्तु उन्हीं के कारण काम भी ठप्प हो गया है इस बात से भी अनभिज्ञ नहीं थे। भगतसिंह सच्चे क्रांतिकारी होने के नाते व्यक्तिगत मित्रता का कोई मूल्य नहीं मानते थे। वे चाहते थे कि यदि इसी आदमी के कारण काम चौपट हो रहा है तो फौरन इसे खतम कर दिया जाये। वह सभी को यही सलाह देते थे। पर बाद में यह भी कह देते कि भगवतीचरण पुलिस का खुफिया है भी या यों ही बदनाम हो रहा है। काम ठप्प हो जाने से यशपाल और भगतसिंह की बातचीत हुई कि पता लगाना चाहिये। अन्त में भगतसिंह ने जोश में आकर पिस्तोल दिखाते हुए कहा "मैं उसको गोली मार दूंगा।" यशपाल ने कहा "जिम्मेदारी आपकी होगी।" इसके बाद काम का उतावला भगतसिंह एक दिन भगवती बाबू के घर गया। वहां उसके बरताव, दल के प्रति निष्कपट प्रेम को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। समझ नहीं पाया कि यह व्यक्ति खुफिया है?

भगतसिंह ने सुखदेव पर जोर डाला कि पता लगाओ कि भगवती बाबू क्या खुफिया है। एक दिन भगतसिंह भगवती बाबू को सांडा ले गया और यशपाल को भगवती बाबू के घर जांच पड़ताल को भेजा गया। यशपाल की दुर्गा भाभी से जान पहचान थी। सुखदेव चाहता था कि यशपाल भगवती बाबू की गैर हाजिरी में उसके तमाम कागज पत्र देख डाले। यदि वे खुफिया हैं तो कुछ न कुछ तो उसके घर पर मिल ही जायेगा।

यशपाल तीन चार दिनों से जुकाम से पीड़ित थे ही। वे जांच के लिए जुकाम का काढ़ा बाजार से खरीद कर सीधे भगवती बाबू के घर आये। भगवती बाबू का घर दल का विश्रामालय जैसा ही था। यशपाल ने घर पहुंच कर दुर्गा भाभी से भगवती बाबू के लिए पूछा और उनके कहने पर कि "आते ही होंगे" यशपाल ने नुस्खे की पुड़िया देकर काढ़ा बनाने का अनुरोध किया। दुर्गा भाभी दवा लेकर दूसरे मंजिल चली गयीं। मौका देखकर यशपाल ने दूसरे मंजिल का नीचे का दरवाजा बन्द कर लिया और ऊपर से जब दवा कूटने की स्पष्ट आवाज सुनाई देने लगी तो कमरे की तलाशी लेनी आरंभ कर दी। भगवती बाबू कोई भी चीज ताला लगाकर नहीं रखते थे। अतः यशपाल उनकी अलमारियां खोलकर जांच पड़ताल करने लगे। कुछ कागजात उनके लिखे "भारत की क्रांति का इतिहास" के व कुछ पृष्ठ गदर पार्टी के मिले। कपड़ों के ट्रन्क ढूंढ डाले। ईंधन की लकड़ियां तक देख डालीं। तब तक यशपाल पूरी तलाशी से निबट चुके थे अतः उन्होंने जीने की कुन्डी खोल दी। कुछ ही देर में दुर्गा भाभी काढ़े का गिलास लिए नीचे आयीं। काढ़ा देकर फिर ऊपर चली गयीं। इस बीच यशपाल ने फिर इधर उधर देखादेखी की पर कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। आखिर काढ़ा पीकर भाभी को दरवाजा बन्द कर लेने को कहकर यशपाल चले आये।

इस तरह जयचन्द्र जी के बचकर काम करने की प्रवृत्ति के कारण पार्टी काकोरी के कैदियों को मुक्त कराने के लिए कुछ भी नहीं कर सकी, किन्तु भगतसिंह, भगवती बाबू तथा सुखदेव के प्रतत्नों से युक्त प्रान्त से सम्पर्क स्थापित हो गये थे। इसी बीच नौजवान भारत सभा की ओर से सायमन कमीशन का लाहौर में बायकाट करने की योजना बनायी गयी। एक विशाल जुलूस लाला लाजपतराय के नेतृत्व में स्टेशन तक पहुंचा। वहां लालाजी के सीने पर पुलिस के डण्डों की चोटें आयीं। उसी भीड़ में भगतसिंह, सुखदेव, भगवती बाबू व यशपाल थे। यशपाल व भगवती बाबू को भी चोटें आयीं और उनकी एनक भगदड़ में खो गयी। इसके कुछ समय बाद उन्हीं चोटों के परिणाम स्वरूप लालाजी की मृत्यु हो गयी। उनकी लाश को जलाने के बाद पुलिस उनके फूलों का अपमान न करे, इसके लिए यशपाल ने श्मशान में पहरा देना आरम्भ किया। घण्टे भर बाद भगवती बाबू तांगे पर भोजन तथा खाट लाद कर ले आये। कम्बल ओढ़ कर दोनों श्मशान में ही सोये। इसके बाद इन्होंने नेशनल बैंक में डकैती का भी प्रयत्न किया पर वह राष्ट्रीय कारणवश रोक दिया गया।

जब इस दल के युवकों ने आजाद के नेतृत्व में सांडर्स का वध कर दिया तब गिरफ्तारियों के भय के कारण सभी लोगों को भागने के लिए धन की आवश्यकता हुई किन्तु पैसा पास नहीं। अतः सांडर्स वध के पहिले ही भगवती बाबू अपने खाते में से ५००) रु० निकालकर दुर्गा भाभी को दे गये थे। सुखदेव ने भाभी से पूछा कि कुछ रुपये हैं। भाभी ने सुखदेव को ५००) रु० दे दिये। भगवती बाबू फरार थे ही। इन रुपयों से सभी साथी लाहौर से निकल गये। सिर्फ भगतसिंह को निकालना कठिन हो रहा था। भगवती बाबू पर मेरठ षड्यन्त्र केस में वारन्ट था। अतः वे गुप्त रूप से रहा करते थे। जयचन्द्र जी द्वार खुफिया करार दिए जाने वाले भगवती बाबू सदैव ही दल को अपने धन से समय-समय पर सहायता पहुँचाते रहते थे, साथ ही उनका घर दल का आश्रम स्थल था। इसी से समझ में आ सकता है कि क्रान्तिकारियों का जीवन कितना भयनक होता है। रातदिन के साथी भगतसिंह के भी मन में यह बात समा गयी थी कि भगवती बाबू ऊपर से तो क्रांतिकारी हैं पर वास्तव में वह सी. आई. डी. का आदमी हैं। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सुखदेवराज ने लिखा है कि सांडर्स वध के कुछ दिन पूर्व भगतसिंह और सुखदेव मुझे नजर आये। सुखदेवराज उस समय सायकल पर कालेज जा रहे थे। पीछे से सुखदेव ने आवाज दी। सुखदेव ठहर गये।

'एक बड़ी जरूरी बात तुमसे कहनी है'—सुखदेव ने कहा।

'कहो !'

'भगवतीचरण से ५०० रु० ला दो, बड़ी सख्त जरूरत है।'—सुखदेव ने कहा।

'तुम खुद ही भगवतीचरण के पास क्यों नहीं चले जाते' सुखदेवराज ने कहा।

'भगवतीचरण सी. आई. डी. का आदमी है, हम उसके पास नहीं जावेंगे।'

इसपर सुखदेवराज ने सुखदेव को फटकारा और कहा कि यदि तुम भगवतीचरण से रुपया नहीं मांग सकते, तो मैं भी उनसे रुपया मांगकर तुम्हें नहीं देख सकता।

'रहने दो सुखदेव ! पैसे की बात से मत करो, तुम नहीं जानते कि यह सोलह आने भगवतीचरण का ही आदमी है।' भगतसिंह ने कहा।

इस बात की तीव्र प्रतिक्रिया सुखदेवराज पर हुई और वह कालेज न जाकर सीधा भगवती बाबू के पास पहुंचा और सारी कहानी उन्हें कह सुनाई। कहानी सुन कर भगवती बाबू

गंभीर हो गए और कहने लगे—'रुपया पहुँचाने के लिए मना करके तुमने अच्छा नहीं किया। रुपये की व्यवस्था मैं किए देता हूँ तुम उन्हें पहुँचा दो।'

सुखदेवराज ने गरजकर कहा—'वह तो तुम्हें सी आई. डी. का आदमी समझे और तुम्हीं से रुपये मांगे ?'

'तुम समझते नहीं, भगतसिंह को रुपया पहुंचाना आवश्यक है।' भगवती बाबू ने कहा।

'क्यों आवश्यक है'?—सुखदेवराज ने पूछा।

'हो सकता है कि रुपया न पहुँचने पर भगतसिंह की हालत भी अशफाक जैसी ही हो जाय और हम छोटी सी मूर्खता के कारण भगतसिंह जैसे साथी से हाथ धो बैठें। राष्ट्रीय हित के मामलों व्यक्तिगत मामलों को बिलकुल ही नहीं आने देना चाहिये राष्ट्र व्यक्ति से ऊपर होता है। प्रश्न यह नहीं है कि वह मेरे विषय में क्या सोचता है, प्रश्न यह है कि राष्ट्र के लिए वह क्या करने जा रहा।' भगवती बाबू ने कहा।

भगवती बाबू ने बताया कि फरार होने की स्थिति में अशफाकउल्ला मेरे पास आने की सोच रहा था ताकि कुछ रुपया लेकर काबुल चला जाय, परन्तु जब उसे बताया गया कि 'भगवती चरण तो सी. आई. डी. का आदमी है तो वह मेरे पास नहीं आया, न जाने भूखा प्यासा कहां-कहां भटकता फिरा अन्ततः दिल्ली जा कर पुलिस के हाथ में पड़ गया। मैं नहीं चाहता कि किसी भी कीमत पर भगतसिंह का हाल भी अशफाक जैसा ही हो। रुपया दे देता हूं, तुम जाओ और भगतसिंह को दे आओ।'

सुखदेवराज भगवती बाबू की बात समझ नहीं पाये। जब भगवतीबाबू ने देखा कि सुखदेवराज रुपया देने नहीं जायेगा तो उन्होंने एक हजार रुपया भाभी के पास रख दिया और कह दिया कि जब भगतसिंह या उसका कोई आदमी रुपया मांगे तो दे देना।

भगवतीबाबू फरार हो कर कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पहुंच गये थे। इधर दल को भगतसिंह को लाहौर से निकालना कठिन हो रहा था, क्योंकि उन्हें लोग पहचानते थे, पुलिस ने सांडर्स के वध के समय उन्हें देख लिया था। अतः सुखदेव भाभी के पास आया और उनसे पूछा कि एक साथी को लाहौर से बचाकर कलकत्ते ले जाना है। उसकी पत्नी बनकर जाना होगा। क्रान्तिकारियों के दिलों को देखिए कि भाभी दूसरों के सामने अन्य पुरुष की पत्नी के रूप में अपने तीन वर्ष के बच्चे के साथ खुला सफर करें और यदि पुलिस से मुठभेड़ हो जाय तो बच्चे का क्या हो ? पर क्रांतिकारी इन बातों की चिन्ता नहीं करते, वे तो हथेली पर जान लिए फिरने वाले परिव्राजक होते हैं। भाभी फौरन रजामन्द हो गयी।

दुर्गा भाभी ने भगतसिंह को बचाया

सुखदेव कुछ देर बाद ही एक सुन्दर लम्बे फैशनेबल युवक को लेकर आ गया। भाभी ने ध्यान से देखकर भगतसिंह को पहचाना। सुबह ५ बजे भगतसिंह ओवरकोट पहने शची जो भगवती बाबू का तीन वर्षीय बच्चा था लिए हुए, अपने नौकर के वेश में राजगुरु से सामान उठवा कर अपटुडेट मेम साहब बनी हुई दुर्गा भाभी के साथ स्टेशन पहुंच गये। स्टेशन से भगतसिंह ने कलकत्ते में सुशीला दीदी को भाभी के नाम से तार देदिया। कलकत्ते में उस समय भगवती बाबू सुशीला दीदी के पास ही ठहरे थे। तार मिलते ही वे परेशान हो गये कि दुर्गा भाभी तो कलकत्ते जाने से इन्कार कर चुकी थीं, फिर यह अनायास आगमन कैसा ? स्टेशन पर दुर्गा भाभी की मेम जैसी शक्ल देख कर व पूरा मामला समझने पर भगवती बाबू समझ गये कि दुर्गा भाभी को वे जैसी देहाती औरत समझते थे वैसी नहीं। उन्होंने उसी समय भाभी के कन्धे पर हाथ रख कर कहा—"तुम्हें आज समझा।"

वहीं इत्तफाक से एक दिन जयचन्द्र जी मिल गये। उन्होंने वहां भी भगवती बाबू की खूब निन्दा की। भगतसिंह ने मन में क्या सोचा होगा किन्तु साधारण सी बुद्धि रखने वाला भी सोच सकता है कि जो व्यक्ति वारंट के कारण, सम्पन्न होते हुए भी फरारी का जीवन बिता रहा है, जिसकी पत्नी अपनी व अपने एकमात्र बच्चे की जान को जोखम में डालकर एक क्रांतिकारी को बचाने के लिए सब कुछ करने को उद्यत हो उस आदमी को भी खुफिया बताया जाय यह जयचन्द्र जी जैसे भारतीय इतिहास के प्रामाणिक विद्वान ही कह सकते हैं। जयचन्द्र जी अगाध विद्वान हैं पर जोखम से दूर रहने वाले व्यक्ति रहे हैं। दुःख की बात यह है कि उन्होंने क्रान्ति की कई वर्षों तक पंजाब में प्रगति न होने दी। इसीलिये कि क्रान्ति जोखम की सांसों से जीती है और जयचन्द्र जी जोखम से भागने वाले व्यक्ति हैं जयचन्द्र जी की बुद्धि का नमूना यह है कि जिस भगतसिंह को लाहौर से निकाल कर, जिस भगवती बाबू की पत्नी ने अपनी और अपने मासूम बच्चे की जान जोखम में डाली उसी व्यक्ति के सामने भगवती बाबू को खुफिया कहना कौन बरदाश्त कर सकेगा ?

एसेम्बली में बम फेंकने का निर्णय



कुछ दिनों बाद दल ने तय कर लिया कि भगतसिंह सोते हुओं को जगाने के हेतु "सार्वजनिक सुरक्षा" और 'औद्योगिक विवाद" बिलों पर, जो जनता के ठुकराये जाने के बाद भी बहस के समय से वायसराय के स्पेशल आर्डर से कानून बनने वाले थे, एसेम्बली भवन की गैलरी में से बम फेंकें और गिरफ्तार होकर जब मुकदमा चले तब दल के ध्येयों और उद्देश्यों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए एक ऐति-

हासिक बयान दे। वह बयान देश के प्रमुख पत्रों में छपेगा। इससे एक महानतम व्यक्ति को खोकर भी क्रान्तिकारियों के विषय में अच्छा प्रचार हो जायेगा। ८ अप्रेल १९२९ को उक्त दोनों बिल वायसराय के स्पेशल आर्डर से कानून बनने वाले थे। इसके लिए सुखदेव ने भगवती बाबू की खोज की। खोज करने पर वे मिल गये। उसने कहा कि "यदि भगतसिंह से अन्तिम बार मिल लेना चाहते हो तो आज रात की गाड़ी से दिल्ली चलो। भाभी को भी साथ ले लो।"

भगवती बाबू अन्तिम बार अन्तरग मित्र भगतसिंह से मिलने के लिए दुर्गा भाभी, सुशीला दीदी- जो कलकत्ते से छुट्टी पर आयीं थी और भगवती बाबू के पास ही ठहरीं थीं— और बच्चे शची के साथ दिल्ली रवाना हो गये। दिल्ली पहुंचकर भगवती बाबू ने भगतसिंह की पसन्द की चीजें रसगुल्ले और सन्तरे खरीद लिए और कुदसिया बाग में ठहर गये। सुखदेव वहां से भगतसिंह को लेने गया। कुछ देर बाद वह वापस आ गया। साथ में भगतसिंह भी था। दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी ने भगतसिंह को खूब खिलाया पिलाया। सुखदेव के अलावा किसी को भी ज्ञात नहीं था कि भगतसिंह की यह अन्तिम मुलाकात क्यों है? क्रांतिकारियों में एक दूसरे से पूछने का नियम नहीं था। रोली और अक्षत से टीके लगाकर भगत सिंह को विदा किया।

इसके बाद भगतसिंह एवं बटुकेश्वर दत्त द्वारा एसेम्बली में धड़ाका हुआ, दोनों को गिरफ्तार करके पुलिस ले जा रही थी कि सड़क के एक मोड़ पर एक तांगे में जाते हुए भगवती बाबू, दुर्गा भाभी, सुशीला दीदी तथा बच्चा शची भगतसिंह को दिखाई दिए। शची लम्बे चाचाजी (भगतसिंह) को चाहने लगा था क्योंकि वह दुर्गा भाभी के साथ कलकत्ते तक गया था और फिर वापस दिल्ली और लाहौर आया था अतः वह भगतसिंह से हिल गया था। भगतसिंह को मोटर में जाते देखकर वह चिल्लाया—"लम्बे चाचाजी!" भगतसिंह ने तांगे में से सभी लोगों को पहचान लिया। शची को भी पहचान लिया। यशपाल के शब्दों में ही उस समय की मनोदशा सुनिये– इन लोगों ने एक दूसरे को पहचान लिया परन्तु व्यवहार किया न पहचानने का। वह मन का कितना बड़ा संयम था। भगतसिंह को इस समय मृत्यु के हाथों से लौटा लेने के लिए अपने प्राण दे देना इनके लिए अधिक आसान होता। संयम और अनुशासन का ऐसा उदाहरण विकृत मस्तिष्क या कायर के लिए कभी संभव नहीं हो सकता। समझदार और व्यस्क लोग तो वैसे ही चुप रह गये जैसे पन्ना दाई कर्तव्य की रक्षा में अपनी सन्तान के टुकड़े-टुकड़े होते देख कर गई थी।"

'बच्चे शची के "लम्बे चाचाजी" चिल्लाते ही दुर्गा भाभी ने उसका मुंह गोद में छिपाकर चुप करा दिया। यह क्या पीड़ा से उठती रुलाई निकलने न देने के लिए अपना गला घोंट लेने से क्या कम था?'

दुर्गा भाभी, सुशीला दीदी व प्रकाशवती के वारन्ट जारी

दिल्ली षड्यन्त्र के मुखबिरों सुल्तानचन्द एवं दीनानाथ के बयानों के आधार पर दिल्ली में बड़ी बम फैक्टरी बनाये जाने पर प्रकाशवती, बाद में जेल में विवाह करके यशपाल की धर्म-पत्नी बनी, दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी तीनों उक्त बम फैक्टरी की प्रबन्धकर्त्री थीं। अतः इन तीनों की गिरफ्तारी के लिए इनामों की घोषणा थी। इधर भगवती बाबू के मेरठ षड्यन्त्र से सम्बद्ध होने के सम्बन्ध में वारन्ट था। इस कारण उनके घर की बार-बार तलाशियां होती रहती थीं। एक बार सुखदेव बम के कुछ खोल तैयार करा कर दुर्गा भाभी के घर लाया और खोल छोड़ कर किसी काम से चला गया। उसके जाते ही पुलिस तलाशी का वारन्ट लेकर दुर्गा भाभी के मकान पर आ गयी। कोई भी व्यक्ति ऐसे समय घबरा जाता है किन्तु भाभी तो भगवती बाबू की धर्म पत्नी थीं। उन्होंने पुलिस को जवाब दे दिया कि "मेरे पति घर पर नहीं हैं, दूसरा कोई मर्द भी यहां पर नहीं है। जब तक मेरे भरोसे का कोई आदमी यहां नहीं हो तब तक मैं तलाशी नहीं लेने दूंगी।" इस पर पुलिस ने कहा– "आप अपने भरोसे का व्यक्ति बुलवा लाइये। जब तक पुलिस अपना घेरा नहीं उठा सकती।" भाभी मकान बन्द करके यशपाल के घर आयीं। वहां भाभी को रोक स्वदेश को भाभी के घर भेजा और उसे कह दिया गया कि फलां जगह बम के खोल रखे हैं। स्वदेश ने आ कर पुलिस से कहा कि वह सुशीला दीदी के बीमार बच्चे को देखने आयी है। पुलिस ने उसे चले जाने दिया। स्वदेश ने सभी खोल अपने कपड़े में छिपा लिए और पुलिस से कहती चली गई कि वह बीमार बच्चे की दवा लेने जा रही है। इसके बाद भाभी यशपाल को ले कर अपने घर पहुंची। यशपाल ने एक निर्लिप्त व्यक्ति की तरह घर की तलाशी अपने सामने ले लेने दी।

दुर्गा भाभी की मेहमान नवाजी

यशपाल ने भगवती बाबू की मेहमान नवाजी एवं तत्कालीन क्रान्तिकारियों के केन्द्र बिन्दु के रूप में उनका वर्णन करते हुए लिखा है कि "उन दिनों उनका मकान लाहौर में सशस्त्र क्रान्ति की चेष्टा और नौजवान भारत सभा के काम का प्रधान अड्डा बना हुआ था। दुर्गा भाभी इतने आदमियों को चले आते देख कर मन में चाहे जितनी परेशान होती हों किन्तु

(शेषांश पृष्ठ १७ पर)

दुर्गा भाभी का संघर्षमय जीवन

० चन्द्रोदय दीक्षित

करीब बीस वर्ष पहले लखनऊ मांटेसरी स्कूल की कक्षा में श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की 'रानी लक्ष्मीबाई' सम्बन्धी कविता बच्चों को पढ़ा रहा था—

'वह लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता का अवतार'

इस पंक्ति का अर्थ समझाने का प्रयास करते हुए दुर्गा की वीरता की चर्चा की। इसको सहज वर्तमान के संदर्भ से जोड़ते हुए मेरे मुँह से निकल गया कि 'आपकी बड़ी दीदी का नाम भी दुर्गा है और उन्होंने भी आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेते हुए एक अंग्रेज पर गोली चलायी थी।' फिर क्या था इन्टरवल की छुट्टी में बच्चों ने श्रीमती दुर्गादेवी को घेर लिया और पूछना शुरू किया— 'दीदी बताइये न आपने गोली कैसे चलायी थी और श्रीमती दुर्गादेवी ने बच्चों को शान्त करने और बात को टालने में बड़ी चतुराई से काम लिया था। अन्त में मुझे ही उनका इतिहास बच्चों को बताना पड़ा था।

भारतीय क्रांतिकारी इतिहास में जहां कहीं भी सरदार भगतसिंह का उल्लेख किया जायेगा, उसके साथ ही स्व० भगवती चरण बोहरा और उनकी समानरूपा क्रांतिकारी पत्नी श्रीमती दुर्गादेवी का उल्लेख करना अपरिहार्य होगा। १९१९ से लेकर १९३० तक इस दम्पति ने क्रांति की ज्वाला में अपना सर्वस्व स्वाह करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। श्रीमती दुर्गादेवी को क्रांतिकारी आंदोलन में सभी लोग भाभी के नाम से जानते थे और भगवतीचरण बोहरा की मुँह-बोली बहिन सुशीला जी को सभी लोग 'दीदी' के नाम से पुकारते थे। श्रीमती दुर्गादेवी का विवाह भाई भगवतीचरण बोहरा से मई १९१८ में हुआ था। उस समय भगवतीचरण जी की आयु १५ वर्ष और दुर्गादेवी की आयु ११ वर्ष की थी।

भाई भगवतीचरण बोहरा का जन्म जुलाई १९०३ में हुआ था। आपके पिता पं० शिवचरण लाहौर में रेलवे में उच्च अधिकारी थे और उन्हें उस समय ८-९सौ रु. महीने मासिक वेतन मिलता था। श्रीमती दुर्गादेवी का जन्म ७ अक्टूबर १९०७ को इलाहाबाद में हुआ था। आपके पिता पंडित बांकेबिहारीलाल भट्ट (नागर) ब्राह्मण थे और जिला जज के पद से रिटायर हो चुके थे। १९०८ में उनकी पत्नी का निधन हो गया तो श्रीमती दुर्गादेवी को उनकी बुआ जी ने पाला पोसा था। १९१८ में जब श्रीमती दुर्गादेवी की आयु ११ वर्ष की थी तभी उनके पिता ने अपनी पुत्री का विवाह धूमधाम से किया। दहेज में घोड़ागाड़ी व मोटर साइकिल दामाद को दी गयी और काफी खर्च किया गया। पं० शिवचरण मूलतः आगरा में बसे कुलीन नागर ब्राह्मण थे। उनकी एक शाखा जयपुर राज्य में रहने लगी थी और वहां राज दरबार में महाजनी का काम करने के कारण उनको 'बोहरा' या 'बोहरे' कहा जाने लगा था। तभी से बोहरा उपनाम जुड़ गया था।

१९१९ में पं० शिवचरण जी को 'रायसाहब' की उपाधि मिली। उस वर्ष भगवतीचरण ने मैट्रिक परीक्षा पास की थी। इस अवसर पर पं० शिवचरण जी ने अंग्रेज अधिकारियों को बड़ी दावत दी, लेकिन श्री भगवतीचरण उस दिन घर से गायब थे। उन्हीं दिनों भगवतीचरण ने अपनी पत्नी को अपने राजनैतिक विचार बताये थे। वे देश की गुलामी की जंजीरें तोड़ देने को आतुर थे और इसके लिए अपने को शिक्षा और प्रशिक्षण से हर प्रकार योग्य बनाना चाहते थे। इसी दृष्टि से उन्होंने श्रीमती दुर्गादेवी की शिक्षा की व्यवस्था की। १९२१ में श्री भगवतीचरण ने लाहौर के एम० सी० कॉलेज से साइन्स की इण्टरमीडिएट परीक्षा पास की लेकिन असहयोग आन्दोलन के प्रभाव में सरकारी शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया और जब लाला लाजपतराय ने नेशनल कालेज की स्थापना की तो उसमें भर्ती हो गये। १९२३ में उन्होंने बी० ए० परीक्षा पास की और सम्भवतः उसी अवधि में श्रीमती दुर्गादेवी ने प्रभाकर परीक्षा पास की। इसके बाद श्री भगवतीचरण जर्मनी जा कर आगे की शिक्षा लेना चाहते थे लेकिन वे बाहर नहीं गये।

१९२५ में काकोरी षड्यन्त्र के नेता श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल और उनकी पुस्तक 'बन्दी जीवन' युवा क्रान्तिकारियों को विशेष रूप से आकृष्ट करती थी। भगवती चरण के पुत्र का जन्म ३ दिसम्बर १९२५ को हुआ तो उन्होंने उसका नाम शचीन्द्र रखा।

जब भगतसिंह को बचाने के लिए भाभी उनकी पत्नी बन कर कलकत्ता गयी तो भगवती भाई ने उनकी पीठ थपथपा कर कहा— "आज हम लोगों का सच्चा विवाह हुआ है।" किसी ने टोका कि विवाह तो दस वर्ष पहले हुआ था तो उन्होंने हँस कर कहा—"तब तो यह हम लोगों के माता पिताओं का खेल था" आज भी भाभी के कानों में वे शब्द ताजा ध्वनि से व्याप्त हैं। कलकत्ता कांग्रेस के समाप्त होने के बाद भाभी फिर लाहौर लौट आयी और सामान्य रूप से रहने लगी।

भगवतीचरण के सम्पर्क कलकत्ता, बम्बई, कानपुर लखनऊ, दिल्ली, मेरठ आदि सभी प्रमुख नगरों में थे। जयपुर

ग्रौर ग्वालियर से हथियार ग्रौर बमों के खोल मंगाये जाते थे ग्रौर इन कार्यों में दुर्गा भाभी पर्दानशीन मारवाड़ी महिला की भांति बड़े घेर वाली लहंगा ग्रोढ़नी ग्रौर लम्बी चादरों का प्रयोग करती थी। तैयारी इस बात की थी कि ग्रागे के क्रांतिकारी कार्यों में बमों का प्रयोग किया जाय।

करीब एक दर्जन बम तैयार किये गये। उनकी परीक्षा का काम स्वयं भाई भगवतीचरण ने ग्रपने ऊपर लिया ग्रौर २८ मई १९३० को रावी के किनारे के जंगल में परीक्षा करने के लिये गये। बम का विस्फोट उनके हाथ में हो गया जिससे वे बुरी तरह घायल हो गये। ग्रन्य दो साथियों में एक उनके पास रुका रहा ग्रौर दूसरे ने भाग कर ठिकाने पर जा कर दूसरे साथियों को खबर दी। यशपाल जब तक वहां पहुंचे तब तक उनकी हालत खराब हो गयी ग्रौर बिना डाक्टरी सहायता के इस वीर ने ग्रपनी ग्रात्माहुति दे दी। साथियों ने नदी के किनारे उनकी समाधि बना दी ग्रौर शोक सन्तप्त दशा में वहां से वापस ग्राये।

श्रीमती दुर्गादेवी की उस समय की मनोदशा का ग्रनुमान ही लगाया जा सकता है। ग्राजाद ने भाभी को सांत्वना देने का प्रयास किया। लेकिन उन दिनों बहावलपुर कोठी की ग्रलमारी में दबे बम गर्मी के कारण फट गये ग्रौर उसी दशा में कोठी छोड़ कर सब लोग वहां से भाग निकले। इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भाभी को एक इंजीनियर साहब के सामने के एक कमरे में लगातार १५ दिन बन्द रहना पड़ा। भोजन देने के लिये भी जो नौकरानी जाती थी वह खाने की थाली सरका कर बिना बोले वापस चली जाती थी।

इस घटना के बाद दिल्ली में जा कर ये लोग ठहरे ग्रौर फिर से नवीन सूत्रपात किया गया। दिल्ली में ग्राजाद ने गडोलिया जा कर पार्टी के लिये धन एकत्र किया। ग्राजाद भाभी जी ग्रौर सुशीला दीदी दोनों के ग्रभिभावक बन गये। कुछ दिनों तक इन लोगों को इलाहाबाद के क्रांसवेथ कालेज में छद्म नाम से छात्र के रूप में भर्ती करा कर कालेज के छात्रवास में रख दिया गया लेकिन वह स्थान भी निरापद नहीं समझा जाता था। ग्रतः उसे छोड़ दिया। इलाहाबाद में भी सुरेन्द्रनाथ शर्मा नामक पत्रकार के यहां इन लोगों को कुछ समय रखा गया। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन श्रीमती दुर्गादेवी को ग्रपनी पुत्री की भांति सहायता देते थे। उनके निवास स्थान पर भी वे लोग कुछ समय रहीं।

भगतसिंह, सुखदेव ग्रौर राजगुरु को फांसी की सजा सुनाई गई थी, उन दिनों गांधी-इरविन एक्ट के दौरान कराची कांग्रेस से पूर्व, दुर्गा भाभी ग्रौर सुशीला दीदी ग्रपनी फरारी की ग्रवस्था में ही रात के समय देहली के कांग्रेसी नेता रघुनन्दनशरण के साथ डा० ग्रन्सारी की कोठी पर गांधी जी से मिली थी ग्रौर गांधी इरविन समझौते में इन तीनों व्यक्तियों की फांसी रुकवाने की शर्त भी रखना चाहती थी किन्तु गांधी जी ने उसे हिंसा ग्रहिंसा के सिद्धांत के ग्राधार पर स्वीकार नहीं किया। बल्कि गांधी जी ने कहा कि "तुम दोनों ग्रपने ग्राप को मुझे समर्पण कर दो तो मैं कोशिश कर के तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।" यह इन्हें स्वीकार न हुग्रा। इस फैसले से जेल के बाहर के क्रांतिकारियों पर हृदय विदारक प्रभाव पड़ा ग्रौर साथ ही उसे चुनौती मान कर एक क्रांतिकारी कार्य करने की योजना बनायी गयी।

बम्बई के गवर्नर को गोली से उड़ा देने की योजना का नेतृत्व सरदार पृथ्वीसिंह को करना था। उनकी सहायता के लिये श्रीमती दुर्गादेवी बम्बई गयी। उनका पुत्र शचीन्द्र भी उनके साथ था। वीर सावरकर के बड़े भाई बाबा साहब सावरकर से भी इनका सम्पर्क हुग्रा। वैशम्पायन नामक सज्जन के मकान में ये लोग ठहरे थे। बम्बई के गवर्नर ग्रपने बंगले के लान में बैठ कर लोगों से मिलते थे। योजना यह थी कि श्रीमती दुर्गादेवी किसी पारसी महिला के नाम से उनसे मुलाकात करने जायेंगी ग्रौर जब उन्हें ग्रपनी बातों में लगायगी, उनके साथ के क्रांतिकारी उस पर गोली चला कर उसकी हत्या कर देंगे। जब इस प्रकार का प्रयास दो दिन टल गया ग्रौर पुलिस इन लोगों पर कड़ी निगाह रखने लगी तो एक दिन शाम को गवर्नमेंन्ट हाउस के निकट लेमिंग्टन रोड पर इन लोगों की मोटर ग्रा रही थी तो गवर्नमेन्ट हाउस से निकलने वाले पर गोली चला दी। यही काण्ड लेमिंग्टन रोड गोलीकांड के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें सेना का ग्रधिकारी टेलर जख्मी हो गया। गोली चलाते समय उसे गवर्नर ही समझा गया था।

इस काण्ड के बाद दुर्गादेवी बम्बई से गुप्त रूप से भाग कर पुनः कानपुर ग्रा गयी। बाबा साहब सावरकर ने शचीन्द्र को एक स्थान पर पहुँचा दिया था जहां से उसे ग्रपनी माँ के पास पहुँचने की सुविधा मिली। कानपुर में कुछ दिन छिप कर दुर्गा भाभी पुनः दिल्ली गयी ग्रौर एक सज्जन के यहां शचीन्द्र को रखने का इन्तजाम किया गया।

ग्राजाद की मृत्यु के बाद दुर्गा भाभी ग्रौर सुशीला दीदी कुछ समय तक इधर-उधर घूमती रही। पुलिस लगातार पीछा करती थी। शचीन्द्र एक सज्जन के यहां रखा गया था। इन्हीं दिनों वे दिल्ली गयी ग्रौर फिर लाहौर पहुँच कर उन्होंने भी प्रेस के संवाददाता को एक बयान प्रेस में छपने के लिये दिया। जिसमें पुलिस की ग्रोर से लगातार परेशान किये जाने की शिकायत थी। लाहौर में उन्हें गिरफ्तार

कर लिया गया। बाद में पुलिस ने उन्हें कुछ समय तक पूछताछ के लिए रिमाण्ड पर रखा। इसके बाद में रेगुलेशन तीन के मातहत नजरबन्द कर दिया गया। ६ महीने तक नजरबन्द रखे जाने के बाद उन्हें लाहौर शहर की सीमा में तीन वर्ष तक नजरबन्द रखा गया। इसी तरह १९३४ का समय आ गया और नजरबन्दी का समय बीतने के बाद श्रीमती दुर्गादेवी गाजियाबाद आ गयी। वहां प्यारेलाल गर्ल्स स्कूल में अध्यापिका के रूप में काम करना शुरू कर दिया। इसके साथ कांग्रेस की राजनीति में सही रूप से भाग लेना भी शुरू किया। दिल्ली के कांग्रेसी नेता श्री रघुनन्दनशरण से आपकी भेंट महात्मा गांधी से डाक्टर अंसारी की कोठी में कराई थी। उस समय आप दिल्ली में रहती थी। वहां सुशीला दीदी और श्रीमती सत्यवती आपसे मिली थी। श्रीमती सत्यवती कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की नेता मण्डली में प्रमुख थी। १९३८ में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी में श्रीमती दुर्गादेवी अध्यक्ष चुनी गयी। इससे यह समझा जा सकता है कि उनका वहां के क्षेत्रों में कितना महत्व था। १९३७ के अन्त में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने काकोरी षड्यंत्र खण्ड के क्रांतिकारियों को रिहा कर दिया। पूरे प्रदेश में इन लोगो का शानदार स्वागत किया गया। दिल्ली में इस अवसर पर राजनीतिक सम्मेलन करके क्रांतिकारियों का अभिनन्दन करने की योजना बनाई गयी, लेकिन दिल्ली के अधिकारियों ने उनके दिल्ली जाने पर रोक लगा दी। क्रांतिकारियों ने उस प्रतिबन्ध को तोड़ कर दिल्ली में प्रवेश किया। वहां उन्हें गिरफ्तार कर ६-६ महीने की सजाएं दी गयी। दिल्ली के प्रशासन में पंजाब पुलिस का अधिक प्रभाव था और पंजाब की सरकार क्रांतिकारियों के साथ किसी प्रकार का रियायती व्यवहार नहीं करना चाहती थीं।

इन्हीं दिनों कांग्रेस संगठन कर पुनः संगठन किया गया और गाजियाबाद व मेरठ कमिश्नरी के जिलों को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मातहत कर दिया गया। इस प्रकार दिल्ली प्रदेश कमेटी का बहुत सा क्षेत्र उत्तर प्रदेश में आ गया। श्रीमती दुर्गादेवी ने भी अपनी सदस्यता उत्तर प्रदेश कांग्रेस से सम्बद्ध करा ली।

सितम्बर-अक्टूबर १९३० में श्रीमती दुर्गादेवी लखनऊ आ गयी थी। उस समय से वे निरन्तर लखनऊ में हैं। लेखक का परिचय उसी समय से है। 'बच्चन' विश्वनाथ वैशम्पायन का क्रांतिकारियों के बीच घरेलू नाम था और उस समय वे जेल में थे। चन्द्रशेखर आजाद के वे काफी समय तक साथ रहे थे और उन पर उनका अटूट विश्वास था। लखनऊ आने के बाद वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के घनिष्ट सहयोग में आयी। हरिपुरा और त्रिपुरी कांग्रेस में उन्होंने प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया था। त्रिपुरी कांग्रेस में सुभाषचन्द्र बोस के साथ कांग्रेसी नेताओं ने जैसा व्यवहार किया था उससे वे बड़ी दुःखी थी। इन्हीं दिनों उन्होंने बाल शिक्षा क्षेत्र में विशेष अध्ययन किया। १९३९ में स्वयं मद्रास के निकट अडयार जा कर मांटेसरी शिक्षा पद्धति की ट्रेनिंग ली और उसके बाद २० जुलाई १९४० को लखनऊ मांटेसरी स्कूल की स्थापना कन्टूनमेन्ट रोड के एक छोटे बंगले में की। इस स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रथम अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्रदेव थे। उनके जेल जाने के बाद श्री के०सी० पुरी और फिर श्री रफी अहमद किदवई और उनके निधन के बाद पुनः श्री के० सी० पुरी और आजकल डाक्टर सावन बोस स्कूल की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष हैं।

लखनऊ मांटेसरी स्कूल ने लखनऊ में एक नवीन शिक्षा पद्धति का श्रीगणेश किया था। जिसमें प्राथमिक शिक्षा शुरु होने से पहले की स्थिति के बालकों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। जब स्व० रफीअहमद किदवई इस स्कूल की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष थे तो उन्होंने इसके प्रसार और विकास में विशेष रुचि ली, लेकिन उनके निधन के बाद उनका सपना साकार हुआ। सदर में जमीन मिलने के बाद ७ फरवरी १९५७ को तत्कालीन प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने इसके वर्तमान भवन का शिलान्यास किया। अब इस स्कूल को इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा देने की मान्यता मिलने वाली है। इस स्कूल की प्रतिष्ठा और यश श्रीमती दुर्गादेवी की कीर्ति समझी जानी चाहिए।

श्रीमती दुर्गादेवी ने १९४६ में अपने पुत्र शचीन्द्र को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये अमेरिका भेजा और इसके लिए उन्होंने बिना किसी मोह के लाहौर और इलाहाबाद के मकानों को बेच दिया। शचीन्द्र वहां से इन्जीनियरी की उच्च शिक्षा लेकर लौटे और इस समय वे कलकत्ता में एक बड़ी कम्पनी के अधिकारी हैं। उनका विवाह लखनऊ में हुआ और इस समय उनके एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं।

श्रीमती दुर्गा का स्वभाव कोमल किन्तु वज्र की भांति कठोर है। वे कठोर तपस्या की अभ्यासिनी हैं और देश व समाज के प्रति अपने कर्तव्य पालन में वे सम्पूर्ण बलिदान देने में पूरा-पूरा हिस्सा ले चुकी है। विचारों में वे पूर्णतः लोकतांत्रिक सिद्धांत और व्यवहार की समर्थिका हैं। समाजवाद के मानवीय पक्ष से वे प्रभावित हैं लेकिन सरकारपरस्ती और अफसरशाही की जबान से उनको काफी परेशानी भोगनी पड़ी है। व्यक्ति स्वातन्त्र्य और उद्यम को अपना आदर्श मानती हैं। *

लखनऊ मान्टेसरी हायर सेकण्डरी स्कूल, पुराना किला, लखनऊ

बम का मसाला बनाने के रासायनिक उपकरण और सामग्री जमा हो जाने पर प्रश्न उठा कि मसाला बनाने के लिए रोहतक कौन जाय ? भगवती भाई यह काम स्वयं करना चाहते थे। उनकी इस इच्छा का कारण बहुत सीधा था। देवदत्त जी ने यह भी स्पष्ट बता दिया था कि बड़े पैमाने पर कई दिन तक यह काम करना स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। कुछ क्रियात्मक अनुभव हम लोगों को लाहौर में हो ही चुका था। बड़े-बड़े कारखानों में जहां यह पदार्थ टनों के परिमाण में बनते हैं, काम करने वाले लोग इन पदार्थों के वाष्प से सुरक्षित रहते हैं। स्वास्थ्य की हानि के अतिरिक्त पकडे जाने पर सीधे जेल पहुंचने में या पुलिस के पकड़ने आने पर लड़ाई में मारे जाने में तो कोई संदेह था ही नहीं। भगवती अब इस बीच कलकत्ते जाकर किरण से दूसरी पिस्तौल भी ले आये थे। अब हम दोनों ही सशस्त्र रहते थे। मेरी जिद्द थी कि मसाला बनाने का काम मैं करूं। सम्भव है, इसमें अपनी चतुरता का अभिमान रहा हो परन्तु मेरा तर्क था— जो भी आदमी मसाला बनाने जायगा उसे तीन हफ्ते या महीना भर वहीं जमे रहना होगा। भगवती भाई उस समय भी कानपुर में स्व० गणेशशंकर विद्यार्थी की मारफत चन्द्रशेखर आजाद और दल के पुराने साथियों से सम्बन्ध जोड़ने के प्रयत्न में लगे हुए थे। मैंने कहा "तुम्हारा यह आवश्यक कार्य रुक जायगा, दूसरी बात कि बम का मसाला बनाने के लिए रोहतक में मुझे या तुम को द्य जी के नौकर के रूप में काम करना होगा। तुम्हारा प रंग नौकर जैसा नहीं जचेगा। चश्मा उतार कर तुम चल भी हीं पाओगे। "और आखिर में वही तर्क कि "मेरी अपेक्षा तुम्हारे पकडे जाने से दल की अधिक हानि होगी" आखिर भगवती मान गये। वे एक दिन रोहतक जा वैद्य लेखराम को दिल्ली बुला लाये ताकि मेरा और उनका परिचय तथा रोहतक का ढंग निश्चित हो जाये।

लेखराम जी को जब बताया गया कि मैं रोहतक में उसके नौकर के रूप में काम करूंगा तो उसे विस्मय हुआ। साथी लेखराम गोरे रंग, लंबतड़ंग, इकहरे पुष्ट शरीर का नौजवान था। रोहतक जैसे देहाती नगर के ख्याल से वह काफी भद्र नागरिक वेश– महीन धोती, रेशमी कमीज, कोट और साफा पहनता था। दिल्ली में उसने मुझे देखा, सूट, कालर टाई, और हैट पहिने छोटी-छोटी तितली नुमा मूछें रखे। उसने आपत्ति की– "तुम नौकर कैसे जंचोगे ?"

भगवती भाई के कहने अनुसार रोहतक में लेखराम ने एक कच्चा मकान अपने मकान और दुकान से अलग दवाई बनाने के काम में ले लिया था और पास पड़ोस और परिचितों में कह रखा था कि वह शीघ्र ही बहुत बढ़िया-बढ़िया दवाइयां पारे, लोहे, चांदी, सोने और मूंगे की भस्म आदि से बनाने का काम शुरू करेगा। लेखराम का आधा समान ले कर रोहतक लौट जाने और तीन चार दिन बाद आ कर मुझे साथ ले जाने की सलाह दी गई। कुछ दिन मैंने हजामत न बनाई और जब बनाई तो लम्बी लम्बी मूंछे रहने दी। भगवती भाई लाहौर में छटी हुई आधी-आधी मूंछे रखते थे। दिल्ली में वे मूंछों को बढ़ा कर और चढ़ा कर रखने लगे। पड़ोसियों का ध्यान मेरे मूंछ परिवर्तन की ओर कैसे न कैसे जाता ? उनके पूछने पर कि "क्या बात है ?" भगवती भाई के कह दिया "जनखे की तरह मूंछे मुडे रहना ठाकुरों को शोभा नही देता।" चार-पांच दिन बाद लेखराम रोहतक से मुझे लिवाने के लिए आया तो एक मोटी मैली धोती, मोटे कपड़े का कुरता और हरे रंग की लम्बी पगड़ी साथ लेता आया। पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित न करने के लिए हम लोगों ने रात को साथ चलने का निश्चय किया। रात नौ साढ़े नौ बजे मैंने कुर्त्ता धोती पहन हरयाणा के जाटों के ढंग से पगड़ी सिर पर बांध ली और चश्मा उतार दिया। "अब तो तुम बिलकुल देहाती जचते हो यार।" लेखराम ने हँस कर कहा।

साथी लेखराम की वैद्यक की दुकान रोहतक के बीच बाजार में थी। मैं इस दुकान पर सुबह-सुबह झाड़ू लगा, टाट फट्टा झाड़ दुकान के नीचे सड़क पर बोरी बिछा कर बैठ जाता और हमाम दस्ते से दवाइयां कूटता था या खरल में घोंटता रहता। गर्मी का मौसम था, जुलाई- अगस्त के दिन थे। कोई मरीज या मित्र आ कर लेखराम से बात कहने लगता तो मुझे पुकार लेता–"अबे किसनू बहुत पसीना आ रहा है जरा पंखा तो कर।' मै दवाई कूटना छोड़ पंखा करने लगता। इस बीच हम लोग नया मकान ढूंढते रहे। लेखराम ने जो मकान तय किया था, वह हमारे काम के योग्य न था।

मकान ठीक होने पर मैं नई जगह में दवाइयां कूटने अर्थात बम का मसाला बनाने का काम करने लगा। मैं देवदत्त जी की बताई विधि के अनुसार काम कर रहा था। एक तेजाब में शनैः शनैः दूसरा तेजाब मिलाते समय हिलाते रह कर मिश्रण को स्टोव पर उबालना और उसमें रासायनिक विधि से तीसरा तेजाब बूंद-बूंद डालते जाना। उबलते तेजाब के बर्तन से पीला धुआं बहुत अधिक परिमाण में उठता था। बर्तन को छोड़ कर दूर नहीं बैठा जा सकता था क्योंकि मिश्रण को हिलाते रहना आवश्यक था। तेजाब के इस पीले धुंये के प्रभाव से मेरा कुर्त्ता धोती दो दिन में ऐसे हो गए कि उन्हें जहां से पकड़ता टुकड़ा हाथ में रह जाता। हर दो दिन के बाद नया कुर्त्ता धोती लाते रहना सम्भव न था। इसलिए मैंने काम करते समय कुर्त्ता लंगोट बांधना शुरू कर दिया। बाहर आने जाने के लिए

लेखराम ने दूसरा फटा-पुराना कपड़ा पहनने के लिए मुझे दे दिया।

कपड़े न पहनने से इस धुंए का असर मेरी त्वचा पर होने लगा। सारे शरीर का रंग हल्दी जैसा पीला पड़ गया। चार-पांच दिन बाद नहाते समय त्वचा से महीन झिल्ली सी उतरने लगी, जैसी चौमासे में शरीर पर फूली हुई घाम फट कर झड़ने पर उतरती है। इससे कोई कष्ट अनुभव न होना था। हां, धुंए के कारण खांसी और सिर दर्द की ही परेशानी बहुत होती थी तेजाबों के रासायनिक मिश्रण से 'पिक्रिक' एसिड के स्फटिक (क्रिस्टल) बन जाने के बाद उसे धोना पड़ता था। इस काम के लिए रबड़ के दस्ताने जैसे कि डाक्टर लोग ऑपरेशन करते समय पहिनते हैं पहिने रहता था। इस प्रकार भी चौथे पांचवें दिन गल जाते। मेरे हाथों का रंग पहले पीला पड़ा और फिर लाल सा हो गया जैसा कि मेंहदी का रंग पुराना हो जाने पर या सुलफे के दाग से हो जाता है।

मैं प्रतिदिन सुबह मसाले का एक छान या चढ़ाव पकाने के लिए चढ़ाता था। इसमें लगभग चार घण्टे लगते थे। इसके बाद रासायनिक द्रव्य पदार्थ को ठण्डा होने के लिये रख देना पडता था। ताकि उसके मिश्री की तरह क्रिस्टल बन जाय। इस बीच में कुछ देर के लिए दुकान पर काम करने चला जाता। दुकान पर काम था, दवाई कूटना, वैद्य जी को पखा करना या उनके मित्रों के आने पर ठण्डे कुंए से ताजा जल भर कर लाना। दुकान पर कुछ लोगों ने मेरे हाथों की लाली देख टोका। मैंने दीनता से उत्तर दे दिया— "सरकार, जरा मेंहदी लगा ली थी'। ऐसे अवसरों पर लेखराम कब चूकने वाला था, बोल उठता, "देखो साले जनखे को, औरतों की तरह मेंहदी लगाता है। बड़ा शौकीन है। शर्म नही आती।"

वैद्य जी के लिए जिस ठण्डे कुंए से ताजा पानी लेने जाना पड़ता था, वह रोहतक के आर्य समाज मन्दिर में था। उन दिनों एक स्वामी जी ठहरे हुए थे और नित्य संध्या रामायण की कथा कहते थे। मुझे देख पुकार लेते— "कहो किसना कैसे आये ?"

"वैद्य जी के लिये ठण्डा पानी लेने आया हूं महाराज-" उत्तर पाने पर वे एक डोल अपने लिए भी निकाल देने का अनुरोध कर देते। उनका अनुरोध भी पूरा करता। बाजार में समझा जाता था कि वैद्य जी का नौकर किसना बहुत भला आदमी है पर जरा सीधा अधिक है। पानी लेने आर्य समाज मन्दिर जाता तो यह सोच कर कि लौटने पर या तो दवा कूटनी पड़ेगी या लेखराम को पंखा झलना पड़ेगा, स्वामी जी के जी के पास ही पांच सात मिनट बैठ कर बात करता रहता— "बड़े-बड़े तीर्थ करे होंगे महाराज तुमने ?"

एकान्त से उकताते हुए स्वामी जी कोई बात सुनाने लगते। एक दिन स्वामी जी के अनुरोध पर निकाले हुए डोल का पानी उन्हें देने गया तो देखा कि वे मोटे अक्षरों में पत्थर की छपाई की एक पुस्तक पढ रहे थे। मैं पुस्तक के उल्टी ओर खड़ा था परन्तु पुस्तक के पृष्ठ पर छपा पुस्तक का नाम तो पढा ही जा सकता था। वह पुस्तक थीं 'छिनाल पच्चीसी'। "स्वामी जी क्या रामायण बांच रहे हो ?" डोल से कमडल में जल डलवाते हुए स्वामी जी से प्रश्न किया।

स्वामी जी ने उत्तर दिया— "हां ऐसे ही एक शास्त्र की किताब है। तू रामायण ही समझ ले" और पूछा— "कुछ पढा लिखा नहीं किसना तूने ?" "नहीं महाराज ऐसे करम कहां हैं ?" मेरा उत्तर पा स्वामी जी ने दया पूर्वक मुझे पढा देना स्वीकार कर लिया।

साथी लेखराम दुकान से घर की ओर जाते समय या दुकान पर आते समय कोई बक्सा, बोरी या कनस्टर मेरे सिर पर उठवा देते। ऐसे ही एक दिन में उसके पीछे-पीछे चला जा रहा था। बाजार में उसकी एक से भेंट हो गई। वह मित्र पान सोडा शरबत की दुकान के सामने लोहे की कुर्सी पर बैठा कुछ पी रहा था। उसने लेखराम को भी साथ की कुर्सी पर बैठा लिया और एक लेमनेड या सोडा उसे भी देने के लिए दुकानदार को आदेश दिया। मैं सिर पर कनस्टर उठाये खड़ा रहा। लेखराम ने मेरी ओर घूर कर पूछा—"क्यों बे किसना, तू भी सोडा पीयेगा ?"

"पी लूंगा महाराज" उत्तर दिया। "ऐ है; सोडा पीयेगा ? बड़ा शौकीन है ? साले कभी तेरे बाप ने भी पिया है सोडा ?" लेखराम बोला और दुकानदार को आदेश दिया– "अच्छा भाई इसे भी पिलाओ सोडा। चल, एक अद्धा दे दे।"

दुकानदार ने उन दोनों मित्रों को तो सोडा लेमनेड की बोतलें कायदे से गिलास में उडेल बर्फ तोड़ कर दी और एक आधी बोतल खोल, मुझे भी थमा दी।

मैं कनस्तर सड़क पर रख खड़ा-खड़ा मुंह उठा कर बोतल पीने लगा। इस पर लेखराम ने मेरी ओर घूम कर फटकार दिया– "देखो तो, बैल की तरह खड़ा डकार रहा है। बैठ कर क्यों नहीं पीता ?" मुझे सड़क पर ही बैठ जाना पड़ा।

अपने कारखाने में पहुँच मैंने किवाड़ भीतर से बन्द कर लेखराम को दस पांच घूंसे और लातें मार कर उसकी शरारत का बदला दिया। प्रायः ही ऐसा होता, घर आकर वह वायदा करता कि बाजार और दुकान पर तंग नहीं करेगा लेकिन बाहर निकलने पर फिर वही हरकत दोहराता। घर के भीतर वह मेरे

साथ दूसरा ही व्यवहार करता और मजाक से खुशामद में "बड़े भाई" कहने लगता।

लेखराम प्राय: ही दोपहर का खाना खाने घर न जाता। अपने छोटे भाई से कारखाने में ही मंगवा लिया करता। लेखराम की बहू एक थाली में अपने पति के लिए परांठे, घी में छौंकी हुई दाल, तरकारी भेज देती और मेरे लिए प्राय: रोटियां और कटोरी में दाल। मकान की सांकल बन्द कर हम दोनों इस खाने को आधा-आधा बांट कर खाते। लेखराम को इस बात का बहुत दु:ख रहता था कि तेजाबों की विषैली गैस का बुरा प्रभाव मेरे स्वास्थ्य पर न पड़े। वह प्राय: नित्य ही सुबह कारखाने का पता लगाने आता तो एक बड़े कुल्हड़ में आधा सेर दही या दूध मेरे लिए ले आता और साथ ही ताजा 'हिन्दूस्तान टाइम्स' अखबार भी।

उन दिनों लाहौर में हमारे साथियों भगतसिंह आदि के मुकदमे चल रहे थे। क्रान्तिकारी बन्दियों के अनशन के कारण मुकदमा स्थगित था।

अनशन उचित व्यवहार की मांग के लिए किया गया था। इससे पूर्व ही जेलों में राजनैतिक और साधारण कैदियों की श्रेणियां अलग अलग स्वीकार की जा चुकी थी। ब्रिटिश सरकार सम्पन्न लोगों और नेताओं के साथ तो जेल में अच्छा व्यवहार करती, उन्हें मनमाना खाने पहनने की सुविधा देती और निम्न वर्ग के कैदियों को अनादर का व्यवहार और बहुत खराब खाना कपड़ा दिया जाता था। वह भेद कितना बड़ा था, इसका अनुमान पं० नेहरू की आत्मकथा में उनके पिता मोती लाल के साथ पूना जेल मे किये जाने वाले व्यवहार के वर्णन से हो सकता है। नेहरू जी ने बड़े गर्व से लिखा है कि मोती लाल जी को बडा आदमी मान कर अपने भोजन के लिए आवश्यक पदार्थों की सूची बना देने के लिए कहा गया था। बहुत साधारण रूप में मोतीलाल जी ने चीजें अपने व्यवहार के लिए बनाई उनके व्यय के अनुमान से जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट अंग्रेज मेजर या कर्नल साहब अवाक् मुंह खोले रह गए। ब्रिटिश सरकार केवल कांग्रेसी लोगों को ही राजनैतिक कैदी मानना चाहती थी। सशस्त्र क्रांति करने वाले लोगों को नहीं। क्रांतिकारी बन्दियों की मांग थी कि हम लोग अनाचारी अपराधी नहीं हैं, हम लोग एक प्रकार से युद्ध बन्दी हैं। हमारे साथ न्यायोचित व्यवहार होना चाहिए। हमें वैसा ही खाना कपड़ा मिलना चाहिए जैसा कि भद्र समाज के लोग व्यवहार करते हैं। सरकार इस मांग को स्वीकार नहीं कर रही थी। इस लिए क्रांतिकारी बन्दी अनशन कर रहे थे।

अनशन को सब क्रांतिकारी बन्दी समान दृढ़ता से निभा नहीं पा रहे थे। हम लोगों के विचार में अनशन आध्यात्मिक शक्ति पाने के लिए या हृदय परिवर्तन का साधन न था। हम उसे सर्वसाधारण की सहानुभूति द्वारा सरकार पर दबाव डालने का ही साधन मानते थे। इसलिए निश्चय किया गया कि पहले दो बन्दी, सब लोगों के प्रतिनिधि के रूप में आमरण अनशन करें। इनकी मृत्यु हो जाने पर दूसरे दो साथी अनशन आरम्भ कर दें। इस प्रकार अनशन के कारण जनता में होने वाला आन्दोलन भी जारी रहेगा और अभियुक्तों में भी दो के अदालत में उपस्थित न होने के कारण मुकदमा भी महिनों स्थगित रहेगा। यह अनशन हमारे दल के प्रचार क्रम का एक महत्वपूर्ण अंग था। सबसे चिन्ताजनक बात थी बीमारी की अवस्था में यतीन्द्रनाथ मुकर्जी का लम्बा अनशन। क्रांतिकारियों को अनशन के समय रबड़ की नालियों से नाक की राह पेट में दूध पहुंचाया जाता था। क्रान्तिकारी बन्दी इसका विरोध करते थे। जेल के चार-पांच आदमी उनका शरीर दबा लेते और नाक के रास्ते पेट में दूध पहुँचा दिया जाता था। लेकिन इस झटका झटकी में रबड़ की नली शरीर के भीतर गलत जगह पहुँच जाती और उससे भयकर यातना और रोग हो जाता। ऐसे ही यतीन्द्र नाथ के फेफड़े में दूध चला गया और उसे निमोनिया हो गया। उसकी अवस्था चिन्ताजनक थी। जनता में क्रान्तिकारियों की मांग पूरी हो जाने के लिए जोर शोर से आन्दोलन चल रहा था और ब्रिटिश सरकार के अत्याचार के विरुद्ध खूब घृणा फैल रही थी।

एक दिन पत्र में समाचार आया कि यतीन्द्रनाथ की मृत्यु हो गई। अभियुक्तों की डिफेन्स कमेटी की मांग पर यतीन्द्रनाथदास का शव लाहौर में उपस्थित उसके भाई किरन दास को सौंप दिया गया। इस शव का जुलूस निकाला गया। अखबारों में छपे वर्णन के अनुसार लाहौर में इस जुलूस में लाखों की भीड़ सम्मिलित हुई। यतीन्द्रनाथ की अर्थी पर फेंके गए फूलों के सड़कों पर कुचले जाने से कीचड़ हो गया। यतीन्द्र नाथ का जुलूस लाहौर से कलकत्ता पहुंचा। दुर्गा भाभी, भगत सिंह के पिता और किरण शव के साथ कलकत्ता गए। रास्ते में प्रत्येक स्टेशन पर अर्थी के दर्शन के लिए बहुत बड़ी भीड़ जमा हो जाती।

रोहतक के बम के कारखाने में जनता द्वारा यतीन्द्र नाथ की अर्थी के अनुपम उत्साहपूर्ण सत्कार का समाचार पढ़ कर मेरे मन में विचित्र, परस्पर विरोधी अनुभूतियां हुई। यतीन्द्रनाथ के बलिदान पर मैंने दल के एक साथी रूप में गर्व अनुभव किया जनता का यह आदर हमारे दल की नैतिक विजय और ब्रिटिश सरकार की निन्दा थी, परन्तु इसके साथ ही मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यतीन्द्रनाथ का सत्कार करके जनता ने उसके बलिदान का मूल्य चुका दिया। हम लोग ध्यान आकर्षित

किये बिना अपने को मिटा कर गुप्त रूप से कर्तव्य समझ कर बलिदान हो रहे थे। मन में भावना थी कि हम अपने बलिदान का कोई मूल्य नहीं चाहते। उस बलिदान का मूल्य जनता द्वारा जबरदस्ती दे दिये जाने पर मुझे चोट सी लगी। जान पड़ा कि बिना मूल्य पाये बलिदान होने की हमारी प्रतिज्ञा को जनता ने बलात् तोड़ दिया है। मै अपने और यतीन्द्र में कोई अन्तर नहीं समझता था। रोहतक में मैं अपढ़ समझा जाता था। इसलिए अखबार छिप कर ही पढ़ता था। एक रोज मैं अखबार पढ रहा था, लेखराम का छोटा भाई खाना ले कर आ गया। जीने पर उसके कदमों की आहट मैं सुन न सका। उसके सामने आ जाने पर ही देख पाया। उसने मुझे अखबार थामे देखा तो बड़े कौतूहल में पुकार उठा 'वाह भाई वाह ! किसना अखबार पढ़ रहा है।"

'भैया मूरत देखूं सूं" मैंने मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट से उसकी ओर देख कर उत्तर दिया और अखबार में छपे एक चित्र की ओर सकेत करके पूछा—"जे महात्मा गांधी हैं न भैया ?"

"धत पागल ! महात्मा गांधी ऐसे होते हैं ?" उत्तर मिला।

इस मकान में लेखराम, उसका छोटा भाई और लेखराम के नौकर के अतिरिक्त एक ही व्यक्ति और आता था, वह थी पनिहारिन। खूब जवान और हृस्ट पुस्ट। बहुत बड़ा घड़ा सिर पर उठाये छम-छम करती चली आती। बम का मसाला धोने के काम में पानी बहुत व्यय होता था इसलिए एक बड़ा मटका और दो-तीन घड़े पानी के लिए रखे हुए थे। पनिहारिन घड़े ला कर मटके में उंडेल देती और खाली घड़े भी भर कर रख जाती। पनिहारिन शायद बड़े घड़े की एक पैसा के हिसाब से मजदूरी लेती थी। किसना के भले और बुद्धू होने की प्रसिद्धि पनिहारिन सुन चुकी थी। पानी का घड़ा लेकर पहुंचती तो आते ही आवाजें देती "अबे किसना जल्दी उतरवा घड़ा।"

मसाला बनाते समय मैं केवल लंगोट बांधे रहता था। मध्यम श्रेणी के संस्कारों के कारण कपड़े पहने बिना स्त्री के सामने और इतने समीप जाने में संकोच होता, परन्तु वह झुंझला कर चिल्लाती "मर गया तू, जल्दी दौड़ मेरी गर्दन टूट रही है।" उसकी सहायता के लिए जाना ही पड़ता। वह बड़े मटके में दो घड़े उंडेल कर तीन गिनना चाहती थी। यदि मैं दो पर जिद्द करता तो आत्मीयता में गाली देती "मुए गिन्ना भी जानै सै।"

गिनती पनिहारिन खुद नहीं जानती थी। घडे रखने की जगह के समीप कच्ची दीवार पर कोयले से घड़ों की संख्या के हिसाब से चिन्ह बनाती जाती थी। जब मैं देखता कि उसने तीन की जगह चार चिन्ह बना दिये है तो गीली मिट्टी ले उसके चिन्ह को मिटा देता। पनिहारिन भारी घड़ा लाने के बाद कुछ देर सुस्ताने के लिए बैठ जाती और मेरे बाल बच्चों और घरवाली के बारे में पूछती रहती। मैं बेवकूफ सा जानबूझ कर मूर्खतापूर्ण उत्तर देता। वह हँस-हँस कर लोटपोट हो जाती।

"क्लोरोपिकरेट" और 'गन काटन' काफी मात्रा में बन चुका था। दिल्ली लौटने की तैयारी ही थी। उस दिन आखिरी घान धो कर सूखने के लिए रखा था। संध्या समय लेखराम की दुकान पर उसका एक परिचित व्यक्ति आया। जिस मुहल्ले में हमारा कारखाना था उसी मुहल्ले का नाम लेकर बोला– 'वहां पुलिस वाले आज जाने क्या सूंघते फिर रहे हैं? यह बात सुन कर मेरे और लेखराम दोनों के ही रोंगटे खड़े हो गए परन्तु उस व्यक्ति के सम्मुख कोई चिन्ता प्रकट न की। इस व्यक्ति का नाम था लक्ष्मणदास वे रोहतक की कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी थे। लक्ष्मणदास के जाते ही लेखराम ने परेशानी में पूछा-"अब?" मैंने उत्तर दिया- तैयार मसाले को गीला सूखा बांध कर एकदम भाग चलो। शेष सामान पर ताला लगा दिया जाये। यदि रात में कुछ होगा तो कम से कम मसाला और हम लोग तो बच जायेंगे।" मैं मसाला समेटने और बांधने लगा। लेखराम ने कहा– "तुम लक्ष्मणदास को समझा दो कि बहुत जरूरी काम से अचानक मथुरा जा रहे हैं वह तुम्हारी घरवाली को चिन्ता न करने और रोहतक से बाहर जाने की बात किसी से न कहने के लिए समझा दे। लक्ष्मणदास को यह भी कह दो कि दो दिन बाद देहली क्लाथ मार्केट में गुप्ता के मकान पर आकर शाम के तीन बजे मिले। वह कारण पूछे तो कह देना कि वहीं बताऊंगा।

लगभग सूर्यास्त का समय था। हम लोग गीला सूखा मसाला बांध और शेष सामान ताला लगा देहली जाने वाली सड़क पर चल दिये। लेखराम ने भी रोहतक के लिये देहाती का सा वेश बना लिया। सामान की गठरिया दोनों के सिरों पर थीं। एक लारी दिल्ली की ओर जाती दिखाई दी। उसे खड़ा होने के लिए इशारा किया। गाड़ी खड़ी होने पर देखा उसमें तीन कांस्टेबल बैठे हुए थे। बम का मसाला ले कर उनके साथ बैठते हुए कुछ संकोच हुआ परन्तु लारी को पुकार चुके थे। दामों के बारे में झगड़ा हुआ ताकि लारी वाला बैठाने से इन्कार कर दे। लारी वाला हमारी मूर्खता पर कुछ गालियां दे उतने ही दामों में बैठाने पर राजी हो गया। बैठना पड़ा। सिपाहियों का ध्यान हमारी ओर गया ही नहीं। लारी में एक खूब जवान स्त्री बैठी थी। सिपाही उसे देख गा रहे थे —"होले होले चाल डिरेवर मेरा जोबन हाले रे।"

सिपाहियों की बात में सहयोग दे उन्हें प्रसन्न करने के लिए मैंने बड़े भोलेपन से सुझाव दिया— "जोबन हाले तो हालण देयो जमादार जी कौन घी है के ढुल जावगा ! गाड़ी क्यों होली करो सो ?"

"वाह रे चौधरी वाह" सिपाही ने बड़े उत्साह से मेरी पीठ ठोक दी। हँसते बोलते रात के लगभग साढ़े नौ बजे दिल्ली में अपनी जगह जा पहुंचे।

भगवती भाई ने हमारे रोहतक से निकल आने का ही समर्थन किया। रोहतक में क्या बीता, यह जानने की चिन्ता मन में लगी ही थी। दो दिन बाद लक्ष्मणदास को दिये पते पर मिलने के लिए पहुँचे। लक्ष्मणदास ने बताया कि उस संध्या उस मोहल्ले में पुलिस के सूंघते फिरने का कारण किसी भागी हुई जाटनी की तलाश थी। इस बात से तो निश्चिन्त हुये परन्तु चिन्ता का एक और कारण लक्ष्मणदास ने बता दिया। लेखराम के अचानक घर में खबर दिये बिना भाग जाने से उसकी स्त्री बेहोश हो गई थी और अब पति के न लौटने तक अनशन व्रत किये बैठी थी।

बम के लिये रासायनिक सामग्री खरीदने के लिये तथा दल के दूसरे कामों में सहायता के लिये लेखराम ने घरवाली से ले कर दो ढाई सौ रु० हमें दिये थे। रुपये की जरूरत का कोई कारण वह बहू को बतला न सका। इसके अतिरिक्त उसे कई बार अचानक अचानक दिल्ली जाना पड़ जाता। पिछले मास रात घर न जा कर कभी-कभी मेरे साथ कारखाने में ही रह जाता। अपनी कमाई भी अब वह बहू के हाथ न सौंप कर हम लोगों के ही हवाले कर देता था। बहू को सन्देह हो गया कि अब तक उस पर जान देने वाला पति किसी डाइन के फरेब में फंस गया है। खयालीराम जी गुप्त के मकान पर हम लोग लक्ष्मणदास से मिलने गये तो लेखराम को पहचान कर वह मुस्कराया तो अवश्य, परन्तु कुछ कह न पाया। लेखराम उसके संकोच का कारण समझ कर बोला– 'बात तो बताओ, यह किसना ही तो है।' लक्ष्मणदास उसकी बात न समझ चुप ही रहा। लेखराम ने फिर अपनी बात दोहराई। लक्ष्मणदास ने मेरी ओर देखा पर देख न सका। साफ सुथरा सूट, चुस्त कालर टाई, चश्मा, खूब ढंग से संवारे बाल और सफाचट दाढ़ी-मूंछ लेखराम की बात उसकी कल्पना में ही नहीं समा रही थी।

लेखराम मुझे बता चुका था कि लक्ष्मणदास बहुत भरोसे का आदमी है और उपयोगी हो सकेगा। हम लोगों ने उसे भरोसे में ले लेने का निश्चय कर लिया था। उसकी हिचकिचाहट देख मैंने किसना के रूप में व्यवहार करने वाली बोली और स्वर में ही उत्तर दिया – 'थारा (तुम्हारा) किसना ही तो हूँ महाराज।" अब लक्ष्मणदास ने तीन-चार बार मुझे ऊपर से नीचे से ऊपर तक देखा। लेखराम ने उसे समझाया, मेरा नाम जगदीश है। दल का बहुत महत्वपूर्ण आदमी हूँ भविष्य में जब कभी उसे बुलाऊ या जो आदेश दूं पूरा करना होगा। लक्ष्मणदास (वर्तमान में रोहतक में दै० हिन्दुस्तान के निज संवाददाता) भी हमारे भरोसे का साथी बन गया।

बम का मसाला तैयार हो जाने पर बम के बड़े-बड़े खोल बनाने का प्रश्न आया। ऐसे खोलों की आवश्यकता थी जिसमें डेढ़ दो सेर मसाला समा सके। यह निश्चित था कि दूसरों से खोल ढलवा कर सन्देह का अवसर न दिया जाय। मुंह के नाप की लोहे की गोल पेटियां कटवा लीं और उनमें बिजली के तार जाने के लिये सुराख करवा लिये। पेटियों को लोटों के मुंह पर लोहे की कड़ियों से कस दिया गया। यह सब काम श्रद्धानन्द बाजार के पिछवाड़े की गली में ही किया गया। अपने पड़ोसियों से तो हम ब्रिटिश सरकार के शासन और सुप्रबन्ध की प्रशंसा करते थे और भीतर की छोटी कोठरी में वाइसराय की गाड़ी के नीचे विस्फोट के लिए बम तैयार कर रहे थे। ※

बी-२३५, महानगर, लखनऊ-६

युद्धः अन्त तक

कथित स्वातन्त्र्योत्तर भारत में भूखी-नंगी जनता के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व मानसिक शोषण की मार्मिक कहानी कहेगा, 'राजधर्म' के १२ अगस्त अङ्क से प्रकाशित होने वाला रंगमंचीय नाटक 'युद्धः अन्त तक'। नाटक के लेखक हैं रामशरण जोशी।

लेखकों से निवेदन

०शोषण, जीवन के दोहरेपन और वर्तमान सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों के दिग्भ्रम तथा पाखण्ड पर प्रहार करने वाली रचनायें, 'राजधर्म' सादर आमंत्रित करता है।

०विशेष अवसरों पर प्रकाशित की जाने वाली रचनाओं को, उस तिथि से एक माह पूर्व भेजा जाय। रचनायें सामान्यतः दो हजार शब्दों से बड़ी नहीं होनी चाहिये तथा सुस्पष्ट लिपि में लिखी या टंकित होनी चाहिए।

०'राजधर्म' वर्तमान में लेखकों को पारिश्रमिक देने में असमर्थ है। अतः यदि लेखक का कोई विशेष आग्रह हो, तो रचना पर इसका स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये।

०स्वीकृत रचना के बारे में पन्द्रह दिन में सूचना दे दी जायगी। सूचना न मिलने की स्थिति में रचना को अस्वीकृत समझा जाय। रचना लौटाने के लिये टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा भेजें।

०'हमारी कसौटी पर' स्तम्भ में पुस्तक की दो प्रतियां आने पर ही समीक्षा हो सकेगी।

क्रान्ति-पुत्र भगवतीचरण बोहरा

(शेषांश पृष्ठ ८ का)

मुख से तो केवल यही निकलता था कि "आओ"। नौकर न होने पर आटे की एक परात समाप्त हो जाने पर दूसरी गूंधने बैठ जातीं। संगीत गोष्ठी के लिए आने वाले भी काफी थे। इन लोगों का आना जाना इसलिए अच्छा था कि उनके मकान पर नजर रखने के लिए तैनात खुफिया पुलिस यह न समझे कि केवल राजनीतिक रूप से संन्दिग्ध व्यक्ति ही यहां आते हैं। दो चार भले आदमी शची की वजह से आते जाते थे।"

भगवती बाबू को लिखने पढ़ने के अलावा कविता करने का भी शौक था। अपने एकान्तवास के लिए भगवती बाबू ने कश्मीरी बिल्डिंग नामक एक फ्लेट किराये पर ले रखा था। पर वे वारन्ट के कारण कभी आगरा, कभी इलाहाबाद रहते थे। अतः कुछ ही दिनों मे सुखदेव के प्रयत्नों से कश्मीर बिल्डिंग बम फैक्ट्री में परिवर्तित हो गयी। कुछ ही दिनों में किन्हीं अज्ञात कारणवश पुलिस को फैक्ट्री का सुराग लग गया। फैक्ट्री पर छापा मारा गया और वहीं सुखदेव तथा अन्य साथियों की गिरफ्तारी हुई। भगवती बाबू के मकान की भी तलाशी ली गयी किन्तु कोई भी आपत्तिजनक सामग्री नहीं मिल सकी।

जेल में गये हुओं और रात दिन ठहरने वालों के लिये भगवती बाबू का ही घर था। जेल प्रवासियों को खाना बना कर पहुंचाना और उनकी रुपयों पैसों से सहायता करना भी भाभी का ही काम था।

सहारनपुर में डा. गयाप्रसाद की सहायता से लक्कड-गंज में पुनः बम फैक्ट्री की स्थापना हो गयी। किन्तु कुछ समय में ही यह फेक्टरी भी पकड़ी गयी और पुनः कई साथी गिरफ्तार हो गये। इस तरह दल छिन्न भिन्न हो चुका था।

कलकत्ता की निम्न बस्ती में भगवती बाबू मिले

जब सब तरह से लाचारी सामने आ गयी और जो कुछ पकड़े नहीं गये वे सभी फरार हो गये तो सूत्रों का पाना भी कठिन हो गया। आखिर को यशपाल कलकत्ते गए और भगवती बाबू की खोज आरम्भ हुई। सुशीला दीदी से भगवती बाबू को पता लगा कि वे कलकत्ते की किसी निम्न बस्ती में रहते हैं। एक दिन जब यशपाल और सुशीला दीदी चौरंगी पर घूम रहे थे कि सामने से एक व्यक्ति मोटा मेला कुरता, घुटनों तक ऊंची धोती पहने गरीबों की तरह दाढ़ी बढाये, काली टोपी पहने, नमस्कार करते हुए सामने आया। यशपाल ने भगवती बाबू को पहचान लिया। किन्तु स्नेहालिंगन न हो सका क्योंकि दीदी और यशपाल सम्भ्रान्त वेशभूषा में थे। लोगों को शक हो सकता था। भगवती बाबू ने अपने रहने की कोठरी बता दी। दूसरे ही दिन यशपाल भी गरीबों जैसे कपडे पहन कर वहां आ धमके। दोनों भगवती बाबू और यशपाल उत्तर प्रदेश के भैयों जैसे लिवास में रहने लगे। भगवती बाबू कलकत्ते में रह-कर भी कुछ कर ही रहे थे। उन्होंने लाहौर षड्यन्त्र के अभियुक्त यतीन्द्रनाथदास से अच्छे सम्बन्ध बना लिए थे। उसके भाई किरणदास से उनकी बातें हुईं। भगवती बाबू ने दो पिस्तोलों की खरीद के लिए अपने पास से तीन सौ रुपये किरणदास को दिए। किरण टालमटोल करता रहा। इस तरह दिन व्यर्थ व्यतीत होते देख अपने पास से सौ रु० दे कर भगवती बाबू ने यशपाल को जम्मू भेज दिया कि "तुम वहीं सब कुछ करो। मैं दस पांच दिन में यहां से व्यवस्था करके उधर ही आऊंगा। जब तुम्हारा बम तैयार हो जाय तो परीक्षण के लिए मेरी प्रतीक्षा करना।"

किरण से भगवती बाबू को बड़ी कठिनाई से एक पिस्तौल और कुछ कारतूस ही हाथ आये। इन्हें लेकर भगवती बाबू लाहौर आ गये जब तक अपने साथियों की मदद से यशपाल बम तैयार कर चुके थे।

दूसरे ही दिन बम के परीक्षण के लिये सभी साथी बार मील बीहड जगल में गये। वहां उसका परीक्षण हुआ किन्तु प्रभावशाली बम होने की आशा थी उतना वह नहीं था। भगवती बाबू और यशपाल दोनों खिन्न मन हो कर चले आये। बम के पूरे सामान को तैयार कराने के लिये अधिक धन की आवश्यकता थी। दल तितर बितर हो चुका था। जनता क्रांतिकारियों की सफलता पर हर्ष तो प्रकट करती थी पर धन देने में डरती थी। दल का पूरा काम केवल भगवती बाबू के धन से चलाया जा रहा था। दूसरे सम्पर्क साधने में जयचन्द्र जी का प्रचार बड़ा बाधक था। यशपाल ने कई कारणों से भगवती बाबू को देवदत्त शर्मा के पास कश्मीर नहीं जाने दिया। यशपाल ने स्पष्ट कर दिया कि "यदि मैं गिरफ्तार हो गया तो कोई हानि नहीं होगी और तुम (भगवती बाबू) गिरफ्तार हो गये तो दल ठप्प हो जायेगा" आखिर में भगवती बाबू दिल्ली आ गये और यशपाल देवदत्त के लिये कश्मीर पहुंचे। भगवती बाबू ने किरण से खरीदा हुआ एकमात्र पिस्तौल भी यशपाल को दे दिया। भगवती भाई ने उन्हें जाने के लिये यथेष्ट रुपया भी दिया और कह दिया कि यदि कमी पड़े तो तार कर दें। कई दिनों की परेशानी के बाद विश्वास जम जाने पर देवदत्त जी ने आश्वासन दिया कि वे बम बनाने का नुस्खा ढूंढ

कर ३-४ दिन में बता देंगे। दो दिन बाद देवदत्त जी ने तमाम नुस्खे यशपाल को लिखा दिये और उन पुस्तकों के नाम और सफे भी बता दिये जिनसे मदद ली जा सकती है। इसके बाद यशपाल दिल्ली की ओर रवाना हो गये।

रोहतक को गुप्त निवास बनाया

इधर भगवती बाबू ने दिल्ली पहुँच कर एक मकान तय कर लिया था और वहीं आराम से रहते थे। यशपाल को देख और यह जान कर कि यशपाल को नुस्खा मिल गया है, भगवती बाबू बहुत ही प्रसन्न हुए। योजना थी कि बम बन जाने पर वायसराय की ट्रेन को उड़ा देना। भगवती बाबू कालेज में रसायन शास्त्र के विद्यार्थी रह चुके थे, अतः बम बनाने की प्रक्रिया भली भांति समझ गये। **अब भगवती बाबू ने रोहतक में जाकर एक मकान की व्यवस्था की और रोजाना जगह देखते की किस लाइन पर रखने से सुविधा रहेगी। भगवती बाबू को वहीं ज्ञात हुआ कि जयचन्द्र जी यहीं हैं। जयचन्द्र जी से कुछ साथियों के पते पूछने थे। वे उन्हें फतेहपुरी में मिल भी गये।** बातचीत में उन्होंने भगवती बाबू की पुनः खूब बुराइयां की। बाद में यशपाल को बहकाने लगे। भगवती बाबू यशपाल से जयचन्द्र जी की बातें सुनकर खूब हँसे। (विस्तृत विवरण 'रोहतक में बम बने' लेख में)

इसके बाद बम बन गये और दिल्ली के पास ही भगवती बाबू की सहायता से वे रेल की पटरी के नीचे दबा दिये गये। इसके बाद चन्द्रशेखर आजाद से सम्पर्क साधने के लिये भगवती बाबू कानपुर गये और ५०० रु० लेते गये। वहां गणेशशंकर विद्यार्थी से उन्हें ज्ञात हुआ कि आजाद का मन तुम लोगों की ओर से साफ नहीं है। दूसरा होता तो सोचता कि सम्पन्न घर, पत्नी, बच्चे सभी का सर्वनाश करके वे इस आग में पूरी बरबादी कर चुके हैं और आज भी लोग और खासकर दल के ही लोग उनका विश्वास नहीं करते। पर भगवती बाबू लगन के पक्के थे, हँस कर विद्यार्थी जी से बोले "आप उनसे कानपुर में किसी निरापद स्थान को किराये पर ले लेने के लिये कह दीजिये। चौबीस तारीख को हम लोग सुबह विस्फोट करके भागेंगे।" इस तारीख का सुनते ही विद्यार्थी जी चौंक पड़े। वे कहने लगे "यह तारीख देश के हित के विरुद्ध होगी। इस तारीख को वायसराय भारत के विषय में सरकारी नीति की घोषणा करेंगे। यदि तुमने यह कार्य कर डाला तो जनता की सहानुभूति खो दोगे।" भगवती बाबू ने कई तरह से तर्क वितर्क किया पर विद्यार्थी जी अपनी बात पर अटल रहे। तत्कालीन क्रांतिकारियों ने कभी भी विद्यार्थी जी के कथन को नहीं टाला। इसका कारण बताते हुये यशपाल लिखते हैं-" अपने व्यक्तिगत जीवन में अहिंसावादी होकर भी वे राजनीतिक दृष्टिकोण से क्रांतिकारी थे। क्रांतिकारियों को उनसे सदैव ही सहायता और सहानुभूति मिलती रहती थी।" दल ने भी भगवती बाबू की बात मान ली। अब भगवती बाबू ने मकान बदल लिया और "जमशेदजी रुस्तम जी" के नाम से मुसलमान के रूप में रहने लगे। इन्द्रपाल उनका मुस्लिम खानसामा बन गया।

आजाद ने गलतफहमी दूर की

चन्द्रशेखर आजाद जयचन्द्र जी के भगवती बाबू के प्रति घृणित प्रचार से इस दल से दूर रहते थे। यशपाल तथा भगवती बाबू उनसे मिलना चाहते थे इसलिये कैलाशपति, जो बाद में मुखबिर हो गया, के जरिये से वैशम्पायन से सम्बन्ध स्थापित किया गया। मुलाकात "कुदसिया बाग" में हुई। यह आजाद से भगवती बाबू की पहली मुलाकात थी। भगवती बाबू के समझाने पर यशपाल के शब्दों में आजाद ने भगवती बाबू से स्पष्ट कहा कि "देखो भाई! तुमसे मिलने से मैंने इन्कार किया, यह सच है। इसमें बुरा मानने की बात नहीं। सब बातों का पता तो मैं अपने आप लगा नहीं सकता। जैसा मुझे समझा दिया गया, मैंने मान लिया। अब अविश्वास दूर हो गया है तो जी जान से हाजिर हूँ। पिछली बातें जाने दो।" वैशम्पायन आजाद के श्रद्धालु शिष्य थे। वैशम्पायन हमेशा आजाद के साथ रहते थे। यशपाल ने आजाद को वायसराय की ट्रेन उड़ाने की योजना बनायी। उन्हीं दिनों आजाद लाहौर षड्यंत्र का मुकदमा चलाने वालों को गोली से उड़ा देने की योजना में लगे थे।

आजाद व भगतसिंह के दल में समझौता

आजाद को दल के छिन्न भिन्न होते देख व गिरफ्तारियों के कारण काम करने का अवसर मिलने से उन्होंने अपने साथी भगवान दास माहौर और सदाशिव राव मलकापुरकर को राजगुरु के पास दक्षिण में भेजा कि दक्षिण में राजगुरु के सहारे सम्पर्क साधा जाय। राजगुरु, भगतसिंह आदि को छोड़ दल जमाने के लिये दक्षिण चला गया था। वहां पहुंच कर भगवानदास माहौर और सदाशिवराव मय सामान के भुसावल स्टेशन पर पकड़े गये। उनका मुकदमा जलगांव में चला। मुखबिर फणीन्द्र और जयगोपाल को जलगांव अदालत में बुलवाया गया। वहां भगवानदास माहौर ने जयगोपाल और मणीन्द्र को भरी अदालत में मार देने के लिये आजाद को रिवाल्वर भेजने के लिये सन्देशा भेजा। इस बीच भगतसिंह आदि के दल से आजाद का समझौता हो गया था। इस लिये आजाद ने स्थिति की जांच करने के लिये झांसी के वकील के रूप में भगवती बाबू को जलगांव जेल में भगवानदास से मिलने भेजा। वहां की स्थिति देखकर भगवती बाबू ने आजाद

को पिस्तौल पहुँचाने की राय दे दी और झांसी के धुलेकर वकील तथा सदाशिव राव के भाई शंकर राव के साथ पिस्तौल पहुंचा दिया।

वायसराय की गाड़ी पर असफल विस्फोट कर देने के बाद भगवती बाबू और यशपाल कलकत्ते निकल गये। दूसरी बार विस्फोट की कुछ दिनों को टालने के लिये दल की ओर से पहल हुई। आजाद भी यही चाहते थे पर भगवती बाबू और यशपाल जिद पर आ अड़े रहे और उन्होंने विस्फोट किया भी। कलकत्ता से यशपाल और भगवती बाबू लखनऊ आ गये। अब उनके सामने सवाल था, दल के नेता आजाद को मनाने का। वे जानते थे कि आजाद का मिजाज काफी गरम है। इसलिये पहले यशपाल ने मिलना चाहा। इसके लिये यशपाल आजाद से मिलने दिल्ली गये। आजाद सचमुच ही नाराज थे। स्पष्ट बातें करने के लिये दोनों यमुना किनारे एकान्त में गये। यशपाल से आजाद बुरी तरह बिगड़े पर यशपाल के आत्म समर्पण कर देने पर वे नाराज नहीं रहे।

इसके बाद दल ने भगतसिंह और दत्त को छुड़ाने के लिये जेल में से भगतसिंह से सम्पर्क साधा। भगतसिंह को "बम का दर्शन" नाम का भगवती बाबू का लिखा पर्चा पहुँचाया। वह भगतसिंह ने पसन्द किया। भगतसिंह को छुड़ाने की योजना जब कार्यान्वित करने की चेष्टा होने लगी तो आजाद ने यशपाल को दिल्ली बुलाया।

भगतसिंह को छुडाने भगवती बाबू जायेंगे

इधर दुर्गा भाभी फरार भगवती बाबू की पत्नी होने के कारण काफी परेशान थीं। उन्होंने भी फरार हो जाने की पति से आज्ञा चाही। पति ने उन्हें दिल्ली बुला कर समझाया कि यदि तुम फरार हो गयीं तो सरकार मकान, जायदाद और बैंक के हिसाब पर फौरन कब्जा कर लेगी।" इस पर भाभी ने साथ रहने का इसरार किया। इसे भगवती बाबू ने मान लिया। और बहावलपुर रोड पर एक बंगला किराये पर ले लिया गया। वे वहां दीदी के साथ आ कर रहने लगीं। अब दुर्गा भाभी ने आगाह किया कि पहले भी मैंने भगतसिंह को बचाया है अत. उसके छुड़ाने में भी मेरा हिस्सा होना चाहिए। इस समय उस बंगले में यशपाल, बच्चन (वैशम्पायन), आजाद और छैलबिहारी दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी थीं। भगवती बाबू और सुखदेव राज किला गुज्जरसिंह वाले मकान में थे। भगवती बाबू की एक्शन में प्रमुख भाग लेने की जिद थी। आजाद ने इस पर भगवती बाबू और यशपाल से सलाह की। अन्त में भगवती बाबू का एक्शन पर जाना तय हुआ।

यशपाल और प्रकाशो के प्रेम प्रसंग को भगवतीचरण, भगतसिंह और दत्त को जेल से छुड़ा लेने पर कहना चाहते थे, पर एक्शन में कौन मरेगा और कौन बचेगा यह प्रश्न भगवती चरण के सामने आने पर उन्होंने आजाद से यशपाल का किस्सा कह कर वचन ले लिया कि एक्शन हो जाने पर यशपाल के मामले की सुनवाई होगी। वैशम्पायन 'चन्द्रशेखर आजाद' पुस्तक में इस घटना के बारे में लिखते हैं—

'भैय्या ने मेरी बात मान ली, यह कहते कहते भगवती चरण की आंखों में हर्ष के आंसू उमड़ आये। उस महान विभूति (भगवतीचरण) ने अपने जीवन में अपने ही साथियों से ऐसे अनेक आघात सहे थे। ऐसी बातों की कल्पना भी उन्हें अत्यन्त विचलित कर देती थी। उस व्यक्ति ने त्याग की पराकाष्ठा कर दी और अन्त में अपने को भी होम दिया, एक महान आदर्श के लिए! लोगों ने इन्हें क्या कुछ नहीं कहा। उनका शोषण भी किस हद तक किया इसकी कहानी भी इतनी हृदय विदारक है कि जिस दिन यह सामने आयेगी तो हर व्यक्ति श्रद्धा से उस विभूति की स्मृति में नतमस्तक हुए बिना नहीं रहेगी। मैं उनके साथ कुछ महीने ही रहा। उनके सम्बन्ध से मानव जीवन की दुर्बलताओं को जाना तो यह भी देखा कि व्यक्ति त्याग करने का जब दृढ़ निश्चय कर लेता है तो वह उसी में परमानन्द का अनुभव करता है। आजाद और उनका साथ यदि कुछ वर्ष और जीवित रहते तो इतिहास बदल जाता। परन्तु ऐसे महान तपस्वीका जो अन्त हुआ, वह उसकी दृष्टि में मन चाहा वरदान था और दल के लिए महान अभिशाप।"

बम फटने से भगवती बाबू शहीद

२८ मई को भगवती बाबू ने बमों की जांच करने के लिए उन्हें भरवाया। तीन बमों में से एक का ट्रिगर ढीला था। एक्शन के लिए ३-४ दिन ही शेष थे। अतः भगवतीबाबू, बच्चन और सुखदेव राज तीनों बमों को लेकर रवाना हुए। उसके थोड़ी देर बाद ही यशपाल लौट कर आये। कुछ ही मिनटों बाद सुखदेवराज एक तांगे में आया और उसने कराहती आवाज में कहा—"मुझे नीचे उतार लो।" मदनगोपाल, छैलबिहारी और यशपाल ने उसे तांगे से उतारा। उसके पांवों से लिपटे हुए कपड़ों में से खून टपक रहा था। कारण पूछने पर सुखदेवराज ने बड़ी कठिनाई से बताया—"बम को आजमायश के लिये फेंकते समय भगवती बाबू के हाथों में ही बम फट गया। वे वहीं घायल पड़े हैं, वैशम्पयान (बच्चन) पीछे था इसलिये बच गया है और वह वहीं उनके पास है।" सुनते ही यशपाल ने छैलबिहारी को साथ लिया। वे टैक्सी में गये। वहां से उतर कर घने जंगल में घुसे। बच्चन को आवाज देते हुए आगे बढ़ते गये उसके उत्तर की दिशा का सहारा लेते हुए दोनों निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गये। भगवती बाबू घुटने उठाये चित्त पड़े थे। एक हाथ कलाई से उठ गया था, दूसरे की ऊंगलियां जड़ों से गायब

हो गई थीं। चेहरे पर भी कई स्थानों पर गहरे घाव थे जिनमें से खून जा रहा था। पेट मे दांयी ओर बड़े-बड़े छेद हो कर खून बह रहा था और बायीं ओर से पेट फट कर कुछ आंतें बाहर आ गयी थीं। उस समय जब ये दोनों पहुंचे बच्चन कपड़े को भिगो कर लाया था और भगवती बाबू के मुंह में निचोड़ रहा था। दोनों पर नजर पड़ते ही भगवती बाबू ने कहा—"अच्छा किया जो आगये। आजाद भी आ जाते तो देख लेता।" यशपाल ने उत्तर दिया "भैया (आजाद) इस समय घर पर नहीं थे वरना जरूर आते।" भगवती बाबू ने कहा– "कोई बात नहीं"। यशपाल और छैलाबिहारी ने अपने हाथों की कैंची बांध उन्हें उठाया कि वे दर्द से चीख उठे। फिर उन्हें रख दिया गया। यशपाल ने भरे हुए गले से कहा- "घबराना नहीं हम अभी खाट लाते हैं।" भगवती ने कराहते हुए उत्तर दिया- "तुम समझते हो, मैं डर रहा हूं। यही दुख है कि मैं भगतसिंह को छुड़ाने में सहयोग न दे सकूंगा। यह मृत्यु दो दिन बाद ही होती। — व्यर्थ है, ऐसा न करो, बम का धड़ाका बहुत जोर का हुआ था। यदि उसकी आहट के सन्देह में पुलिस खोजती हुई आ जाय तो क्या फायदा! यदि हाथ रह जाते तो तुम एक रिवाल्वर दे जाते और पुलिस को मेरे मरने की खबर दे दी जाती। भगतसिंह को छुड़ाने का यत्न नहीं रुकना चाहिये।" उन्होंने यह बातें रुक-रुक कर अंग्रेजी में कहीं। यशपाल के अनुसार उनका दिमाग, मौत की गोद में भी बिलकुल साफ था। भगवती बाबू ने कहा कि उन्हें पेशाब की हाजत है किन्तु पेशाब आता नहीं है। बम का कोई टुकड़ा गुर्दे में फंस गया है। मृत्यु का इस प्रकार साक्षात्कार करके भी अपने ध्येय के प्रति अन्तिम समय में भी सतर्क रहने वाले भगवती बाबू का जीवन धन्य है।

शहीद के प्रति क्रांतिकारियों के मार्मिक उद्गार

यशपाल छैलबिहारी को वहीं छोड़ बच्चन (वैशम्पायन) के साथ लौटे। देवराज सेठी एवं अज्ञेय वात्स्यायन से चादरें व खाट ली। दोनों को अपने साथ लेकर रास्ते में बर्फ भी ले लिया। इन्द्रपाल भी साथ हो गया। इस तरह यशपाल बच्चन (वैशम्पायन), अज्ञेय, देवराज एवं इन्द्रपाल फिर उसी घनघोर जंगल में आये। रात हो गयी थी, टार्चों के सहारे छैलबिहारी को पुकारते बढ़े। पुकार का कोई उत्तर मिलने से जो चिन्दियां दरख्तों पर लटक रही थीं उन्हीं के सहारे घोर जंगल में आगे बढ़े गये। छैलबिहारी घोर जगल से भयभीत हो कर चला गया था। बच्चन फूट-फूट कर रोया। भगवती बाबू अमर शहीद की गति पा चुके थे। शव को पुनः बंगले पर लाना और फिर संस्कार के लिये बाहर ले जाना खतरे से खाली नहीं था। पुलिस को शक हो जाता और सभी फंस जाते। अतः शव को चादर उढ़ाई। यशपाल ने उनकी उस समय की स्थिति का मार्मिक वर्णन करते हुए कहा है कि "मैंने रूंधे हुए गले से आदेश दिया– "अपने बहादुर नेता के सम्मान में अन्तिम सलामी दी जानी चाहिये।" यशपाल के यह कहते ही सभी साथी सीधे तन कर खड़े हो गये और एक मिनट तक सलामी देते रहे। इसके बाद ये लौट पड़े। पर बच्चन और यशपाल बंगले पर आये। सभी परेशानी में थे। बच्चन रो पड़ा और बोला— "सर्वनाश!" दुर्गा भाभी जैसी बैठी थीं वैसी ही आंखें मूंदे बैठी रहीं। सुशीला दीदी(सुशील दीदी के पति का वर्तमान पता है- श्री श्यामजी मोहन एडवोकेट, १७५६ क्वीन्स रोड, देहली) ने अपना सिर दोनों हाथों से थाम लिया। आजाद सुन्न रह गये। मदन गोपाल पत्थर की मूर्ति सा सुन्न खड़ा रह गया। उसी समय छैलबिहारी पहुँचा। यशपाल ने धीरे से फटकारते हुए उसे कहा— 'तुम उन्हें छोड़ कर कैसे आ गये?' उसने करुणा भरे स्वर में कहा— "मृत्यु हो जाने पर ही मैं आया हूं। मैंने रास्ता खोजने को दरख्तों पर चिन्दियां लगा दी थीं।" इस पर आजाद क्रोध में बोले- "तुम्हें छोड़ आने के लिये किसने कहा था।" पर क्रोध निरर्थक समझ वे स्वयं चुप रह गये। इसके बाद आजाद बोले- "अब कुछ नहीं हो सकता। आप लोग उठिये।" बड़ी ही कठिनाई से रुंधे हुए गले से उन्होंने भाभी को कहा- "तुम हम सब की मां बहन हो। तुमने अपना सर्वस्व पार्टी के लिये न्यौछावर किया है। हम सब तुम्हारे ऋणी हैं। तुम्हारे प्रति अपने कर्त्तव्य को कभी भी न भूलेंगे।"— कहते हुए वैशम्पायन और आजाद ने भाभी को पलंग पर बैठा कर लिटा दिया। भाभी संज्ञा शून्य हो रही थीं। वे चिल्ला भी नहीं सकती थीं। पुलिस का भय था। आजाद ने सुशीला दीदी को दूसरे पलंग पर लेटा दिया। आजाद ने बंगले की बिजली बुझा दी और यशपाल के साथ बाहर आ गये। आजाद ने पूछा "शरीर को किस अवस्था में छोड़ आये।" यशपाल के यह कहने पर कि अंधेरा गहरा होने के कारण हम शरीर को चादर से ढक आये हैं, आजाद बोले—"मैं भी देख आऊं, सुबह अंधेरा रहते चलेंगे और कुछ प्रबन्ध कर आयेंगे।" फिर आजाद भगवती बाबू के जख्मों के बारे में पूछते रहे। फिर बोले —"अब एक्शन कैसे होगा?" यशपाल ने उत्तर दिया— "भगवती बाबू का अन्तिम अनुरोध था कि एक्शन जरूर होगा।" सुबह-सुबह आजाद ने यशपाल को जंगल में चलने को उठाया और भाभी, दीदी को कहने गये, हम उनकी लाश का प्रबन्ध करने जा रहे हैं। सुशीला दीदी ने भगवती बाबू के अन्तिम दर्शनों का आग्रह किया। आजाद ने यशपाल से कहा तो यशपाल ने इन्कार किया। आजाद ने कहा "क्या हर्ज है?" पर यशपाल ने स्त्री को बिजली की रोशनी में साइकिल पर ले जाने से ही लोगों

को शक होगा कह कर इन्कार किया। सुशीला दीदी मजबूरी के कारण चुप रह गयीं। आजाद, यशपाल और बच्चन तीनों रावी तट की ओर चल दिये। लाश वैसी ही मिली अलबत्ता चींटे चादर पर फिरने लगे थे। पास ही रावी की एक धारा थी, पानी गहरा था। अतः चादर में शव को उकड़ूं बैठा कर बांधा। बच्चन ने कैंची से काट कर उनके बाल रख लिये। आजाद और उनके साथियों ने शव को वहीं गाड़ दिया।

घर लौटने पर आजाद बार-बार भाभी के पास बैठ कर दल पर उनके ऋण और उनके प्रति दल के कर्त्तव्य की बातें कह कर सान्त्वना देते रहते। बच्चन भी भाभी के पास बैठ कर उनको सान्त्वना देता और फूट-फूट कर रोता तो भाभी उसे चुप कराने को उसके सिर पर हाथ रख देतीं। बच्चन के बिना आजाद रहते ही नहीं थे, इसी तरह बच्चन का भगवती बाबू पर अगाध स्नेह था। रोते रोते वह कहता– 'भैय्या (आजाद) ने क्रांति की चिन्गारी मेरे हृदय में जगायी थी, बाबू भाई (भगवती बाबू) उसे अमर ज्वाला बना गये।'' इससे भी अधिक मर्म भेदी प्रसंग यशपाल की जबानी सुनिये—इसके बाद जिस दिन भगत सिंह को जेल से छुड़ाने का कार्यक्रम था आज़ाद और सभी साथी तैयारी की बातों में सलग्न थे कि भाभी ने सारी बातें सुन कर कहा— ''आक्रमण में उनकी जगह जाने का अवसर मुझे दीजिये, सबसे पहले यह मेरा अधिकार है''। दुर्गा भाभी जैसी सच्ची क्रांतिकारिणी ही इन महानतम मुसीबतों में अपने कर्तव्य का इतना जबरदस्त ध्यान रख सकती थीं। आजाद चुप रह गये। उन्होंने कहा— ''इस समय आप रहने दीजिये।'' भाभी ने जिद करते हुए कहा— ''क्यों ?'' आजाद जैसे कर्मठ नेता और सेनापति का इस ''क्यों ?'' से दिल हिल गया और रूमाल से आंसू पोंछते हुए बोले— ''ऐसा कोई कदम सोच विचार कर उठाना ठीक होगा और फिर लड़के का भी प्रश्न है।'' भाभी ने फौरन ही उत्तर दिया— ''लड़का अब आप लोगों का है, आपके जिम्मे है। आजाद तो वैसे ही भाभी के अपार दुःख के सामने किंकर्तव्यविमूढ़ से हो रहे थे, बोलना कठिन हो रहा था। दिल कड़ा करके धीरे से बोले– ''भाभी ! अभी मान जाओ !'' सुशीला दीदी को भी आजाद ने इन्कार कर दिया।

भगतसिंह के छुड़ाने के एक्शन में असफलता मिलने पर दूसरे ही दिन रात को बंगले में एक बम फट गया और दल दूसरी जग़ह चला गया। दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया।

धरती के सपूत को हमेशा के लिये धरती में सुला आने के बाद साथियों ने यह समझा था कि अब पुलिस को लाश का पता नहीं चलेगा, पर विधाता को कुछ और मंजूर था। २८ मई १९३० को भगवतीचरण शहीद हुए और अगस्त में इन्द्रपाल के मुखबिर बन जाने पर उसने वह स्थान भी बताया जहां भगवती बाबू को दफनाया गया था। पुलिस ने स्थान खोद कर जितनी हड्डियां मिलीं, अदालत में पेश की। ताने के लहजे में सुखदेवराज से पुलिस सारजण्ट डेविडसन ने अदालत हड्डियों की इशारा करके कहा ''अपने मित्र भगवतीचरण से मिलिये।''

यथार्थ

शहीदों की याद में
उनकी चिताओं पर
हर वर्ष
हमने मेले लगाए,
सिर्फ मेले !
क्योंकि हमसे
कहा गया था यही
कि वतन पर मिटने वालों का
यही होगा
एक बाकी निशां !

—कु० अरविन्द 'आंसू'

भगवतीचरण के त्याग, सहन शक्ति, साहस और देशभक्ति के आगे उनके समस्त साथियों का सिर आज भी झुक जाता है। भगवतीचरण का परिवार एक आदर्श परिवार था। भगवती बाबू का शरीर गठा हुआ सुडोल हृष्ट पुष्ट कसरती था। वे चश्मा लगाते थे। रहने का अपना मकान था। स्वभाव अत्यन्त मिलनसार था। मिलते ही वे लोगों को गले से लगा लेते थे। पुत्र शची माँ - बाप का लाडला बेटा था। परिवार को पैसे की कमी नहीं थी। भगवती बाबू सरल प्रकृति के थे। खद्दर का कुरता व धोती पहनते थे। उन्हें किताबों के सिवाय और कोई व्यसन नहीं था। दल के लिये उन्होंने मुक्त हस्त से पैसा भी लुटाया।

पर जहां विधाता ने उनको किसी चीज की कमी नहीं रखी, वहीं ईर्ष्यालु विधाता ने भगवतीचरण के भाग्य में असीम दुःख और परेशानियां लिख रखी थीं। भगवती बाबू अक्सर इस शेर को गुनगुनाया करते थे —

दरे तदवीर पर सर फोड़ना शेवा रहा अपना।
वसीले हाथ ही आये न किस्मत आजमाई के।

और यही शेर उनके सम्पूर्ण जीवन पर ठीक बैठता है।

112401

उनके विषय में क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त ने अपनी आत्मकथा "दे लिव्हड् डेन्जरसली" में कितना उचित लिखा है— "भगवतीचरण, हसबन्ड ऑफ दुर्गा बाज वन ऑफ अवर मोस्ट सेल्फलेस रिवॉल्यूशनरीज"।

जब बटुकेश्वर दत्त जेल से रिहा हुए तो एक दिन सुखदेवराज ने दत्त से पूछा—'भगवती ने सिगनल का उत्तर क्यों नहीं दिया ?'

दत्त ने जवाब दिया— 'जवाब देने से क्या फायदा था। जैसे ही भगवती भाई की शहादत का समाचार हमें मिला, भगतसिंह ने उसी समय कह दिया था कि अकेले भैय्या हमें जेल से रिहा नहीं करा सकते और अब रिहाई में भी वह मजा नहीं है। भैय्या और भगवती भाई इकट्ठे होते तो अंग्रेजों से लोहा लेने में कुछ मजा भी आता।' ❋

मराठा गली, ढाबा रोड, उज्जैन

दुर्गा भाभी से एक भेंट

(पृष्ठ २ का शेषांश)

कहा कि "इस तरह के विवादों से क्रांतिकारियों की तस्वीर धूमिल होती है, इसलिए इस प्रकार के विवाद बन्द होने चाहिए।"

अन्त में इस बात को एक उदाहरण से स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा—"यह हमारा बगीचा है। इसके साथ ही लगा हुआ संडास है जो सिर्फ कर्मचारियों के इस्तेमाल के लिए ही है, लेकिन इसमें कुछ और लोग आते हैं और उसे गंदा कर देते हैं। जब हमारे यहां कोई मेहमान आता है तो हम उसे बगीचे की सुन्दरता ही दिखायेंगे, न कि संडास की गंदगी। इसी तरह हमें क्रान्तिकारियों की प्रेरणा देने वाली बातों को ही सामने लाना चाहिए।"❋

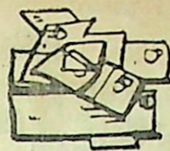
साहित्य संगम, नई सड़क, ग्वालियर-१ (म. प्र.)

आर्थिक सहायता करें

अध्यापक, बिजली कर्मचारी तथा किसान आन्दोलनों में स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश तथा आर्य सभा के मुख्य कार्यकर्त्ता दो माह से अधिक जेल में रहे और अब ७ जून से स्वामी इन्द्रवेश किसानों को अनाज का उचित लागत मूल्य दिलाने के लिए अनिश्चित काल की भूख हड़ताल पर बैठे हैं। इतने लम्बे संघर्ष के कारण 'राजधर्म' कार्यालय की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गयी है। 'राजधर्म' पाठकों के हाथों में देर से जा रहा है, इसका कारण भी यही है।

सभी पाठकों व हितैषियों से आह्वान है कि वे 'राजधर्म' को मुक्त हाथों से आर्थिक सहायता करें व 'राजधर्म' के अधिक से अधिक आजीवन व वार्षिक ग्राहक बनायें।

व्यवस्थापक



सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दी पत्रिकाएँ और 'राजधर्म'

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं को कई साल से पढ़ना बन्द कर दिया है। इसलिए नहीं कि हिन्दी भाषा से नफरत है। इस डर से कि कहीं रोज-रोज कूड़ा पढ़ते-पढ़ते दिमाग कूड़ाखाना न बन जाए। लाखों की संख्या में छपने वाले हिन्दी के प्रतिष्ठित साप्ताहिकों की प्रतिष्ठा का कारण वही है जो बाजारू हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता का। जनता को जगाना और उसको सोचने के लिये बाध्य करना इनका उद्देश्य नहीं है। इनका उद्देश्य है जनता को सुलाना और बहलाना। इन्होंने जनता की रुचि को ऐसा संभाला है कि राष्ट्रभाषा का दावा करने वाली हिन्दी भाषा में लाखों की संख्या में छपने वाला कोई गम्भीर साप्ताहिक या पाक्षिक पत्र नजर नहीं आता। ऐसी बात अन्य प्रादेशिक भाषाओं के साथ नहीं है। हिन्दी में किस्से कहानियों के अतिरिक्त और कुछ पढ़ने वालों का वर्ग छोटा रखने में ये पत्र इतना सफल हुए हैं कि इनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। पर 'राजधर्म' इन प्रतिष्ठित पत्रों से भिन्न है। जनभाषा में जनता के स्तर तक विचार पहुँचाने का इसका तरीका अनुकरणीय है। हिन्दी भाषा में वामपंथियों की नकली भड़भड़ाहट वाली पत्रिकाओं में भी क्रांति के नारे हैं, पर वे इतने नकली हैं कि पढ़ कर उबकाई आ जाती है। 'राजधर्म' में ईमानदारी का स्वर साफ है। प्रशंसा की कला में अपरिपक्व हूं अतः यही कह कर पत्र शेष करती हूँ कि आपकी पत्रिका की सामग्री और आपका जनता जनार्दन को हिलाने का उद्देश्य मेरी श्रद्धा का पात्र है।

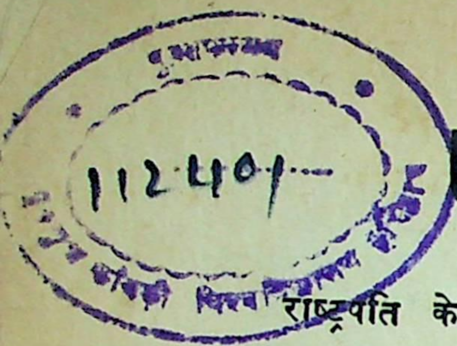
—प्रभा दीक्षित, व्याख्याता, मिराण्डा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रतिक्रियाएँ

चन्द्रवीरसिंह शाक्य (श्रीगंगानगर) 'राजधर्म' में पाखण्डवाद पर कठोर प्रहार होता है। **गोवर्द्धन हेडाऊ (जोधपुर)** आर्य समाज को देश के जनवादी आन्दोलन के साथ जोड़ा गया है, निश्चय ही यह शुभ है। 'राजधर्म' आदमी की रोटी-रोजी-मकान से जुड़ा है और उसके इस आन्दोलन की अगुवाई कर रहा है। **सुवर्णा आर्या (दिल्ली-३२)** १२ मई का 'राजधर्म' सरकार व इसके नेताओं की आंखें खोलने में सहायक होगा। **कृष्णगोपाल माथुर (उज्जैन)** प्रत्येक अङ्क में शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध जोशीली, प्रभावकारी, दीनहीनों की हितैषी सामग्री प्रचुर मात्रा में रहती है। सम्पादक जी की लेखनी का एक-एक शब्द अत्याचारियों के कान खोल देने हेतु एक तीखे हथियार का काम करने वाला होता है। **विक्रमसिंह (पालावास)** 'ये बस्ती ये लोग' (रामशरण जोशी) नाटक अच्छा है। ओम सैनी सुलझे विचारों के कारण बधाई के पात्र हैं। **सुधाकर गोस्वामी (जयपुर)** हर पत्रिका में अक्सर नारेबाजी हुई है, कम नहीं, किन्तु 'राजधर्म' एक साफ और ईमानदार पत्रिका है। **कृष्ण पुरोहित (जयपुर)** सम्पादकीय आशातीत तीखे और कल्पनातीत कटु सत्य लिए हुए होते हैं। **बच्चनसिंह (दिल्ली)** 'राजधर्म' सर्वहारा वर्ग की आवाज बुलन्द करने में सबसे आगे है। **बलदेवचन्द शर्मा (लठियाणी—हि० प्र०)** 'राजधर्म' के सभी लेखों को पढ़ कर चैन मिलता है। **सत्यव्रत (दिल्ली)** सम्पादकीय लेख के अन्दर पहले जैसी जान नहीं है। **कुशलदेव शास्त्री (नान्देड़)** 'राजधर्म' में धर्म प्रधान लेखों का प्रकाशन हो, तो यह पूर्णार्थों में सार्थक होगा।

वाह रे आर्य समाज के ठेकेदारों !

जगदीश आर्य (नांगलकलां-सोनीपत) कुछ भ्रष्ट लोगों के स्वार्थपूर्ण नेतृत्व के कारण आर्य समाज महज विभिन्न पार्टियों के प्रचार का अड्डा मात्र बन कर रह गया है। स्वामी अग्निवेश पर मेरठ सम्मेलन में आरोप लगाने वाले नेता लूट-खसोट, ब्लेक मार्केटिंग, चोरबाजारी, बेइमानी करते नहीं हिचकिचाते। विभिन्न दलों की चपरासीगिरी करते हैं। स्वामी अग्निवेश को मंच पर इसलिए नहीं बोलने दिया गया, क्योंकि उनकी वाणी में इस ढोंग ढकोसले और आडम्बर रचने वाले नेताओं को ललकारने की शक्ति थी। प्रकाशवीर शास्त्री ने आर्य समाज को धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक आन्दोलन बताया। क्या शालवाले, प्रो० शेरसिंह राजनीतिज्ञ नहीं हैं ? क्या स्वयं आपने बी० के० डी० में अपनी खिचड़ी नहीं पकाई ? **आनन्द कुमार आर्य (दिल्ली)** हजारों युवकों के प्रचण्ड विरोध को देख कर राजनैतिक दलों की सेवा कर मेवा प्राप्त करने वाले आर्य नेताओं ने हजारों युवकों को कम्युनिस्ट व नक्सली की संज्ञा प्रदान की। आर्य नेताओं को युवा पीढ़ी की मांग मान कर आर्य सभा को मान्यता देनी ही होगी।



समाचार दर्शन

राष्ट्रपति के स्नान पर दो लाख ३६ हजार रु. व्यय

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

नई दिल्ली। विश्वस्त सूत्रों के अनुसार राष्ट्रपति वी. वी. गिरि की केरल यात्रा में, पम्बा नदी में उनके पारस्परिक पवित्र स्नान के कारण, केरल सरकार को २ लाख ३६ हजार रु. खर्च करने पड़े।

वर्षा की कमी के कारण इस वर्ष पम्बा का जल स्तर कम था। राष्ट्रपति के स्नान के लिये पांच दिन तक इसके जल द्वार २२ घण्टे रोजाना खोले गये। फलस्वरूप १३८.६ लाख क्यूबिक फीट पानी निकला। इस जल-शक्ति से ६.७५ लाख किलोवाट विद्युत उत्पादन होता, जिसकी लागत २ लाख ३६ हजार रु. है।

इजिप्ट की रानी क्लियोपेट्रा दूध से नहाती थी, किन्तु वह प्राचीन इजिप्शियन राजशाही थी। यही राजशाही प्रवृत्ति हमारे समाजवादी शासकों में दिखायी देती है।

गुरुकुल मटिण्डू में ब्रह्मचर्य शिविर

रोहतक। गुरुकुल मटिण्डू में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा १० से १८ जून तक विशाल ब्रह्मचर्य शिविर लग रहा है। इच्छुक युवक १० रु. शुल्क भेज कर शिविर में सम्मिलित हों।

लुधियाना में ब्रह्मचर्य शिविर

लुधियाना। पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् की ओर से, १ से ८ जुलाई तक आर्य युवकों का एक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लग रहा है। १३ से ४० वर्ष तक की आयु के युवक इस में भाग ले सकते हैं।

चुनाव समाचार

आर्य युवक परिषद्, नान्देड (महाराष्ट्र)

प्रधान- शेषराव धनोरकर, मंत्री- विट्ठल पाटिल, कोषाध्यक्ष- शशिकान्त यलसटवार, सक्रिय सदस्य- सत्यव्रत जिन्दम तथा विजय यलसटवार।

आर्य समाज, जवाहर नगर, लुधियाना

प्रधान- गैहनाराम, उप प्रधान- बाबूराम, मंत्री- विजय सरीन, कोषाध्यक्ष- सुभाषचन्द्र।

आर्य समाज, आर्यपुरा, दिल्ली

प्रधान- चमनलाल, उप प्रधान- हरिसिंह व नित्यानन्द, मंत्री- सुभाषचन्द, कोषाध्यक्ष– पुष्पराज।

आर्य बालक गुम

जोधपुर के दो भाइयों रामलाल तथा मोहनलाल ने आर्य सभा कार्यालय में आ कर सूचित किया है कि उनके पुत्र क्रमशः विजयकृष्ण (साढे सोलह वर्ष) तथा दिनेशचन्द (साढे पन्द्रह वर्ष) २६ मई से घर नहीं लौटे। वे शिविर की सामग्री ले कर गये थे। यदि किन्ही को ये बालक मिले, तो इस पते पर सूचित करे— रामलाल, गुलाब सागर, बच्चे की गली, विश्वकर्मा कालोनी, जोधपुर। दूरभाष : २३२२६। बच्चों को लाने वाले को उचित मार्ग व्यय व पुरस्कार दिया जायगा।

गेहूं व्यापार का सरकारीकरण और किसानों का शोषण

चण्डीगढ़ आर्य सभा ने सरकार द्वारा गेहूँ व्यापार का सरकारीकरण करने का समर्थन किया है। उसने कहा है कि सरकार किसानों से ७६ रु. क्विटल के मूल्य से गेहूं खरीद कर व्यापारियों से भी बढ़ कर किसानों का शोषण कर रही है। अगर सरकार ने उचित मूल्य दे कर किसानों से गेहूं न खरीदा तो किसान आन्दोलन करने पर विवश हो जाएगा।

चण्डीगढ़ आर्य सभा ने सरकार से मांग की है कि वह किसानों से ११५ रु. क्विटल के मूल्य से गेहूँ खरीदे और कम मूल्य पर बेचे। जहां सरकार करोड़ों रुपये का घाटा पूरा करती है वहां इसे भी पूरा करे।

चण्डीगढ़ आर्य सभा ने स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश और हरयाणा में आर्य सभा के अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा किसानों के हित में सबसे पहले गिरफ्तारियां देने की प्रशंसा की है।

अन्नदाता और अन्नभोक्ता की रक्षा होनी चाहिये

आर्य सभा होशियारपुरकी अन्तरंग सभा ने एक आवश्यक बैठक में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर कहा है कि सारे देश का अन्नदाता (किसान) शोषण का शिकार हो रहा है। किसान को लागत मूल्य न दे कर गेहूँ खरीदना घोर अन्याय है, जिसके दूरगामी परिणाम देश के हित में नहीं होंगे।

हरयाणा किसान आन्दोलन पर पुलिस का दमन-चक्र : शीर्षस्थ नेता गिरफ्तार

किसान भूख व अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखेगा

रोहतक । हरयाणा के सभी प्रमुख शहरों में धारा १४४ लगा कर पुलिस ने किसानों पर अपना दमन-चक्र तेज कर [दिया]। हरयाणा किसान संघर्ष समिति व पंजाब के शीर्षस्थ किसान नेताओं, संसद सदस्यों व विधायकों की गिरफ्तारी के बावजूद हरयाणा के किसान ने भूख व अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने का संकल्प लिया है। उनकी मुख्य मांग है कि सरकार गेहूँ का मूल्य ११५ रु० निश्चित करे।

२६ मई से ६ जून तक विशाल किसान सम्मेलनों में हरयाणा के लाखों किसानों ने भाग ले कर, सिद्ध कर दिया कि कि अत्याचार के विरुद्ध बागी इरादों को कुचलने वाली कोई भी ताकत इस धरती पर पैदा नहीं हुई है।

पहला किसान सम्मेलन २६ मई को सिरसा में हुआ। चौ० देवीलाल तथा स्वामी इन्द्रवेश का पीछा पुलिस ने दिल्ली से किया, किन्तु इन्होंने सड़क छोड़ कर कच्चे रास्तों से स्टेज पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की। मनीराम बागड़ी, डा० मंगलसेन, प्रकाशसिंह बादल आदि मार्ग में ही गिरफ्तार कर लिए गये। सिरसा के इतिहास में प्रथम बार इतना बड़ा सम्मेलन हुआ था। सिरसा पुलिस छावनी लग रहा था। कोई भी वाहन शहर में नहीं घुस सकता था। चौ० देवीलाल को मंच से पकड़ने के लिए, जब डी. एस. पी. ने यत्न किया-तो उन्हें धकेल कर नीचे गिरा दिया गया। चौ० देवीलाल तथा दो अन्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन के बाद गिरफ्तार कर लिए गए।

दूसरा किसान सम्मेलन ३० मई को हांसी में सम्पन्न हुआ। इसमें दलसिंह, शंकरलाल आदि गिरफ्तार किये गये। ३१ मई को राजोन्द सम्मेलन में चार किसान नेता गिरफ्तार हुए।

१ जून को करनाल में ऐतिहासिक किसान सम्मेलन हुआ। इसमें पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री प्रकाशसिंह बादल, सुरेन्द्रनाथ खोसला, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के प्रधान तथा लोकसभा सदस्य गुरुचरणसिंह टोरा, लोकसभा सदस्य मुखत्यारसिंह, विधायक चौ० शिवराम वर्मा तथा हरयाणा अकाली दल के सरदार रघुवीरसिंह गिरफ्तार कर लिए गये। स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश पुलिस से बचने में सफल हो गये। सम्मेलन में संघर्ष समिति के प्रथम प्रधान स्वामी इन्द्रवेश को संयोजक मनोनीत किया गया।

२ जून को सोनीपत में किसान सम्मेलन के कारण धारा १४४ लगा दी गयी। डा० महासिंह, ओमप्रकाश चोटाला तथा ओमप्रकाश सरपंच तीन अन्य किसान कार्यकर्त्ताओं के साथ गिरफ्तार कर लिये गये। चौ० गंगाराम जनाने वस्त्र पहन कर पुलिस से बचे। ३ जून को रोहतक में सम्मेलन के कारण धारा १४४ लगा दी गयी। पुलिस ने धर्मसिंह राठी को पकड़ने के लिए आर्य सभा कार्यालय पर छापा मारा। ४ जून को दादरी में भी धारा १४४ लगी थी। यहां विभिन्न दलों के आठ व्यक्तियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। दादरी के पास चार-पांच मील के क्षेत्र में पुलिस ने स्वामी इन्द्रवेश को गिरफ्तार करने के लिए असफल छापे मारे। ५ व ६ जून को क्रमशः झज्जर व गुड़गांवां में किसान सम्मेलन थे। अतः वहां भी धारा १४४ लगा दी गयी। झज्जर में आर्य सभा के नेताओं डा० कृष्णदत्त तथा डा० धर्मवीर स्वामी शुक्रवेश तथा पं० मूलचन्द जखला सहित सात व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए। गुड़गांवां में गिरफ्तार २८ कार्यकर्त्ताओं में गुड़गांवां आर्यसभा के प्रधान आचार्य रामानन्द, ग्यासीराम एडवोकेट, व भिखारीलाल के नाम प्रमुख हैं।

८ जून को हरयाणा किसान मजदूर सभा के संयोजक चौ० गंगाराम को गोहाना से दिल्ली जाते हुए, ६ जून को दिल्ली में किसान संघर्ष समिति की बैठक में भाग लेने से रोकने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।

पंजाब के अकाली नेताओं ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। इसके प्रमुख नेता हरयाणा किसान आन्दोलन के कारण जेल में हैं। अकाली कार्यकर्त्ताओं ने ८ जून को हरयाणा के मुख्यमंत्री व राज्यपाल के निवास के सामने धरने दिये। पंजाब के अन्य राजनैतिक दलों से भी सहयोग के आश्वासन मिल रहे हैं। इस सम्पूर्ण घटना-चक्र के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि पुलिस दमन के कारण हरयाणा का शान्त किसान-ज्वालामुखी फट पड़ा है। उसने संकल्प लिया है कि वह भूख व अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखेगा।

Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
१२ जून, १९७३

स्वामी इन्द्रवेश द्वारा ७ जून से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल प्रारंभ

१३ जून को हरयाणा में 'मण्डी बन्द' का आह्वान

नई दिल्ली। हरयाणा किसान संघर्ष समिति के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश ने किसान को अनाज का उचित मूल्य दिलाने के लिए, ७ जून से नई दिल्ली में कृषि मंत्रालय के सामने बोट क्लब पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी।

स्वामीजी चार मांगों को लेकर भूख हड़ताल कर रहे हैं। ये मांगें हैं—गेहूं का वसूली मूल्य ७६ रु० से ११५ रु० किया जाय, हरयाणा में किसानों पर पुलिस दमन समाप्त हो तथा हरयाणा के प्रमुख शहरों से धारा १४४ तुरन्त हटायी जाय, किसान संघर्ष समिति के सभी नेताओं को तुरन्त बिना शर्त रिहा किया जाय एवं हरयाणा के जिन मन्त्रियों पर खाद्य तस्करी के आरोप हैं उनके विरूद्ध न्यायिक जांच आयोग बैठाया जाय।

ज्ञातव्य रहे कि स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश को १९ अप्रैल को क्रमशः करनाल व रोहतक में किसान आन्दोलन के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया था। स्वामी इन्द्रवेश ९ मई को तथा स्वामी अग्निवेश २२ मई को रिहा हुए।

पुलिस ने दोनों की गिरफ्तारी के लिए पुनः वारन्ट जारी कर, उन्हें गिरफ्तार करने का असफल प्रयास किया, किन्तु सिरसा व करनाल के विशाल किसान सम्मेलनों को सम्बोधित कर दोनों भूमिगत होकर, किसान आंदोलन को तीव्र गति देने के सतत् प्रयास में लग गये।

९ जून को नई दिल्ली में किसान संघर्ष समिति की बैठक के उपरांत स्वामी इंद्रवेश ने १३ जून को सारे हरयाणा में 'मण्डी बन्द' दिवस मनाने के निर्णय की घोषणा की। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे इस अग्नि परीक्षा में खरे उतर कर, अपनी शक्ति का परिचय दें।

स्वामी जी ने १४ मई को दिल्ली में खाद्य मन्त्रियों की बैठक को मद्देनजर रखते हुए, किसानों से अपील की है कि वे १४ मई को प्रातः १० बजे बोट क्लब पर विशाल प्रदर्शन के लिए एकत्रित हों।

